राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अङ्क 1] आठवीं विधान सभा के प्रथम सत्र का सातवां दिवस [संख्या 6

सोमवार

दिनांक 25 मार्च, 1985

विधान सभा की बैठक म. पू. 11.00 बजे विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(श्री हीरालाल देवपुरा, अध्यक्ष पदासीन)

शपथ ग्रहण अथवा प्रतिज्ञान
नव निर्वाचित सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण अथवा प्रतिज्ञान

श्री अध्यक्ष : शपथ अथवा प्रतिज्ञान।

सचिव, राजस्थान विधान सभा : श्री देवी सिंह भाटी !

क्र.सं.	नाम	शपथ ग्रहण/ प्रतिज्ञान	भाषा
1.	श्री देवीसिंह भाटी	शपथ	राजस्थानी
2.	श्री मोटा राम	शपथ	हिन्दी

श्री भंवरलाल शर्मा (हवा महल): मोटाराम तो नाम के ही मोटाराम हैं।

तारांकित प्रश्नोत्तर

श्री अध्यक्ष : प्रश्न !

श्री देवीसिंह भाटी (कोलायत): अध्यक्ष महोदय, मेरा निवेदन है कि प्रश्नकाल स्थगित करें। बीकानेर जिला, कोलायत तहसील में लोग प्यासे मर रहे हैं ...

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, स्थान ग्रहण करें।

श्री देवीसिंह भाटी : वहां पर लोग प्यासे मर रहे हैं। मैं सारे एरिया में घूम कर आया हूं ...

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आप पुराने सदस्य हैं, नियमों के अनुसार चलें, नियमों का पालन करें।

श्री देवीसिंह भाटी : एक एक बूंद के लिए लोग तड़फ रहे हैं।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आप पुराने सदस्य हैं, प्रश्नकाल में यह विषय नहीं उठाये जाते हैं। माननीय सदस्य, आपको आगे समय मिलेगा।

②

श्री देवीसिंह भाटी : हम जन प्रतिनिधि हैं, जब सदन चल रहा है, तो हमारा कर्तव्य है कि हम सदन में···

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आपको समय मिलेगा।

श्री देवीसिंह भाटी : जिस जनता ने हमको चुनकर भेजा है, हम उनको पानी भी न पिला सकें··

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आप नियमों से परिचित हैं, कृपया स्थान ग्रहण करें।

(व्यवधान)

माननीय सदस्य, स्थान ग्रहण करें।

श्री देवीसिंह भाटी : लोग प्यासे मर रहे हैं और सरकार कुछ नहीं कर रही है।

श्री अध्यक्ष : मैं आपसे निवेदन कर रहा हूँ, कृपया स्थान ग्रहण करें। आसन पैरों पर है। आप नियमों को जानते हैं।

(व्यवधान)

श्री देवीसिंह भाटी : वह तो कब्र में जा रहे हैं :

श्री अध्यक्ष : आप नियमों से परिचित हैं, माननीय सदस्य। माननीय सदस्य।

माननीय सदस्य, आपसे निवेदन है कि आप स्थान ग्रहण करें। आप ··

श्री देवीसिंह भाटी : . . ×××

श्री अध्यक्ष : आपकी जानकारी के लिये ही प्रश्नकाल है। आपके बहुत महत्वपूर्ण विषय हैं जिनके जवाब आने हैं। प्रश्नकाल में इस तरह के प्रश्न नहीं उठाये जाते हैं। आप अपनी बात कहें, अधिकारी हैं, अधिकार हैं अपनी पूरी बात कहें लेकिन नियमों की पालना करें। माननीय सदस्य मैं आशा करता हूँ कि आप मेरी बात को समझेंगे। धन्यवाद।

प्रश्न, श्री हेमाराम चौधरी!

पंचायती राज विभाग के अधीन कार्यरत अध्यापकों का चयन

श्री हेमाराम चौधरी (गुढ़ामालानी) : क्या ग्रामीण विकास एवं पंचायत राज मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(1) क्या यह सही है कि पंचायती राज विभाग के अधीन कार्यरत बाड़मेर जिले के अध्यापकों का सेवा चयन प्रयोग द्वारा साक्षात्कार के बाद भी अभी तक चयन नहीं किये जाने से वह विभाग की सेवाओं से त्याग पत्र देकर शिक्षा विभाग में जा रहे हैं जिससे अध्यापकों की विभाग में भारी कमी आ गई है ?

(2) यदि हां, तो सरकार इस बारे में क्या कार्यवाही कर रही है और कब तक चयन हो जायेगा ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री घनश्याम तिवाड़ी (सीकर) : पहला प्रश्न है, जरा तैयारी से जवाब देना।

श्री अध्यक्ष: ऑर्डर प्लीज।

××× अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई।

ग्रामीण विकास एवं पंचायत राज मंत्री (श्री नरेन्द्र सिंह भाटी) : आपका नम्बर तो बाद में आयेगा।

(1) जी हां। आयोग द्वारा बाड़मेर जिले के अध्यापकों के साक्षात्कार के बाद अभी तक चयन सूची जारी नहीं की है...

एक माननीय सदस्य : क्यों ?

श्री नरेन्द्र सिंह भाटी : बतायेंगे, सारा बतायेंगे।

श्री अध्यक्ष : प्लीज।

श्री नरेन्द्र सिंह भाटी : (1) चयन नहीं होने तथा अन्य कारणों से बाड़मेर जिले की पंचायत समितियों से 130 अध्यापक त्याग पत्र देकर शिक्षा विभाग में गये हैं।

(2) आयोग को शीघ्र चयन सूची जारी करने हेतु निवेदन किया गया है।

श्री दिग्विजय सिंह (उनियारा) : आयोग को आपने कब भेजी ?

श्री दाऊदयाल जोशी (दीगोद) : तारीख बता दें।

श्री अध्यक्ष : प्रश्नकर्ता। आप तो सोच रहे थे बैठे बैठे।

श्री हेमाराम चौधरी : सेवा चयन आयोग ने जो साक्षात्कार अध्यापकों के लिये वह किस तारीख को लिये ? इस बात को आज कितना समय हो गया है और उस पर आज दिन तक क्या कार्यवाही हुई ?

एक माननीय सदस्य : शाबाश।

श्री नरेन्द्र सिंह भाटी : अध्यक्ष महोदय, यह साक्षात्कार 1982-83 में हुआ था।

श्री केदारनाथ शर्मा (गंगानगर) : डेट ?

श्री नरेन्द्र सिंह भाटी : डेट भी अभी आपको नजर करता हूं।

श्री भंवरलाल शर्मा (हवामहल) : पूरी जानकारी नहीं है, पढ़कर नहीं आये हैं।

श्री यदुनाथ सिंह (नदवई) : भूल गये।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : पहली बार है, माफ करो।

श्री नरेन्द्र सिंह भाटी : 20-6-1984 से 2-7-1984 तक।

श्री शोभत सिंह (हनुमानगढ़) : आपने 1982-83 कहा था।

श्री ललित किशोर चतुर्वेदी (कोटा) : यह तैयार होकर नहीं आये हैं, अध्यक्ष महोदय।

श्री नरेन्द्र सिंह भाटी : बाड़मेर का कह रहा हूं। इसी का तो आपने पूछा है। 1982 में यह बोर्ड गठित हुआ था। उसके बाद में इन्टरव्यू हुआ। अभी 20 जिलों की लिस्ट तो निकल चुकी है...

श्री अध्यक्ष : आप तो यह बता दीजिये कि बाड़मेर का कब हुआ ? लिमिटेड प्रश्न है। समय बता दीजिये।

श्री नरेन्द्रसिंह भाटी : 20-6-1984 से 2-7-1984 पढ़ दिया गया है।

श्री अध्यक्ष : प्रश्नकर्ता !

श्री हेमाराम चौधरी : 20 जून, 1984 को यह इन्टरव्यू हो गया था। उसके बाद आज तक चयन आयोग ने सूची जारी नहीं की, इसका क्या कारण है? इसके कारण हजारों अध्यापक इसको छोड़कर दूसरे विभाग में जा रहे हैं और यह पोस्ट खाली हो रही है। इस विभाग में कोई रहना नहीं चाहता। कोई कारण तो होना चाहिये। पहले ही बोर्ड इतने लम्बे समय के बाद गठित हुआ। वर्षों के बाद इन्टरव्यू हुआ और उसके बाद भी वर्षों तक बैठे रहे हैं। इसमें इतनी ढिलाई क्यों की जा रही है?

श्री भंवरलाल शर्मा : इस सरकार की योग्यता का परिणाम है।

श्री दिग्विजय सिंह : मैं जानना चाहूँगा जैसा मंत्री महोदय ने फरमाया कि बोर्ड का गठन 1982 में हुआ। क्या पहले बोर्ड नहीं था या बोर्ड के नये सदस्य बने 1982 में?

श्री नरेन्द्रसिंह भाटी : बोर्ड के चेयरमैन और एक सदस्य 1982 में नियुक्त हुआ था उसके बाद में ये इन्टरव्यू हुआ। अध्यक्ष महोदय, 20 जिलों की सीरियलवाइज लिस्ट घोषित कर दी गई है। बाड़मेर का जहां तक सवाल है, 6 महिने ही तो हुए हैं जून-जुलाई, 1984 से। इसके बारे में मैंने बोर्ड को प्रेस किया है कि वह जल्दी घोषणा कर दे। उम्मीद है कि अगले 15 दिन में हो जायेंगे···

श्री शांपत सिंह : आप समझते हैं कि 6 महीने ज्यादा समय नहीं है।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य।

श्री बाऊदयाल जोशी : भयंकर भ्रष्टाचार है।

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर प्लीज। एक-एक करके बोलें।

(व्यवधान)

ऑर्डर प्लीज, आप बैठिये। आपसे पहले उन्होंने प्रश्न पूछा है। आप बाद में पूछियेगा। आप बैठ जाइये।

श्री भंवरलाल शर्मा : यह कांग्रेस कल्चर है, साहब।

श्री हेमाराम चौधरी : मैं मन्त्री महोदय से जानकारी चाहूंगा कि इतने अध्यापक जिनका चयन बोर्ड ने किया उनको अभी तक किसी प्रकार की नौकरी नहीं मिली..

श्री अध्यक्ष : दूसरा प्रश्न है, माननीय सदस्य।

श्री हेमाराम चौधरी : बाड़मेर के ही चयनित किए गए उन अध्यापकों के नाम जानना चाहता हूँ जिनका चयन तो किया गया लेकिन अभी तक नौकरी प्रदान नहीं की गई?

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, यह बताने दीजिये।

श्री भंवरा राम : मैं इस प्रश्न के बारे में थोड़ा निवेदन करना चाहता हूँ। जब···

श्री अध्यक्ष : आप बैठिये, बाद में प्रश्न पूछ लीजियेगा।

श्री भंवरा राम : इसका सबसे बड़ा कारण यह रहा है कि जनता पार्टी के शासन काल में...

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आपको जो पूछना है, पूछ लीजिये ।

श्री भंवरा राम : जनता पार्टी के शासन काल में गठन नहीं हुआ है....

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर प्लीज । माननीय सदस्य, कृपया स्थान ग्रहण करें ।

श्री यदुनाथ सिंह : पांच साल से X X X

श्री ललितकिशोर चतुर्वेदी : मैं आपके माध्यम से मंत्री महोदय से पूछना चाहूंगा कि चयन होने के कितने दिन बाद यह प्रकाशित हो जाना चाहिये । इस केस में 9 महिने लग गये । जो नियम बने हुये हैं या जो परम्परा है उनका उल्लंघन हुआ है...

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य ने अपना प्रश्न पूछ लिया है, जवाब आने दीजिये । ऑर्डर प्लीज ।

(व्यवधान)

उनको पूछने दीजिये ।

श्री सी. पी. जोशी (नाथद्वारा) : मेरा सप्लीमेंटरी प्रश्न यह है कि चयन इस विभाग में होता है, उनके जो ट्रान्सफर होते हैं इस नीति को पंचायत राज मंत्री बदलना चाहते हैं या नहीं ?

श्री ललित किशोर चतुर्वेदी : मेरे प्रश्न का उत्तर...

श्री अध्यक्ष : दोनों का जवाब आ जायेगा । आप क्रोधित क्यों होते हैं ।

श्री सी. पी. जोशी : पंचायत समिति में शिक्षकों का जो चयन होता है और शिक्षा विभाग के अन्दर जो लिए जाते हैं, इन दोनों के बीच में सामंजस्य नहीं होने के कारण यह स्थिति पैदा हो जाती है । क्या पंचायत राज मंत्री इसको बदलने की स्थिति में है या नहीं ।

श्री अध्यक्ष : जवाब आ जाने दीजिये ।

श्री नरेन्द्रसिंह भाटी : पहले तो मैं आदरणीय चतुर्वेदी जी का उत्तर दे दूं । इनको तो मैं यही सूचना देना चाहता हूं अगर आप इतने आतुर हो रहे हैं, तो 1978-80 में विज्ञापन निकाला गया था तो आपने उसी समय क्यों नहीं...

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : यदि कोई बात है तो बताने दीजिये ।

श्री नरेन्द्रसिंह भाटी : इन्टरव्यू हो गये हैं । ऐसा कोई.........

श्री अध्यक्ष : सूचना उन्हें दे दें....

श्री दिग्विजय सिंह : माननीय मन्त्री महोदय, गुमराह कर रहे हैं, सदन को । 1977 से 1980 तक चेयरमैन मौजूद थे, मिस्टर गोयल...

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, बैठें ।

X X X अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई ।

श्री हेमराम चौधरी : मेरा यह निवेदन है कि जून और जुलाई में यह इन्टरव्यू हुआ··

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, बैठ जायें।

श्री हेमाराम चौधरी : जो अध्यापक पंचायत समिति में कार्यरत हैं, उनको स्थाई करके·····

श्री अध्यक्ष : प्रत्यक्ष प्रश्न करें, माननीय सदस्य। अलग से सवाल है।

श्री हेमाराम चौधरी : नौकरी करते हैं उनके भविष्य के बारे में ···

श्री अध्यक्ष : इससे सम्बन्धित नहीं है। आपने जो प्रश्न पूछा है उससे सम्बन्धित नहीं है।

श्री दिग्विजयसिंह : बहुत ही रिलेवेंट है।

श्री रामसिंह विश्नोई (लूणी) : मेरा निवेदन है, अध्यक्ष महोदय, जिला परिषद् के चेयरमेन इस पर ध्यान दें वरना होता यह है कि बार-बार तारीख कैंसिल की जाती हैं। मेरा आपसे निवेदन है·····

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : कृपया स्थान ग्रहण करें। कृपया स्थान ग्रहण करें।

श्री रामसिंह विश्नोई : आप चयन आयोग को या चेयरमैन को बाध्य कर दें कि प्रत्येक जिला परिषद् के अन्दर कम से कम तीन महीने के अन्दर अपनी डेट फिक्स करके भेज दें ताकि···

श्री अध्यक्ष : माननीय सुजानसिंह !

श्री सुजानसिंह यादव (बहरोड़) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे जिले में······

श्री अध्यक्ष : बाड़मेर का सवाल है। माननीय सदस्य, बैठ जायें। इससे संबंधित नहीं है। कृपया बैठ जायें। माननीय सदस्य, कृपया बैठ जायें।

श्री दाऊदयाल जोशी : ग्रामीण शिक्षा···

श्री अध्यक्ष : यह तो आगे का सवाल है।

श्री दाऊदयाल जोशी : अध्यक्ष महोदय, मन्त्री महोदय ने सदन को गुमराह किया है।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, बिराज जांय कृपया स्थान ग्रहण करें।

श्री भंवरलाल शर्मा : माननीय अध्यक्ष महोदय, यह प्रश्न इसलिए खड़ा हो गया··

श्री नरेन्द्रसिंह भाटी : आप मुझे बोलने तो देंगे।

श्री भंवरलाल शर्मा : अध्यक्ष महोदय, आपको बैठने के लिए कह रहे हैं। माननीय मन्त्री महोदय ने कहा कि तीन साल जब जनता पार्टी का राज था·····

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, सुन लिया मैंने।

श्री शिवराम शर्मा (वनीपार्क) : जो राजस्थान को डुबो दिया उसकी सफाई क्यों देने जा रहे हैं ? डुबो दिया।

श्री दिग्विजयसिंह : अध्यक्ष महोदय, बाड़मेर जिले से सम्बन्धित है। उन्हीं दिनों में बाड़मेर के अलावा दूसरों के भी इन्टरव्यू हो गये थे उनके तो रिजल्ट्स आउट कर दिये गये हैं लेकिन बाड़मेर जिले के रिजल्ट्स आउट नहीं किये। नौ महीने से बैठे हैं। क्या कारण है ? मार्किङ्ग तो वहीं हो जाती।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य बीच में नहीं। मन्त्री महोदय !

श्री नरेन्द्रसिंह भाटी : सलेक्शन का जो भी प्रोसेस है, इन्टरव्यू के वक्त ...

श्री शोपतसिंह : इसके लेट होने का कारण क्या है, Let us know.

श्री अध्यक्ष : कृपया शान्त रहें।

श्री नरेन्द्रसिंह भाटी : अध्यक्ष महोदय, रामसिंह जी ने जो सुझाव दिये हैं वह तो मैं...

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज।

श्री यदुनाथसिंह : अध्यक्ष महोदय, सदस्य का नाम ले रहे हैं कॉन्स्टीटयूएन्सी का नाम लेना चाहिये।

श्री नरेन्द्रसिंह भाटी : मैं चेयरमैन साहब को जरूर अर्ज कर दूंगा...

श्री अध्यक्ष : आपको जो कोई सूचना प्राप्त हो वह आप...

श्री नरेन्द्रसिंह भाटी : रामसिंह जी ने जो सुझाव दिये, उसका अर्ज कर रहा हूं। मीटिंग हो नहीं पाती है उसका डिसीजन अर्ज कर रहा हूं। चेयरमैन को कह दूंगा कि समय पर, तीन महीने में, छः महीने में परिषद् को सूचना दे दें। डिले नहीं हो। यह तो हुआ रामसिंह जी का।

श्री यदुनाथ सिंह : माननीय रामसिंह जी का।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, समय क्यों ले रहे हैं। समय मत लीजिए।

श्री शोपत सिंह : इतना ही बता दीजिए, क्यों नहीं रिजल्ट आउट हुए अब तक ?

श्री नरेन्द्रसिंह भाटी : आदरणीय शोपत सिंह जी को अर्ज करना चाहता हूं कि इन्टरव्यू की प्रोसेस में टाइम लगता है।

श्री दिग्विजय सिंह : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने जो प्रश्न पूछा था...

श्री अध्यक्ष : आपके प्रश्न का उत्तर देना चाहेंगे तो दे देंगे। मैं बाध्य नहीं कर सकता, मन्त्री महोदय को।

श्री यदुनाथ सिंह : नौ महीने डिले। भगवान मालिक है।

श्री अध्यक्ष : श्री दिग्विजय सिंह।

श्री शोपत सिंह : मन्त्री महोदय तैयार होकर नहीं आये, स्टडी नहीं की। You are not prepared.

श्री नरेन्द्रसिंह भाटी : Totally.

श्री अध्यक्ष : अगला प्रश्न। श्री दिग्विजय सिंह।

मुख्य मन्त्री (श्री हरिदेव जोशी) : मैं निवेदन कर रहा हूं, हिस्टोरिकल रीजन से सलेक्शन डिले हुए हैं। वह हिस्टोरिकल रीजन माननीय सदस्यों को मालूम है। राज्य सरकार ने सन् 1980 के बाद में बहुत जल्दी करने की कोशिश की है, आप आश्चर्य करेंगे, छब्बीस में से 20 जिलों के डिक्लेयर हो चुके हैं। बाकी जितने भी रिजल्ट्स हैं उनको जल्दी निकाल दिया जायेगा।

श्री ललित किशोर चतुर्वेदी : मैं नेता महोदय से निवेदन करना चाहता हूं, बाकी 19 जिलों के आउट हो गये। मैं इसलिए कहना चाहता हूं कि पदाधिकारी चाहते थे कि रिजेक्ट हो जायं। रिजेक्ट नहीं हुए। इसलिए आप जांच कराइये।

श्री अध्यक्ष : मैंने दूसरा प्रश्न पुकार लिया।

माननीय सदस्य, कृपया बैठ जायं। दूसरा प्रश्न पुकार लिया।

श्री शिवचरण सिंह (करौली) : राजस्थान में कुल कितने पद रिक्त हैं, यह कृपया बता दीजिये।

टाइगर प्रोजेक्ट, सवाई माधोपुर में बघेरे का शिकार

2. **श्री दिग्विजय सिंह** (उनियारा) : क्या वन मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे.—

(1) क्या यह सही है कि टाइगर प्रोजेक्ट सवाई माधोपुर में पिछले माह एक बघेरे का अवैध रूप से शिकार हुआ था? यदि हां, तो इस सम्बन्ध में क्या कार्यवाही की गई? क्या दोषी व्यक्ति को पकड़ा गया?

(2) क्या यह सही है कि यह प्रोजेक्ट समस्त साधनों से सम्पन्न है और इसमें कोई भी अन्दर नहीं जा सकता? यदि हां, तो फिर यह शिकार कैसे हुआ?

(3) क्या इस सम्बन्ध में कोई जांच हो रही है? यदि हां, तो जांच अधिकारी कौन हैं?

राज्य मन्त्री, वन (श्री शीशराम ओला) : (1) जी हां, मृत बघेरे को कब्जे में लेकर नियमानुसार कार्यवाही की गई। दोषी व्यक्ति को पकड़ लिया गया है।

(2) जी नहीं। प्रोजेक्ट क्षेत्र में पर्यटक व पूजा स्थलों पर आम श्रद्धालुओं को व प्रोजेक्ट के खुले हुए वन क्षेत्र में जन-साधारण को व मवेशी चराने वालों को आने जाने पर रोक नहीं है। यह शिकार खुले हुए क्षेत्र में हुआ है।

(3) जी हां। जांच हो रही है। क्षेत्रीय वन अधिकारी, बाघ परियोजना जांच कर रहा है।

श्री दिग्विजय सिंह : अध्यक्ष महोदय, यह अवैध शिकार कब हुआ और दोषी व्यक्ति कौन था?

श्री शीशराम ओला : इसका सही पता तो जांच मुकम्मल होने पर ही लगेगा।

श्री शोपत सिंह : फिर आपने पकडा किसको है?

श्री शीशराम ओला : सुनो तो सही।

श्री देवीसिंह भाटी (कोलायत) : यह क्या बोलने का तरीका है ?

श्री शोपत सिंह : एक तरफ तो आप कह रहे हैं पकड़ लिया है, दूसरी तरफ कह रहे हैं, मालूम नहीं।

एक माननीय सदस्य : शान्ति से बोलिये, साहब।

श्री अध्यक्ष : आप शान्ति से बोलिये। आप उत्तेजित क्यों हो रहे हैं ?

श्री शीशराम ओला : 22-1-85 को रात में दो बजकर तीस मिनट पर जब फोरेस्ट गार्ड ओम प्रकाश ड्यूटी पर था तो उसे पता लगा कि सड़क से करीब 100 मीटर दूर एक बघेरा मरा पड़ा है। उसकी उसने इत्तिला दी। वहां पर टेलीफोन से सूचना की कोई व्यवस्था न होने पर एफ.आई.आर. दर्ज करायी गई। जब वह वापस आया तो कुछ लोग भागते हुए पाये गये। उसको उन्होंने पकड़ा। उनमें से एक व्यक्ति सवाई माधोपुर रेलवे स्टेशन कालोनी में रहता है जिसका नाम मैसी है। वहीं उसको गिरफ्तार किया गया। उसके बाद उसे जमानत पर रिहा कर दिया गया। उसके हथियारों को जब्त कर लिया गया है। जांच जारी है, जांच रिपोर्ट आने पर ही आगे की कार्यवाही की जायेगी।

श्री दिग्विजय सिंह : मैं जानकारी चाहता हूँ, क्या वाइल्ड लाइफ प्रोटेक्शन एक्ट के तहत इसे प्रोटेक्टेड एनीमल डिक्लेर किया हुआ है ?

श्री शीशराम ओला : किया हुआ है इसीलिए तो यह सब कार्यवाही की है।

श्री दिग्विजय सिंह : इसीलिए किया है, सीधे सीधे ही बता दें।

श्री शीशराम ओला : जी, किया हुआ है।

श्री शोपत सिंह : माननीय अध्यक्ष महोदय, जो टाइगर मारा गया है वह किस चीज से मारा गया है, बंदूक से या लाठी से ?

श्री शीशराम ओला : मृत पाया गया। जांच करवा रहे हैं।

श्री शोपत सिंह : पोस्टमार्टम हुआ है उसका क्या बात कर रहे हैं आप बहुत रेलेवेन्ट क्वेश्चन है, इनको मालूम नहीं, क्या है।

श्री अध्यक्ष : मारा गया है, पकड़ा गया है, कार्यवाही हो रही।

श्री शीशराम ओला : राइफल से मारा गया है। राइफल जब्त कर ली गई है, आदमी को गिरफ्तार कर लिया गया है।

श्री अध्यक्ष : श्री रामसिंह जी !

श्री दिग्विजय सिंह : मरा पाया गया, जब इत्तिला की गई तो……

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आपस में बातें नहीं।

श्री दिग्विजय सिंह : बघेरा रोड़ साइड में मरा पाया गया। उसका शिकार अन्दर किया गया या बाहर हुआ ? हो सकता है, गोली अन्दर लगी हो।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, कार्यवाही हो रही है। यह तो जांच का विषय है।

श्री देवीसिंह भाटी : अध्यक्ष महोदय, यह जांच का विषय नहीं है। मौके पर जांच होती है तब ही मौके पर नकल बन जाती है। उसके कितनी गोलियां लगी हैं, 2 या 4 ?

श्री दिग्विजय सिंह : मैं यह जानना चाहूँगा, बाघ वहां मरा हुआ पाया गया, वह स्थान जहां शिकार हुआ बीच में था ? एफ आई. आर. कब दर्ज कराई गई ?

श्रीमती विद्या पाठक (सांगानेर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्रीजी से यह सूचना चाहूँगी, क्या यह सही है कि पिछले चार-पांच वर्षों में कई बघेरों का शिकार इसी टाइगर प्रोजेक्ट में हुआ, और कोई अधिकारी-कर्मचारी अभी तक दोषी नहीं पाया गया ? उनको नेग्लीजेंस या किसी और तरह का कोई दण्ड नहीं दिया गया है ? इस तरह का जो अवैध व्यापार किया जा रहा है उसका सम्बन्ध इस तरह की शिकारों से है ?

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्या, कृपया बैठ जाय।

श्री शीशराम ओला : यह अलग से प्रश्न है।

श्रीमती विद्या पाठक : अलग से नहीं है।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज।

(व्यवधान)

श्री देवीसिंह भाटी : अध्यक्ष महोदय, अलग से नहीं है, इसी से सम्बन्धित है।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज।

श्री देवीसिंह भाटी : अध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार से 6 बघेरे मारे गये लेकिन टाइगर प्रोजेक्ट अधिकारी के खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं हुई।

श्री दिग्विजयसिंह : अध्यक्ष महोदय, उक्त अधिकारी को उच्च संरक्षण प्राप्त है ··

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आपका स्पेसिफिक प्रश्न था उसका जवाब दे दिया गया। अब जो यह प्रश्न पूछा गया कि यह बघेरा किस जगह पाया गया, सैन्चुरी के बीच में या बाहर पाया गया··

श्री शीशराम ओला : सैन्चुरी के बाहर पाया गया।

श्री अध्यक्ष : नेक्स्ट। श्री राजकुमार जयपाल।

श्रीमती विद्या पाठक : अध्यक्ष महोदय, मेरे प्रश्न का जवाब नहीं आया।

श्री अध्यक्ष : कृपया बैठ जायं माननीय सदस्या।

(व्यवधान)

माननीय सदस्या, दूसरा प्रश्न पुकार लिया गया है।

(व्यवधान)

श्री देवीसिंह भाटी : अध्यक्ष महोदय, बहुत ही रेलेवेन्ट प्रश्न है।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज। कृपया बैठ जायं। इस प्रश्न का जवाब आ चुका है। माननीय सदस्य।

(व्यवधान)

श्री देवीसिंह भाटी : अध्यक्ष महोदय, इस सम्बन्ध में तत्कालीन प्रधान मंत्री, श्रीमती इन्दिरा गांधी ने लेटर लिखा था, जो अवैध शिकार हो रहे हैं इनको रोका जाय क्योंकि लाखों रुपये इसमें लगे हैं। इस प्रकार से अवैध शिकार किये जा रहे हैं और लगातार किये जा रहे हैं। उन्होंने स्वयं इस सम्बन्ध में चिन्ता व्यक्त की थी लेकिन एक भी अधिकारी के खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं हुई। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं कि ऐसे ××× मंत्री को इस्तीफा दे देना चाहिये।

श्री अध्यक्ष : अगला प्रश्न।

अजमेर नगर परिषद् का चुनाव

3. **श्री राजकुमार जयपाल (अजमेर-पूर्व)** : क्या निर्वाचन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:-

क्या सरकार का अजमेर नगर परिषद् का चुनाव कराने का विचार है ? यदि हां, तो कब तक ? नहीं तो क्यों ?

निर्वाचन मंत्री (श्री रामदेवसिंह) : चुनाव यथा-शीघ्र कराये जाने का प्रश्न सरकार के विचाराधीन है।

श्री शोपतसिंह (हनुमानगढ) : अध्यक्ष महोदय क्या बोले, सुना नहीं।

श्री अध्यक्ष : दुबारा आप सुन लें।

श्री रामदेवसिंह : चुनाव यथाशीघ्र कराये जाने का प्रश्न सरकार के विचाराधीन है।

श्री राजकुमार जयपाल : अध्यक्ष महोदय, भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है...

श्री अध्यक्ष: आप भूमिका मत बनाइये आप प्रश्न पूछिये।

श्री राजकुमार जयपाल : कब से विचाराधीन है ?

श्री रामदेवसिंह : यथा समय से विचारधीन चल रहे है।

श्री नत्थीसिंह (कुम्हेर) : यथा-समय की क्या परिभाषा है ?

श्री रामदेव सिंह : 1982 में 192 नगरपालिकाओं में से 143 नगरपालिकाओं के चुनाव करवा दिये गये थे और शेष नगरपालिकाओं के चुनाव इसलिये नहीं कराये जा सके कि वार्डों का निर्माण नहीं हुआ था, मतदाता सूची तैयार नहीं थी। इन सारी बातों को देख कर उस वक्त 143 नगरपालिकाओं के चुनाव तो करवा दिये गये शेष रही नगरपालिकाओं के चुनाव जल्दी से जल्दी करवा दिये जायेंगे।

××× शब्द माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित किया गया।

श्री दाऊदयाल जोशी : आप तारीख बतायें ?

श्री अध्यक्ष माननीय सदस्य, नेता महोदय।

मुख्य मंत्री (श्री हरिदेव जोशी) : इस वर्ष के अन्त तक करवा दिये जायेंगे।

श्री ललित किशोर चतुर्वेदी : अध्यक्ष महोदय, पिछले चुनाव में राज्य सरकार ने कितनी ही बार नगरपालिकाओं के चुनाव कराने की घोषणा की, घोषणा करने के पश्चात् चुनाव नहीं कराये गये। समस्या क्या है ?

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज।

श्री हरिदेव जोशी : कई समस्यायें सामने आती हैं, एडमिनिस्ट्रेटिव रीजन्स रहते हैं जैसे परिसीमन नहीं हुआ, वोटर-लिस्ट कम्पलीट नहीं हुई, नये इलाके जोड़े गये आदि कई प्रकार की समस्यायें होती हैं। राज्य सरकार की मंशा शुरू से इन सारी चीजों को कम्पलीट करके जल्दी चुनाव कराने की है।

श्री अध्यक्ष : नेक्स्ट।

श्री भंवरलाल शर्मा : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मुख्य मंत्रीजी से यह पूछना चाहता हूं, वह कृपया यह बतायें कि आपने जो घोषणा की है वह अजमेर नगरपालिका के बारे में है या जयपुर, जोधपुर, कोटा आदि सब जगहों के लिये है ?

श्री रामदेव सिंह : बची हुई सब के लिये।

श्री भंवरलाल शर्मा ; मैं माननीय मुख्य मंत्रीजी से पूछना चाहता हूं, आपसे नहीं।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य !

(व्यवधान)

श्री भैरूलाल भारद्वाज (जमवा रामगढ़) : अध्यक्ष महोदय, इनकी पार्टी के राज में भी चुनाव नहीं हुये।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज।

श्री भंवरलाल शर्मा : जयपुर शहर के बारे में···

श्री हरिदेव जोशी : अलग-अलग म्युनिसिपैलिटीज के बारे में तो मैं नहीं कह सकता लेकिन राज्य सरकार द्वारा वर्ष के अन्त तक पंचायत समितियों, जिला परिषदों और म्युनिसिपैलिटीज के चुनाव करवा दिये जायेंगे। इनकी प्राब्लम्स को समाप्त करके अगले वर्ष के अन्त में, दिसम्बर के अन्त तक···

श्री भंवरलाल शर्मा : प्राब्लम्स बता दीजिये ?

श्री भैरूलाल भारद्वाज : आपने भी जनता पार्टी के समय चुनाव नहीं करवाये थे ?

श्री ललित किशोर चतुर्वेदी : हमने 21 साल की उम्र को 18 साल करने का प्रावधान किया था। 18 साल के नवयुवक को मताधिकार का प्रयोग करने की बात कही थी।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज।

श्री दाऊदयाल जोशी : अध्यक्ष महोदय, मैं सदन के नेता महोदय से पूछना चाहता हूँ कि क्या 18 वर्ष के नवयुवक को वोट देने का अधिकार मिलेगा ? उसको वोट देने का अधिकार दिया जायेगा ?

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज । इसका इस प्रश्न से सम्बन्ध नहीं है। यह जनरल डिबेट नहीं है, माननीय सदस्य ।

(व्यवधान)

माननीय सदस्य, बैठ जायं ।

श्री मानिक चन्द सुराणा (लूणकरणसर) : ऑन ए पाइन्ट ऑफ कन्फर्मेशन, सर ।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य ।

श्री मानिक चन्द सुराणा : मैं एक प्रश्न पूछना चाहता हूं । मैं यह जानकारी करना चाहता हूं, सदन के माननीय नेता महोदय ने अपने जवाब में पहले तो यह कहा कि वर्ष के अन्त तक करवा दिये जायेंगे और फिर कहा कि अगले वर्ष में करवा दिये जायेंगे । यह दो बातें कही हैं ।

श्री हरिदेव जोशी : दिसम्बर तक करवा दिये जायेंगे । अगले वर्ष से मतलब अप्रेल से मार्च के हिसाब से था । स्पेसिफिक मैंने कहा है कि दिसम्बर के अन्त तक करवा दिये जायेंगे ।

श्री दाऊदयाल जोशी : 18 वर्ष के नवयुवक को मताधिकार दिया जायेगा ?

श्री अध्यक्ष : अगला प्रश्न ।

श्री ललित किशोर चतुर्वेदी : क्या युवा वर्ष में भी युवाओं को यह अधिकार नहीं दिया जायेगा ?

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, बैठ जायं । नियमों का पालन करें ।

(व्यवधान)

श्री शिवराम शर्मा (बनीपार्क) : यह क्वेश्चन आवर की कार्यवाही को ढंग से नहीं चलने दे रहे हैं, इन्हें आप रोकें ।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, बैठ जायं । आर्डर प्लीज ।

अगला प्रश्न ।

वृद्धावस्था पेंशन के विचाराधीन प्रकरण

4. श्री जयकृष्ण तोसावड़ा (दूदू) : क्या समाज कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :

(1) विधान सभा क्षेत्र दूदू में कितने-कितने पुरुष एवं महिलाओं को वृद्धावस्था पेंशन उपलब्ध हो रही है ? कृपया सूची सदन की मेज पर रखें ।

(2) इस क्षेत्र में, कितने-कितने पुरुषों व महिलाओं के वृद्धावस्था पेंशन योजना के अन्तर्गत आवेदन-पत्र विचाराधीन हैं और अब इन पर कब तक स्वीकृति मिल जायेगी ? कृपया विचाराधीन मामलों की सूची सदन के पटल पर रखें ।

राज्य मंत्री, समाज कल्याण (श्री छोगाराम बाकोलिया) : (1) विधान सभा क्षेत्र दूदू में 80 पुरुषों, 145 महिलाओं तथा 14

(श्री छोगाराम बाकोलिया)
पुरुष व महिलाओं को संयुक्त वृद्धावस्था पेंशन उपलब्ध हो रही है। सूची सदन की मेज पर रख दी गई है। (परिशिष्ट—क)

(2) इस क्षेत्र में 22 पुरुषों एवं 22 महिलाओं के प्रकरण विचाराधीन हैं जिनमें एक प्रकरण तहसील सांभर का है जिसे इसी माह में निपटा दिया जायेगा। शेष मामले पंचायत समिति दूदू के हैं। यह मामले एक माह में निपटाने के निर्देश दे दिये गये हैं। सूची सदन के पटल पर रख दी गई है। (परिशिष्ट—ख)

(सूचियों के लिये कृपया परिशिष्ट i देखें।)

श्री जयकृष्ण तोसावड़ा : अध्यक्ष महोदय, जो 22 प्रकरण विचाराधीन बताये गये हैं, मैं आपके माध्यम से माननीय मन्त्री महोदय से पूछना चाहता हूं कि उनको कब तक निपटा दिया जायेगा?

श्री अध्यक्ष : मन्त्री महोदय ने कहा, उसके लिए लिख दिया गया है।

श्री जयकृष्ण तोसावड़ा : मेरा दूसरा निवेदन यह है माननीय मन्त्री महोदय को जो कि वृद्धावस्था पेन्शन योजना घोषित की है सरकार ने, उसके अन्दर ऐज की लिमिटेशन थी वह समाप्त कर दी गई हैं या नहीं? यदि की गई है, तो किस ऐज पर लाकर छोड़ दिया गया है।

श्री अध्यक्ष : यह अलग से प्रश्न है। नेक्स्ट, श्रीमती सुमित्रा सिंह!

(व्यवधान)

माननीय सदस्य, कृपया बैठें। माननीय सदस्य, नियमों का पालन करें कृपया बैठें। श्रीमती सुमित्रा सिंह!

(व्यवधान)

ऑर्डर प्लीज।

ग्राम पंचायत मुकाना (झुन्झुनूं) के ऑडिट में पाई गई अनियमिततायें

5. श्रीमती सुमित्रा सिंह (पिलानी) : क्या ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे—

(1) क्या ग्राम पंचायत मुकाना, पंचायत समिति, चिड़ावा, जिला झुंझुनूं का 1978-79 से 1981-82 तक का विशेष ऑडिट करवाया गया है? यदि हां, तो कब?

(2) क्या यह सही है कि भूतपूर्व सरपंच के खिलाफ 110 क्विन्टल गेहूं व काफी बड़ी धनराशि का गबन का मामला सामने आया था? यदि हां; तो इस सम्बन्ध में अब तक क्या कार्यवाही की गई?

ग्रामीण विकास एवं पंचायत राज मन्त्री (श्री नरेन्द्रसिंह भाटी) : (1) जी हां, ग्राम पंचायत, मुकाना का विशेष ऑडिट वर्ष 1978 से 1981-82 का स्थानीय निधि अंकेक्षण विभाग द्वारा दिनांक 27-7-82 से 31-7-82 तक किया गया।

(2) जी हां, ऑडिट द्वारा तत्कालीन सरपंच के खिलाफ छीजत, मस्टररोल में अनियमितता आदि विभिन्न कारणों से

(श्री नरेन्द्रसिंह भाटी)
118 क्विन्टल 23 किलो 400 ग्राम (न कि 110 क्विन्टल) गेहूं का मूल्य वसूली योग्य पाया गया तथा अन्य राशि का गबन/अनियमित भुगतान पाये गये। तत्कालीन सरपंच का स्पष्टीकरण प्राप्त किया गया है; 11 ऑडिट आक्षेपों के रुपये 1218-10 की राशि सरपंच या सम्बन्धित व्यक्ति द्वारा जमा करा दी गई है। गेहूं सम्बन्धी तथा अन्य आक्षेपों के सम्बन्ध में प्राप्त स्पष्टीकरण पर आगे पंचायत समिति स्तर पर जांच की जा रही है। इस सम्बन्ध में मुन्सिफ मजिस्ट्रेट न्यायालय, चिड़ावा में भी मुकदमा विचाराधीन है।

श्री भंवरलाल शर्मा (हवा महल) : Under what section ?

श्रीमती सुमित्रासिंह : क्या 12-5-83 को राजस्थान की सरकार ने जिसने गबन किया है, अनियमितता की है, इससे प्रभावित होकर केस विथड्रा कर लिया है।

श्री नरेन्द्रसिंह भाटी : नहीं।

श्रीमती सुमित्रासिंह : तो फिर आप क्या जवाब दे रहे हैं। मैं इस आदेश की संख्या बता रही हूं।

श्री नरेन्द्रसिंह भाटी : मैं आपको निवेदन कर रहा हूं जो जांच हो रही है, कुल 41 चार्जेज थे, इन सरपंच साहब के खिलाफ।

एक माननीय सदस्य : यह केस विथड्रा करने के बारे में पूछ रही हैं।

श्री नरेन्द्रसिंह भाटी : आप आन्सर पढ़िये। मुन्सिफ मजिस्ट्रेट के सामने अभी तक भी विचाराधीन है वह केस।

श्रीमती सुमित्रासिंह : विभाग तो विथड्रा कर चुका है।

श्री नरेन्द्रसिंह भाटी : मेरे को पता है, मौजूदा सरपंच है उनका भी केस दर्ज कर दिया गया था।

श्री शोपतसिंह (हनुमानगढ़) : उनका और हो गया।

श्री नरेन्द्रसिंह भाटी : सरकार ने 83 में विथड्रा कर लिया लेकिन मुन्सिफ मजिस्ट्रेट के यहां अभी केस चालू है।

श्रीमती सुमित्रासिंह : माननीय अध्यक्ष महोदय, पत्र संख्या एफ 3 (एच.) झुंझुनूं/83/2620 दिनांक 12-5-83

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर प्लीज।

श्रीमती सुमित्रासिंह : इस केस को यह कहते हैं कि सरपंच पंचायत समिति, मुकाना के विरुद्ध कोई ठोस तथ्य नहीं पाये गये इसलिए इसके विरुद्ध किसी प्रकार की कोई कार्यवाही नहीं की जानी चाहिए, ऐसी स्थिति में सलाह दी जाती है कि मुकदमे को वापस लेने की कार्यवाही करें। यह चिट्ठी लिखी है जिलाधीश झुंझुनूं को।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्या, यह कब का है ?

श्रीमती सुमित्रासिंह : 12-5-83 का। यह केस विथड्रा हो गया। मुन्सिफ कोर्ट में तो प्राइवेट इस्तगासा पेश किया हुआ है।

श्री अध्यक्ष : यह जो केस चल रहा है ओरिजिनल चल रहा है या वही चल रहा है।

श्री नरेन्द्र सिंह भाटी : वही चल रहा है।

श्रीमती सुमित्रा सिंह : नहीं चल रहा है, भूतपूर्व मन्त्री महोदय ने आपको गुमराह किया है। आपको जानकारी नहीं है।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : माननीय मन्त्री जी।

श्री नरेन्द्र सिंह भाटी : आप सुनियेगा तो सही सरकार तो हमारी ही रहेगी चतुर्वेदीजी, चिन्ता मत करिये।

(व्यवधान)

श्रीमती सुमित्रा सिंह : इसका मतलब है आप राजीव गांधी की नीतियों में विश्वास नहीं करते हैं, स्वच्छ छवि की बात नहीं कर रहे हैं।

श्री नरेन्द्र सिंह भाटी : जिलाधीश महोदय को चिट्ठी गई थी, मैं मानता हूं लेकिन आज की तारीख में वह केस विथड्रा नहीं हुआ है।

(व्यवधान)

चतुर्वेदी साहब, आप कुछ और····

श्री यदुनाथ सिंह (नदबई) : राज्य सरकार की आज्ञा को जिलाधीश न माने तो ?

श्रीमती सुमित्रा सिंह : क्या यह सही है कि राज्य सरकार ने वर्तमान सरपंच को इसलिए सस्पेण्ड किया कि भूतपूर्व सरपंच के खिलाफ गबन का केस दायर किया ?

श्री नरेन्द्रसिंह भाटी : वर्तमान सरपंच के खिलाफ कुछ आब्जेक्शंस आये थे, कुछ आरोप थे, उनकी इन्क्वायरी चल रही है, आप डिटेल्स चाहें तो दूसरे प्रश्न के माध्यम से पूछ सकती हैं।

श्री नत्थीसिंह (कुम्हेर): क्या इस्तगासा दायर करने की वजह से उसको सस्पेण्ड किया गया था ?

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : वर्तमान सरपंच के बारे में इस प्रश्न में नहीं पूछा गया है।

(व्यवधान)

श्री नत्थीसिंह : भूतपूर्व सरपंच पर जो मुकदमा दायर हुआ है वह वर्तमान सरपंच ने किया है इसलिए उसको मुअत्तिल किया है।

श्री अध्यक्ष : मन्त्री जी ने यह कह दिया है कि····

(व्यवधान)

इस्तगासा दायर नहीं हुआ है।

श्री मानिकचन्द सुराना(लूणकरणसर): अध्यक्षजी, मैं यह जानना चाहूंगा राज्य सरकार ने जिलाधीश झुंझुनूं को आदेश भेजा, कलेक्टर झुंझुनूं ने इस मुकदमे को विथड्रा करने की कार्यवाही अदालत में की या नहीं ? यदि की, तो क्या मुन्सिफ मजिस्ट्रेट ने रिजेक्ट कर दिया ?

श्री पंकज पंचोली (बेगू) : माननीय सदस्य ने जो पत्र पढ़कर सुनाया है उसमें सलाह दी गई है।

श्री नरेन्द्रसिंह भाटी : अध्यक्ष जी, उस चिट्ठी में जिलाधीश को सलाह दी गई है, मुन्सिफ मजिस्ट्रेट के सामने रिक्वेस्ट गई नहीं है इसलिये विथड्रा नहीं हुआ। आज की स्थिति यह है कि केस विथड्रा नहीं हुआ।

श्री अध्यक्ष : किसी केस को होम डिपार्टमेंट विथड्रा करता है या डिपार्टमेंट स्वयं विथड्रा करता है।

श्री नरेन्द्रसिंह भाटी : होम डिपार्टमेंट।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : नेक्स्ट श्री अश्क अली !

(व्यवधान)

रेगिस्तान के विस्तार पर नियन्त्रण

6. **श्री अश्क अली टांक** (फतेहपुर) : क्या वन तथा पर्यावरण मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) राज्य सरकार बढ़ते हुए रेगिस्तान को रोकने हेतु कोई ठोस कार्यक्रम बनाकर लागू करने का विचार रखती है? यदि हां, तो कब तक एवं किस प्रकार?

(2) मरुस्थल विकास बोर्ड द्वारा अब तक इस संदर्भ में क्या प्रयास किये गये?

वन तथा पर्यावरण मन्त्री (श्री नरेन्द्र सिंह भाटी) : (1) रेगिस्तान के प्रसार को रोकने हेतु रेगिस्तान क्षेत्र के विकास के लिये राज्य में वर्ष 1977-78 से मरु विकास कार्यक्रम का क्रियान्वयन किया जा रहा है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य मरुस्थल प्रसार को रोकना, इस क्षेत्र का आर्थिक विकास एवं परिसम्पत्ति सृजन द्वारा रोजगार की सुविधायें उपलब्ध कराना है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत वर्ष 1977-78 से दिसम्बर, 84 तक लगभग 69.28 करोड़ रुपये विभिन्न योजनाओं पर व्यय किये जा चुके हैं। जिनमें मुख्यतः मरुस्थलीय वृक्षारोपण एवं टीबा स्थरीकरण कार्य, भू-संरक्षण आदि मुख्य हैं।

भारत सरकार से प्राप्त संकेतों के अनुसार इस कार्यक्रम के सातवीं पंचवर्षीय योजना में भी जारी रहने की सम्भावना है।

उक्त कार्यक्रम के अतिरिक्त मरुस्थल के प्रसार को रोकने एवं इस क्षेत्र के लिये विशिष्ट योजना संगठन द्वारा वृहद परियोजना तैयार की गई जिससे कि इस कार्य के लिए भारत सरकार से अधिक धनराशि प्राप्त की जा सके। इसके अन्तर्गत 11 मरुस्थलीय जिलों एवं इनके निकट स्थित क्षेत्रों के विकास हेतु प्रस्ताव तैयार किये गये हैं। यह परियोजना पांच वर्ष की अवधि के लिये तैयार की गई है तथा इसकी कुल लागत 560 करोड़ रुपया है। राज्य सरकार इस परियोजना को भारत सरकार को प्रस्तुत करने पर विचार कर रही है।

(व्यवधान)

(2) मरुस्थल मण्डल का गठन राज्य सरकार के क्रमांक प-7 (3) (1) कृषि/5/75 दिनांक 12-1-76 द्वारा किया गया

(श्री नरेन्द्र सिंह भाटी)

था। मण्डल के गठन के पश्चात् इसकी एक भी बैठक नहीं हो पाई है क्योंकि मान्यता थी 112 सदस्यीय मण्डल सुचारु रूप से कार्य नहीं कर सकता। मण्डल के पुनर्गठन के सन्दर्भ में 39 सदस्यीय मरु विकास मण्डल के गठन का प्रस्ताव सरकार के विचाराधीन है।

श्री अश्क अली टांक : अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मन्त्रीजी से यह पूछना चाहूँगा कि सन् 77-78 से पहले राजस्थान में कितना रेगिस्तान था? इस योजना के प्रारम्भ होने के बाद से अब तक इस पर कितना रुपया खर्च कर दिया गया और उसके करने से इस योजना की उपलब्धि क्या रही, हमने इसके लिए जो प्रयास आज तक किये है क्या आज उनसे सन्तुष्ट हैं?

(व्यवधान)

श्री भंवरलाल (हवा महल) : बोलने दो भाई।

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर, ऑर्डर, माननीय सदस्य। माननीय सदस्य को बोलने दें।

श्री अश्क अली टांक : अध्यक्ष महोदय, राज्य सरकार की एक रिपोर्ट इसके बारे में है उसको मुझे पढ़ने का मौका मिला, उस रिपोर्ट को पढ़ने में ऐसा लगा है कि राजस्थान में रेगिस्तान के विकास को रोकने के लिए जो कदम उठाये गये हैं वह बहुत ही कम हैं। इसकी प्रगति इसी तरह चलती रही तो, मैं समझता हूँ, इसमें कम से कम 15-20 साल लग जायेंगे।

मुख्य मंत्री (श्री हरिदेव जोशी) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मरु विकास और डेजर्ट को कन्टेन करने के लिए जितनी प्रोग्रेस होनी चाहिये थी उतनी प्रोग्रेस हमारे यहां नहीं हो पाई है। इसमें जैसा माननीय सदस्य ने कहा कि 15-20 साल लग जायेंगे, मैं तो समझता हूँ कि इसमें पीढ़ियां लग जायेंगी। इसको रोकना राजस्थान सरकार के अकेले के बूते में नहीं है। इसके लिए हम सातवीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत स्कीम बनाकर भारत सरकार से अधिक से अधिक पैसा लेने की कोशिश करेंगे। इसके लिए हमने भारत सरकार को प्रस्ताव कर रखा है।

श्री अश्क अली टांक : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं सदन के नेता महोदय से यह पूछना चाहूँगा कि जिस प्रकार यू. एस. एस. आर. में....

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर, ऑर्डर।

श्री अश्क अली टांक : अध्यक्ष महोदय, जिस प्रकार यू. एस.एस. आर. में उजबेगिस्तान, जहां पर कि बहुत बड़ा रेगिस्तान था...

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, मुझे यू. एस. एस. आर. जाने का मौका मिला था वहां पर मैंने उजबेगिस्तान में जहां बहुत बड़ा रेगिस्तान था, वर्ल्ड का सबसे बड़ा रेगिस्तान था...

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, प्रश्न पूछें।

श्री अश्क अली टांक : अध्यक्ष महोदय, जिस प्रकार यू एस. एस. आर. ने उजबेगिस्तान के रेगिस्तान को साइन्टिफिक टेक्ना-

(श्री अश्कअली टांक)
लॉजी द्वारा विकसित करके कन्ट्रोल किया, जिस प्रकार इजराइल ने अपने यहां पर जो रेगिस्तान था उसको कन्ट्रोल किया, क्या अपने यहां पर उसी प्रकार से रेगिस्तान को रोकने के लिये कदम नहीं उठाये जा सकते हैं ?

श्री हरिदेव जोशी : मैं माननीय सदस्य ने जो कुछ बताया है उससे सहमत हूं लेकिन इजराइल और उजबेगिस्तान में जो कार्य किये गये। वैसी प्रोग्रेस करने के रिसोर्सेज राजस्थान में नहीं हैं। राजस्थान के रिसोर्सेज उसके आगे कुछ भी नहीं है। इसमें जब तक भारत सरकार हमारी मदद नहीं करती तब तक हम इससे ज्यादा प्रोग्रेस नहीं कर सकते हैं।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : नेक्स्ट। श्री गिरधारीलाल भार्गव !

श्री अध्यक्ष : आर्डर, आर्डर। आर्डर, माननीय सदस्य। श्री छंगाणी ।

श्री मोहनलाल छंगाणी (फलोदी) : अध्यक्ष महोदय, आज इस रेगिस्तान को नहीं रोके जाने के कारण यह रेगिस्तान आगे बढ़ता जा रहा है। यह जो हमारी योजना इसे खतम करने के लिए बनाई गई है, वह सारी कागजी प्रोग्रेस है, यह मेरा खुद का अनुभव है।

(व्यवधान)

श्री मोहनलाल छंगाणी : ज्यों ज्यों इसमें समय लगेगा त्यों त्यों यह रेगिस्तान बढता रहेगा और यह पूरा का पूरा इलाका रेगिस्तान में बदल जायगा। हमें इसके हल के लिए ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि वहां ज्यादा घास उगाई जाय वहां पर दूध, बटर वगैरह पैदा किया जाना चाहिये। जब तक हम इसको नहीं करेंगे तब तक इसका कोई हल नहीं होगा। हमें सोइल कन्जरवेशन के लिए ज्यादा से ज्यादा कदम उठाने पड़ेंगे।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, प्रश्न पूछे।

श्री मोहनलाल छंगाणी : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं पिछली बार भूतपूर्व प्राइम मिनिस्टर से मिला था और रेगिस्तान की बढोतरी के बारे में मैंने उनसे शिकायत की थी। अध्यक्ष महोदय, आज भी रेगिस्तान की यह हालत है कि वहां पर विदेशी बबूल का उपयोग इसको रोकने के लिए किया जाता है। अगर आप रेगिस्तानी इलाके में जाकर देखेंगे तो आपको पता लगेगा कि फारेस्ट डिपार्टमेन्ट की तरफ से 95 प्रतिशत इलाके में यह अंग्रेजी बबूल के पेड वहां पर लगाये हुए है। इस तरह से तो काम चलने वाला है नहीं। इसके लिए सोइल कंजर्वेशन की जब तक हम कोई व्यापक योजना नहीं बनायेंगे जब तक इसमें बहुत समय लगेगा। इसलिए इसमें विशेष कार्यक्रम बनाने की आवश्यकता है।

श्री हरिदेव जोशी : अध्यक्ष महोदय, जैसा माननीय सदस्य ने कहा है, उससे मैं एक हद तक सहमत हूं कि उसके लिए एक व्यापक राजकीय नीति बनाई जानी चाहिये। यह कार्य छोटे छोटे टुकडों में किया जाय तो पूरा नहीं होगा। इसके

(श्री हरिदेव जोशी)

लिये एक रिपोर्ट श्री नाथूराम मिर्धा की अध्यक्षता में एक कमेटी बनी थी इसने दी है उसी के आधार पर एक स्कीम बना कर राज्य सरकार ने कुछ प्रयत्न किया है पर यह एक बहुत ही छोटा प्रयत्न है। इस मरु विकास और रेगिस्तान को बढ़ने से रोकने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर प्रयत्न किए जाने चाहिए। हमारे पास न तो इतने एक्सपर्ट लोग हैं जिससे हम इस काम को कर सके। इसलिए जब तक भारत सरकार हमारी इस काम में मदद नहीं करें तब तक रेगिस्तान को रोकना असंभव है। सातवीं पंचवर्षीय योजना में इसको इनक्लूड करने के लिए हमने एक योजना तैयार की है।

श्री केदारनाथ शर्मा (गंगानगर) : इस पर कितना खर्चा आयेगा ?

श्री नाथूराम मिर्धा (मेड़ता) : डेजर्ट को रोकने के लिए जो रिपोर्ट दी गई थी उसमें मेन प्रॉब्लम भारत सरकार ने जो कमीशन बैठाया था उसके सामने जो आई उसके हल का जिम्मा केन्द्र सरकार का ही रखा गया था लेकिन उसके बाद में जनता पार्टी का शासन आ गया था और मेरे ख्याल से यह तय हुआ था कि इसके रिसोर्सेज पचास प्रतिशत तो स्टेट के होंगे और पचास प्रतिशत केन्द्र इसके लिए पैसा देगा, इसके बारे में कमीशन ने रिपोर्ट दी थी। पर राज्य सरकार इसको वहन नहीं कर सकती है। मैं समझता हूँ कि इस प्लान को इम्पली-मेन्ट करने के लिए सारे रिसोर्सेज केन्द्र को जुटाने चाहिये। उसकी जिम्मेदारी केन्द्र ही उठा सकता है। जहां तक इसको प्लान में इन्क्लूड करने का सवाल है, मुख्य मन्त्री जी जो पचास प्रतिशत राज्य सरकार को वहन करना है वह भी राज्य सरकार के ऊपर नहीं रहना चाहिये। सारा खर्चा केन्द्र के द्वारा ही वहन किया जाना चाहिये और सातवीं योजना में यह किया जाना चाहिये।

श्री हरिदेव जोशी : अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने जो यहां कहा है उसके लिये नीतिगत रूप से मैं सहमत हूँ क्योंकि यह कोई एक विशेष क्षेत्र की समस्या नहीं है, यह तो राष्ट्रीय समस्या है। इसको जब तक पूरे राष्ट्र की समस्या नहीं माना जायेगा तब तक इसका हल नहीं निकलेगा और हमारा राजस्थान इस रेगिस्तान के कारण हमेशा पिछड़ा रहेगा। रेगिस्तान के कारण हम सदियों तक पिछड़े ही हैं, रहेंगे अगर यह रेगिस्तान बढ़ता गया तो। यह हमारे देश के लिए एक खतरा है। जो रिपोर्ट में कहा गया है उससे मैं सहमत हूँ। आपकी रिपोर्ट पर राज्य सरकार ने विचार किया। हमने सातवीं पंचवर्षीय योजना के लिए कल ही इस मामले को डिसक्स किया और यह निर्णय लिया कि हम भारत सरकार से इसको रोकने के लिए निवेदन करेंगे। इसको नेशनल प्रॉब्लम मानते हुए इसके लिए कोई योजना तैयार की जाये, ऐसा उनको कहेंगे जब तक ऐसा नहीं होगा तब तक हमारा यह विकास का काम अधूरा ही रहेगा, यह काम पूरा नहीं हो सकेगा।

(12.00 म. प.)

श्री अध्यक्ष : प्रश्न काल समाप्त हुआ।

श्री गिरधारी लाल भार्गव (किशनपोल) : आपने मुझे पुकार लिया है···

श्री अध्यक्ष : केवल उत्तर दिलवा दूंगा।

श्री जगदीश प्रसाद तिवाड़ी (बस्सी) : 1981 में जो भयंकर बाढ़ आई थी उसमें काफी नुकसान हुआ और जो इसके लिए योजना बनाई गई थी······

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, इससे सम्बन्धित नहीं है, कृपया बैठे रहें।

श्री जगदीश प्रसाद तिवाड़ी : यह पूरक प्रश्न है, अध्यक्ष महोदय, इसी से सम्बन्धित है, मुझे बोल लेने दें।

श्री अध्यक्ष : कृपया बैठें।

श्री जगदीश प्रसाद तिवाड़ी : ठीक है साहब।

एक माननीय सदस्य : इधर आ जायें।

श्री अध्यक्ष: प्रश्न संख्या 7

जयपुर नगर में चिकित्सा सुविधाएँ

7. **श्री गिधारीलाल भार्गव** (किशनपोल): क्या चिकित्सा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) क्या जयपुर स्थित सवाई मानसिंह अस्पताल, जयपुर की जनसंख्या की आवश्यकता के सन्दर्भ में पर्याप्त है ?

(2) क्या यह सही है कि इस अस्पताल में रोगियों को पर्याप्त मात्रा में दवाई उपलब्ध नहीं कराई जाती हैं ? यदि हां, तो क्यों ?

(3) क्या जयपुर में जिला अस्पताल बनाये जाने की योजना विचाराधीन है ?

(4) क्या यह भी सही है कि सरकार जयपुर में पांच सेटेलाइट डिस्पेन्सरी खोलने पर विचार कर रही है ? यदि हां, तो कहां कहां और कब तक ?

चिकित्सा मन्त्री (श्री रामदेव सिंह) :
(1) जी हां।

(2) जी हां। उपचार एवं औषधियों की बढ़ती हुई मांग एवं सीमित वित्तीय साधनों को देखते हुए यह पर्याप्त नहीं है।

3) जी नहीं। वर्तमान में कोई प्रस्ताव विचाराधीन नहीं है।

(4) जयपुर शहर में चालू वित्तीय वर्ष में 50-50 शैय्याओं वाले दो सैटेलाइट अस्पताल बनाने की स्वीकृति जारी कर दी गई है, एक शास्त्री नगर में व दूसरा अर्जुनलाल सेठी नगर में। दानदाताओं से भवन-निर्माण के ठोस प्रस्ताव प्राप्त होने पर अन्य स्थानों पर सैटेलाइट अस्पताल खोलने पर विचार किया जा सकेगा।

श्री अध्यक्ष : प्रश्नकाल समाप्त हुआ।

श्री गिरधारी लाल भार्गव : माननीय अध्यक्ष महोदय, एक पूरक प्रश्न···

श्री अध्यक्ष : मानीय सदस्य, मैंने आपसे निवेदन किया था जवाब दिला दूंगा। कृपया सहयोग करें।

श्री गिरधारी लाल भार्गव : सहयोग करूंगा।

श्री अध्यक्ष : प्रश्नकाल समाप्त हुआ।

(शेष तारांकित प्रश्नोत्तर के लिये कृपया परिशिष्ट-2 देखें।)

अतारांकित प्रश्नोत्तर

राजस्थानी भाषा में बनने वाली फिल्मों को प्रोत्साहन

1. श्री घनश्याम तिवाड़ी (सीकर) : क्या जन सम्पर्क मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) क्या सरकार राजस्थानी भाषा में बनने वाली फिल्मों को प्रोत्साहन देने का विचार रखती है ? यदि हां, तो इस संबंध में क्या योजना विचाराधीन है ? यदि नहीं, तो क्यों ?

(2) क्या सरकार इस सम्बन्ध में जयपुर में स्टूडियो निर्माण के बारे में सोच रही है ? यदि हां, तो कब तक ? नहीं, तो क्यों ?

(3) क्या राजस्थानी भाषा में बनने वाली फिल्मों का दायरा सीमित होने के कारण सरकार उनको टैक्सों में छूट देने तथा रियायत देने अथवा विशेष प्रकार का अनुदान देने पर विचार कर रही है ? यदि हां, तो क्या इस सम्बन्ध में किसी समिति का गठन किया गया है ?

उत्तर

(1) जी हां ! राजस्थानी भाषा में बनी फिल्मों को मनोरंजन कर में छूट और फिल्म स्टूडियो के निर्माण हेतु कुछ सुविधाएं प्रदान करने पर राज्य सरकार विचार कर रही है ।

(2) राज्य सरकार स्टूडियो स्थापित करने के इच्छुक व्यक्तियों को अनुदान के रूप में सहायता देने की योजना पर विचार कर रही है ।

(3) जी हां, इस सम्बन्ध में राजस्व सचिव की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया था, जिसके सचिव उद्योग विभाग, प्रबन्ध निदेशक, राजस्थान औद्योगिक विकास निगम (रीको), आयुक्त, वाणिज्यिक कर, मुख्य वन संरक्षक तथा राजस्थान वित्त निगम के प्रतिनिधि, सचिव जयपुर विकास प्राधिकरण तथा विशिष्ठ शासन सचिव (वित्त) सदस्य थे । उक्त समिति द्वारा की गई सिफारिशें उच्च स्तर पर विचाराधीन हैं ।

रामनिवास बाग, जयपुर का चिड़ियाघर

2. श्री गिरधारीलाल भार्गव (किशनपोल):— क्या वन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) जयपुर स्थित रामनिवास बाग में चिड़ियाघर के लिए क्या स्थान पर्याप्त है ?

(2) क्या राज्य सरकार का विचार चिड़ियाघर को अन्य किसी स्थान पर ले जाने का है ? यदि हां, तो कब तक ?

उत्तर

(1) जी नहीं ।

(2) जी हां, । अभी तक कोई तिथि निश्चित नहीं की गयी है ।

20 सूत्री कार्यक्रम के क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन हेतु गठित समितियां

3. श्री जगदीशप्रसाद तिवाड़ी (बस्सी): क्या ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(श्री जगदीश प्रसाद तिवाड़ी)

(1) क्या यह सच है कि 20 सूत्री कार्यक्रम के क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन हेतु पंचायत समिति स्तर पर समितियां गठित हैं ?

(2) यदि हां, तो वर्ष 1984-85 में अब तक किस-किस पंचायत समिति द्वारा इस समिति की कब-कब बैठकें आयोजित की गई तथा बैठकों में किस-किस अधिकारी ने भाग नहीं लिया और क्यों ? यदि बैठकें नहीं बुलाई गई, तो क्यों ?

उत्तर

(1) जी हां। समिति के गठन के लिये राजकीय आदेश हैं।

(2) उपलब्ध सूचना के अनुसार इस समिति की बैठकें अधिकांश पंचायत समितियों में आयोजित नहीं की गई हैं, क्योंकि 20 सूत्री कार्यक्रम की प्रगति के क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन पर विचार पंचायत समिति/स्थायी समिति की बैठकों में कर लिया जाता है।

राज्य में नये अभयारण्य

4. **श्री घनश्याम तिवाड़ी** (सीकर): क्या वन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:–

(1) क्या राज्य सरकार राज्य में नये अभयारण्य बनाने का विचार कर रही है ? यदि हां, तो यह अभयारण्य किस-किस स्थान पर बनाये जायेंगे तथा इनका क्षेत्रफल क्या होगा ?

(2) क्या सरकार सीकर जिले में शाकम्भरी (सकराय) क्षेत्र में अभयारण्य बनाने का विचार कर रही है ? यदि हां, तो कब तक ? नहीं, तो क्यों ?

उत्तर

(1) निम्नांकित स्थानों पर अभयारण्य बनाने का प्रस्ताव विचाराधीन है :– उनके अनुमानित क्षेत्रफल उनके सामने अंकित है।

1. पीपलखूट बांसवाड़ा 120 वर्ग कि.मी.
2. माचिया कायलाना जोधपुर 7 वर्ग कि.मी.
3. बारेठा भरतपुर 20 वर्ग कि.मी.

(2) अभी तक इस संबंध में कोई प्रस्ताव विचाराधीन नहीं है।

क्षेत्र की उपयुक्तता का परीक्षण कर के ही आगे कार्यवाही संभव है।

प्राथमिक सहकारी भूमि विकास बैंकों में ऋणों की वसूली

5. **श्री जगदीश प्रसाद तिवाड़ी** (बस्सी): क्या सहकारिता मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:–

(1) राज्य में प्राथमिक सहकारी भूमि विकास बैंकों में वर्ष 1981 में जन-प्रतिनिधियों का संचालक मण्डल नियुक्त करने से पूर्व वर्ष 1979-80 एवं 1980-81 में ऋण वसूली का प्रतिशत एवं ऋण वितरण राशि क्या थी ? प्रत्येक बैंकवार एवं वर्षवार आंकड़े सदन के पटल पर रखें।

(5) वर्ष 1981-82, 1982-83 एवं 1983-84 में ऋण वसूली का प्रतिशत क्या रहा तथा ऋण वितरण कितना

(श्री जगदीश प्रसाद तिवाड़ी)
हुआ ? कृपया वर्षवार व बैंकवार आंकड़े सदन के पटल पर रखें।

(3) संचालक मण्डल भंग कर प्रशासक लगाने के बाद इन बैंकों की ऋण वसूली का प्रतिशत क्या रहा तथा ऋण वितरण कितना-कितना हुआ ? कृपया वर्षवार व बैंकवार आंकड़े सदन के पटल पर रखें।

उत्तर

(1) राज्य में प्राथमिक सहकारी भूमि विकास बैंकों में मनोनीत संचालक मण्डल की नियुक्ति करने से पूर्व वर्ष 1979-80 एवं 80-81 में ऋण वितरण का प्रतिशत संलग्न तालिका 'ए' पर उपलब्ध है।

(2) वसूली का प्रतिशत एवं ऋण वितरण वर्ष 1981-82, 82-83 एवं 83-84 आंकड़े वर्षवार बैंकवार तालिका 'बी' पर उपलब्ध है।

(3) मनोनीत संचालक मंडल के स्थान पर दिनांक 1-6-84 को प्रशासक लगाये गये थे। वर्ष 83-84 की ऋण वितरण की स्थिति तथा वसूली के प्रतिशत के बारे में सूचना संलग्न तालिका 'बी' पर है 1 जून, 1984 से पूर्व वर्ष 83-84 में ऋण वितरण की राशि एवं वसूली प्रतिशत तथा माह जून, 1984 में ऋण वितरण की राशि एवं वसूली प्रतिशत संलग्न परिशिष्ट 'स' पर उपलब्ध है। वर्ष 84-85 में ऋण वितरण राशि एवं वसूली प्रतिशत की सूचना जून, 1985 के उपरान्त उपलब्ध होगी।

(तालिका के लिये कृपया परिशिष्ट 3 देखें)

राज्य की वार्षिक योजना

6. श्री घनश्याम तिवाड़ी (सीकर) : क्या योजना मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे —

(1) सन् 1984-85 की वार्षिक योजना में कुल कितनी धनराशि व्यय करनी थी ? 28 फरवरी, 1985 तक किस-किस मद में कितना धन व्यय किया गया ?

(2) राज्य सरकार ने कितने संसाधन जुटाये तथा किस-किस संसाधन से कितनी-कितनी राशि उपलब्ध हुई ? कृपया विवरण सदन के पटल पर रखें।

उत्तर

(1) वर्ष 1984-85 की वार्षिक योजना में 430.38 करोड़ रुपये की राशि व्यय करनी है। इसके विरुद्ध 28 फरवरी, 85 तक 369.46 करोड़ रुपये व्यय (सम्भावित) किए गए हैं जिसका मदवार विवरण निम्न प्रकार है:—

मद	राशि (करोड़ रु.)
1. कृषि एवं सम्बद्ध कार्यक्रम	61.02
2. सहकारिता	1.45
3. जल एवं विद्युत विकास	177.03
4. उद्योग एवं खनिज	14.29
5. यातायात एवं संचार	17.05
6. सामाजिक एवं सामुदायिक सेवायें	96.84
7. आर्थिक सेवाएं	0.46
8. सामान्य सेवाएं	1.32
योग	369.46

(योजना मंत्री)

(2) वर्ष 1984-85 की वार्षिक योजना हेतु राज्य सरकार के संसाधन 94.93 करोड़ रुपये के अनुमानित थे। अनुमान है कि वर्ष के अन्त तक उपलब्ध राशि इससे कहीं अधिक होगी।

जिला कोटा एवं झालावाड़ में समाज कल्याण छात्रावास

7. **श्री प्रतापसिंह (छबड़ा), श्री हरीश शर्मा (खानपुर), श्री जगन्नाथ (मनोहर थाना)** : क्या समाज कल्याण मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) क्या यह सही है कि जिला कोटा में छबड़ा, छीपाबड़ौद एवं जिला झालावाड़ में अकलेरा, खानपुर में समाज कल्याण छात्रावास हैं ? यदि हां, तो प्रत्येक छात्रावास में कितने-कितने छात्र विद्याध्ययन हेतु रह रहे हैं ? कृपया सूची सदन की मेज पर रखें।

(2) नियमानुसार प्रत्येक छात्र को कितना राशन, कितनी आर्थिक सहायता तथा कपड़े, पुस्तकों इत्यादि की सहायता दी जाती हैं ? कृपया विवरण सदन की मेज पर रखें।

(3) क्या यह सही है कि उक्त सभी छात्रावासों में नियमानुसार राशन, पुस्तकें कापियां, कपड़े इत्यादि नहीं मिल रहे हैं तथा खाना भी घटिया व अस्वास्थ्यकर मिलता है ? यदि हां, तो सरकार इस स्थिति को सुधारने की ओर क्या कार्यवाही कर रही है ?

(4) उक्त छात्रावासों की जांच कब-कब किस अधिकारी द्वारा सन् 1980 से अब तक की गई ? कृपया जांच रिपोर्ट सदन की मेज पर रखें। यदि जांच नहीं हुई, तो क्यों ?

उत्तर

(1) जी हां। छबड़ा में 37; छीपा बड़ौद में 39 व खानपुर में 40 छात्र रह रहे हैं। अकलेरा में कोई राजकीय छात्रावास नहीं है।

(2) नियमानुसार प्रत्येक छात्र के लिये मैस भत्ता (जिसमें भोजन, वस्त्र, नाश्ता, तेल, साबुन, बिजली, पानी आदि का व्यय सम्मिलित है) कक्षा 9 से 11 तक के छात्रों को 106 रुपये प्रतिमाह तथा कक्षा 6 से 8 तक 100 रुपये प्रतिमाह के हिसाब से दिया जाता है। पुस्तकें व स्टेशनरी के लिये कक्षा 9 से 11 तक के छात्रों को 60 रुपये प्रति छात्र एवं कक्षा 6 से 8 तक के छात्रों को 40 रुपये प्रति छात्र एक शैक्षणिक-सत्र के लिए दिया जाता है। छात्रों द्वारा गठित मैस समिति ही भोजन, नाश्ते, वस्त्र, तेल-साबुन आदि की व्यवस्था करती है।

(3) जी नहीं।

(4) कोई शिकायत न आने के कारण इन छात्रावासों की कोई जांच नहीं हुई; इस कारण जांच रिपोर्ट प्रस्तुत करने का प्रश्न ही नहीं उठता है। लेकिन 1980 से अब तक निरीक्षण अवश्य हुए हैं। छबड़ा का 4 बार, छीपाबड़ौद का 6 बार तथा खानपुर का 5 बार निरीक्षण हुआ है।

चिकित्सा सुविधा हेतु खोले गए चिकित्सकीय संस्थान

8. श्री जगदीश प्रसाद तिवाड़ी (बस्सी) क्या चिकित्सा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) राज्य में वर्ष 1980-81 से 1984-85 में 28 फरवरी, 1985 तक चिकित्सा सुविधा विस्तार हेतु कितने प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, मिनी हैल्थ सेन्टर, डिस्पेन्सरी एडपोस्ट, उप स्वास्थ्य केन्द्र तथा मातृ शिशु कल्याण केन्द्र खोले गये? कृपया वर्षवार, जिलेवार सूची सदन के पटल पर रखें।

(2) क्या यह भी सही है कि उप स्वास्थ्य-केन्द्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, एडपोस्ट, डिस्पेन्सरी खोलने की स्वीकृति देने के बाद भी स्टाफ नहीं लगाया गया जिसके कारण लोगों को चिकित्सा लाभ नहीं मिला? यदि हां, तो स्टाफ कहां-कहां नहीं लगाया गया? कृपया सूची सदन के पटल पर रखें।

(3) क्या सरकार जहां स्टाफ नहीं लगा है वहां शीघ्र नियुक्ति कर लोगों को चिकित्सा सुविधा सुलभ कराने का इरादा रखती है? यदि हां, तो कब तक?

उत्तर

(1) सूची सदन के पटल पर दी गई है।

(2) चिकित्सक के पदस्थापन सीधे संस्थाओं पर किये जाते हैं जब कि पैरा-मेडिकल स्टाफ को मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी के अधीन लगाया जाता है जो चिकित्सा संस्थाओं पर प्राथमिकता के आधार पर पदस्थापित करते हैं। जिन संस्थानों पर स्टाफ पदस्थापित नहीं किया गया है, की सूची सदन के पटल पर रख दी है। 7 जिलों से सूचना अपेक्षित है।

(3) जी हां, जैसे-जैसे प्रशिक्षित स्टाफ उपलब्ध होगा रिक्त पदों पर पदस्थापित कर दिये जावेंगे।

(सूची के लिए कृपया परिशिष्ट–4 देखें।)

इन्दिरा गांधी नहर के द्वितीय चरण में मुख्य नहर का निर्माण

9. श्री घनश्याम तिवाड़ी (सीकर): क्या इन्दिरा गांधी नहर मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) इन्दिरा गांधी नहर के द्वितीय चरण में कुल कितने किलोमीटर लम्बी मुख्य नहर का निर्माण होना है तथा कितना निर्माण हो चुका है?

(2) मुख्य नहर के साथ वितरिकाओं का कितना निर्माण होना है तथा कितना निर्माण हो चुका है?

(3) क्या राज्य सरकार ने इस कार्य को समय पर पूरा करने के लिए केन्द्र सरकार से योजना में आवंटित राशि के अलावा अतिरिक्त धनराशि की मांग की है?

(4) यदि हां, तो कितनी तथा कितनी प्राप्त हुई या कितनी प्राप्त होने की संभावना है?

उत्तर

(1) इन्दिरा गांधी नहर के द्वितीय चरण में मुख्य नहर की लम्बाई 256 किलो.

(इन्दिरा गांधी नहर मन्त्री)

मीटर है। फरवरी, 1985 तक 208 किलोमीटर लम्बाई में निर्माण कार्य हो चुका है। बचे हुए भाग में निर्माण कार्य तीव्र गति से प्रगति में है।

(2) वितरिकाओं पर लगभग 460 करोड़ घनफुट मिट्टी व 4600 किलोमीटर माइनिंग का कार्य अनुमानित है जिसमें से लगभग 170 करोड़ घनफीट मिट्टी व 300 किलोमीटर माइनिंग का कार्य हो चुका है।

(3) जी हां।

(4) छठी पंचवर्षीय योजना के अन्तिम तीन वर्षों में 40 करोड़ रुपये की धनराशि भारत सरकार से विशेष योजना सहायता के रूप में प्राप्त हुई है। इसके अतिरिक्त 15 करोड़ रुपये की चालू वर्ष 1984-85 के लिए और सातवीं पंचवर्षीय योजना 1989-90 के लिये 280 करोड़ रुपये की मांग की गई है। संभावित प्राप्ति के विषय में अभी कुछ भी संभव नहीं है।

स्पेशल कम्पोनेन्ट प्लान

10. **श्री राजकुमार जयपाल** (अजमेर पूर्व) : क्या समाज कल्याण मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

स्पेशल कम्पोनेन्ट प्लान के तहत अनुसूचित जाति के व्यक्तियों हेतु कितनी रकम सन् 1984-85 में रखी गई और उसमें से कितनी रकम 1984-85 में 28 फरवरी, 1985 तक खर्च हुई ?

उत्तर

विशिष्ट संगठक योजना के तहत वर्ष 1984-85 में अनुसूचित जाति के व्यक्तियों हेतु 48.54 करोड़ रुपये की राशि रखी गई थी। जिसमें से माह दिसम्बर, 1984 के अन्त तक 26.87 करोड़ रुपये व्यय किये जा चुके हैं।

व्यय की सूचना त्रैमासिक प्राप्त होती है। अब तक दिसम्बर, 1984 के अन्त के त्रैमास की सूचना ही प्राप्त हुई है।

जिला कोटा एवं झालावाड़ के छात्रावासों में स्थानाभाव

11. **श्री प्रतापसिंह** (छबड़ा),

श्री हरीश शर्मा (खानपुर),

श्री जगन्नाथ (मनोहर थाना): क्या समाज कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(1) क्या यह सही है कि कोटा जिले के छात्रावास छबड़ा, छीपाबड़ौद, रामगंज मंडी में छात्रों के लिए स्थान कम हैं ? क्या स्थानों की कमी के कारण अनेक अनुसूचित जाति के निर्धन छात्रों को प्रवेश से वंचित रह जाना पड़ता है ?

(2) क्या विभाग उक्त छात्रावासों में छात्रों के लिए स्थान वृद्धि करेगा ? यदि हां, तो कब तक और नहीं, तो क्यों ?

(3) क्या जिला झालावाड़ के अकलेरा एवं खानपुर में भी छात्रों को स्थान के अभाव में प्रवेश से वंचित रह जाना पड़ता है ? यदि हां, तो सरकार क्या कार्यवाही कर रही है ?

उत्तर

(1) इन तीनों स्थानों पर 40-40 स्थान स्वीकृत हैं जो कुछ कम पड़ते हैं।

(समाज कल्याण मंत्री)

(2) वित्तीय साधनों की उपलब्धि को ध्यान में रखते हुए भविष्य में इन छात्रावासों में स्थान वृद्धि पर विचार किया जावेगा।

(3) अकलेरा में राजकीय छात्रावास नहीं है, खानपुर में है। यहां पर भी 40 स्थान स्वीकृत हैं जो कुछ कम पड़ते हैं। स्थान वृद्धि पर, उपलब्ध वित्तीय साधनों को ध्यान में रखते हुए, विचार किया जायेगा।

सीकर में खेल स्टेडियम

12. **श्री घनश्याम तिवाड़ी** (सीकर): क्या खेल मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) क्या यह सही है कि सीकर में खेल स्टेडियम बनाने का प्रस्ताव विचाराधीन है ?

(2) क्या यह भी सही है कि सीकर नगर में स्टेडियम निर्माण की बहुत बड़ी आवश्यकता है ? क्या राज्य सरकार सीकर में स्टेडियम निर्माण का विचार कर रही है ? यदि नहीं, तो क्यों नहीं ? यदि हां, तो कब तक कितनी लागत का ?

(3) क्या इस सम्बन्ध में नगर परिषद् सीकर का कोई प्रस्ताव विचाराधीन है ? यदि हां, तो क्या ?

उत्तर

(1) जिलाधीश, सीकर द्वारा वर्ष 1979-80 में स्टेडियम निर्माण हेतु प्रस्ताव राज्य सरकार को भेजे गये थे। राज्य सरकार ने यह प्रस्ताव केन्द्र सरकार को अनुदान हेतु भेज दिये थे। परन्तु कोई राशि केन्द्र सरकार द्वारा अनुदान स्वरूप स्वीकार नहीं की गई।

पुनः जिलाधीश, सीकर से दिसम्बर, 1984 में श्री कल्याण उच्च प्राथमिक विद्यालय सीकर के छात्रों के खेल मैदान की भूमि पर स्टेडियम बनाने हेतु प्रस्ताव प्राप्त हुए है जो विचाराधीन हैं।

(2) सीकर में स्टेडियम की आवश्यकता से इन्कार नहीं किया जा सकता। स्टेडियम का निर्माण भारत सरकार की इस प्रयोजन हेतु अनुदान की योजना के तहत किया जाता है जैसा कि उत्तर के भाग एक में कहा गया है मामला विचाराधीन है परन्तु फिलहाल कोई राशि या समय निश्चित रूप से नहीं बताया जा सकता है।

(3) जी, नहीं।

मैडिकल कॉलेजों में प्रवेश हेतु सीटों में अभिवृद्धि

14. **श्री घनश्याम तिवाड़ी** (सीकर): क्या चिकित्सा मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

क्या राज्य सरकार मैडिकल कॉलेजों में छात्रों के प्रवेश हेतु सीटें बढ़ाने का विचार कर रही है ? यदि हां, तो कितनी और कब तक ?

उत्तर

जी नहीं।

राज्य में स्थापित पावरलूम

15. श्री घनश्याम तिवाड़ी (सीकर) : क्या उद्योग मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) राजस्थान में इस समय कितने पावरलूम लगे हुए हैं ? किस-किस जिले में कितने-कितने लूम लगे हुए हैं ?

(2) पावरलूमों में देश में राजस्थान का कौनसा स्थान है ?

(3) 1984-85 में राजस्थान को कितने पावरलूम केन्द्र सरकार ने स्वीकृत किये हैं तथा ये जिलों में किस प्रकार आवंटित किये हैं ? कृपया पूर्ण विवरण सदन की मेज पर रखें।

उत्तर

(1) राजस्थान में इस समय 8179 पावरलूम लगे हुए हैं। जिलेवार सूची संलग्न है।

(2) पावरलूमों में देश में राजस्थान का दसवां स्थान है।

(3) वर्ष 1984-85 में भारत सरकार से राजस्थान राज्य को कोई पावरलूम कोटा स्वीकृत नहीं हुआ है। अतः आवंटन का प्रश्न नहीं उठता ।

(सूची के लिये कृपया परिशिष्ट 5 देखें।)

स्थगन प्रस्तावों पर अध्यक्षीय व्यवस्था

श्री अध्यक्ष : स्थगन प्रस्तावों पर व्यवस्था।

मुझे माननीय सदस्यों को सूचित करना है कि निम्नांकित स्थगन प्रस्तावों की सूचना प्राप्त हुई है :—

(1) श्री हरीश शर्मा और श्री प्रताप सिंह सिंघवी, सदस्य, विधान सभा की ओर से महानिरीक्षक, जेल द्वारा वार्डन और सहायक जेलर की भर्ती में अनियमितता के सम्बन्ध में।

(2) श्री दाऊदयाल जोशी, सदस्य, विधान सभा की ओर से सरसों की खरीद सरकारी एजेन्सियों के माध्यम से करवाने एवं न्यूनतम व अधिकतम मूल्य निर्धारण करने के बारे में।

(3) श्री नवनीत लाल नीनामा, सदस्य, विधान सभा की ओर से उदयपुर शहर में दूध की थैलियों में कम मात्रा में दूध भरे जाने के बारे में।

(4) श्री हीरालाल आर्य, सदस्य, विधान सभा की ओर से मांगरोल थाने के थानेदार द्वारा रिपोर्ट दर्ज न करने और अभद्र व्यवहार से क्षेत्र से आक्रोश होने के बारे में।

(5) श्री ललितकिशोर चतुर्वेदी, सदस्य, विधान सभा की ओर से बांसवाड़ा में एक श्रमिक नेता की 24-3-1985 को हत्या करने के विषय में।

(6) श्रीमती उजला अरोड़ा, सदस्य, विधान सभा की ओर से राजस्थान विश्वविद्यालय में प्रवक्ताओं के चयन में अनियमितता के सम्बन्ध में।

इन स्थगन प्रस्तावों पर राज्य सरकार से जानकारी प्राप्त की जा रही है और

(श्री अध्यक्ष)
जानकारी प्राप्त होने पर निर्णय लिया जायेगा।

(1) श्री अब्दुल अजीज, सदस्य, विधान सभा की ओर से संगमरमर पर केन्द्रीय एक्साइज ड्यूटी लगाने से उद्योग ठप्प हो जाने के कारण मजदूरों की बेकारी के बारे में।

(2) श्री किरोड़ी लाल मीणा, सदस्य, विधान सभा की ओर से सवाई माधोपुर में दूषित पेयजल वितरण से पीलिया, उल्टी और दस्त व हैजा जैसे संक्रामक रोग फैलने के बारे में।

(3) श्रीमती विद्या पाठक, सदस्या, विधान सभा की ओर से सांगानेर तहसील की उपजाऊ भूमि आवासन बोर्ड द्वारा अवाप्त करने से किसानों में बेरोजगारी के सम्बन्ध में।

(4) यदुनाथ सिंह एवं श्री मोहन प्रकाश, सदस्य, विधान सभा की ओर से मण्डल आयोग की सिफारिशें लागू न करने से पिछड़े वर्ग में असन्तोष के बारे में।

(5) श्री हरलाल सिंह खर्रा, सदस्य, विधान सभा की ओर से श्रीमाधोपुर के कुछ गांवों में पानी की पाईप लाइनें गलत ढंग से डालने के बारे में।

(6) श्री हीरासिंह चौहान, सदस्य, विधान सभा की ओर से पाली जिले के ग्राम नानणा में पेयजल समस्या के निराकरण हेतु काफी धनराशि व्यय करने के पश्चात् भी पेयजल की समस्या के बारे में।

(7) श्री गिरधारीलाल भार्गव, सदस्य, विधान सभा की ओर से जयपुर शहर में कृषि भूमि को आवासीय भूमि में बदलने के लिए करोड़ों की राशि वसूल करने के बावजूद भी स्थानान्तरण न करने और नक्शे पास न करने के सम्बन्ध में।

(8) श्री कालीचरण सराफ, सदस्य, विधान सभा की ओर से विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के छात्रसंघों के चुनाव न कराने के सम्बन्ध में।

(9) श्री सम्पत सिंह, सदस्य, विधान सभा की ओर से भरतपुर जिले के नगर क्षेत्र में अधूरे सड़क निर्माण कार्य करने के बारे में।

(10) श्री घनश्याम तिवाड़ी, सदस्य, विधान सभा की ओर से सीकर के आसपास के ग्रामों में बिजली सप्लाई न होने से पेय जल समस्या के सम्बन्ध में।

(11) श्री नत्थी सिंह, सदस्य, विधान सभा की ओर से एक संवाददाता की पत्नी को निलम्बित करने व डीग में पुलिस फायरिंग से घायल व्यक्ति की मृत्यु को बीमारी से मृत्यु बतलाने के बारे में।

उपरोक्त सभी स्थगन प्रस्ताव अविलम्बनीय लोक महत्व के नहीं हैं अतः मैं इन पर अनुमति देने में असमर्थ हूं।

(1) श्री भगराज चौधरी, सदस्य, विधान सभा की ओर से आहोर तहसील के कुछ ग्रामों में जल प्रदाय विभाग द्वारा जल आपूर्ति न किये जाने के सम्बन्ध में।

यह प्रस्ताव अविलम्बनीय लोक महत्व का नहीं है। अत : इस पर मैं अपनी स्वी-

(श्री अध्यक्ष)
कृति देने में असमर्थ हूं। इस विषय पर अन्य सदस्यों से भी प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं और राज्य सरकार की ओर से 27 मार्च, 1985 को इस विषय पर एक वक्तव्य दिया जायेगा, माननीय सदस्य उस समय अपने विचार प्रकट कर सकेंगे।

(2) श्री शोपत सिंह, सदस्य, विधान सभा की ओर से बीकानेर व चूरू जिलों में लगातार कई वर्षों से अकाल की स्थिति होने के विषय में।

इस विषय पर अन्य सदस्यों से भी स्थगन प्रस्तावों की सूचना प्राप्त हुई है। राज्य सरकार की ओर से इस विषय पर 27-3-1985 को एक वक्तव्य दिया जाएगा।

(3) श्री रामचन्द्र, सदस्य, विधान सभा की ओर से अकालग्रस्त घोषित गांवों में अकाल राहत कार्य प्रारम्भ न करने के विषय में।

इस विषय पर अन्य सदस्यों से भी स्थगन प्रस्तावों की सूचना प्राप्त हुई है और राज्य सरकार दिनांक 27-3-1985 को इस विषय पर एक वक्तव्य देगी।

(4) श्री चुन्नीलाल इन्दलिया, सदस्य, विधान सभा की ओर से ग्राम खन्दासर जल प्रदाय योजना बन्द रहने से पेयजल की समस्या।

विभिन्न स्थानों पर पेयजल की समस्या के बारे में दिनांक 27-3-1985 को राज्य सरकार एक वक्तव्य देगी, उस समय माननीय सदस्यों को अपने विचार प्रकट करने की अनुमति दी जाएगी।

(5) श्री हंसराज, सदस्य, विधान सभा की ओर से इन्दिरा गांधी नहर परियोजना की अनूपगढ़ एवं सूरतगढ़ शाखा काफी समय से बन्द होने से गेहूँ एवं चारे की फसल नष्ट होने के बारे में।

इस विषय पर पूर्व में चर्चा उठाई जा चुकी है। अतः इस स्थगन प्रस्ताव पर अपनी अनुमति देने में मैं असमर्थ हूँ और माननीय सदस्यों को अपने विचार प्रकट करने की अनुमति देने में भी असमर्थ हूं।

जिन माननीय सदस्यों के स्थगन प्रस्ताव अस्वीकार किये गये हैं, मैं उन माननीय सदस्यों को क्रम से पुकारूंगा वह कृपया दो-दो मिनट में अपनी बात कह सकेंगे।

श्री अब्दुल अजीज।

स्थगन प्रस्ताव आदि पर चर्चा

श्री दाऊदयाल जोशी (दीगोद): माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा एक स्थगन प्रस्ताव है जो आपने राज्य सरकार के पास भेजा है……

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्य।

श्री भंवरलाल शर्मा (हवामहल): मैं सबसे पहले दो मिनट में अपनी बात कहना चाहता हूँ।

श्री अध्यक्ष: पहले स्थगन प्रस्तावों पर व्यवस्था होने दीजिए, फिर मैं आपको मौका दूंगा। आप क्या कहना चाहते

(श्री अध्यक्ष)
हैं, किन नियमों के अन्तर्गत कहना चाहते हैं ?

श्री देवीसिंह भाटी (कोलायत) : अध्यक्ष महोदय, मैं यही निवेदन करना चाहता हूँ कि बीकानेर जिले की कोलायत तहसील में और बीकानेर क्षेत्र में लोग प्यासे मर रहे हैं। मैं आपसे इतना ही निवेदन करना चाहता हूँ कि मुख्य मंत्री यहां से जा रहे हैं और शायद जल्दी ही कुर्सी भी छोड़कर चले जायं, वह पानी की व्यवस्था करें, लोग प्यासे मर रहे हैं। हम तो यह चाहते हैं कि टैंकर की व्यवस्था हो और जो जल प्रदाय योजना है वह सुचारू रूप से चलाई जाए। वरना, लोग-बाग गांव छोड़कर चले जायेंगे, सारा पशुधन खत्म हो जायेगा। यही मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूँ। सरकार यह माने 27 तारीख को आप स्टेटमेंट दिला रहे हैं यह बड़ी खुशी की बात है, परन्तु सरकार पर आप दबाव डालें, आप टैंकर्स की व्यवस्था के लिए कहें और जल प्रदाय योजना सुचारू रूप से चलाने के लिये कहें।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य।

श्री भंवरलाल शर्मा : माननीय अध्यक्ष महोदय, राजस्थान में पीने के पानी का सर्वत्र संकट है। 27 तारीख को जो स्टेटमेंट दिला रहे हैं उसमें जयपुर नगर…

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, जितने भी प्रस्ताव मेरे समक्ष आये हैं सबके बारे में उसमें कहा जाएगा। आप जयपुर नगर में पानी के बारे में बोलना चाहेंगे तो मैं समय दूंगा।

(व्यवधान)

एक-एक करके माननीय सदस्य।

श्री यदुनाथ सिंह (नदबई) : अध्यक्ष महोदय, मेरा एक अहम् प्रश्न है। गुजरात और मध्य प्रदेश में जिस प्रकार की स्थिति आरक्षण नीति के कारण बनी है वह सब जानते हैं। इसलिए सरकार मण्डल आयोग की रिपोर्ट…

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आपने व्यवस्था सुनी है।

श्री यदुनाथ सिंह : चार साल हो गये हैं। आपने राज्य सरकार को जानकारी के लिए भेजा है…

श्री अध्यक्ष : रिपोर्ट आने दीजिये। कृपया बैठें।

श्री यदुनाथ सिंह : राजस्थान में भी कहीं गुजरात और मध्य प्रदेश की तरह खून-खराबा न हो इसलिए आप सरकार को पाबन्द करें कि जल्दी से जल्दी वह सदन में वक्तव्य देने के लिए आगे आयें।

श्री दाऊदयाल जोशी : मेरा स्थगन प्रस्ताव है……

श्री अध्यक्ष : मैं आपकी बात नहीं सुनूंगा माननीय सदस्य, कृपया बैठें। माननीय सदस्य, कृपया सहयोग करें। माननीय सदस्य अब्दुल अजीज।

श्री अब्दुल अजीज (मकराना): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं इस सदन को अवगत करता हूँ कि जो संगमरमर मकराना से ताजमहल में लग कर हमारे देश की शान बढ़ाये हुए है, उसकी उद्योग नगरी पर भारत सरकार ने…

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, संक्षेप में।

श्री अब्दुल अजीज : 23 (ई) नया टैरिफ लगाकर, कर भार बीस रुपया प्रति स्क्वायर फीट लगाकर इस सारी की सारी इण्डस्ट्री, सारे के सारे उद्योगों को ठप्प कर दिया है। अध्यक्ष जी, मैं आपसे यह निवेदन करना चाहता हूं कि तकरीबन पचास हजार मजदूर मकराना में संगमरमर उद्योग से सीधे पेट भरते हैं। मेरा यह भी अनुरोध है कि यह इण्डस्ट्री, मार्बल उद्योग राजस्थान सरकार को हर जगह एक बहुत बड़ी सम्पदा और आय देता है चाहे वह उदयपुर हो, चाहे वह और कोई जगह हो जहां संगमरमर निकलता है। भारत सरकार का इस कर को लगाने का जो यह तरीका है, जो यह टेरिफ पेश की है, इस संगमरमर पर कर भार लगाया है, मैं आपको पहले यह बताना चाहूंगा कि संगमरमर उद्योग पर 12 पर्सेन्ट सेल्स टैक्स दिया जाता है, 75 रुपया प्रति टन रायल्टी दी जाती है, 2 पर्सेन्ट प्रोडक्शन टैक्स दिया जाता है और अध्यक्ष जी, इसके अलावा इनकम टैक्स हम लोग देते हैं। इस सारी की सारी कानून की प्रक्रिया से निकलने के बाद मार्बल की एक चौकी पर तकरीबन 5 रुपया स्क्वायर फीट का खर्चा आ जाता है। लेकिन अब यह जो 23 (ई) के अन्दर भारत सरकार ने जो मार्बल उद्योग पर नया कर लगाया है उसमें बहुत बड़ी खामियां हैं। सबसे बड़ी खामी तो यह है कि इस उद्योग से न तो कोई छोटा व्यापारी बचा और न ही कोई बड़ा व्यापारी बचा। जिसके पास छोटी कटिंग मशीन और साधन हैं वह भी इस प्रक्रिया के अन्दर फंस गया। इसकी जो एक्साइज ड्यूटी का तरीका है, जो टैक्स का तरीका है उसके लिए निवेदन करना चाहता हूँ, सारे के सारे आफिसर्स वहां 17 मार्च को आ गये। 17 मार्च को आने के बाद उन्होंने हमें एक डिक्लेरेशन फार्म भरने के लिए दिया। डिक्लेरेशन फार्म कोई उनके पास तैयार शुदा नहीं था, जो बीड़ियां पीने वाला प्रोफार्मा था वही प्रोफार्मा लोगों को दिया। यह प्रोफार्मा मैं आपके सामने हाउस में रखता हूँ। इसमें जिस तरह से शराब के प्रोडक्शन का तरीका है, माल कम्पनी से निकालने का तरीका है वही का वही तरीका संगमरमर को बेचने का है। उसी प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। जो पत्थर कुदरत की देन है, संगमरमर जो खुदा की देन है, ईश्वर की देन है; उस पत्थर में कई खामियां भी हैं, कई जगह से वह क्रेक होता है उसको हम खान से निकालते हैं, बड़ी मेहनत के साथ।

श्री अध्यक्ष : संक्षेप में, माननीय सदस्य।

श्री अब्दुल अजीज : मैं निवेदन कर रहा हूँ, इस पत्थर को कितना मंहगा देते है। इसलिए आपका ध्यान आकर्षित कर रहा हूँ।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, वैसे इस विषय का सम्बन्ध भारत सरकार से है फिर भी मैंने आप को इजाजत दी है। थोड़ा संक्षेप में।

श्री अब्दुल अजीज : मैं संक्षेप में कह रहा हूँ। अध्यक्ष जी, प्रश्न यह है कि पत्थर को खान से निकालते हैं, बड़ी मेहनत

(श्री अब्दुल अजीज)

के साथ और उसके ऊपर बहुत खर्चा आता है ,...

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, यह सारी प्रक्रिया बताने की जरूरत नहीं है। मुद्दे पर आइये।

श्री अब्दुल अजीज : मैं निवेदन कर रहा हूं कि यह राजस्थान सरकार की जो सम्पदा है उस पर कितना कर भार लगायें। मैं आपका ध्यान आकर्षित करता हूं, सरकार को भी अवगत कराता हूं, पूरे विश्व को यह जानकारी देना चाहता हूं कि सुन्दर स्वास्थ्य के लिए सुन्दर भोजन आवश्यक है। एक अच्छी इमारत के लिए संगमरमर बहुत आवश्यक है। उस अत्यन्त आवश्यक चीज को हम इतना महंगा नहीं करें कि कोई आदमी उसको इस्तेमाल नहीं कर सके। जो भारत सरकार ने कर लगाया है उससे 2 रुपया प्रति स्क्वायर फीट का भार हमारी इण्डस्ट्री पर पड़ता है। मेरे क्षेत्र में 25–25 मील से लोग आते-जाते हैं वह सारे के सारे काम रुकने से बेरोजगार हो गये। सारी इण्डस्ट्री ठप्प हो गई। 500 कारखाने जो छोटे थे वह भी बन्द हो गये। जो कटिंग मशीन तकरीबन 750 हैं वह भी बन्द हो गईं : कम से कम एक हजार भैंसा गाड़ी वाले मजदूर हैं वह सब काम रोक कर बैठ गये। यह भारत सरकार ने जो कानून बनाया उसकी प्रक्रिया और नियम के मुताबिक हमारी फैक्ट्रियों से माल का आदान-प्रदान नहीं हो सकता। आलरेडी हम लोग बहुत ज्यादा मात्रा में उस पर कर देते रहे हैं। यह मकराना का ही नहीं बल्कि चित्तौड़ का मामला है, उदयपुर का मामला है, यह आपके जोधपुर का मामला है, जहां-जहां भी संगमरमर निकलता है और भारत में जहां जहां संगमरमर बेचा जाता है वहां का मामला है।

आज भारत सरकार के कानून और नियमों के तहत बाटा कम्पनी तो इस काम को कर सकती है लेकिन एक छोटा मोची यह काम नहीं कर सकता। इससे हमारी जान को बहुत परेशानियां हो जायेंगी। आज कानून बाटा कम्पनी लगा सकती है जूते बेचने पर छोटा मोची वह काम नहीं कर सकता। इसलिए मेरा निवेदन है कि भारत सरकार इस तरफ तत्काल देखे। 7 रोज से हड़ताल हो रही है। मकराना में ही नहीं सब जगह माल ढोने की व्यवस्था ठप्प हो गई। मैं आपसे निवेदन करूं कि हमारे यहां की जो जनता है वह बहुत सब्र वाली है, किसी और सूबे की जनता होती तो अव्यवस्था फैला देती। मैं आपके माध्यम से सरकार को अवगत कराना चाहता हूं कि वह मजदूर और छोटे-छोटे मालिक, कटिंग मशीन चलाने वाले, छोटे गोदाम वाले, जो अपने सीमित साधनों से काम करते हैं, जो अपनी सीमित हैसियत से धंधा करते हैं, बहुत बड़ी परेशानी में आ जायेंगे। कई तो अनपढ़ लोग हैं जो इस व्यापार में हैं और थोड़ा-थोड़ा अपना कारोबार करके अपना पेट भरते हैं। मेरा निवेदन है कि ऐसी प्रक्रिया, जो अनपढ़ लोगों को और परेशान करे, रिश्वत के नये दरवाजे खोल दे, लागू नहीं करें। आपको मैं निवेदन करूं कि वहां उन सब बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियों को ताला लगा दिया। वहां जो अधिकारी गये, उनका जो तौर तरीका है, कानून की जो प्रक्रिया है उसकी हम पालना नहीं कर पाते। इसलिए मेरा निवेदन है कि

(श्री अब्दुल अजीज)

आप भारत सरकार को अवगत करायें। मुख्य मन्त्री जी को भी मैंने इसके बारे में ज्ञापन दिया है, जो वरिष्ठ नेता हैं भारत सरकार के, उनको भी कहा है; आदरणीय रामनिवास जी मिर्धा, जो प्रसारण मंत्रीजी हैं, को भी अवगत कराया है। वित्त मंत्री जी से तो मिलना बड़ा मुश्किल हो रहा है इसलिए मैं आदरणीय सदन के नेता से आपके माध्यम से यह पुरजोर अपील करता हूँ कि इस कर से मुक्त कराया जाये। जो बहुत बड़े लोग यह धन्धा करते हैं, मैं कहता हूँ कि उनके ऊपर भी यह बोझ नहीं पड़ना चाहिए। किसी माल को बेचने के लिए कोई सीमा होनी चाहिए, तो यह शराब तो है नहीं, यह संगमरमर है। हम शराब को, अध्यक्ष जी, इसलिए महंगा करके बेच रहे हैं कि उसको कोई नहीं पीये। संगमरमर ऐसी चीज नहीं है। इसकी खूबसूरती को देखते हुए सुविधाजनक तरीके से लोग इसका इस्तेमाल करें और आम आदमी इसको खरीद सके, ऐसी व्यवस्था कराने की कृपा करें। मैं आपको आपके माध्यम से पुरजोर अपील करता हूं कि इससे भारत सरकार को तत्काल अवगत करायें ताकि यह कर से मुक्त हो। अगर इसमें ज्यादा ढील दी गई तो अव्यवस्था फैलने का खतरा होगा। वह भूखे मजदूर, वह रोज भैंसा गाड़ी से पेट भरने वाले मजदूर, वह ट्रक चालक, जो माल को लाते, ले जाते हैं; बैठे हुए हैं। कई मंदिरों की प्रतिष्ठा रुक जायगी, कई घरों के शादी के काम हैं वह रुक जायेंगे। सबको माल की जरूरत होती है। राजस्थान सरकार को 3 लाख से 4 लाख रुपये प्रतिदिन मकराना अपनी आय के रूप में देता है वह सारी की सारी आय रुकी हुई है। इसलिए मेरा निवेदन है कि इस इम्पॉर्टेन्ट मसले पर तत्काल यह सदन एक राय होकर भारत सरकार का ध्यान आकर्षित करे और इसको कर मुक्त करने की कृपा करें।

जय हिन्द !

श्री अध्यक्ष : श्री किरोड़ीलाल।

श्री हीरालाल आर्य (पीपल्दा) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मेवाड़ टैक्सटाइल मिल भीलवाड़ा के मजदूर…

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, बैठें।

श्री हीरालाल आर्य : वह मिल पिछले एक साल से बन्द है, माननीय अध्यक्ष महोदय।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, कृपया बैठें।

श्री हीरालाल आर्य : वहां के सैंकड़ों मजदूर प्रदर्शन कर रहे हैं बाहर।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य।

श्री हीरालाल आर्य : सरकार उनकी सुन नहीं रही है, बेचारे रोटी को मोहताज है।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आप बैठें।

श्री हीरालाल आर्य : सरकार बार-बार उनको आश्वासन देती है। उनको रोटी-कपड़ा चाहिये, आश्वासन से काम नहीं चलेगा।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य।

श्री हीरालाल आर्य : इसलिए मैं निवेदन करूंगा…

श्री अध्यक्ष : कृपया स्थान ग्रहण करें

श्री हीरालाल आर्य : मजदूर वहां आन्दोलन कर रहे हैं और स्थिति बड़ी विस्फोटक बनी हुई है।

श्री अध्यक्ष : माननीय श्री किरोड़ीलाल।

श्री हीरालाल आर्य : आश्वासन नहीं देकर उनकी बात मानी जाय। उनको बुलाया जाय, उनसे बात की जाय।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, बैठें।

श्री हीरालाल आर्य : एक साल से मिल बन्द है उसको खुलाया जाय ताकि उनको रोजी-रोटी मिल सके।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, कृपया बैठें।

श्री किरोड़ीलाल।

(अनुपस्थित)

श्रीमती विद्या पाठक।

श्रीमती विद्या पाठक (सांगानेर): माननीय अध्यक्षजी, यह किसान विरोधी सरकार किसानों पर जितनी ज्यादती कर रही है, बिजली देती नहीं, उनका फर्टिलाइजर, ऑयल, डीजल सब महंगा कर रखा है। इसके बावजूद यदि वह अन्न उत्पन्न करते हैं, सब्जी और फल उगाते हैं तो इसका मतलब यह है कि कोई न कोई उनकी लाचारी है। अभी सांगानेर के पास, जयपुर के आस पास के इलाकों में खोकावास, शौपुर में आवासन बोर्ड ने कुछ भूमि अवाप्त की है। यह भूमि किसानों की है जो कि अन्न उगाते हैं। उनकी भूमि बहुत उपजाऊ है। यह भूमि वहां के किसानों की है जहां से फल, सब्जी और फूल रोज जयपुर में आते हैं। रोज जयपुर के निवासियों की, बड़े अधिकारियों, मंत्रियों और विधायकों की, सबकी आवश्यकता इससे पूर्ण होती है। यहां आवासन के लिए भूमि चाहिये यह तो जरूरी है। लोग रहेंगे कहां पर, माननीय अध्यक्ष महोदय? पिछले चार साल में आप देखिये, आवासन के लिए जयपुर के आस-पास की जितनी भूमि थी, करोड़ों का जिसका कन्वर्शन जमा हुआ नहीं, जिसका एक्चुअल इवेल्यूएशन कभी हुआ ही नहीं, ऐसी अमूल्य भूमि सोसायटीज को और अपने चहेतों को भेंट कर दी और अब आवासन के लिए आवासन बोर्ड को भूमि चाहिए उसने उपजाऊ भूमि किसानों से अवाप्त करनी शुरू कर दी है। इसकी वजह से सैंकड़ों, हजारों किसान, चाहे वह सोडाला रोड पर हों, चाहे टौंक रोड पर हों, चाहे खोकावास शौपुर में हैं जहां भी बहुत त्रस्त हैं और दुखी हैं। इसके बहुत दूरगामी परिणाम उनकी इ नामी पर तो होंगे ही क्योंकि उनके पास इसके अलावा रोजी-रोटी का साधन कोई और नहीं है, वह लोग बेरोजगार और हो जायेंगे। इसके दूरगामी परिणाम शहर और अपने प्रदेश की आर्थिक स्थिति पर भी पड़ेंगे। इस बात को सरकार विचार करना नहीं चाहती। उनकी भूमि ली जा रही है एग्रीकल्चर रेट पर। उनको एग्रीकल्चर रेट पर ही मुआवजा दिया जाता है लेकिन उसे कन्वर्ट करके आवासन बोर्ड जिसका प्रमुख उद्देश्य नो प्रोफिट नो लॉस बेसिस पर आवास सुविधायें उपलब्ध कराने का है उसको और भी महंगा करके बेचते हैं। किसानों को यहां भी भारी लास होता है।

(श्रीमती विद्या पाठक)

मैं सरकार से यह निवेदन करना चाहूँगी आपके माध्यम से और उन किसानों की आवाज आप तक पहुँचाना चाहूँगी कि उन गरीब और ऐसे लोगों जिनके और दूसरे रोजगार के साधन नहीं हैं, भूमि लेकर उनको बिल्कुल बेरोजगार न बनाया जाये। आवासन मण्डल को भूमि लेना जरूरी है तो गैर उपजाऊ भूमि, बारानी भूमि जहां भी हो, ली जा सकती है। आज जो बंगले बनाये जा रहे हैं, समय की आवश्यकता है कि वर्टिकल बिल्डिंग्स बनाई जायं और भूमि ऐसी ली जाय जिसमें खेती नहीं हो पाती है। आवासन मण्डल उपजाऊ भूमि अवाप्त कर रहा है उन पर केसेज चला रखे हैं। सैकड़ों हजारों केसेज आज भी अदालतों में हैं। उन किसानों की आवश्यकताओं के लिए इन केसेज को विथड्रा करें। ऐसी भूमि अवाप्त करें जिसमें उपज नहीं होती हो। आपके माध्यम से सरकार से निवेदन करना चाहती हूँ, इस दिशा में शीघ्र कदम उठाया जाय।

श्री अध्यक्ष : श्री मोहन प्रकाश।

एक माननीय सदस्य : अध्यक्ष महोदय, मेरा एक निवेदन है।

श्री अध्यक्ष : कृपया बैठ जायं।

एक माननीय सदस्य : माननीय सदस्य सो रहे हैं।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, श्री हरलाल सिंह।

श्री दाऊदयाल जोशी (दोगोद) : अब तो जगा दीजिये।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य।

श्री हरलाल सिंह खर्रा (श्रीमाधोपुर): माननीय अध्यक्ष महोदय, इस विधान सभा चुनावों में कांग्रेसी उम्मीदवार के पक्ष में वोट प्राप्त करने के लिये जो हथकण्डे अपनाये गये, नमूने के तौर पर मैं पी. एच. ई. डी. का एक कारनामा पेश करना चाहता हूँ। विधान सभा क्षेत्र श्रीमाधोपुर में कई गांवों में पेयजल योजना है जहां पाइप लाइनें नहीं थीं उसके लिये पंचायत समिति श्रीमाधोपुर के प्रधान की हैसियत से मैं लगभग दो साल से सरकार को लिखता रहा किन्तु एक भी पाइप नहीं लगाया। चुनाव के समय, आपको आश्चर्य होगा, पी. एच. ई. डी. के द्वारा एक ट्रक पाइपों का भरकर वहां के कांग्रेसी उम्मीदवार के घर डाल दिया गया। यही नहीं, हैण्ड पम्प भी 10-12 ट्रक में भरकर उनके घर डाल दिये गये। उम्मीदवार महोदय ने उन पाइपों को ट्रैक्टर ट्राली में डालकर जहां यह स्कीम लागू थी वहां डाल दिया। पंचायत समिति के प्रस्ताव की परवाह न करते हुए, न हरिजन मौहल्ले को देखा गया और न आवश्यकता को देखा गया, वह पाइप और हैण्ड पम्प ट्राली में डाल कर अपने कार्यकर्ताओं के घर डाले गये और उन कार्यकर्ताओं को यह कहा गया कि जो मौहल्ला अपने को वोट दें वहां यह पाइप डालें जायं। आपको आश्चर्य होगा, एक-एक पंचायत में हजार दो हजार मीटर तक पाइप लाइन डाली और जहां हरिजन मौहल्ले थे, जहां आवश्यकता थी, जहां जनता चाहती थी वहां पाइप लाइन नहीं डाली गई। इसी तरह से हैण्ड-पम्प के लिए ढाणियों में कहीं पाइप डाली, कहीं माथा डाला, कहीं टांग डाली, आज तक वह हैण्ड पम्प पूरे नहीं हुए। जहां भी

(श्री हरलाल सिंह खर्रा)
पाइप लाइन डाली गई वह आवश्यकता से कम जगह में डाली गई, जो मेन लाइन से जोड़ना था वहां तक तब तक नहीं जोड़ी जब तक उन्होंने वोट नहीं दिया। मैं आपसे निवेदन करना चाहूँगा कि ग्राम मुडरू के हरिजन मौहल्ले में आज भी ऐसी पाइप लाइनें जमीन में गड़ी हुई हैं, उन मौहल्लों ने कांग्रेस को वोट नहीं दिया इसलिए मेन लाइन से उनको नहीं जोड़ा गया। वहां पानी की बूंद देने का प्रश्न पैदा नहीं होता। आपको आश्चर्य होगा, अब भी उन ग्राम पंचायतों के कार्यकर्ताओं के पास करीब 400-500 मीटर पाइप उनके घर पर पड़ा हुआ है और वहां विधायक, जो हार गये, पैसों से तुल रहे हैं। हमारी राजस्थान सरकार के मंत्री महोदय वहां मौजूद रहते हैं, पाइप लाइन और हैण्ड पम्प उनके पास हैं, बाजार में उनका प्रदर्शन करते हैं और यह कहते हैं, आपके मौहल्ले में डलवाना है तो डलवालो, इतना चन्दा दो। हैण्ड पम्प लगवाना हो तो हैण्ड पम्प लगवालो, इतना चन्दा दो। इस तरह से पैसा वसूल करके राजस्थान सरकार के मंत्री महोदय के सामने हारे हुये विधायक को पैसे से तोला जा रहा है। इस तरह का राजनैतिक भ्रष्टाचार आज भी चल रहा है। आपको आश्चर्य होगा, आज तक मरने के बाद मातमी धुनें बजाई गई हैं लेकिन वहां हारने के बाद नृत्य-गान हो रहा है राजस्थान सरकार के मंत्री महोदय के सामने और पैसा वसूल करके इकट्ठा जा रहा है।

श्री अध्यक्ष : संक्षेप में, माननीय सदस्य।

श्री हरलाल सिंह खर्रा : मंत्री महोदय कल भी ग्राम मुडरू में मौजूद थे, वहां ट्रेक्टर की ट्राली में पाइप डालकर घुमाया गया, किसी मौहल्ले में लाइनें डलवानी हो तो पैसा दो और यह पाइप ले जाओ। आज भी एक पंचायत में नहीं, छः सात पंचायतों में कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के घर पर पाइप पड़े हुए हैं। हैण्ड पम्प उनके घर पर पड़े हुए हैं। मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि इस तरह से जो राजनैतिक भ्रष्टाचार वोट प्राप्त करने के लिए किया गया है श्री माधोपुर क्षेत्र में, यह तो एक डिपार्टमेंट का नमूना है आगे और भी अर्ज करूंगा, उसकी आप जांच करवाइये और पाइप लाइनें डालने के लिये जो खाइयां खुदी हुई हैं उनमें पाइप डाला जावे।

श्री अध्यक्ष : कृपया समाप्त करें।

श्री हरलाल सिंह खर्रा : जो पाइप डले हुए हैं उनको मेन लाइन से जुड़ाइये, मेरा इतना ही निवेदन है।

श्री अध्यक्ष : श्री हीरासिंह चौहान।

श्री हीरासिंह चौहान (रायपुर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, रायपुर तहसील के नानणा गांव में सन् 77 में जनता राज में पानी की टंकी बनाने की योजना बनी थी। वह पानी की टंकी सन् 80 में बन कर पूरी हो गई। सन् 80 में पूरी होने के बाद कुए में पांच हार्स पावर की मोटर लगायी गई। गांव काफी ऊंचाई पर बसा हुआ है इसलिए उसमें पानी नहीं पहुँचा। फिर उसी समय जलदाय विभाग की पानी योजना को ग्राम पंचायत को ट्रांसफर कर दिया। ग्राम पंचायत की आर्थिक हालत इतनी अच्छी

(श्री हीरासिंह चौहान)

नहीं थी कि वह उसको चालू रख सकती और बिजली की रकम जमा करा सकती। तीन साल तक पानी की टंकी की योजना पड़ी रही और पंचायत द्वारा रकम जमा नहीं कराई जा सकी। इसके अलावा जलदाय विभाग द्वारा भी कोई देख रेख नहीं की गई। गाँव वालों ने भूख हड़ताल की भूख हड़ताल के बाद वापिस जलदाय विभाग ने योजना को लिया और 15 हार्स पावर की मोटर लगायी। उस के बाद में केवल दो दिन तक पांच हजार की आबादी वाले गांव में पानी दिया गया। उसके बाद बिजली विभाग ने कुएं की मोटर से उसका कनेक्शन तोड़ दिया। आज 6 साल हो गये, लाख रुपये से अधिक राजस्थान सरकार के लग गये किन्तु पानी की टंकी से गावों वालों को पानी नहीं दिया जा रहा है। गांव एक भील की पहाड़ी पर बसा हुआ है। राजस्थान सरकार को बार-बार पंचायत समिति द्वारा, सरपंच के द्वारा ध्यान आकर्षित कराया गया लेकिन आज तक उसकी सुनेवाई नहीं की जा रही है। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से राजस्थान सरकार के सम्बन्धित मंत्री महोदय का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ कि यह गांव पानी की समस्या से ग्रस्त है, राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में समस्याग्रस्त गांवों को पानी की समस्या से मुक्त कराने का लक्ष्य रखा है, इसलिए अविलम्ब राजस्थान सरकार इस समस्याग्रस्त गांव में पानी उपलब्ध कराने की कोशिश करे।

धन्यवाद।

श्री अध्यक्ष : श्री गिरधारीलाल भार्गव।

श्री गिरधारीलाल भार्गव (किशनपोल) : मान्यवर अध्यक्ष महोदय, मेरा बड़ा ही मानवीय प्रश्न है। जब नगर विकास न्यास या नगर परिषद् लोगों को भूमि नहीं दे सकी तो उन गरीब लोगों ने अपना सिर छिपाने के लिये, जो मूलभूत अधिकार है रहने के लिये मकान, कृषि भूमि पर अपने मकानात बना लिये। मकान बनाने के बाद सरकार ने बार-बार विज्ञप्ति जयपुर शहर में निकाली और कृषि भूमि रूपान्तरण के नाम पर केवल जयपुर शहर से 30 करोड़ रुपया वसूल किया जब कि राजस्थान सरकार को यह रकम वसूल करने का अधिकार नहीं था। क्योंकि राज्य सरकार ने 9-10-1972 को 132 गांवों को अरबन एरिया घोषित कर दिया और मास्टर प्लान में भी यही बात कही गई है कि भूमि रूपान्तरण शुल्क लेने का सरकार को कोई अधिकार नहीं है। राज्य सरकार ने आज से चार वर्ष पूर्व जयपुर की जनता से जो 30 करोड़ रुपया वसूल किया वह गलत ढंग से वसूल किया। गलत ढंग से वसूल करने के लिये राज्य सरकार ने एक विज्ञप्ति निकाली है, यह मेरे पास मौजूद है। 9-10-1972 को जो विज्ञप्ति निकाली जिसके अन्तर्गत इन सारे गांवों, जो जयपुर शहर के आसपास के हैं, करीब 132 गांवों को अरबन एरिया डिक्लेयर किया गया है वह भी मेरे पास है। राज्य सरकार ने जो विज्ञप्ति निकाली है, यदि आपने कृषि भूमि पर मकान बना लिया है या गैर कृषि उपयोग में उस भूमि को ले लिया है तो यह ऐसे अवैध रूपान्तरण को नियमित करने का एक मात्र सुनहरी अवसर है इस अवसर को न जाने दें, 26 मार्च, 1982 तक प्रार्थना-पत्र दे दें। यह सारे

श्री गिरधारी लाल भार्गव)

समाचार पत्रों में छपी है जैसे कोई लाटरी का टिकट निकल रहा हो, दो लाख, 10 लाख की लाटरी निकल रही हो. सरकार ने सारे समाचार पत्रों में विज्ञप्ति निकाली। राजस्थान की जनता को धोखा दिया, जयपुर की जनता को धोखा दिया। सरकार ने इस विज्ञप्ति में यह कहा कि तुम तो बस पैसा जमा करा दो. तुम्हारी कम्पाउण्डिग की फीस होगी निर्मित क्षेत्र के प्रति वर्ग फीट के लिये एक लाख से अधिक की जनसंख्या वाले नगरों में दो रुपया। यानि तुम्हारे मकान का केस कम्पाउण्ड कर लिया जायगा। और कहां तक कम्पाउण्ड कर लिया जायगा ? यदि भूमि अवाप्ति तथा मास्टर प्लान की अवहेलना भी लोगों ने की है तो भी कर लिया जायगा। जिन मामलों में 30 अगस्त, 1981 से पूर्व कृषि भूमि को रूपान्तरण कर रिहायशी तथा वाणिज्यिक कार्यों के प्रयोग में लाया गया है और ऐसी भूमियों के सम्बन्ध में भूमि अवाप्ति की अधिसूचना प्रकाशित हो गई है अथवा जिन शहरों के लिये मास्टर प्लान घोषित है तथा मास्टर प्लान में अवहेलना हुई है उन पर भी सहानुभूतिपूर्वक विचार किया जायगा। सरकार ने एक तो घोषणा यह की। दूसरी यह कहा कि सामान्यतया यदि परिवर्तित भूमि तथा उस पर किये गये निर्माण का समायोजन विचाराधीन योजना या प्रयोग में बिना विशेष कठिनाई के हो सकता है तो ऐसे मामलों में नियमन कर लिया जायगा। मास्टर प्लान की भी यदि कहीं पर अवहेलना हो गई तो भी कर लिया जायगा। यह जनता से कहा गया, तुमने कैसे भी मकान बना लिया, चाहे मास्टर प्लान के विपरीत हो या सरकारी भूमि पर बना लिया हो, चाहे तुमने किसी भी प्रकार की बात की हो, तुम्हारा केस कम्पाउण्ड कर लिया जायगा। मान्यवर अध्यक्ष महोदय, इस आधार पर सरकार ने विज्ञप्ति निकाल दी। गरीब जनता ने देखा कि चलो भाई पैसे जमा कराओ. सरकार हमारे बनाये हुए मकानों का नियमन करना चाहती है। 26 दिसम्बर, 1981 को विज्ञप्ति निकाली, तीन माह का समय दिया गया। उसमें कहा कि 90 दिन में आपके केस का नियमन हो जायगा। मेरा मतलब है मैन्डेटरी है। यदि नगर परिषद् में कोई आदमी नक्शा पेश करता है, एक महीने में नियमन नहीं हो तो स्वतः ही नक्शा पास माना जायेगा। यही जे. डी. ए. में नियम है। जब सरकार ने कहा कि 90 दिन में सारी प्रक्रिया पूरी कर ली जायेगी, तुम्हारा नक्शा पास हो जायगा, मैं पूछना चाहता हूं, मान्यवर अध्यक्ष महोदय, आप भी राजस्व मंत्री रहे हैं, आज चार साल हो गये, जयपुर की जनता के 30 करोड़ रुपये सरकारी खजाने में जमा हैं, 30 करोड़ का आखिरकार ब्याज तो आप फलाये, आज एक लाख पर 1100 रुपया महीना ब्याज मिलता है, 30 करोड़ का कितना ब्याज हो गया ? राज्य सरकार उस ब्याज को खा रही है और लोगों के मकान तोड़ रही है। मेरा सारा निवेदन करना यह है कि यह सारी बात हो गई, नियम 8 (3) में प्रक्रिया निर्धारित करने के लिये एक प्रावधान है, उन अधिकारियों के खिलाफ क्यों नहीं कार्यवाही की जा रही है ? वह 90 दिन में क्यों नहीं पास कर रहे हैं ? मेरा सारा इस सम्बन्ध में निवेदन करना

(श्री गिरधारी लाल भार्गव)
यह है कि 90 दिन के भीतर, जिन लोगों ने नक्शे पेश किये हैं उनके नक्शे स्वतः ही पास किये हुए माने जाने चाहिये। यह मेरा निवेदन है। जयपुर नगर में 765 उप नगरी हैं, अलग-अलग कालोनीज हैं जिनमें लगभग पाँच लाख व्यक्ति निवास करते हैं। जे. डी. ए. ने इसको 28 सैक्टरों में विभाजित किया है।

सरकार ने यही नहीं किया, सरकार ने यह और कर दिया, राजस्थान के भूतपूर्व मुख्य मंत्रीजी, जो आज अस्पताल में एडमिट हैं, श्रीमान् श्री शिवचरण जी माथुर.........

(व्यवधान)

अस्पताल में एडमिट हैं परसराम जी मदेरणा और शिवचरण जी माथुर......

(व्यवधान)

दोनों बीमार हैं।

श्री अध्यक्ष: अपनी बात कहें।

श्री गिरधारीलाल भार्गव : हां मेरी बात कह रहा हूं, मैं जानकारी दे रहा हूं, सूचना दे रहा हूं आपको।

मेरा सारा निवेदन करना है कि इन भूतपूर्व मुख्य मंत्रीजी ने जयपुर शहर में केवल पानी और बिजली के कनेक्शन पर यह पाबन्दी और लगा दी कि जिन लोगों ने कृषि भूमि पर मकान बना रखे हैं, जब तक उनके नक्शे पास नहीं हो जायेंगे, तब तक उनको पानी, बिजली का कनेक्शन नहीं मिलेगा। आप मुझे बताये, लोगों का मूलभूत अधिकार है पानी-बिजली कनेक्शन का, उन्होंने यह पाबन्दी और लगा दी। मेरा सारा निवेदन करना यह है कि सरकार ने यही नहीं किया, सरकार ने यह काम और कर दिया।

श्री अध्यक्ष: संक्षेप में, माननीय सदस्य। संक्षेप में।

श्री गिरधारीलाल भार्गव : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं संक्षेप में ही निवेदन कर रहा हूं।

पहले नियम था विकास शुल्क चार किस्तों में लेने का, वार्षिक चार किस्तों में। राज्य सरकार ने आदेश निकाले, कि तीन किस्तों में लेंगे पर जे.डी.ए. ने कहा कि हम तो उसके नक्शे को हाथ लगायेंगे जो व्यक्ति 25 रुपया प्रति वर्ग गज के हिसाब से पूरे भू-खण्ड का एक मुश्त जमा करा देगा। यह कितना बड़ा निर्णय है ? 25 रुपया प्रति वर्ग गज का मान्यवर अध्यक्ष महोदय। 400 वर्ग गज का भू-खण्ड है। उसको आप 25 से गुणा करिये, फिर सरकार लेगी लीज मनी, फिर लेगी सरकार पेराफेरी शुल्क तीन रुपया प्रति वर्ग गज के हिसाब से। यह सारा लेने के बाद नक्शा फीस लेगी। यानि 80 रुपया प्रति वर्गगज मिल जायेगी। गरीब का किसी का नक्शा पास होगा नहीं। नक्शे पास नहीं होंगे तो पानी-बिजली के कनेक्शन पर रोक और यह जयपुर शहर के नागरिकों के मूलभूत अधिकारों का मैं समझता हूं, माननीय भूतपूर्व मुख्य मंत्री जी ने हनन किया है। उसका परिणाम आपके सामने मौजूद है। मेरा सारा निवेदन करना यह है, आपने कहा था, सरकार ने नियम निकाले थे कि 90 दिन तक ब्याज नहीं दिया जायेगा। 90 दिन तक तो जनता ने यह विश्वास किया कि चलो भाई ब्याज नहीं मिलेगा पर 90 दिन के बाद

(श्री गिरधारीलाल भार्गव)
आज जो चार साल का समय हो गया उसके ब्याज का आप फलन कर लें और उस ब्याज को आप विकास शुल्क के नाम से जमा कर लें तो, मैं समझता हूं, लोगों के नक्शे स्वतः ही पास हो जायेंगे, लोगों को विकास शुल्क जमा कराने की कोई भी आवश्यकता नहीं है और यह ब्याज दिया जाना चाहिये, राष्ट्रीयकृत बैंकों की दर से।

मेरा निवेदन करना यहां पर यह है कि आज लोगों ने कृषि भूमि रूपान्तरण की रकम, माननीय अध्यक्ष महोदय, जमा करा दी, उन लोगों के कोर्ट में चालान हो रहे हैं। उन्हीं लोगों ने, जिन्होंने कृषि भूमि रूपान्तरण की रकम जमा करा दी, के मकान तोड़े जा रहे हैं इससे भ्रष्टाचार बढ़ रहा है, मान्यवर अध्यक्ष महोदय। जिसका मकान है, जिससे पैसे मिल गये उसका मकान टूटेगा नहीं और जिससे मकान के पैसे नहीं मिले, उसका मकान टूट जायगा। जब कृषि भूमि रूपान्तरण की रकम आपके खजाने में जमा हो गई तो, मैं समझता हूं, आपको पानी, बिजली का कनेक्शन भी देना चाहिये और आपको कोर्ट में चालान भी नहीं करना चाहिये। उसका मकान तोड़ने का अधिकार आपको बिलकुल है ही नहीं, मैं समझता हूं जब उसने कृषि भूमि रूपान्तरण की रकम जमा करा दी। यह एक घोर अन्याय है।

मेरा सारा निवेदन करना यह है कि यही नहीं हो रहा है, सैक्टर प्लान जो बना है, उसमें……

श्री अध्यक्ष : कृपया समाप्त करें, माननीय सदस्य।

श्री गिरधारीलाल भार्गव : माननीय अध्यक्ष महोदय, संक्षेप में निवेदन कर रहा हूं, सड़कें चौड़ी हो रही हैं। लोगों के मकान बन गये, डण्डे तोड़ रहे हैं। डण्डा तोड़ कर उसमें सड़कें बनाई जा रही हैं। सैक्टर नम्बर 25 में जो कॉलोनी है उसमें अपने रामनिवास बाग से सात गुणा बड़ा पार्क बता दिया गया है। रामनिवास बाग आपने देखा होगा, उससे सात गुणा बड़ा पार्क नक्शे में बता दिया गया है। लोगों के मकान पर लाल लाइन डाल दी गई है और यह कहा जा रहा है कि यहां पर रामनिवास बाग से सात गुणा बड़ा पार्क बनेगा। इस तरह से लोगों को डराया धमकाया जा रहा है। मेरा सारा निवेदन करना यह है कि इस सम्बन्ध में भी राज्य सरकार ने 1 मार्च, 1982 को विज्ञप्ति निकाली, अरबन डवलपमेंट विभाग ने भी 3 अप्रेल, 1982 को विज्ञप्ति निकाली उसके अन्तर्गत नियमन के आदेश सम्बन्धित अधिकारियों को दिये। मेरा सारा निवेदन करना अन्त में यह है कि 18-4-1983 को जे. डी. ए. ने भी यह सारी बात मानी है इसलिये, राजस्व मन्त्रीजी, अब तो विभाग कमला बहिनजी के पास है, उन्होंने स्टेटमेंट भी दिया था विधान सभा प्रारम्भ होने से पूर्व कि भूमि रूपान्तरण के केसेज का जल्दी ही निपटारा किया जायगा। मैं यह समझता हूं कि यह घोर अन्याय है, विकास शुल्क मनमाने रूप से वसूल किया जा रहा है। जहां पर मुख्य मन्त्रीजी के लड़के की जमीन है, जहां पर शिवचरणजी माथुर के लड़के की जमीन है वहां पर विकास शुल्क की दर दूसरी होगी और जहां अन्य किसी गरीब की जमीन है वहां पर दूसरी होगी। गरीबों से

(श्री गिरधारीलाल भार्गव)
25 रुपया प्रति वर्ग गज लिया जायगा। यह इनडिस्क्रिमिनेटरी होना चाहिये। किसी की भूमि अवाप्त करनी है, बड़े बड़े आई. ए. एस. अधिकारी हैं तो उनकी भूमि तो अवाप्ति से मुक्त और गरीब की भूमि अवाप्त करनी है तो उसको अवाप्ति में ले लिया जायेगा। जवाहर नगर की ओर सैक्टर नम्बर 25, सैक्टर नम्बर 9, 10 और 27 में मकान बन चुके हैं और सरकार अवाप्ति के नोटिस निकाल रही है। डराने-धमकाने की प्रवृत्ति राज्य सरकार को छोड़नी चाहिये।

श्री अध्यक्ष : कृपया समाप्त करें।

श्री गिरधारीलाल भार्गव : 30 करोड़ रु. जो आपने अवैध रूप से वसूल किया है; उसके ब्याज का समायोजन करके लोगों से विकास शुल्क लेने की आवश्यकता नहीं है। आपने गैरकानूनी ढंग से कृषि भूमि रूपान्तरण की रकम जिन सारे गांवों को अरबन डिक्लेयर करने के बाद वसूल करली है, मान्यवर, मेरा आपसे सादर निवेदन है आप भी राजस्व मंत्री रहे हैं, उस समय भी मैं आपसे मिला था, इस विषय को बार बार उठाता रहा हूं चार साल से उठाता रहा हूं आज राजस्व मंत्री जी इस सम्बन्ध में एक वक्तव्य हो जाय क्योंकि यह प्रश्न केवल जयपुर शहर से ही सम्बन्धित नहीं है, यह राजस्थान के जितने नगर हैं उनसे सम्बन्धित हैं। अब, मान्यवर अध्यक्ष महोदय, ये विधायक बोल नहीं रहे हैं, पता नहीं किस मेनीफेस्टो के आधार पर जीत कर आ रहे हैं, कहीं तो आखिर इनका भी मकान है, इनके भी कृषि भूमि पर मकानात बने होंगे, इनके रिश्तेदारों के होंगे, इनके गांवों में भी कृषि भूमि पर मकानत बने हुए हैं, जनता इनकी ओर निहार रही है कि हमारे एम. एल. ए. साहब वहां जाकर क्या बोलते हैं, क्या नहीं बोलते हैं इसलिये मैं 200 एम.एल. एज. से निवेदन करूंगा, 199 से, मैं तो कम से कम बोल ही रहा हूं कि आप सारे इसे उठायें।

श्री अध्यक्ष : आर्डर, आर्डर प्लीज।

श्री गिरधारीलाल भार्गव : यह जनहितकारी प्रश्न है। लोगों के मकानों का नियमन यदि नहीं हुआ तो बड़ी मुश्किल हो जायेगी इसलिए मैं निवेदन करना चाहता हूं।

श्री अध्यक्ष : कृपया समाप्त करें, माननीय सदस्य।

श्री गिरधारीलाल भार्गव : आप इस सम्बन्ध में राजस्व मंत्री से वक्तव्य दिला दें, यही मेरा आपसे निवेदन है।

श्री अध्यक्ष : श्री कालीचरण सराफ।

श्री कालीचरण सराफ (जौहरी बाजार): माननीय अध्यक्ष, महोदय, आपके माध्यम से सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहूंगा कि गत तीन वर्षों से प्रदेश के विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों के छात्रों द्वारा बार बार मांग करने के बावजूद तीनों विश्वविद्यालयों और प्रदेश के सभी महाविद्यालयों में छात्रसंघों के चुनाव नहीं हो रहे हैं। आदरणीय अध्यक्ष महोदय,

(श्री कालीचरण सराफ)

मैं यह कहना चाहूँगा कि छात्रसंघों के चुनाव सभी विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों मे इसलिये ने गये थे, इसलिये चुनाव की व्यवस्था की गई थी कि छात्र इसके माध्यम से देश की प्रजातांत्रिक व्यवस्था से अवगत हों और देश की प्रजातांत्रिक व्यवस्था से भिज्ञ होकर उसके माध्यम से अपनी समस्याओं का निराकरण कराने की कोशिश करें। परन्तु मुझे बड़ा दुख है यह कहते हुए कि पिछले तीन साल से राज्य सरकार और विश्वविद्यालय प्रशासन की मिलीभगत से छात्रों के प्रजातांत्रिक अधिकारों का हनन हो रहा है। आज विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों में छात्रसंघों के चुनाव नहीं हो रहे, इसके कारण छात्रों को अपनी उचित मांगों के समाधान के लिये कोई भी मंच उपलब्ध नहीं है। आज चाहे प्रवेश की समस्या हो, चाहे होस्टल की समस्या हो या अन्य किसी प्रकार की समस्या हो, छात्र अपनी समस्या के लिये मारा-मारा भटकता है और उसको उसके समाधान के लिए उचित मंच नहीं मिलता। छात्रसंघों के चुनाव नहीं होने के कारण जो पहले व्यवस्था थी कि छात्रसंघों के माध्यम से विश्वविद्यालय की प्रशासनिक इकाइयां जैसे सीनेट और सिण्डीकेट में छात्रों का प्रतिनिधित्व होता था, आज सिण्डीकेट और सीनेट में छात्रों के प्रतिनिधित्व का भी अभाव हो रहा है। आज उनमें छात्रों का प्रतिनिधित्व नहीं है। छात्रों का उनमें प्रतिनिधित्व नहीं होने के कारण आज विश्वविद्यालय प्रशासन अपनी मनमानी कर रहा है। आज छात्रों के अहित का कोई सवाल जब प्रशासनिक इकाइयों में आता है तो कोई भी छात्र वहां नहीं होने के कारण उसके बारे में बोल नहीं सकता और विश्वविद्यालय प्रशासन अपनी मनमानी करता है। मैं युवा वर्ष के अन्तर्गत राज्य सरकार से यह अनुरोध करना चाहूंगा कि जो पिछले तीन साल से छात्रसंघों के चुनाव नहीं करने का षड्यन्त्र राज्य सरकार और विश्वविद्यालय प्रशासन कर रहा है उसे समाप्त किया जाकर विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों में छात्रसंघों के चुनाव कराये जायें। सब्र का पैमाना भर चुका है, मैं चेतावनी भी देना चाहूंगा इस मंच के माध्यम से कि राज्य सरकार ने अगले सत्र में विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों में छात्रसंघों के चुनाव नहीं करवाये, छात्रसंघों के चुनाव की घोषणा नहीं की तो मजबूर होकर प्रदेश के समूचे छात्र जगत को सड़क पर आना पड़ेगा जिसकी पूर्ण जिम्मेदारी राज्य सरकार की होगी।

मैं आपके माध्यम से पुनः एक बार राज्य सरकार से अनुरोध करना चाहूंगा कि शीघ्र ही वह छात्रसंघों के चुनाव की घोषणा करे और अगले सत्र में छात्रसंघों के चुनाव सभी महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में हों, इसकी व्यवस्था करें।

धन्यवाद।

श्री अध्यक्ष : श्री सम्पत सिंह।

श्री सी. पी. जोशी (नाथद्वारा) : दो विश्वविद्यालयों में अभी-अभी कराये हैं। वे मालूम करें पहले।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज।

श्री कालीचरण सराफ : प्रश्न यह नहीं है । प्रश्न यह है कि हर साल चुनाव क्यों नहीं होते ?

श्री सी. पी. जोशी : आप नहीं करवा रहे हैं इसलिए । आप नहीं चाहते चुनाव इसलिए दो विश्वविद्यालयों में अभी-अभी हुए हैं ।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज ।

श्री सम्पतसिंह (नगर) : अध्यक्ष महोदय, मेरा स्थगन प्रस्ताव के जरिये यह निवेदन था इस सदन से, खास तौर से राजस्थान सरकार से कि नगर क्षेत्र में आजादी के बाद अब तक जितनी भी कच्ची सड़कें बनी हैं चाहे वह ग्रामीण विकास योजना के तहत बनी हों, चाहे वह दूसरी विकास योजनाओं के तहत बनी हों, एक भी सड़क को पक्का नहीं किया गया है । मैं तफसील से गुजारिश करता लेकिन मेरे लिए सिर्फ इतना आदेश हुआ है कि मैं दो मिनट में अपनी बात कहूं । सबसे पहले सीकरी से नौगावां एक सड़क इन्होंने स्वीकृत की उस पर तत्कालीन मुख्य मंत्री शिवचरण माथुर पधारे थे, पूरे क्षेत्र की तरफ से यह बात कही गई थी कि सड़क को पूरा कराइये, पूरा नहीं तो कम से कम श्रीगणेश तो कराइये, वहां सिर्फ मिट्टी पड़ी हुई है एक किलोमीटर तक । पूरे रास्ते में घुटने से ऊपर ऊपर रेता है ।

दूसरी है डीग से सीकरी । अध्यक्ष महोदय, यह सड़क सिर्फ कागजों पर बनी है । उसमें आज इतने गड्ढे हैं कि आदमी नंगे पैर चले तो लहूलुहान हो जाय कोई भी मोटर चलती है तो उसके टायर फट जाते हैं । इसलिए वहां कोई यातायात नहीं है । वहां से अगर आदमी डीग कचहरी के लिए जाता है, तो जो 7 बजे अदालत का वक्त है वह 11 बजे पहुंच सकता है लिहाजा उसकी जमानत जब्त होती है उसके दूसरे काम रुकते हैं अनाज की मण्डी में वह नहीं पहुंच पाते ।

तीसरा है सीकरी बांध । यह बहुत लम्बा बांध है, अध्यक्ष, महोदय, और वहां सिर्फ इतनी जगह है कि एक ही व्हीकल जा सकता है अगर दूसरा व्हीकल सामने से आ जाये तो मीलों मील वापस होना पड़ता है । जिस वक्त बारिश का समय होता है वहां इतनी चिकनी मिट्टी है, अध्यक्ष महोदय, अगर रपट जाय तो नीचे 40-40, 50-50 के फीट गड्ढे हैं । बांध की वजह से कितना रिस्क ले रहे हैं वहां के नागरिक ।

चौथी जगह है, अध्यक्ष महोदय, हुसेपुर से नयाना । यह सिर्फ एक-दो किलोमीटर का एक ऐसा टुकड़ा है जिसके लिए एक तरफ तो अलवर का जिला अधिकारी यह कहता है कि हमारे अधिकार की चीज नहीं है, दूसरी तरफ भरतपुर का अधिकारी यह कहता है कि यह हमारे अधिकार में नहीं है । आखिर दो जिलों के बीच में ऐसी व्यवस्था है जैसे यह कोई अलग-अलग देश की जगह हो । वहां बड़े-बड़े गड्ढे हैं ।

पांचवीं जगह है, अध्यक्ष महोदय, जलालपुर का बांध । वहां सड़क की वजह से एक तरफ गोविन्दगढ़ के लिए 5 घण्टे में जा सकते हैं, दूसरी तरफ नगर के लिए 10 घण्टे कम से कम समय लगता है । वहां कोई पुल की व्यवस्था आज तक नहीं हुई है । वर्षा के दिनों में

(श्री सम्पतसिंह)

वहां से विधान सभा के पांच माननीय सदस्य महोदय की समिति वहां जाकर देखे तो यह बात वाजिब लगेगी कि आजादी के बाद आज तक वहां कोई भी काम नहीं हुआ है। इतने अचरज की बात है। अगर वर्षा के दिनों में किसी मां बहिन को प्रसव पीड़ा हो तो मैं दावे के साथ निवेदन करना चाहता हूँ कि वह बहिन, वह मां अस्पताल तक नहीं पहुँच सकती। अगर किसी को मस्तिष्क का बुखार होता है, जो पिछले तीन महीने से हमारे यहां चल रहा है, 3-4 मौत हो चुकी हैं, सीकरी कुल 10 किलोमीटर पड़ता है, गांव से वहां पहुँचने के लिए कम से कम 15 घण्टे चाहिए। मैं गुजारिश करना चाहता हूँ सरकार से आपके माध्यम से कि रेगिस्तान की बानगी देखनी हो, पश्चिमी राजस्थान के रेगिस्तान की बानगी देखनी हो तो सीकरी और नगर क्षेत्र में वह देखने को मिलती है। कितने अचरज की बात है, 25-30 साल के बीच में हमेशा कांग्रेस पार्टी के नुमाइन्दे वहां से जीते लेकिन विकास के नाम पर खास तौर से सड़क जो विकास के काम में सबसे पहली कड़ी मानी जाती है, सड़क पर एक ईंट, एक गिट्टी नहीं लगायी गई है। अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे यह निवेदन करना चाहता हूँ कि सरकार को कम से कम अबकी बार इसके लिए आगाह करें। उस महान् जनता ने विकास के नाम पर एक रुपया नहीं देखा है। अगर सांगानेर हवाई अड्डे का खर्चा और उन गांवों का खर्चा लगाया जाय तो 100 साल में भी उन गांवों पर इतना पैसा नहीं लगेगा जितना एक महीने में सांगानेर हवाई अड्डे के ऊपर ही खर्चा आता है। क्या वे लोग हिन्दुस्तान के नागरिक नहीं हैं? अध्यक्ष महोदय, क्या वे लोग राजस्थान प्रान्त के नागरिक नहीं हैं?

आखिर में मैं यह निवेदन करना चाहता हूँ, अध्यक्ष महोदय, कि तफसील से मैं निवेदन करता तो मैं ब्योरेवार आपको अर्ज करता कि वहां किस-किस तरह से किस साजिश की वजह से यह सड़कें नहीं बनी हैं? खास-तौर से वहाँ यह बात चल रही है कि जो सीकरी मण्डी है वहां कम से कम 20 हजार रुपये की सेल्स टैक्स की चोरी होती है। वहां से हरियाणा नजदीक पड़ता है वहां के गांव-गांव में सड़क है और वहां से 5 किलोमीटर की दूरी पर ही हमारा क्षेत्र शुरू होता है वहां किसी एक गांव की लिंक रोड नहीं है, न पंचायत हैडक्वार्टर के लिए कोई लिंक रोड है। तो मैं यह निवेदन करूं, अध्यक्ष महोदय, वहां पर केन्द्र के मन्त्री तक पहुँचे हैं, आम गरीब किसान, मजदूर ने जब शिकायत की है तो वह शिकायत के लहजे को इस कदर टालते हैं कि आप चौधरी चरणसिंह से कहिये, आप जगजीवनराम से कहिये वह आपकी सड़कें डालेंगे। उन लोगों में आक्रोश व्याप्त है। इन व्यंग्यात्मक उत्तरों से वह इतने तंग आ चुके हैं कि उन्होंने एक अप्रेल का दिन पवित्र दिन मान कर यह निश्चित किया है कि वे शहर की सड़कों पर आयेंगे। उन्होंने सुन रखा है कि वहां तो रबर की सड़कें बननी शुरू हो गई हैं। एक तरफ इतना विकास हो रहा है, दूसरी तरफ इतना सौतेलापन हो रहा है कि वहां डामर भी नहीं डालते, कच्ची सड़क भी नहीं बनाते, बड़े-बड़े शहरों में, दुनिया रबर की सड़क पर आ गई, हिन्दुस्तान रबर की सड़क पर आ गया। माननीय सदस्य कांग्रेस की तरफ से कह रहे थे कि रूस में इतनी तरक्की हुई है……

श्री ग्रध्यक्ष : संक्षेप में।

श्री सम्पतसिंह : ग्रध्यक्ष महोदय, 'रूस में तरक्की हुई है, हिन्दुस्तान में तरक्की हुई है लेकिन जो पिछड़े-पिछड़े क्षेत्र हैं, बड़े शर्म की बात है वहां विकास की पहली कड़ी को नहीं छुग्रा गया है। मैं निवेदन करूंगा, ग्रध्यक्ष महोदय......

श्री ग्रध्यक्ष : कृपया समाप्त करें।

श्री सम्पतसिंह : उनको यह बात मालूम होनी चाहिए, खासतौर से सड़क मंत्री, राजस्थान सरकार को यह मालूम होना चाहिए कि ग्रापने लम्बे चौड़े वायदे किये, सड़क का कुछ नहीं हुग्रा......

श्री ग्रध्यक्ष : माननीय सदस्य, ग्राप स्थगन प्रस्ताव पर है :.........

श्री सम्पतसिंह : मैं ताने नहीं दे रहा, मैं दर्द भरे दिल से यह गुजारिश कर रहा हूं, उनसे निवेदन कर रहा हूं कि दुनिया के लोग जो इतनी ऊंचाइयों पर पहुंच गये हैं..

श्री ग्रध्यक्ष : माननीय सदस्य, ग्राप तो स्थगन प्रस्ताव पर बोल रहे हैं, ग्राप जनरल भाषण नहीं दें।

श्री सम्पतसिंह : मैं उसी पर ग्रर्ज कर रहा हूं, ग्रध्यक्ष महोदय, सड़क जैसी जगह को जो प्राथमिकता देनी चाहिए ....

श्री ग्रध्यक्ष : माननीय सदस्य, बैठें।

श्री सम्पतसिंह : कि सड़क जैसी जगह को......

श्री यदुनाथ सिंह (नदबई) : दिल्ली में रबर की रोड है।

श्री ग्रध्यक्ष : माननीय सदस्य, ग्रापस में नहीं। माननीय सदस्य, ग्रापस में बातचीत नहीं।

श्री सम्पतसिंह : ग्रध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन कर रहा था कि सड़क प्राथमिक चीज है, जहां बीमारी में भी शहर नहीं ग्रा सकता, ग्रस्पताल नहीं पहुँच सकता ग्रौर सरकार के लम्बे-चौड़े वायदे होते हैं।

श्री ग्रध्यक्ष : कृपया समाप्त करें।

श्री सम्पतसिंह : मैं एक मिनट में समाप्त कर रहा हूं, ग्रध्यक्ष महोदय। रोजाना इस तरह के वायदे ग्रौर इस तरह के लम्बे चौड़े भाषण सुनने को मिलते हैं। उस ग्रादमी के मुंह से गालियां निकलती हैं, उस भूखे किसान ग्रौर गरीब मजदूर के मुंह से ग्राह निकलती है कि कितने बड़बोले हो गये हैं सरकार के लोग। दुनिया के लोग तो...

श्री ग्रध्यक्ष : माननीय सदस्य।

श्री सम्पतसिंह : मैं निवेदन कर रहा था कि दुनिया के लोग...... ..

श्री ग्रध्यक्ष : माननीय सदस्य, जनरल भाषण नहीं। जनरल भाषण नहीं।

श्री सम्पतसिंह : मैं विकास के लिए कह रहा हूं जिससे उस क्षेत्र के लोग महरूम रह गये हैं।

"जो पहुँच चुके हैं मंजिल पर उनको तो नहीं कोई नाजे सफर। दो कदम ग्रभी जो चले नहीं—रफ्तार की बातें करते हैं।"

श्री ग्रध्यक्ष : कृपया समाप्त करें।

श्री सम्पतसिंह : ये गुणात्मक परिवर्तन क बात कह रहे हैं, उनको छुआ तक नहीं है। मैं यही निवेदन करना चाहता हूं कि विकास की कड़ी की बिसमिल्लाह तो करें नगर क्षेत्र के लिए, सीकरी क्षेत्र के लिए।

जय हिन्द।

श्री अध्यक्ष : श्री घनश्याम तिवाड़ी।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (सीकर): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से राज्य सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहूँगा कि पिछले सात दिन से सीकर शहर और उसके आस-पास के इलाकों को बिजली की सप्लाई नहीं होने से पीने के पानी की बहुत भयंकर समस्या पैदा हो गई है। 22 और 23 तारीख को सीकर शहर में चारों वक्त में से एक वक्त भी पानी की सप्लाई नहीं की गई और 24 और 25 तारीख को केवल 15 मिनट के लिये एक बार पानी की सप्लाई की गई। उसमें भी पिछले चार दिन से दस वार्डों में एक बूंद भी पानी की सप्लाई नहीं की गई। इस कारण से पानी की भयंकर समस्या सीकर शहर में है। अध्यक्ष महोदय, कारण यह है कि बिजली की जब कमी होती है तो सबसे पहले सीकर के इलाके को काटा जाता है। इस कारण से हमारे यहां पिछले एक सप्ताह से पानी के लिए त्राहि त्राहि मची हुई है। पानी की कमी के कारण यह हालात हैं, अध्यक्ष महोदय, कि 23 तारीख की रात को वार्ड नम्बर 40 राधा-किशनपुरा की ढाणी में आग लगी थी। एक मकान में लेकिन आग बुझाने के लिए पानी नहीं होने के कारण चार लोगों के पूरे मकान जल कर स्वाहा हो गये। यह पानी की कमी के कारण से हुए।

दूसरा, मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि वार्ड नम्बर 39 और 40, जो सीकर शहर के अन्दर जो सप्लाई बिजली की है वह ग्रामीण क्षेत्र से जुड़ी हुई है। ग्रामीण क्षेत्र में जो छः घण्टे या 4 घन्टे बिजली किसानों को दी जाती है उसी के साथ उनको बिजली दी जाती है जिसके कारण से कभी दिन में बिजली आती है, कभी रात में बिजली आती है। उनके जो कुएं हैं, जहां से पानी की सप्लाई होती है उनसे पर्याप्त मात्रा में पानी की सप्लाई नहीं हो सकती। मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि पानी की, बिजली की कमी होने के कारण से हालत यह है विद्यार्थियों की परीक्षा का समय चल रहा है उनकी पढ़ाई में बहुत बड़ा विघ्न पैदा हो रहा है। माननीय मुख्य मंत्री महोदय यहां पर बैठे हुए हैं, जब हम जाकर बिजली के एक्स. ई. एन. से मिले तो उन्होंने कहा कि हमारे पास आगे से बिजली नहीं आ रही है, हम क्या करें। और जब पानी वालों के पास गये तो उन्होंने कहा कि हम क्या करें, हमको बिजली उपलब्ध नहीं हो रही है। मैं निवेदन करना चाहूंगा कि सीकर शहर में पानी की बहुत बड़ी समस्या है। अनेक स्थानों पर हैण्ड पम्प लगाये गये हैं। जब बिजली फेल होती है तो न वहां पर जैनरेटर है जिससे कि टंकी में पानी चढ़ाया जा सके; पानी डाला जा सके। मैं माननीय मुख्य मंत्री महोदय से विनम्र शब्दों में निवेदन करना चाहूंगा कि भयंकर गर्मी के मौसम में सीकर शहर में बिजली ठीक समय पर नहीं मिले तो कम से कम चालीस पचास हैण्ड पम्पों की व्यवस्था तो निश्चित रूप से करायें ताकि बिजली उपलब्ध नहीं हो तो कम से कम पानी की एक दो बाल्टी तो लोग ले सकें।

(श्री घनश्याम तिवाड़ी)

दूसरा, मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि आधा शहर जिसको ग्रामीण क्षेत्र की बिजली के फीडर के साथ जोड़ा हुआ है उसको शहर के फीडर से ही जोड़ा जावे ताकि शहर में रात्रि के समय में जो पांच-सात घण्टे बिजली मिलती है वह वहां पर जो पढ़ाई करने वाले हैं उनको भी मिल सके। वार्ड नम्बर 39, 40 और राधाकिशनपुरा, जो शहर के पक्के वार्ड हैं, को ग्रामीण क्षेत्र से जोड़ा हुआ है, जिससे बहुत बड़ी समस्या है। वहां पर आग लगी थी जिसको पानी की कमी के कारण से बुझा नहीं सके। आज वहां पर पानी की समस्या है। मैं राज्य सरकार से मांग करता हूं कि पानी के लिये बिजली की सप्लाई तुरन्त करके पानी की सप्लाई करें। हैंडपम्पों के लिए विशेष रूप से मैं माननीय मुख्य मंत्री महोदय से निवेदन करना चाहूंगा कि सीकर शहर के चालीस वार्ड हैं, आज उनमें किसी भी जगह कोई हैंडपम्प नहीं हैं। तीन हैंडपम्प सीकर शहर में लगे हुये हैं उनसे सीकर शहर का काम नहीं चल सकता। पानी का और कोई जरिया हमारे पास है नहीं जो पुराने कुएं शहर में थे वे सारे कुएं खराब हो चुके हैं इसलिए मैं निवेदन करना चाहूंगा कि हर वार्ड में कम से कम दो हैंडपम्प राज्य सरकार लगाने की व्यवस्था गर्मी के टाइम पर कराये क्योंकि बिजली आने का ठिकाना नहीं है। कभी आती है, कभी चली जाती है। एक सप्ताह से जो बिजली का संकट चल रहा है, पानी का संकट चल रहा है इसको दूर करने के लिये राज्य सरकार तुरन्त कार्यवाही करे।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपको बहुत बहुत धन्यवाद देता हूं।

श्री अध्यक्ष : श्री नत्थीसिंह।

श्री नवरंग सिंह (नवलगढ़) : बिजली के मामले में मैं एक निवेदन करना चाहूंगा।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य।

श्री नवरंग सिंह : एक सैकिंड के लिए। यह बिजली से सम्बन्धित है और सीकर से लगा हुआ क्षेत्र है।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, नियमों का पालन करें।

श्री नवरंग सिंह : एक मिनट में, साहब मैं निवेदन कर दूं, एक मिनट में।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी मार्फत यह निवेदन कर रहा हूं कि किसानों को चिराणा, नवलगढ़, नवलड़ी और नवलगढ़ के आस-पास के इलाकों में जो बिजली मिल रही है वह एक तो सही तरीके से नहीं मिल रही है ...

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, माननीय सदस्य, आप जनरल डिबेट पर कहिये। जनरल बहस पर आप कह सकते हैं।

श्री नवरंग सिंह : किसानों की मोटरें जल गई हैं। मैं आपकी मार्फत निवेदन करूंगा कि इसमें सुधार के लिए कोशिश की जावे। किसानों की फसल का आखिरी टाइम है। इसलिए कम से कम पन्द्रह-बीस घण्टे, बिजली सब तरह से कटकर के प्रतिदिन दी जावे। अभी पांच-छः घण्टे बिजली मिलती है उससे काम नहीं चलता है।

श्री अध्यक्ष : नत्थीसिंह ।

श्री नत्थी सिंह (कुम्हेर) : अध्यक्ष महोदय, 21 तारीख को इस सदन में जब राजा मानसिंहजी की हत्या के सम्बन्ध में बहस हो रही थी तब हमने निवेदन किया था और माननीय मुख्यमंत्री जी ने कहा था कि मैं इस बात पर विचार करूंगा। उस वक्त हमने कहा था कि जो राज्याधिकारी भरतपुर जिले में लगे हुये है किस कदर जनता को कुपित होकर भयभीत कर रहे हैं। हमने तीन बड़े अधिकारियों के नाम लिये थे जिसमें वहां के जिलाधीश थे, एस. पी. थे और डी. आई. जी. थे। कल के समाचार को पढ़ा, वहां के एस. पी. महोदय को आपने हटाया उसके लिए तो धन्यवाद लेकिन जिलाधीश महोदय वहां किस तरह से लोगों को प्रतिशोध की भावना से परेशान और तंग कर रहे हैं, बदले की भावना से काम कर रहे हैं उस सम्बन्ध में तीन बातें में आपके सामने निवेदन कर रहा हूं।

फरवरी की 21 तारीख को जो हत्या हुई थी राजा साहब की, राजस्थान सरकार की विज्ञप्ति के आधार पर और सारे पत्रों में यह लिखा था कि यह मुठभेड़ हुई है। केवल राजस्थान पत्रिका थी जिसमें वहां के जो संवाददाता हैं श्री महेन्द्र चीमा, उन्होंने खबर भेजी सही-सही कि हत्या हुई और कोई मुठभेड़ नहीं हुई और वह समाचार छपा। इस पर जिलाधीश महोदय कुपित हुए। उसके बाद 24 तारीख को तीन आदमी मरे। मौके पर तीन डीग में और एक भरतपुर में। भरतपुर के अन्दर बहुत बुरी तरह से लोगों को मारा-पीटा गया, बेइज्जत किया गया। कोशिश की जिलाधीश ने कि यह समाचार नहीं छपे, दबाया जावे लेकिन महेन्द्र चीमा ने यह बात नहीं मानी। उन्होंने अपनी राजस्थान पत्रिका को खबर भेजी उसमें यह भी भेजा कि सारे लोग पीटे जा रहे थे, नागरिकों पर वहां किस प्रकार से अन्याय, अत्याचार हो रहा था, स्वयं जिलाधीश और बड़े-बड़े अधिकारी भरतपुर शहर में मौजूद थे। इससे कुपित होकर, माननीय अध्यक्ष महोदय, 21 मार्च को जब सदन में इस पर चर्चा हो रही थी कि राजा मानसिंह की हत्या किन परिस्थितियों में हुई। उसी दिन भरतपुर के जिलाधीश उस पत्रकार से बदला लेने की योजना में संलग्न थे भरतपुर में। उन्होंने चाहा कि इस पत्रकार के खिलाफ कोई मुकदमा बना सकें। जब कुछ नहीं मिला तो उनकी पत्नी, जो अध्यापिका हैं, के खिलाफ कार्यवाही कर उनको निलम्बित कराया गया। अध्यक्ष महोदय, मैं अर्ज करूंगा कि यह सरकारी अधिकारी जब बदले की भावना से प्रज्जवलित होते हैं तब यह कितनी त्वरित गति से काम करते हैं। 21 तारीख को उन्होंने एक आदेश प्रसारित किया 400 नम्बर पर, उसमें कहा कि आपने एक वाहन का लोन लिया है उसका आप जवाब दीजिए कि आपने उसकी औपचारिकतायें पूरी क्यों नहीं की अभी तक, दो महीने के अन्दर। यह 400 नम्बर का आदेश डिलीवर नहीं होता है, सर्व नहीं होता है। वहां पर माध्यमिक बोर्ड की जो परीक्षायें हो रही थीं उसकी वह इनविजीलेटर थीं। साढ़े छः बजे तक उस चार सौ नम्बर के आदेश की कोई तामील नहीं हुई। उसका कोई जवाब नहीं आता है।

(श्री नत्थीसिंह)
उसके तुरन्त बाद दूसरा आदेश जाता है। दूसरा आदेश जाता है, इंस्पेक्ट्रेसेज को, डिप्टी इंस्पेक्ट्रेसेज को, 403 नम्बर का 21 तारीख का। उसमें कहते हैं, चूंकि श्रीमती पुष्पादेवी, अध्यापिका, हायर सैकण्डरी स्कूल, भरतपुर ने राज्य सरकार से 5500 रुपयों की वाहन राशि प्राप्त की है, उस राशि का दुरुपयोग किया जाना पाया जाता है, उनके खिलाफ विभागीय कार्यवाही की जानी है इसलिए उनको तत्काल प्रभाव से निलम्बित किया जावे। उस निलम्बन आदेश की प्रति इस कार्यालय को भेजी जावे। जब यह आदेश जिला शिक्षा अधिकारी के पास जाता है तो वह कहती है कि भाई, यह तो कोई गड़बड़ ही नहीं हुई है। उन्होंने कोटेशन दिया था एक मोपेड का, दुबारा दूसरे वाहन का कोटेशन दिया है। हमने उस कम्पनी को, उस फर्म को 5500 रुपये का ड्राफ्ट भेजा है। उस अध्यापिका ने लिख कर दिया है जिलाधीश को, उस 5500 रुपये से कुछ ज्यादा पैसे आपने दिये हैं ड्राफ्ट में, आप बताइये, किस मद में उनको जमा करा दिये जावें। उसका जवाब आज तक उस अध्यापिका को नहीं दिया गया है फिर मैं उसको कैसे सस्पेंड कर दूं। तो सिटी मजिस्ट्रेट को भेजा जाता है। सिटी मजिस्ट्रेट जाकर कहते हैं जिला शिक्षा अधिकारी को कि आपको यह तो करना पड़ेगा, यह मेरे बोस का हुकुम है। मैं भी मानता हूं कि यह गलत है लेकिन इनको सस्पेंड करना पड़ेगा। सस्पेंशन आदेश हाथों-हाथ निकाला जाता है और सस्पेंड कर दिया जाता है। यह सब तीन घण्टे में हो जाता है। साढ़े छः बजे उस अध्यापिका को इस बात का पता चलता है। अध्यक्ष महोदय, आखिर ऐसा क्यों हुआ? जो खबरें उन्होंने दी हत्या काण्ड से सम्बन्धित, वही नहीं, 20 तारीख को जो खबर महेन्द्र चीमा, संवाददाता, राजस्थान पत्रिका ने दी उसमें जिलाधीश महोदय के सम्बन्ध में यह खबर दी थी कि "कुत्ते की बीमारी से जिलाधीश परेशान।" उनका एक कुत्ता था, वह कुत्ता इलाज के लिए यू. आई. टी. की गाड़ी से दिल्ली भेजा गया। उनकी बहिन उसके साथ गई। यह खबर छपी तो वह बड़े व्यथित और पीड़ित हुए और दूसरे ही दिन उन्होंने उसका बदला लिया। इसके पहले 14 दिसम्बर को एक खबर और छपी राजस्थान पत्रिका में, जो भी मन्हेद्र चीमा ने भेजी।

श्री अध्यक्ष : संक्षेप में, माननीय सदस्य।

श्री नत्थीसिंह : बहुत संक्षेप में कह रहा हूं, बहुत जल्दी जल्दी कर रहा हूं।

वह मुख्य मंत्री हमारे बट में आये मरवाने के लिये, घना में इस बात के लिये मरवाया कि कोई व्यक्ति वहां जाएगा नहीं, पशुधन चरायेगा नहीं। यह श्रीमान् जिलाधीश महोदय, राज्य सरकार के बनाए हुए नियमों को तोड़ते हुए उसमें घोड़े पर चढ़ कर घुड़सवारी करते हैं, घुड़दौड़ कराते हैं जो नियमों के विरुद्ध है। चिड़ियों को परेशानी होती है, सब को परेशानी होती है लेकिन वह जाते हैं। इतना ही नहीं, एक विदेशी महिला के साथ उन्होंने कहा, तुम भी घोड़े पर बैठो। वह नाराज हुई, झगड़ा हुआ और वह 14 दिसम्बर को घोड़े की टापों से पक्षी विचलित हुए यह समाचार भी महेन्द्र चीमा ने भेजा और राजस्थान पत्रिका में

(श्री नत्थीसिंह)

प्रकाशित हुआ। यह उनका घोड़े पर बैठे हुए जो वर्णित है, उनके साथ छोटेसिंह जो पुलिस के हैं, वह भी बैठे हैं और इसमें घुड़दौड़ कर रहे हैं घना में, जो सुरक्षित अभयारण्य है, उसके साथ यह कर रहे हैं। यह मैं आपको सारे कागजात जिस तरह से उन्होंने किया है, यह आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ। जिसे 3 घंटे के अन्दर अन्दर……

(व्यवधान)

घुड़दौड़ कर रहे थे और एक विदेशी महिला को छेड़ा। जिससे झगड़ा हो गया। यह समाचार प्रकाशित हो गया इसलिए नाराज हुए उसका नाम है स्नेह वरवारा उसने कहा, मैं नहीं बैठूंगी, तुम्हारे साथ क्या बात करते हो, हमारी संस्कृति को लजाते हैं, हमारे देश की बदनामी करते हैं, सारी दुनियां के लोग आते हैं घना में उनके साथ कलेक्टर, जिलाधीश यह व्यवहार करें। बताइए, क्या इम्प्रेशन लेकर वह जायेंगे। इस महिला को जो अध्यापिका है, नोटिस मिलने के साथ 23 तारीख को कि आप जाकर पैसा जमा कराएं कंपनी में लेकिन कहते हैं कि अभी तो नम्बर पत्नी का आया है, अभी तो पिता का आ रहा है, भाई का आ रहा है, स्वयं पत्रकार का आ रहा है। यह सारे कागजात मैं सदन की मेज पर रखता हूं। उनका जवाब है जो उन्होंने दिया है, मिलने के बाद, वह भी इसके साथ रखता हूं और मैं यह निवेदन करना चाहता हूँ कि इस तरह से अनुत्तरदायी, गैर जिम्मेदार लोग जिलाधीश पद पर हैं। मैं तो आपकी मार्फत मुख्य मंत्रीजी से कहूंगा, सोचिये इस बात को, नरेश चले गये, चले गये, वह 'ई' शब्द लगा हुआ है जिलाधीश के साथ 'ई' शब्द को हटाइए, जिलाधिकारी रखिए इसको। इनके दिमाग में गर्मी चढ़ती है। इतनी गर्मी चढ़ी अध्यक्ष महोदय, 27 तारीख जो आ रही है, आज सूचना प्रसारित हो रही है कि डीग में उप चुनाव होगा 24 अप्रेल को उसके नामांकन पत्र भरे जायेंगे, आज से राजा मानसिहजी की पुत्री दीपा, उन्होंने परसों मुझे बुलाया, उन्होंने कहा 27 तारीख को पर्चा मैं भरूंगी, आप लोग मेरे साथ आओ, सारा विरोध पक्ष, जो संयुक्त विरोध पक्ष हैं लोगों को, उनका समर्थन कर रहा है, उसके कार्यकर्ता उनके साथ जाएंगे 27 तारीख को। जिलाधीश को पता चला रात को, कल शाम को उनका एक आदमी बुलवाया गया, उसको धमकी दी है अध्यक्ष महोदय, कि अगर इस तरह से जुलूस निकाला जाएगा तो ठीक नहीं होगा। क्या आज भी डीग में धारा 144 लागू है, क्या आज भी कर्फ्यू लगा हुआ है, क्यों नहीं जायेंगे हम सारे शहर में होकर जाते हुए लोगों को नमस्कार करते हुए क्यों नहीं जायेंगे उनका पर्चा भरने के लिए? इस कलेक्टर का दिमाग इस तरह से दुरुस्त हो रहा है। इतना ही नहीं मैं आपको कहना चाहता हूं इस 24 तारीख को जो हत्याकाण्ड हुआ डीग में, उसमें गोदिया नाम का जाटव जो था जो 21 तारीख की घटना का प्रत्यक्षदर्शी था। उस प्रत्यक्षदर्शी गोदिया को 24 तारीख को चोट लगी। वहां इस तरह का आतंक मचा रखा है कि अगर कोई अस्पताल में जा नहीं सकता, अगर जाय तो उसको एफ.आई.आर. दर्ज करके मुकदमें में लगा देते हैं। वह गोवर्धन में इलाज

(श्री नत्थीसिंह)

कराने गया। गोवर्धन में उसकी मौत हो गई। मौत होने के बाद उसकी वेवा पत्नी जिलाधीश के पास गई कि मुझे सहायता दिलाओ तो कहा–नहीं, नहीं, हम यह नहीं मानते। विज्ञप्ति निकाली कि यह तो अपने आप बीमारी से मरा है। उसको कोई सहायता देना तो अलग उसको इस तरह किया। तीसरा, राजा मानसिंह के साथ जो हरिसिंह नाम के दो आदमी मरे थे, हरिसिंह जो मरा था उसकी पत्नी उनके पास गई। उन्होंने कहा कि मेरे एक लड़का तो कई साल से गायब है उसका पता नहीं दूसरा लड़का टी.बी. से पीड़ित वृन्दावन में दाखिल है। आप मुझे इसमें कोई सहायता दिलाओ उसको भी टरका दिया गया। इस तरह की हरकतें प्रतिशोधात्मक रूप से जिलाधीश वहाँ कर रहे हैं। मेरे पास एक चिट्ठी है, मैं जानबूझ कर नहीं रखना चाहता, मुसलमानों ने लिखी है भरतपुर को उन्होंने कहा है कि यह ज्यादा दिन रहा तो निश्चित रूप से यह आदमी हिन्दू-मुस्लिम दंगा करा देगा। यह तो चला जाएगा तबादले पर, हमारा क्या बनेगा, मैं इस तरह की भावनायें औरों में, नहीं, वहां के मुसलमान पीड़ित हैं इस बात से कि यह आदमी इस तरह की भड़काने वाली कार्यवाही करता है। मैं आपके माध्यम से इस सदन का, सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। इस तरह के गैर जिम्मेदार लोगों का ट्रांसफर किये जायें, इनके खिलाफ कार्यवाही की जाय, जांच की जाय कि किस तरह से उन्होंने हरकत की और उसके लिए दण्डित किया जाय यह निवेदन सदन से और सरकार से आपके माध्यम से कर रहा हूं।

श्री डूंगरराम पंवार (टीबी) : उनका आउट ऑफ स्टेट ट्रांसफर किया जाय।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज।

श्री ललित किशोर चतुर्वेदी (कोटा) : माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से कार्य संचालन प्रक्रिया के नियम 295 के अन्तर्गत मैं माननीय मुख्यमंत्री जी का और राजस्व मंत्री जी का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। कोटा जिले के किसानों के लिए बहुत बड़ी समस्या, कठिनाई राज्य सरकार ने पता नहीं किन कारणों से और कौन से नियमों के अन्तर्गत पैदा कर दी है? माननीय अध्यक्ष महोदय, जब कोटा जिले का किसान लगान जमा कराने जाता है तो उससे कहा जाता है कि तुम्हारा इस वर्ष का लगान अभी जमा नहीं किया जायेगा। तुम इस लगान के जमा कराने के पहले पिछले पांच साल की जो लगान की कर वृद्धि है जो 96 पैसे प्रति बीघा है उसको जमा करावो तब तुम्हारे इस वर्ष के लगान को जमा करायेंगे। किसान पूछता है कि यह 96 पैसा प्रति बीघा की लगान वृद्धि कौनसी है? मुझे तो उसका कोई नोटिस नहीं दिया गया मुझे तो उसकी कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई। आप मुझे डिमाण्ड नोटिस दे दीजिए। क्या कारण है, किस कारण से चाहते हैं 5 साल की कर वृद्धि? पटवारी उसको देने के लिए तैयार नहीं है। न नोटिस देता है, न डिमांड नोटिस पकड़ाता है केवल इतनी बात कहता है कि तुम्हारा लगान जमा नहीं करूंगा। जो 5 साल की पुरानी कर वृद्धि 96 पैसा प्रति बीघा के हिसाब से है वह भी जमा कराओ। उतना मत जमा कराओ, वह कहते हैं पांच साल की जो कर वृद्धि है उसका ब्याज दस प्रतिशत के हिसाब से भी

(श्री ललित किशोर चतुर्वेदी)
जमा कराओ। किसान कहता है कि मुझे पता ही नहीं, कर वृद्धि कौनसी है, न मुझे कानून का पता है, न नोटिफिकेशन का पता है।

श्री अध्यक्ष : संक्षेप में।

श्री ललित किशोर चतुर्वेदी : न मुझे इसकी सूचना दी गई है। इतना ही नहीं, अध्यक्ष महोदय, वह कहते हैं इसका ब्याज ही नहीं, इसका 50 प्रतिशत सरचार्ज और जमा कराओ। मैं आपके माध्यम से. राजस्व मंत्री महोदय का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ कि एक किसान था, जिसकी 20 बीघा जमीन बारानी थी, जिसका लगान 1.20 रुपया प्रति बीघा होता है...

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज।

श्री ललित किशोर चतुर्वेदी : हिसाब से देखेंगे तो 24 रुपये लगान उसको जमा कराना है 20 बीघे बारानी जमीन का, 1.20 रुपये के हिसाब से 24 रुपये। किन्तु इस पर 96 पैसे प्रति बीघा के हिसाब से पांच साल का केलकुलेट करेंगे तो 96 रुपये हो जाएंगे। 24 रुपये लगान सदा जमा कराता है। इस तरह 96/- और लाओ, फिर कहा जाता है इसका ब्याज 10 पर्सेन्ट 9.6 रुपये देवे। इतना ही नहीं, 96 रुपये का 50% पर्सेन्ट 48/- रुपये सरचार्ज दो, 177.60 रुपये जमा कराओ तब तुम्हारे 24/- रुपये का लगान जमा करेंगे।

श्री दाऊदयाल जोशी : दुर्भाग्यपूर्ण।

श्री ललित किशोर चतुर्वेदी : अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार से पूछना चाहता हूं, यह कौनसा कानून है, कौनसा नियम है, यह रिट्रोस्पेक्टिव अफेक्ट से कर वृद्धि कब लागू हुई, किस समय हुई? क्या किसान को इसकी जानकारी दी गई? 50 बीघा वाले किसान, जिसके 60/- रुपये केवल होते हैं, कहा जाता है कि 444/- रुपये लाओ। माननीय अध्यक्ष महोदय, इतना ही नहीं, पिछले 10 दिन से तो यह व्यवस्था हो गई है कि किसान के घर में घुस कर उसको पीटा जाता है, उसको मुर्गा बनाया जाता है, उसको डिमान्ड नोटिस न देकर लगान को वसूल करने के लिए उसको प्रताड़ित किया जा रहा है, पनिशमेंट दिया जा रहा है। मैं चाहता था राज्य सरकार की ओर से, माननीय मुख्य मंत्री जी की ओर से हमारे राजस्व मंत्री जी इस बात का स्पष्टीकरण दें। कोटा जिले से शायद लोक सभा चुनावों में लगातार सीटें छिन गई इसका परिणाम यह हो रहा है कि उनसे इस प्रकार दुश्मनी का बर्ताव किया जा रहा है। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से चेतावनी देना चाहता हूं। कोटा जिले के किसान के साथ किसान विरोधी नीतियां मत चलाइये, स्पष्ट करिये, तय करिये, कानून बनाइये, नोटिफिकेशन बताइये, उनको कोई नोटिस दिया हो उस बात की चर्चा करिये, उनको डिमाण्ड नोटिस आज दे रहे हैं, उस बात की चर्चा करिये। अब जो वसूली करने की बात कही है यह कौनसी प्रक्रिया से वसूली कर रहे हैं। मैं आपके माध्यम से चेतावनी देना चाहता हूं, कोटा का किसान इसको बिल्कुल लाईडाउन करेगा, इसका विरोध करेगा, हम भी उसके साथ कदम से कदम मिला कर खड़े रहेंगे, मैं तो आपके माध्यम से अपील करना चाहता हूँ राज्य सरकार से आज

(श्री ललित किशोर चतुर्वेदी)
यह व्यवस्था बनी है एक ओर पानी पूरा नहीं पहुँच रहा है, पानी पूरा है गांधी सागर में, किन्तु गांधी सागर में पानी पूरा होने के पश्चात् भी नहरों के कारण जितना आज पानी चाहिए वह नहीं पहुंच पा रहा है। वे इससे प्रताड़ित हैं। दूसरी तरफ यह जो लगान वृद्धि 24 रुपये से 177 रुपये···

श्री अध्यक्ष: कृपया समाप्त करें।

श्री ललित किशोर चतुर्वेदी : 60 रुपये से 444 रुपये कर दी गई है, यह बहुत बड़ा उसके ऊपर प्रहार है। किसान कभी भी इसको बर्दास्त करने की स्थिति में नहीं है। राज्य सरकार विचार करे, पुनः विचार करे, तुरन्त अविलम्ब ऑर्डर पहुंचायें, इस प्रकार की जो ज्यादती की जा रही है, किस कारण से की जा रही है ? उस बात को समझाने की प्रक्रिया करें और अभी कम में कम इसको स्थगित किया जाय यह आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूँ।

श्री अध्यक्ष : नाथूराम मिर्धा।

श्री दाऊदयाल जोशी : अध्यक्ष महोदय, मेरा एक स्थगन प्रस्ताव है, सरकार को स्थगन प्रस्ताव दिया है, माननीय अध्यक्ष महोदय।

श्री सी. पी. जोशी (नाथद्वारा) : पाइन्ट ऑफ आर्डर।

श्री अध्यक्ष : पाइन्ट ऑफ आर्डर है। कृपया स्थान ग्रहण करें। पाइन्ट आफ आर्डर आ गया है।

श्री सी. पी. जोशी : माननीय अध्यक्ष महोदय, आपका ध्यान रूल 294 की ओर आकर्षित करता हूं। 295 का जो इन्टरप्रिटेशन है, माननीय अध्यक्ष महोदय, वह यह है, ऐसा मेटर जो पाइन्ट आफ आर्डर कवर नहीं होता है वह आपकी कन्सेंस से हाउस में रेज किया जा सकता है, यह डिस्क्रिशन आपका है। मुझे इसमें कुछ नहीं कहना है इस सम्बन्ध में निवेदन यह करना है कि रूल 295 का भले ही इतना लिबरल इन्टरप्रिटेशन किया जाये पर इस हाउस की प्रोसीडिंग, डिबेट गवर्नर के अभिभाषण पर चल रही है जिसमें इस पाइन्ट को भी डिस्कस किया जा सकता है। ऐसे पाइन्ट को 295 में रेज करने का अवसर देंगे, माननीय अध्यक्ष महोदय।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : माननीय अध्यक्ष महोदय, कहां से बोल रहे हैं ?

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज। माननीय सदस्य कृपया बैठें।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : सदस्यों के बोलने के स्थान नियत हैं। यह कोई स्थान नहीं है। कभी यहां खड़े होकर बोलते हैं, कभी वहां खड़े होकर बोलते हैं।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज, आर्डर प्लीज।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : अगर दाढ़ी बढ़ाने पर आप छूट देते हैं तो सीकर में कहीं पर भी खड़े होकर बोलें······

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज, आर्डर प्लीज। कृपया बैठें। माननीय सदस्य, मैंने इन्हें परमीशन दी है।

श्री सी. पी. जोशी : मैं परमीशन की बात नहीं कह रहा हूँ।

श्री अध्यक्ष : समझ गया हूं। आपकी भावना को। आप बैठिये।

माननीय श्री नाथूराम मिर्धा, आपको भी मैंने परमीशन दी है।

(व्यवधान)

श्री नाथूराम मिर्धा (मेड़ता) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं एक गम्भीर मसले की ओर आपका और सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। नागौर में कल गांधी चौक में एक बहुत बड़ा वाटर टैंक गिर गया उसके गिरने से काफी नुकसान हुआ। एक तो मुस्लिम औरत मर गई, 12-13 आदमी घायल हो गये, 5-6 मकान क्षतिग्रस्त हो गये, कुछ मवेशी मर गये, बकरियां मर गयीं, गायें मर गयीं। जब टंकी कुछ झुक रही थी तो लोगों ने उसकी शिकायत की, लेकिन विभाग ने समय पर ध्यान नहीं दिया। नतीजा यह हुआ कि टंकी गिर गयी। मेरे ख्याल से बहुत बड़ा नुकसान हुआ है। उसके गिरने से सारे शहर की पानी की व्यवस्था बिगड़ जायगी। जब टंकी गिर गई तो इतने बड़े शहर को पानी कहां से पहुँचायेंगे, कैसे पहुचायेंगे ? यह काफी गम्भीर मसला है जिससे लोगों का नुकसान हुआ, शारीरिक उनको चोटें पहुँची, एक मर भी गयी और जानवरों का नुकसान हुआ। मैं राज्य सरकार के नोटिस में यह बात लाना चाहता हूं कि अब तुरन्त शहर में पीने के पानी की व्यवस्था की जाये। वह टंकी काफी एरिया को पानी सप्लाई करती थी, काफी बड़ी टंकी थी। डिस्ट्रिक्ट हैडक्वार्टर है। जिसकी वजह से जो नुकसान हुआ है, चाहे लोग, चाहे मवेशी, चाहे आदमी मरा हो, मकानों की क्षति हुई है, इन सब मसलों के ऊपर उदारतापूर्वक विचार करके जिन लोगों का नुकसान हुआ है उनकी कुछ सहायता सरकार को करनी चाहिये, ऐसी मेरी मान्यता है।

पानी की क्या आल्टरनेटिव व्यवस्था होगी उस तरफ ध्यान देना चाहिये।

तीसरी बात मैं आपसे कहूंगा कि इस प्रकार के प्लान के अन्दर जिन चीजों का, योजनाओं का निर्माण होता है जिसमें टंकियां बनती हैं, जो डिफेक्टिव चीज रह जाती है उनका बड़ा भारी नुकसान होता है। इसमें क्या डिफेक्ट था। जब डिफेक्ट होकर टंकी झुकने लगी तो लोगों ने शिकायतें भी की लेकिन विभाग ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। विभाग ने ध्यान नहीं दिया, उसके बाद वह गिर गयी। उसके बारे में यह जांच पड़ताल, इन्क्वायरी मेरे ख्याल से होनी चाहिए कि डिफेक्टिव कन्स्ट्रक्शन किस हद तक था, जब यह टंकी झुकने लगती, शिकायत हुई तो इसकी ओर ध्यान क्यों नहीं दिया और अंत में इसका जो परिणाम हुआ, इसका कौन जिम्मेदार है ? कुछ चीज अगर इस प्रकार हम नहीं करेंगे तो जो कुछ भी जिस तरह से काम हो रहा है, उसकी रुकावट नहीं होगी और जो अच्छा काम होता है वह नहीं होगा। यह मेरा आग्रह है। मैं इन चंद मुद्दों की तरफ ध्यान आकर्षित करके अपनी बात समाप्त करता हूं।

दलीय स्थिति विभिन्न दलों से निर्वाचित पदाधिकारी

श्री अध्यक्ष : विभिन्न दलों से निर्वाचित पदाधिकारियों की सूचना।

(श्री अध्यक्ष)

मैं माननीय सदस्यों को सूचित करता हूं कि विधान सभा में भारतीय जनता पार्टी दलित मजदूर किसान पार्टी एवं जनता पार्टी ने अपने अपने दलों के पदाधिकारियों की सूचना दी है जो निम्न प्रकार है:—

भारतीय जनता पार्टी — श्री भैरोंसिह शेखावत, नेता, श्री भंवर लाल शर्मा, हवा-महल, सचेतक।

दलित मजदूर किसान पार्टी— श्री नाथूराम मिर्धा, नेता, श्री नत्थी सिंह, सचेतक।

जनता पार्टी — श्री केदार शर्मा, नेता, श्री दिग्विजय सिंह, सचेतक।

सदन की मेज पर रखे जाने वाले पत्र राजस्व मंत्री।

सदन पटल पर रखे गये पत्र अधिसूचनाएं

श्रीमती कमला (राजस्व मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्व (ग्रुप-4) विभाग की निम्नांकित अधिसूचनायें सदन की मेज पर रखती हूं—

(1) अधिसूचना संख्या एफ-2 (6) राज. ग्रुप-4/84/1, दिनांक 2 जनवरी, 1985।

(2) अधिसूचना संख्या एफ-2 (6) राजस्व/ग्रुप-4/82/8, दिनांक 10 जनवरी, 1985।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्व (उपनिवेशन) विभाग की निम्नांकित अधिसूचनाएं सदन की मेज पर रखती हूं—

(1) अधिसूचना संख्या एफ-1 (12) रेव/कोल/73 पार्ट III दिनांक 22 अक्टूबर, 1984।

(2) अधिसूचना संख्या एफ-4 (19) रेव/कोल/83 पार्ट, दिनांक 21 नवम्बर, 1984।

(3) अधिसूचना संख्या प- 4 (20) राज/उप/83, दिनांक 23 नवम्बर, 1984।

(4) अधिसूचना संख्या प.-4 (7) राज/उप/80 पार्ट दिनांक 23 नवम्बर, 1984।

(5) अधिसूचना संख्या एफ- 4 (19) रेव/कोल/83, पार्ट, दिनांक 16 फरवरी, 1985।

(6) अधिसूचना संख्या प. 4 (12) राज/उप/83, दिनांक 18 जनवरी, 1985।

(7) अधिसूचना संख्या एफ-4 (8) रेव/कोल/83, दिनांक 18 जनवरी, 1985।

(8) अधिसूचना संख्या एफ-4 (24) रेव/कोल/82, दिनांक 18 जनवरी, 1985।

श्री अध्यक्ष : प्रतिवेदन एवं लेखे माननीय मुख्य मंत्रीजी।

प्रतिवेदन

श्री हरिदेव जोशी (मुख्य मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मैं वर्ष 1983-84 के लिये भारत के नियंत्रक महालेखा परीक्षक का प्रतिवेदन (राजस्व प्राप्तियां) सदन की मेज पर रखता हूं।

श्री अध्यक्ष: शिक्षा मंत्रीजी।

श्रीमती कमला: माननीय अध्यक्ष महोदय, आपकी आज्ञा से मैं यह प्रस्तुत करना चाहूंगी।

अध्यक्ष महोदय, मैं मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर का वार्षिक प्रतिवेदन (जुलाई, 1982 से जून, 1983) सदन की मेज पर रखती हूँ।

श्री अध्यक्ष: अनुपूरक अनुदान की मांगों का उप स्थापन। मुख्य मंत्रीजी।

अनुपूरक अनुदान की मांगों (द्वितीय संकलन) का उपस्थापन

श्री हरिदेव जोशी: मैं वर्ष 1984-85 के लिये राजस्थान शासन के व्यय हेतु अनुपूरक अनुदान की मांगों (द्वितीय संकलन) का उपस्थापन करता हूँ।

अतिरेक मांगों (वर्ष (1978-79) का उपस्थापन

श्री अध्यक्ष: वर्ष 1978-79 के लिये अतिरेक मांगों का उपस्थापन। मुख्य मंत्री जी।

श्री हरिदेव जोशी: मैं वर्ष 1978-79 के लिये अतिरेक मांगों का उपस्थापन करता हूँ।

श्री अध्यक्ष: पुरःस्थापित किया जाने वाला विधेयक श्री नरेन्द्र सिंह भाटी।

विधायी कार्य

विधेयक का पुरःस्थापन राजस्थान नहर (नाम प्रति स्थापन) विधेयक, 1985

श्री नरेन्द्रसिंह भाटी (राजस्थान नहर परियोजना मंत्री): अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान नहर (नाम प्रतिस्थापन) विधेयक, 1985 को पुरःस्थापित करने की आज्ञा के लिये प्रस्ताव करता हूं।

श्री अध्यक्ष: प्रश्न यह है कि राजस्थान नहर (नाम प्रतिस्थापन) विधेयक, 1985 को पुरःस्थापित करने की आज्ञा प्रदान की जाये।

(ध्वनि मतदान)

श्री घनश्याम तिवाड़ी: ना पक्ष जीता।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: मैं पुनः पूछ लेता हूँ।

प्रश्न यह है कि राजस्थान नहर (नाम प्रतिस्थापन) विधेयक, 1985 को पुरःस्थापित करने की आज्ञा प्रदान की जाय।

(स्वीकृत)

आज्ञा प्रदान की गयी।

श्री नरेन्द्रसिंह भाटी: मैं राजस्थान नहर (नाम प्रतिस्थापन) विधेयक, 1985 को पुरःस्थापित करता हूं।

श्री यदुनाथसिंह (नदबई): भ्रष्टाचार से नाम क्यों जोड़ रहे हो।

श्री अध्यक्ष: चिकित्सा मंत्रीजी।

श्रीमती कमला : कारणों पर भी बोलेंगे।

श्री यदुनाथसिंह : कारण बतायें।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : कारण कोई है ही नहीं।

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर प्लीज।

श्री नरेन्द्रसिंह भाटी : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रक्रिया के नियम 63 (1) के अन्तर्गत राजस्थान नहर (नाम प्रतिस्थापन) अध्यादेश, 1984 (अध्यादेश संख्या 11 सन् 1984) को जारी करने के कारणों का विवरण भी सदन की मेज पर रखता हूँ।

श्री अध्यक्ष : मंत्री द्वारा वक्तव्य।

चिकित्सा मंत्रीजी।

शासकीय वक्तव्य
पीलिया, खसरा एवं मस्तिष्क ज्वर का विभिन्न जिलों में प्रकोप

श्री रामदेवसिंह (चिकित्सा मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, राजस्थान प्रदेश में विभिन्न जिलों में पीलिया, खसरा एवं मस्तिष्क ज्वर का प्रकोप बढ़ने के संबंध में मेरा वक्तव्य निम्न प्रकार है :—

ओरी का प्रकोप—ओरी एक सार्वदेशक व सार्वकालिक संक्रामक रोग है जो 9 माह से 5 वर्ष की आयु के बच्चों में अधिक होता है। बारहों माह होने वाला यह रोग है। इस रोग का माह मार्च से जून माह तक प्रकोप बढ़ जाता है और इससे प्रायः कोई मृत्यु नहीं होती है। लेकिन कुपोषण के शिकार बच्चों को ओरी हो तो उनको अन्य बीमारी जैसे निमोनिया, खांसी दस्त मस्तिष्क रोग आदि हो जाते हैं जो समय पर उपचार न मिलने के कारण घातक हो जाते हैं। अभी तक राजस्थान में केवल ग्राम लोरडी पंडितान, पंचायत समिति मण्डोर, जिला जोधपुर से ओरी की महामारी की रिपोर्ट प्राप्त हुई है। जहां जनवरी, 85 से 14-3-85 तक के बीच 17 बच्चों की मृत्यु की सूचना सरपंच ने 16-3-85 को मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, जोधपुर को दी थी। उसी दिन जोधपुर के उप मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी ने ग्राम का भ्रमण कर समुचित इलाज की व्यवस्था की घर घर जाकर 80 बीमार बच्चों को देखा। जिसमें से 10 बच्चे ओरी से; शेष 70 बच्चे बुखार खांसी, दस्त से पीड़ित पाए गए। जांच से यह भी पता चला कि ओरी की जटिलता से 17 में से केवल 3 बच्चों की मृत्यु हुई है। शेष 14 बच्चों की मृत्यु अन्य बीमारियों जैसे खांसी, बुखार आदि के कारण हुई हैं। दिनांक 14-3-85 के बाद इस ग्राम में किसी बच्चे की मृत्यु नहीं हुई है। वहां बच्चों के उपचार हेतु एक अस्थाई एड पोस्ट की व्यवस्था कर दी गई है। उक्त गांव एवं आस-पास के गांवों में 500 बच्चों को ओरी से बचाव के लिए टीके लगाए जा चुके हैं व जोधपुर शहर में किसी भी संभावित क्षेत्र में बच्चों को 100 ओरी के टीके लगाए जा चुके हैं। विभाग ने समस्त मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारियों को सतर्क कर दिया है कि वे अपने क्षेत्र में होने वाले ओरी एवं मस्तिष्क ज्वर के प्रकोप पर निगरानी रखें व उपचार की समुचित व्यवस्था करें।

कोटा जिले के मोडक पी. एच. सी. क्षेत्र में मंगलम सीमेंट फैक्ट्री की श्रमिक कॉलोनी में एवं अन्य कुछ ग्रामों में एवं

(श्री रामदेव सिंह)
अन्य कुछ गांवों में 15-16 केसेज ओरी के होने की सूचना प्राप्त हुई है। किन्तु किसी की भी ओरी से मृत्यु के समाचार नहीं हैं। छुटपुट ओरी के केसेज जालौर, टोंक, जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर, चूरू, श्री गंगानगर व जयपुर आदि सभी जगह से आने की भी सूचना है।

राजस्थान में ओरी से बचाव के लिए टीके गत दो वर्षों से ही उपलब्ध हुए हैं। अधिकतर इन टीकों का उपयोग केवल उन्हीं क्षेत्रों में किया जाता रहा है जहां महामारी का प्रकोप तीव्र रहा है एवं बच्चों में मृत्यु दर ज्यादा रही। वह वैक्सीन अभी आयात होता है, देश में नहीं बनता। वर्ष 1984-85 में केन्द्रीय सरकार द्वारा तीस हजार टीके सुलभ कराए गए थे जो भीलवाड़ा, बाड़मेर, जोधपुर, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, कोटा, सवाई माधोपुर व नागौर जहां ओरी का प्रकोप अधिक था, में वितरित किए गए। वर्ष 1985 में भी केन्द्रीय सरकार से अब तक 30 हजार टीके उपलब्ध किए गए हैं जो पांचों डिवीजन मुख्यालयों के माध्यम से ओरी महामारी प्रभावित क्षेत्र में लगाने हेतु मांग के अनुसार उपलब्ध कराये जा रहे हैं।

भारत सरकार ने वर्ष 1985-86 से मीजल्स वेक्सीन को वृहद् टीका कार्यक्रम के अन्तर्गत चलाने का प्रस्ताव दिया है, जिसके तहत जयपुर शहर में प्रयोग के रूप में दिनांक 19-3-85 से 31-3-85 तक स्वयंसेवी संस्थाओं के सक्रिय सहयोग एवं समन्वय से ऑपरेशन जीरो मीजल्स के नाम से यह अभियान चलाया जा रहा है। जिसके तहत 23-3-85 तक लगभग 10 बच्चों को ये टीके लगाये जा चुके हैं। इस अभियान में 9 माह से 3 साल की उम्र के 50 हजार बच्चों को टीका लगाने का लक्ष्य रखा गया है। अभियान के सम्पन्न होने के पश्चात् उसका मूल्यांकन करके समस्त राजस्थान में उसका अभियान चलाया जायेगा।

पीलिया :—पीलया एक संक्रामक रोग है, जिसमें कि रोगी के आंख व नाखून में पीला रंग छा जाता है। मूत्र का रंग पीला हो जाता है। रोग के आरम्भ में थकावट, भूख का बंद हो जाना एवं जी मिचलाना आदि के लक्षण होते हैं। इसका उपचार समय पर न करवाये जाने पर मृत्यु भी हो जाती है। कभी-कभी यह रोग इतना भीषण हो जाता है कि रोगी को उपचार के बाद भी बचाना मुश्किल हो जाता है। यह रोग जल एवं खाद्य पदार्थ के मल-मूत्र द्वारा दूषित होकर वायरस और बैक्टीरिया जर्म्स से फैलता है एवं सभी आयु वर्ग के व्यक्तियों में हो सकता है। लेकिन ज्यादातर बच्चों एवं जवान व्यक्तियों में अधिक होता है। इस रोग के छुटपुट केस तो अस्पतालों में आते रहते हैं पर पीने के पानी में प्रदूषण होने पर महामारी के रूप में फैलता है। शरीर में इस रोग के जर्म्स प्रवेश करने के पन्द्रह दिन से पचास दिन बाद रोग के लक्षण प्रकट होते हैं।

इस बीमारी की रोकथाम हेतु पीने के जल का शुद्धिकरण, खाद्य पदार्थों की शुद्धता हेतु जांच-पड़ताल एवं मल-मूत्र का सही निष्क्रमण करना आवश्यक है। राजस्थान में पीलिया रोग के आउट ब्रेक की नवम्बर, 84 से अब तक कुल तीन स्थानों से सूचना प्राप्त हुई है।

(श्री रामदेव सिंह)

चौमेहला का प्रकोप 15-11-84 से 29-1-85 तक 52 केस, मृत्यु निल।

मिश्रोली का प्रकोप 20-12-84 से 7-1-85 तक 87 केस, मृत्यु निल।

रामगंज मण्डी का प्रकोप 10-1-85 से 7-3-85 तक 23 केस, मृत्यु एक।

अब कहीं से पीलिया रोग एवं मृत्यु की सूचना नहीं है तथा स्थिति नियन्त्रण में है।

रामगंज मण्डी में मृत व्यक्ति श्री जगन्नाथ पुत्र श्री गोपाल जी 58 वर्ष के थे। उक्त व्यक्ति सात दिन पीलिया से पीड़ित रहा और उपचार के लिये कोटा अस्पताल में रहा। एक अन्य रोगी गोविन्द लाल उम्र 32 वर्ष आपरेटर टेलीफोन का इलाज व मृत्यु इन्दौर (मध्य प्रदेश) में हुई। अतः उसकी मृत्यु के कारण का पता नहीं लगा है।

उपरोक्त सभी स्थानों में जो भी पीलिया के रोगी हुए हैं, वे पीने के पानी के नल में प्रदूषण के कारण हुये हैं। पीलिया के रोग का प्रकोप होते ही चिकित्सा विभाग ने इसके कारणों का पता लगाया व जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग को अपनी सप्लाई लाइन को ठीक करने व न पानी के सुपर क्लोरिनेश हेतु कहा गया। अब इस बीमारी पर काबू पा लिया गया है।

मस्तिष्क ज्वर - मस्तिष्क एवं रीढ़ की झिल्ली की सूजन को मस्तिष्क ज्वर कहते है। मस्तिष्क ज्वर की बीमारी से पीड़ित रोगी हर मौसम में बड़े अस्पतालों में प्रायः देखे जाते हैं। लेकिन कभी-कभी इस रोग के रोगियों की संख्या में वृद्धि हो जाती है। रोग का कारण (बैक्टीरिया) अथवा विषाणु वायरस होते है।

रोग के लक्षण :—तेज बुखार, तीव्र सर दर्द, गर्दन में अकड़न, उल्टी एवं बेहोशी की हालत आदि मुख्य रूप से है। रोग का समय पर शीघ्र उपचार अत्यन्त आवश्यक है जिसके अभाव में रोगी की मृत्यु होने की संभावना हो जाती है।

पिछले कुछ महीनों में इस रोग से पीड़ित रोगियों की संख्या राजस्थान के भरतपुर जिले, जो कि दिल्ली व उत्तर प्रदेश की सीमा से लगा हुआ है, में बढ़ी है। अब तक प्राप्त सूचनाओं के अनुसार दिनांक 1-12-84 से 23-3-85 तक भरतपुर जिले के विभिन्न अस्पतालों में उपचार करवाया जिनमें से 35 की मृत्यु हुई। इसके अतिरिक्त मथुरा एवं आगरा जिलों के ग्रामों के 24 रोगी भरतपुर अस्पताल में उपचार हेतु भर्ती हुये जिनमें से 3 की मृत्यु हो गयी।

बीकानेर अस्पताल में 7 रोगी भर्ती हुये व 5 की मृत्यु की सूचना मिली है। जो कि असामान्य है। जयपुर जिले में 40 रोगी है एवं 3 की मृत्यु की सूचना है। भरतपुर जिले में इस रोग के फैलने की सूचना प्राप्त होते ही स्वास्थ्य विभाग द्वारा बचाव के सभी सम्भव उपाय एवं रोगियों के उपचार की व्यवस्था की गई जिसका ब्यौरा निम्न प्रकार है :—

(1) प्रत्येक गांव, जहां मस्तिष्क ज्वर का केस होता है वहां सेनेटरी इन्सपेक्टर

(श्री रामदेव सिंह)

व बहुउद्देशीय कार्यकर्ता मरीज को शीघ्र अस्पताल पहुंचाने के लिये प्रेरित करते हैं तथा रोगी के स्वजनों को सल्फा गोली चार दिन स्वयं खिलाते हैं ।

(2) व्यापक प्रचार एवं प्रसार से लोगों को रोग के निदान एवं अस्पताल में इलाज की सलाह के साथ सल्फा की गोली खाने की सलाह दी जाती है ।

(3) पानी के शुद्धिकरण व मलेरिया का उपचार भी जारी है ।

रोगियों का तुरन्त पता लगाने, उपचार करने अस्पताल में पहुंचाने हेतु स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को सतर्क कर दिया गया था । स्वास्थ्य शिक्षा संबंधित पर्चे बांटकर एवं अखबारों में विज्ञप्ति देकर रोग के बारे में विशेषकर प्रभावित क्षेत्रों में लोगों को जानकारी दे दी गयी थी । जिला अस्पताल, भरतपुर में मस्तिष्क ज्वर के रोगियों को उपचार हेतु विशेष सुविधा दिलाने हेतु दिनांक 18-3-1985 को एक अलग से वार्ड खोल दिया गया है । इसके साथ-साथ राज्य के समस्त मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारियों को सचेत कर दिया गया है कि वह इस रोग को फैलने न दें और यदि कोई केस होता है तो उसको सम्पूर्ण सुविधायें उपलब्ध करावें ।

जिला स्तर के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, उप मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी एवं अन्य विशेषज्ञ पीड़ित क्षेत्रों का समय-समय पर दौरा कर रोग पर पूर्ण निगरानी रखे हुए हैं । निदेशालय से भी समय-समय पर वरिष्ठ अधिकारी मौके पर जाकर जिला अधिकारियों से सम्पर्क बनाये हुए हैं तथा रोग पर पूर्ण निगरानी रखी जा रही है ।

स्वास्थ्य सचिव राजस्थान सरकार ने दिनांक 16-3-85 को स्थिति का जायजा लेने हेतु भरतपुर क्षेत्र का स्वयं दौरा किया तथा बीमारी की रोकथाम एवं उपचार हेतु आवश्यक निर्देश प्रदान किये ।

इसके साथ-साथ राष्ट्रीय संचारी रोग संस्थान, दिल्ली (एन. आई. सी. डी.) के विशेषज्ञों के एक दल ने दिनांक 20-2-85 को एवं 21-3-85 को प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया एवं जांच हेतु नमूने लिये । इसके अलावा मुख्य चिकित्सा अधिकारी मथुरा एवं आगरा से सम्पर्क कर पड़ौसी क्षेत्रों के लिये रोग नियंत्रण के उपायों का आदान-प्रदान किया गया है ।

इस समय इस रोग से प्रभावित क्षेत्रों में उत्तर प्रदेश का पूर्ण आगरा डिवीजन, दिल्ली नगर एवं राजस्थान का भरतपुर जिला है । ऐसा प्रतीत होता है कि तापमानों में अधिक अन्तर एवं भीड़ भरा वातावरण होने से इस रोग से जल्दी प्रभावित हो रहे हैं । वर्तमान में विभाग के प्रयासों से रोग पूर्णतया नियंत्रण में है । पूरे राजस्थान प्रदेश में दिसम्बर 84 से दिनांक 24-3-85 तक कुल 266 रोगियों में से 46 की मृत्यु हुई है ।

अन्त में मैं माननीय सदस्य श्री ललित-किशोर चतुर्वेदी, विरदमल एवं श्री हरि-कुमार औदिच्य को धन्यवाद प्रदान करना चाहता हूँ जिन्होंने अत्यन्त लोक महत्व के विषय को इस सदन में उठाया है । साथ ही मैं यह भी सदन को बताना चाहूंगा कि सरकार ओरी, मैनेन्जाइटिस व पीलिया

(श्री रामदेवसिंह)

रोग की रोक-थाम के प्रति पूर्णतया सजग है और कारगर कदम उठा रही है।

धन्यवाद।

श्री अध्यक्ष : श्री हरिकुमार पहले बोले थे। श्री हरिकुमार।

श्री हरिकुमार औचित्य (रामगंज मण्डी) : माननीय अध्यक्ष महोदय, जो अभी स्वास्थ्य मंत्रीजी ने पीलिया के बारे में स्पष्टीकरण दिया है और अपनी रिपोर्ट बतायी है, रामगंज मंडी के गोविन्दलाल का जिक्र किया है और बताया है कि इन्दौर के अन्दर मृत्यु हुई है। यह बात सही है कि इन्दौर में उसकी मृत्यु हुई है किन्तु यह तीन दिन तक झालरापाटन अस्पताल में भर्ती रहा है। यह कहा गया कि यह पीलिया का पेशेन्ट है यहां इसका इलाज नहीं हो सकता है। उसके बाद उसको इन्दौर ले जाया गया है। इस तथ्य को माननीय स्वास्थ्य मंत्रीजी की रिपोर्ट के अन्दर छिपाया गया है।

दूसरी बात यह है, नहीं बताया गया कि मरने का कारण क्या है? गोविन्दलाल की मृत्यु तो स्वीकार की है किन्तु यह नहीं बताया कि गोविन्दलाल की मृत्यु का कारण क्या था। मेरा स्पष्ट आरोप था कि गोविन्दलाल की मृत्यु पीलिया के कारण हुई है। तीन दिन तक झालरापाटन अस्पताल में भर्ती रहा इसके बाद उसको इन्दौर ले जाया गया। वहां एक रात के बाद उसकी मृत्यु हो गयी।

दूसरा निवेदन मैं यह कह रहा था कि स्वास्थ्य विभाग ने इसकी रोक थाम के लिए कार्यवाही जरूर की है लेकिन मूल में जो पीलिया रोग फैलने का कारण था वह खास तौर से यह है कि रामगंज मंडी में पीने के पानी की अव्यवस्था। आज भी अनफिल्टर्ड वाटर रामगंज मंडी जैसे बड़े कस्बे के अन्दर जलदाय विभाग के द्वारा दिया जा रहा है। आप दूर गांव की बात तो छोड़िये, गांव में तो माननीय अध्यक्ष महोदय, इस प्रकार की स्थिति है कि जब कुओं का पानी पीते हैं, ऐसा इलाका है कि कुओं में पानी नहीं होने के कारण जो माइन्स के बड़े-बड़े गड्ढे हैं, 100-100, 150-150 फीट के गड्ढे, उन गड्ढों का पानी इस प्रकार के कुओं में डालते हैं टैंकर से और कुओं का पानी फिर वहां से लोग पीते हैं। इस प्रकार का पानी पीने वाले आदमी को पीलिया नहीं होगा, मरेगा नहीं तो क्या जिन्दा रहेगा। यह तो हमारे स्वास्थ्य मंत्रीजी बतायेंगे, यह हमारे जन स्वास्थ्य मंत्रीजी बतायेंगे। ये स्थिति वहां पर है। आपने यह तो जरूर फर्माया कि रोक-थाम के लिए स्वास्थ्य विभाग द्वारा कार्यवाही की जा रही है लेकिन चोर की मां को मारने के लिये क्या व्यवस्था की गई है? जलदाय विभाग बिल्कुल निकम्मा हो गया है पानी पिलाना तो दूर रहा, अच्छा पानी नहीं पिला सकता। उसके बारे में सरकार की तरफ से क्या कार्यवाही की गयी, इसकी कोई जानकारी नहीं दी गई।

श्री अध्यक्ष : श्री ललित किशोर। आप नोट कर लीजिये। आप बोल लीजिये, मैं आपको भी दूंगा मौका।

श्री ललित किशोर चतुर्वेदी : माननीय अध्यक्ष महोदय, वैसे माननीय चिकित्सा मंत्री महोदय ने बड़ा विषद् वक्तव्य दिया है। मैं एक बात की ओर उनका ध्यान

(श्री ललित किशोर चतुर्वेदी)
आकर्षित करना चाहता हूँ। मेडिकल साइंस में Prevention is better than care यह जो प्रिवेन्शन की बात है, माननीय मंत्री महोदय ने खसरा, पीलिया, मस्तिष्क ज्वर की समय-सीमा भी बतायी है कि इस सीमा में उसका प्रबल वेग रहता है किन्तु उस समय में, प्रारम्भ होने के पहले प्रिवेन्शन की दृष्टि से क्या प्रयत्न किया राज्य सरकार ने, चिकित्सा विभाग ने इसका कोई वर्णन नहीं किया है। मैं आपके माध्यम से उनसे विनम्र निवेदन करना चाहता हूं, यह बात सच है कि मंत्री महोदय के पहले जिनके पास ये विभाग था उनको तो फुरसत ही नहीं थी। उनको तो और ही बहुत सारे काम थे जिनकी चर्चा मैं यहां नहीं करना चाहता। उनको फुरसत नहीं थी उन बातों से। अब आप कृपया पधारे हैं। सचमुच इस प्रकार की बीमारियां हैं कि जिनके फैलने का निश्चित समय मेडिकल साइंस रहता है जब उसका प्रबल प्रकोप होता है तो उसके प्रिवेन्शन्स के कुछ मेथड्स हैं। इनके स्पेशलिस्ट हैं डॉक्टर। अगर आपके यहां उस विभाग में न हों तो कॉलेज मेडिकल साइंस में इस प्रकार के हैं। उनके द्वारा प्रिवेन्शन के सारे तरीके निश्चित रूप से अपनाये जायें, वह तिथि, वह मन्थ प्रारम्भ होने के पहले ही उस प्रकार के कदम उठाये जाय ताकि उसके कारण से इस प्रकार की बीमारियां न फैलें। राजस्थान में इसका विशेष रूप से प्रयत्न किया जाय।

दूसरी एक बात की ओर मैं मंत्री महोदय का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। पीने के पानी की जो बात रामगंज मंडी से आने वाले माननीय विधायक महोदय ने कही है, नगरपालिका ऑथोरिटीज ने घोषणा कर दी थी रामगंज मंडी में कि यहां नलों का पानी मत पीओ। इस घोषणा के बाद, इस विज्ञप्ति के बाद भी वहां के चिकित्सा विभाग ने वे जो नालियों का दूषित जल है वह पीने के पानी के साथ बाद में क्यों मिलता रहा और ये तीनो बातें बतायी हैं मिस्सोली, डग और रामगंज मंडी एक ही प्रकार का क्षेत्र आता है। मैं कहना चाहता हूँ कि वहां चिकित्सा विभाग यह जांच अवश्य करे कि जब इस प्रकार की जानकारी नगरपालिका अधिकारियों ने उस दूषित पानी के मिलने की दे दी है तो उसके पश्चात् भी वहां पर चिकित्सा विभाग ने दूषित जल के प्रति प्रिकोशन मेथड क्यों नहीं लिया ? वह दूषित पानी क्यों मिलने दिया ?

उसी प्रकार जो अपने जोधपुर का क्षेत्र है मेवाड़ का क्षेत्र है इस क्षेत्र में ओरी का प्रकोप होता है। मैं आपके माध्यम से मंत्री महोदय को कहना चाहता हूँ, कोटा में हर तीन घर में एक बच्चा ओरी से आज पीड़ित है। मृत्यु नहीं हुई है यह बात सच है। कितने बच्चे पीड़ित हैं, कोटा प्रॉपर की बात करता हूँ। मेरे घर में ही चुनाव के समय में दो-दो बच्चे ओरी से पीड़ित रहे, रिलैक्स हुए परन्तु तीन घर में एक में इस प्रकार की अवस्था है। यह बात सच है, शहर का क्षेत्र है, मरना शहर के क्षेत्र से नहीं होता है। मरना अधिकतर मारवाड़ के क्षेत्र में हुआ, उधर क्षेत्र में हुआ है। यह तो मैं आपसे विनम्र अपील करना चाहता हूँ कि इसके जो प्रिवेंटिव मेथड्स हैं, टीके उसके पहले लगाने की व्यवस्था की जानी चाहिये। बच्चे पैदा कहां होते हैं इसकी जानकारी होगी, इसकी जानकारी नगरपालिका में

(श्री ललित किशोर चतुर्वेदी)

रहती है। क्या राज्य सरकार इस प्रकार की कोई व्यवस्था नहीं कर सकती कि इस प्रकार की जो बीमारी है उसके प्रिवेंशन के लिये कोई न कोई पद्धति अपनायी जाय और बड़े परिणाम में जो ओरी व्याप्त होने के समाचार मिलते हैं वह ओरी नाम की बीमारी व्याप्त न हो। यह दो-तीन सुझाव मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री महोदय को इस सारे सन्दर्भ में देना चाहता हूं।

श्री बिरदमल सिंघवी (जोधपुर) : अध्यक्ष महोदय, पिछले साल की बात है कि स्वास्थ्य मंत्रीजी ने इस समस्या को गम्भीर मान कर इसके विषय में कारगर कदम उठाने की बात कही है। मैं निवेदन करूंगा कि यह बीमारी कन्ट्रोल में आ गयी हो, ऐसी बात नहीं है। इसके पश्चात् खाजी मीठापुरा में दो दिन पहले ही सात और बच्चों के मरने का समाचार मिला हैं। वहां पर भी यह बीमारी बड़े भयंकर रूप से आगे बढ़ रही है। मैं निवेदन करूंगा, लोरड़ी गांव में इस बीमारी के फैलने का मुख्य कारण था, पास में जो तालाब है उस तालाब में गन्दा पानी है, जानवर भी उसी तालाब में पानी पीते हैं, उसी में बैठते हैं। वह पानी नहीं गन्दगी है, एक प्रकार से जिसको कादा कहा जाता है उस प्रकार का पानी है। लोग उसी को पीते हैं क्योंकि वहां जल की अन्य कोई सुविधा नहीं है। तो मैं निवेदन करूंगा, इस प्रकार के पानी का उपयोग न हो। इतना ही नहीं, जोधपुर शहर में करीब आधे हैण्ड पम्पों पर स्पष्ट लिखा हुआ है कि यह पानी पीने के काम का नहीं है, इसको पीने के काम में न लें। फिर भी इसकी रोकथाम के लिए कोई प्रयत्न नहीं है। वहां के लोगों को दूसरा पानी नहीं मिलता। मजबूरन वह पानी पीते हैं। वह पानी हैल्थ की दृष्टि से किसी भी प्रकार से पीने के लिए उपयोगी नहीं है। ऐसा पानी पीने के उपयोग में न आये, इस प्रकार की कोई व्यवस्था करना आवश्यक है। मैं निवेदन करूंगा, यह बीमारी काफी जल्दी रुक सकती थी अगर इसकी सूचना समय पर मिल जाती। लेकिन लोग समय पर सूचना देने से कतराते हैं। इसी कारण इस बीमारी की सूचना समय पर प्राप्त नहीं हुई। वहां के स्वास्थ्य अधिकारी स्वयं ने स्वीकार किया है कि इसकी सूचना किसी दूसरे के द्वारा प्राप्त हुई थी। इनके स्वयं के पास इस प्रकार की कोई एजेन्सी नहीं थी जिसके द्वारा यह सूचना प्राप्त हो सके।

पिछली बार सोलंकिया कलां में जो घटना हुई इसके कारण वहां के लोग, सारे गांवों के लोग किसी प्रकार की सूचना देने से कतराते हैं। सोलंकिया कलां की घटना अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विख्यात हुई जहां पर भुखमरी और बीमारी के कारण सैकड़ों लोग मर गये।

श्री अध्यक्ष : संक्षेप में, माननीय सदस्य।

श्री बिरदमल सिंघवी : बिलकुल मैं इतना ही निवेदन करूंगा।

और उसका परिणाम क्या हुआ? वहां के सरपंच ने इस सूचना का समाचार दिया तो उल्टे, आपको जानकर आश्चर्य होगा, आपने जैसे धन्यवाद दिया वैसे उसको धन्यवाद देने के बजाय उसको और

(श्री बिरदमल सिंघवी)
प्रताड़ित किया गया, उसके ऊपर केस चलाया गया। आपको जानकर आश्चर्य होगा, उसके ऊपर आरोप लगाया गया है कि तुमने अखबारों में समाचार का प्रकाशन क्यों किया. अखबारों में समाचार क्यों दिया ? यह आरोप लिखित में सरपंच को दिया।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य अपने विषय पर बोलें, अपने विषय पर आ जायें।

श्री बिरदमल सिंघवी : लोगों को इस प्रकार से एनकरेज किया जाय कि लोग आकर समाचार दें।

श्री श्योपत सिंह (हनुमान गढ़) ; इसी से सम्बन्धित है।

श्री बिरदमल सिंघवी : मैं इसलिए निवेदन कर रहा हूं कि हम पिछली घटनाओं से सबक लेकर इस प्रकार समाचार देने वाले लोगों को हतोत्साहित नहीं करके उत्साहित करें तो इसका ज्यादा लाभ होगा।

एक निवेदन और करूंगा, अस्पतालों में जिस प्रकार से केसेज आते हैं तो अधिकारी वर्ग यह समझकर कि यदि इस प्रकार के केसेज हो गये तो बहुत बुरा लगेगा अस्पतालों में ऐसे मरीजों को भर्ती नहीं करने की एक टेण्डेंसी बन गयी है। मैं निवेदन करूंगा, इस प्रकार का एक किस्सा हुआ। अस्पतालों में ऐसे केसेज होते हैं तो कहते हैं, यह मामूली है, मामूली दवाइयां लो और चले जाओ। इसको टेण्डेन्सी न बनायें। रोग है, किसी के हाथ की बात नहीं है। इसमें कोई बुरी बात नहीं है कि लोग इस प्रकार के केसेज लेकर आये हैं। तुरन्त वहीं पर उपचार हो जायेगा तो लोग केसेज भी लेकर आयेंगे, उपचार होगा और आगे से आगे रोग नहीं फैलेगा। इस विषय का भी ध्यान रखा जाय।

श्री अध्यक्ष : श्री मानिक चन्द सुराना।

श्री मानिक चन्द सुराना (लूनकरणसर): अध्यक्ष जी, पीलिया, ओरी और मस्तिष्क ज्वर के बारे में माननीय स्वास्थ्य मंत्रीजी ने जो वक्तव्य दिया है मैं खासतौर से मस्तिष्क ज्वर के बारे में यह निवेदन करना चाहूंगा कि यह सिर्फ भरतपुर में ही नहीं जयपुर में भी है यह बीकानेर में भी है। इस मस्तिष्क ज्वर के फलस्वरूप पांच मृत्यु बीकानेर में भी हुई हैं जिसको माननीय स्वास्थ्य मन्त्रीजी ने स्वीकार किया है। अध्यक्ष महोदय यदि इस ज्वर की रोक थाम और इसका विश्लेषण शुरू में न हो तो, स्वास्थ्य मन्त्रीजी को जानकारी मिली होगी कि यह बहुत फैटल या घातक सिद्ध होता है। बाद में उपचार के बावजूद किसी भी मरीज को बचाना असम्भव होता है। मैं निवेदन करना चाहूंगा कि मस्तिष्क ज्वर का इलाज बहुत महंगा है। स्वास्थ्य मन्त्री जी को चाहिए, यह जो 35 मृत्यु हुई, 5 मरे हैं बीकानेर में, तीन की मृत्यु हुई दूसरे जिलों में, इन 43 का विश्लेषण करके देखें, यह कौनसे वर्ग के लोग हैं मस्तिष्क ज्वर के कारण जिनकी मृत्यु हो गयी है ? जो सम्पन्न हैं वह इसका इलाज निश्चित रूप से करवा सकते हैं लेकिन जो सम्पन्न नहीं हैं, वह अस्पताल में भर्ती हो गये, आपने दवाइयां लिख दीं। 14-14, 25-25 इन्जैक्शन, अध्यक्ष महोदय, की एक दिन में इसके मरीज को आवश्यकता होती है जिसका खर्चा

(श्री मानिक चन्द सुराना)

70–80–100 रुपए प्रतिदिन मरीज के ऊपर पड़ता है। माननीय मुख्यमन्त्री भी बैठे हैं सदन में, मैं निवेदन करना चाहूंगा कि विशेषकर मस्तिष्क ज्वर बहुत ही फेटल सिद्ध हो रहा है इसलिए इसके लिए सी. एम. एच. ओ. को निर्देश दिये जाने चाहिए कि ऐसे मरीजों की आर्थिक स्थिति यदि इलाज कराने की नहीं है तो निश्चित रूप से राजकीय कोष से इनका इलाज होना चाहिए। इस बात का इन्तजार नहीं किया जाना चाहिए कि मरीज स्वयं इन्जेक्शन लाये, वही सारी दवाइयां और इन्जेक्शन उपलब्ध कराये। खासतौर से इसके लिए जो इन्जेक्शन हैं वह राजस्थान में उपलब्ध भी नहीं है। दिल्ली से मंगाना पड़ता है, बम्बई से मंगाना पड़ता है। माननीय स्वास्थ्य मन्त्री से यह भी निवेदन करूंगा कि इसके सारे इन्जेक्शन और सारी दवाइयों की खासतौर से सुविधा उपलब्ध कराई जाय जितने भी बड़े शहर हैं, डिवीजनल हैडक्वार्टर्स हैं, उन पर निश्चित रूप से उपलब्ध कराये जायं। किसी भी स्थिति में मरीज को मरने नहीं दिया जाय इसका विश्लेषण बहुत प्रारम्भिक स्थितियों में करायें। जिन 43 की मृत्यु हुई है उनका वर्गीकरण भी किया जाय कि वे कौनसे वर्ग के लोग थे। अधिक मृत्यु जो इस मस्तिष्क ज्वर के फलस्वरूप हुई है मैं निश्चित रूप से कह सकता हूं कि 5 जो मरे हैं बीकानेर में, यह बहुत गरीब तबके के लोग थे। दो जो बचे हैं वह सम्पन्न वर्ग के हैं, जो इसका इलाज करवा सके और बच सके इसलिए इसके सम्बन्ध में माननीय स्वास्थ्य मन्त्रीजी से निवेदन करूंगा कि प्रत्येक जिले के सी.एम.एच.ओ.को आवश्यक निर्देश जारी किये जायं ताकि इस ज्वर के फलस्वरूप राजस्थान में भविष्य में कोई मृत्यु न हो।

श्री अध्यक्ष : श्री घनश्याम तिवाड़ी।

व्यवधान

आर्डर प्लीज। आप नहीं बोलेंगे? आप बोल लीजिए पहले।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (सीकर): माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मन्त्री महोदय ने जो वक्तव्य दिया है वक्तव्य तो सही है लेकिन मस्तिष्क ज्वर केवल इन जिलों में नहीं है, माननीय मन्त्री महोदय का जो जिला है सीकर, सीकर में भी मस्तिष्क ज्वर के 15 पेशेंट अस्पताल में इस समय पड़े हैं। यद्यपि वह अन्डर इन्वेस्टिगेशन हैं। 15 पेशेंट को यह कह कर भर्ती किया गया है कि यह मस्तिष्क ज्वर के पेशेंट हैं लेकिन यह अन्डर इन्वेस्टिगेशन हैं क्योंकि इनमें से दो-चार लोगों के यह बीमारी है कि नहीं, यह विवादास्पद है। लेकिन जो मूल समस्या है वह यह है कि रात के समय पेशेंट आते हैं। दवाइयां अस्पताल में उपलब्ध नहीं है। सीकर शहर में और अन्य जो शहर हैं सीकर जैसे उनमें भी इसकी दवाइयां उपलब्ध नहीं है। तो उनको रात में भाग कर जयपुर आना पड़ता है। जयपुर आकर दवाइयां लेकर वह जाता है। इसलिए मैं निवेदन करना चाहूंगा कि सी.एम.एच.ओ. जहां पर हैं; बड़े-बड़े अस्पतालों में, उनमें कम से कम सरकार को दवाइयां जरूर उपलब्ध करानी चाहिए। जो गरीब आदमी हैं उनको फ्री दी जाय। क्योंकि बाजार में तो मिलती नहीं हैं इसलिए

(श्री घनश्याम तिवाड़ी)
अस्पताल में जो पैसा देकर ले सकें उसको यह दवाई दी जाय।

दूसरा मैं निवेदन करना चाहूंगा ओरी के बारे में। यह जो ओरी है इसको हमारे यहां बोदरी कहते हैं। सीकर में और जयपुर में इसका प्रकोप है। कोई सा ऐसा घर सीकर में भी नहीं होगा जिसमें एक-दो बच्चा बोदरी का पेशेंट नहीं हो। वहां पर किसी के भी टीका लगाने की व्यवस्था नहीं है तो इसके निरोध का पहले से ही उपाय करें। आज हर घर में पेशेंट है। एक-एक घर में दो-दो, तीन-तीन छोटे बच्चे बोदरी से पीड़ित हैं और बहुत भयंकर रूप से पीड़ित हैं। सरकार को चाहिए, टीका लगाने की व्यवस्था करे।

मैं मन्त्री महोदय से निवेदन करना चाहूंगा आपने तो स्वास्थ्य विभाग अभी सम्भाला है, आपके जितने भी जिला अस्पताल हैं वह सब इस प्रकार की हालात में हैं कि आज कोई भी काम करने की स्थिति में नहीं है। पिछले दो-तीन सालों में, मैं निवेदन करना चाहूंगा, अध्यक्ष महोदय, तीन-चार बार ऐसी बीमारी हुई हैं। राण्डोली में यह बीमारी फैली। 11 आदमी मर गये। आज तक स्वास्थ्य विभाग द्वारा यह पता नहीं चलाया जा सका कि राण्डोली में जो आदमी मरे थे वह किस कारण से मरे। इस प्रकार से विभाग की यह हालत हो रही है। जितने भी जिला अस्पताल हैं वह सिर्फ कसाई खाना बने हैं, बूचर खाने बने हैं। किसी प्रकार की कोई व्यवस्था नहीं है। मन्त्री महोदय, कल परसों मैं सीकर अस्पताल में गया था। मैंने देखा, तीन सौ बैड सैंक्शंड हैं। 231 बैड आज वहां पर हैं और 280 आदमी वहां पर भर्ती थे। बाकी सबको बरामदे में लिटा रखा था। वहां के सी. एम. एच. ओ. को मस्तिष्क ज्वर से पीड़ित पेशेंट को देखने के लिए रात को ग्यारह बजे बुलाने गए तो वह आये नहीं। सारे सीकर अस्पताल की हालत बहुत खराब है, इसलिए मैं माननीय मन्त्री महोदय को निवेदन करना चाहूंगा कि बोदरी और मस्तिष्क ज्वर के जितने भी पेशेंट वहां पर आये हैं उनके सम्बन्ध में सी. एम. एच. ओ. और डॉक्टरों ने जो लापरवाही बरती है, रात को जयपुर भागकर लोगों को इन्जेक्शन ले जाने पड़े हैं, इसकी जांच करायें। आपके खुद के सीकर के अस्पताल की जो हालत है उस हालत को जानने की कोशिश करें। मैं निवेदन करना चाहूंगा कि आप निश्चित् रूप से प्रत्येक सी. एम. एच. ओ., जहां पर भी वह हैं, को मस्तिष्क ज्वर के पेशेंट को सारी सुविधायें उपलब्ध कराने के आदेश दें।

नम्बर दो, ओरी का टीका सिर्फ जयपुर, कोटा बड़े-बड़े शहरों में ही लगाने की व्यवस्था न की जाय। जहां-जहां व्यापक रूप से बीमारी फैल रही है वहां टीके लगाने की व्यवस्था की जाय। सबको पता है, अध्यक्ष महोदय, हर साल जब गर्मी शुरू होती है तो दो महीनों में यह बीमारी फैलती है। इन दो महीनों के पीरियड से पहले···

श्री अध्यक्ष: संक्षेप में, माननीय सदस्य।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : इस बीमारी की रोक थाम की व्यवस्था सरकार को निश्चित् रूप से करनी चाहिए।

(श्री घनश्याम तिवाड़ी)

इन्हीं शब्दों के साथ मैं निवेदन करना चाहूंगा कि मस्तिष्क ज्वर अधिक न फैले, इसकी रोकथाम के उपाय किए जायं यदि हो सके तो, नहीं तो इसकी चिकित्सा की सुविधा सब अस्पतालों में उपलब्ध की जाय। यही मैं निवेदन करना चाहूंगा।

श्री अध्यक्ष : श्री हरीश शर्मा! माननीय सदस्य, मैं आपसे निवेदन करूंगा कि रिपीट नहीं करें, जो बातें कह दी गई हैं उनके अतिरिक्त कोई नई बात हो, तो बताने की कृपा करें।

श्री हरीश शर्मा (खानपुर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, इन सबके पीछे केवल 5 कारण हैं उनको दूर करने की क्षमता अगर सरकार में है तो कर दे। पहला कारण है वायु प्रदूषण, दूसरा कारण है जल प्रदूषण। यह दो कारण पैदा कर रखे हैं पूंजीपतियों ने, उनका कोई बाल बांका नहीं कर सकता, कानून के खिलाफ हैं वह। आज कोटा, जयपुर, हर बड़े शहर में, माननीय अध्यक्ष महोदय, 24 घन्टों ऐसी वायु आती है, जिसे बच्चे बर्दाश्त नहीं कर सकते। वैज्ञानिकों की मीटिंग हुई थी कोटा में, तीन दिन तक सेमीनार चली उसमें तय हुआ और गवर्नमेन्ट को रिपोर्ट भेजी गई। उसके बावजूद कोई कार्यवाही नहीं की गई क्योंकि पूंजीपतियों से पैसा मिलता है चुनावों में, चुनाव पैसों से जीते जाते हैं। इसलिये कैसे कार्यवाही करे?

तीसरा कारण है जंगलों का कटना। ट्रक भर-भर जंगल काट कर ले जाते हैं। जंगल कटना बन्द हो। मुख्य कारण को तो कोई पकड़ नहीं रहा। मुलजिम भाग जाते हैं क्योंकि काटने वाले पूंजीपति और प्रभावशाली लोग हैं। चौथा कारण है रामगंज मण्डी एरिया में खनिज। प्रमुख कारण है खनिज। खनिज के लिये जो खानें खोदी गई, उन खानों में जो खराब पानी निकलता है उसको जानवर पीते हैं उनकी हालत खराब हो जाती है फसल उस पानी से पकती नहीं। जो पानी है उसको लोग पीते हैं उनकी हालत खराब हो जाती है। सारा पानी नल की नाली में जाता है; माननीय अध्यक्ष महोदय, और पानी खराब मिलता है। मुझे इस बात का बहुत दुःख है। मैं पुनः निवेदन करना चाहता हूं, मैं तीन बार सब जगह निवेदन करता हूं कि यह गलत काम है, अन्याय है, पाप है, रोक दो इसको या फिर गरीब को मत रोको। मैं लिखकर देता हूं, यहां सदन में निवेदन कर देता हूं, रास्ते में जब मैं रोक देता हूं तो लोग मुझे डांटते हैं कि क्यों करते हो तुम। मेरा यहां और कोई काम नहीं होता, अध्यक्ष महोदय, मेरा यही निवेदन है आपने अगर यह नहीं रोका, प्रभावशाली जो लोग हैं, जो दोषी हैं उनको दण्ड नहीं दिया गया तो चाहे वे कितने ही प्रभावशाली लोग हों मैं उनके खिलाफ आवाज उठाऊंगा, मैं उठाता आ रहा हूं मेरा कोई बाल बांका नहीं कर पाया और न कर पायेगा।

अध्यक्ष महोदय, झालावाड़ जिले का जो मुख्य चिकित्सालय है वहां पर कोई रोगी जाता है तो उसको कोई बिस्तर मिलता नहीं। कोटा और झालावाड़ जिले में केवल मात्र दो चिकित्सालय है वार्ड के, एक वार्ड तो बड़े चिकित्सालय में मिलेगा। बाकी जो वार्ड हैं गरीबों के लिये वह सड़ रहे हैं। वहां जाकर तो गरीब और बीमार हो जायेगा।

श्री अध्यक्ष : संक्षेप में, माननीय सदस्य।

श्री हरीश शर्मा : अध्यक्ष महोदय, मेरा आपसे यही निवेदन है कि सरकार अगर गरीबों को, बच्चों को इस बीमारी से बचाना चाहती है तो केवल मात्र तीन प्रोग्राम हाथ में ले ले। मुख्य रूप से, पहला वायु प्रदूषण को रोकने के लिये कठोरतम कदम उठाये। गरीब आदमियों की आपको दुआयें मिलेंगी। यह सबसे बड़ा काम है। दूसरा काम है जल प्रदूषण को रोकने का। आज कोटा जिले में जहां-जहां कमेटी दौरे पर गई, रामकिशन जी वर्मा यहां बैठे हुये हैं, वह चाहे कहें या नहीं कहें क्योंकि सत्ता पक्ष में बैठे हैं, खेल मंत्री थे पहले, इनके एरिया में भी यही समस्या है। इनके यहां पीलिया रोग के काफी मरीज हैं, मेरे यहां भी मरीज हैं। क्योंकि वह सत्ता पक्ष में बैठे हैं इसलिये वह नहीं कह सकते इस बात को।

अध्यक्ष महोदय, मैं कुल मिलाकर यही निवेदन करना चाहूंगा इस सबकी जड़ को काटने के लिये हमें कठोर कदम उठाने पड़ेंगे उनके विरुद्ध जो आप लोगों के दुश्मन हैं जो अपने लाभ, अपनी कमाई के लिये……

श्री अध्यक्ष : संक्षेप में, माननीय सदस्य।

श्री हरीश शर्मा : इस तरह का पाप करते हैं।

इतना ही कह कर मैं आपको धन्यवाद दूंगा, विशेषकर चिकित्सा मंत्रीजी को कहूंगा आप चिकित्सा विभाग की मीटिंग बुलाइये और मीटिंग बुलाकर तय कीजिये…

श्री अध्यक्ष : समाप्त कीजिये, माननीय सदस्य।

श्री हरीश शर्मा : कि आपका प्रोग्राम क्या है? डिप्टी सैक्रेटरी को बुलाओ और…

श्री अध्यक्ष : बैठ जायं आप।

श्री नत्थीसिंह।

श्री नत्थीसिंह : अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी मार्फत स्वास्थ्य मंत्रीजी से निवेदन करना चाहता हूं……

श्री अध्यक्ष : संक्षेप में।

श्री नत्थीसिंह : कि उन्होंने जो 35 मौतें बताई हैं मस्तिष्क ज्वर से भरतपुर में यह तो बहुत पीछे की बात है, 43 तमाम राजस्थान में बताई हैं। साल भर से मस्तिष्क ज्वर का प्रकोप भरतपुर जिले में है। पहले मौतें हुई कुम्हेर के प्राइमरी हैल्थ सैन्टर में, उनको बहुत पीछे आपने मस्तिष्क ज्वर माना है। डॉक्टरों ने कोशिश की। मैं उनको कोई दोष नहीं देता। लेकिन मस्तिष्क ज्वर का बाद में जाकर उनको पता चला कि यह मस्तिष्क ज्वर है। पहिले मस्तिष्क ज्वर मानते ही नहीं थे। आज आतंक है हमारे गांव में, हमारे इलाके में कि बुखार तेज हुआ तो मस्तिष्क ज्वर मानकर चलते हैं, भगदड़ मच जाती है। भरतपुर से आने वाले माननीय सदस्य आपके पीछे बैठे हैं उनके क्षेत्र में एक गांव आता है टहैया, एक घर में चार मौतें हुई हैं एक के बाद एक। इसलिये मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि पहले तो जिस क्षेत्र में, जिस गांव में बहुत अधिक मौतें हुई हैं, अभी मुझसे पूर्व

(श्री नत्थीसिंह)
बोलेने वाले माननीय सदस्य ने कुछ कारण बताये हैं, पर मैं आपसे चाहूंगा कि आप अपने विभाग के द्वारा, अपने मेडिकल एक्सपर्टस् से जांच कराइये कि आखिर में एशिया में इतनी तेजी से मस्तिष्क ज्वर क्यों फैला है? इसके कारण क्या हैं? और फिर प्रिवेन्टिव कोई कदम उठाये जा सकते हैं वह उठाइये जिससे यह रोग नहीं फैले।

एक दूसरी बात, आपने यह कहा है कि भरतपुर में आपने एक वार्ड खोला है। ठीक है, खोला है, अच्छा काम किया है, उपचार भी वहां होता है लेकिन केवल भरतपुर में वार्ड खोलने से काम नहीं चलेगा। जहां यह रोग फैल रहा है वहां से तो भरतपुर में आने में बहुत देर लगती है जब तक तो काम तमाम हो जाता है, इस स्टेज पर आ जाता है कि डॉक्टर यह कहते हैं कि हम क्या करें, लेट हो गये। इसलिये मेरा आपको एक सुझाव है कि इसके प्रभावशाली इलाज के लिये भरतपुर के अलावा और जो अस्पताल हैं, डीग का है, कामां का है, कुम्हेर के जो प्राइमरी हैल्थ सैन्टर्स हैं, उन सब में व्यवस्था होनी चाहिये, विशेष व्यवस्था होनी चाहिये ताकि मस्तिष्क ज्वर के मरीज को तुरन्त प्रभावशाली उपचार मिले। भरतपुर में भेजें तो कम से कम ऐसी स्थिति में तो भेजें कि वहां पर कोई उपचार हो सके। अगर ऐसी स्थिति में भेजें कि कुछ नहीं हो सकता है, अब तो अन्तिम स्टेज पर आया है अब तो कुछ नहीं होगा, तो कोई फायदा नहीं है।

दूसरी अर्ज मैं आपसे यह करना चाहता हूं कि मोबाइल उपचार की व्यवस्था भी इसमें होनी चाहिये गांवों में, आपकी मोबाइल यूनिट्स बनें, वह गांवों में जायें और जहां मस्तिष्क ज्वर के केसेज हैं, उनका उपचार गांवों में करें। आतंक की स्थिति को सुधारने के लिये यह जरूरी है। जैसे कोलायत से आने वाले माननीय सदस्य ने अभी कहा कि सुविधा वास्तव में···

श्री अध्यक्ष : कोलायत से नहीं, लूणकरणसर से आने वाले माननीय सदस्य।

श्री नत्थीसिंह (कुम्हेर) : दवाई की व्यवस्था चूंकि मेरे यहां सबसे ज्यादा···

श्री अध्यक्ष : लूणकरणसर से आने वाले माननीय सदस्य।

श्री नत्थीसिंह : मुझे पुरानी याद रह गई। माननीय सुराणा साहब ने कहा।

आखिर में मैं यह कहना चाहता हूं कि वहां पर तो दवाई की व्यवस्था इस रोग के लिये करने के लिए आप विशेष कदम उठा रहे हैं, यह मत कहिये कि ज्यादातर गांवों के लोगों को यह बीमारी हो रही है, अधिकतर गांवों में केसेज हो रहे हैं, गांवों में कोई सम्पन्न नहीं है, इसके मुफ्त उपचार की व्यवस्था राज्य सरकार को करनी चाहिये प्रत्येक सैन्टर्स पर ताकि लोग मौत से बच सकें। इतना ही मुझे निवेदन करना है।

श्री अध्यक्ष: श्रीमती विद्या पाठक। माननीय सदस्य। श्रीमती विद्या पाठक।

(व्यवधान)

यह जरूरी नहीं है कि सभी माननीय सदस्य बोलें।

श्रीमती विद्या पाठक (सांगानेर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्रीजी

(72)

(श्रीमती विद्या पाठक)

का वक्तव्य सुना। वक्तव्य को पढ़कर माननीय मंत्रीजी ने बहुत ईमानदारी से कुछ चीजें कही हैं, सैनिटेशन की व्यवस्था ठीक नहीं है, ड्रिंकिंग वाटर की व्यवस्था ठीक नहीं है, ओवर क्राउडेड जगह है। यह सारी चीजें दूसरे विभागों से सम्बन्धित हैं, उनकी शार्ट कमिंग, उनकी कमियां माननीय मंत्रीजी ने बहुत ईमानदारी से बहुत ईमानदारी फ्रैंकली मंजूर की हैं। सरकार के नुमाइन्दे हैं, सरकार के फेल्योर को एक्सेप्ट करें यह बड़ी ग्रानेस्टी की बात है पर साथ ही जहां तक इनके विभाग का प्रश्न है जो वक्तव्य इन्होंने पढ़ा उसको सुनने से ऐसा लगता है कि पूरा वक्तव्य मात्र केवल एक डिफेन्स पर है, यह एकेडेमिक नहीं है, ना पीलिया, ना मैनेन्जाइटिस ग्रौर ना खसरा। यह एकेडेमिक नहीं है, मेरे तो इसमें बहुत कम हैं। जैसा अन्य माननीय सदस्यों ने बताया, ग्रांकड़ों की कमी ग्रौर थानों के जो नाम दिये गये हैं, जिसको देख कर लगता है कि पूरे ठीक ग्रौर समुचित रूप से नहीं दिये हैं।

माननीय ग्रध्यक्ष महोदय, ये सारी बीमारियां इन्फेक्शियस बीमारियां हैं। ये सारी बीमारियां उन पर हमला करती हैं जो बहुत कमजोर होते हैं जिनका रेजिस्टेन्स लो होता है। इन सारी बीमारियों का सम्बन्ध पूरी व्यवस्था से, सरकारी व्यवस्था से या यों कहिये कि नागरिकों को जो समुचित व्यवस्था दी जानी चाहिये उन व्यवस्थाग्रों से है। जहां तक सैनिटेशन का प्रश्न है, ड्रिंकिंग वाटर ग्रधिकांश जगह पोटेबल नहीं है ग्रौर गांवों में तो बिलकुल ही नहीं। गरीबी की वजह से माल न्यूट्रेशन है। इसी तरह से बैड लिविंग कन्डीशन्स, ग्रनहाइजेनिक कन्डीशन्स गांवों में व्याप्त है। शहरों में स्लम्स में ग्रोवर क्राउडेड लिविंग है। इन सबके कारण ग्रौर उनकी पूग्रर रेजिस्टेन्स के कारण ये बीमारियां हर वर्ष होती हैं जब मौसम बदलता है तब तो निश्चित् ही होती है। मैडिकल विभाग को इस बात पर निश्चित् रूप से ध्यान देना चाहिये। जिन दिनों सर्दी से गर्मी का मौसम ग्राता है मार्च-ग्रप्रैल के समय हमेशा बच्चों में खसरा ग्रौर मीजल्स ग्रौर इस तरह की बीमारियां होती रही हैं। जैसा मैने निवेदन किया, खराब ग्रार्थिक स्थिति की वजह से ग्रनहाइजेनिक स्थिति की वजह से यह बीमारी होती है जिसकी ग्रोर सरकार का ध्यान कभी नहीं जाता। इन डाइरेक्ट डाइरेक्ट टैक्सेज को ग्रौर लगाकर, गरीबी को ग्रौर बढ़ा कर कितनी दवाइयां गरीबों को देकर बचा सकेंगे। यह सरकार के लिये सोचने का मुद्दा है। इसी तरह से जब मौसम बदलता है उसके पहले चिकित्सा विभाग को, सर्व विभाग को इस चीज के लिये विचार करना चाहिये, टीके लगाने ग्रौर प्रिवेन्टिव मेथड्स लागू की समुचित व्यवस्था हो सकती है पूरी व्यवस्था में परिवर्तन का लॉग टर्म प्रोसेस हो सकता है, इसलिये चिकित्सा विभाग टीकों के बारे में, इनके प्रिवेन्शन के बारे में विचार करें।

श्री ग्रध्यक्ष : संक्षेप में।

श्रीमती विद्या पाठक : मैं माननीय ग्रध्यक्ष महोदय, एक ही मिनट में ग्रपनी बात समाप्त करती हूं। मुझे ऐसी जानकारी मिली है कि कुछ बीमारियां जैसे खसरा, मैनन्जाइटिस,

(श्रीमती विद्या पाठक)

पीलिया इस तरह की सारी 6 इन्फेक्सियस हैं, उनके लिये जो प्रस्ताव हैं उन प्रस्तावों पर विचार नहीं किया गया। खसरा, एपिडेमिक हो ऐसा नहीं है, हर वर्ष होता रहा है कभी मेग्निट्यूड इसका ज्यादा होता है कभी कम होता है परन्तु उसका टीका भी हमारे भारतवर्ष में अभी बनना आरम्भ नहीं हुआ है वह फ्रांस से इम्पोर्ट किया जाता है। यूनिसेफ के माध्यम से टीके लिये जा सकते हैं पर उनकी संख्या इतनी नगण्य रहती है कि टीके शहरों में तो लग जाते हैं पर जहां पर बीमारी का प्रकोप अधिक होता है, गांवों में इसके ऊपर ध्यान नहीं दिया जाता। इसी तरह से इसके सिम्प्टम, मैनन्जाइटिस किस कारण हो रहा है इसकी वाइड पब्लिसिटी नहीं है, हास्पिटल्स में या कि अन्यत्र दूसरे छोटे अस्पतालों में प्रोपर नर्सिंग और आइसोलेशन की व्यवस्था नहीं है। क्योंकि यह इन्फेक्सियस बीमारी है, इसलिए बहुत जरूरी है कि इसको फैलने से रोका जा सके पर उसकी भी समुचित व्यवस्था नहीं है। ग्रामीण क्षेत्र में है वहां अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए, अस्पतालों में विशेष वार्ड बनाये जाने चाहिए, सी. एम. एच. ओ. के माध्यम से सबसेन्टर्स पर यह हिदायत होनी चाहिए, सारे मेडिकल सेन्टर्स पर जहां दवाइयां मिलती हैं वहां पर जो भी मरीज आता है उनमें इन बीमारियों को रूल आउट करें। पहले उसका जब डाइग्नोसिस करते हैं तो इन बीमारियों को रूल आउट करें जिससे तुरन्त इसकी चिकित्सा हो सके और बीमारी फैलने से बच सके।

श्री अध्यक्ष: श्री मोहन प्रकाश, संक्षेप में।

श्री मोहन प्रकाश (राजाखेड़ा): अध्यक्ष महोदय, जैसा कि स्वास्थ्य मन्त्री जी ने स्वीकार किया ऐसे मामले बड़े भारी हो रहे हैं। इस देश के अन्दर डॉक्टर और नेताओं का एक सा हाल है। दोनों रोग पकड़ नहीं पा रहे हैं। स्वयं स्वास्थ्य मन्त्री जी ने यह स्वीकार कर लिया कि कुपोषण और प्रदूषण की वजह से ये बीमारियां हैं। उसके बाद सारी की सारी जिम्मेदारी सरकार की हो जाती है। जब सरकार की जिम्मेदारी हो जाती है तो मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं, मैं जिस जिले से सम्बन्धित हूं वहां भी आदमी ही रहते हैं, उनकी कोई चर्चा नहीं। पिछले पांच सालों से कुओं में कभी दवाइयां नहीं पड़ी, जो सबसे मामूली चीज थी। पिछले वर्ष धौलपुर में 110 मौतें हुई। उनकी हमने लिस्ट बनाकर वहां के सी. एम. एच. ओ. को दी। जब यह अखबार में आया तो उन्होंने कहा कि हमारे यहां सिर्फ 14 मौतें हुई। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि जो डाक्टर जिला स्तर पर हैं, न वह देखने का कष्ट करते हैं और न रोग को पहचानने की उनकी, हमको लगता है, कोई क्षमता है। मैं उदाहरण के लिए बताना चाहूंगा, तेज बुखार में जब कोई मरीज आता है तब सबसे पहले उसको बोतल चढ़ाई जाती है ग्लूकोस की और उसका रिएक्शन होता है।

दूसरे, जहां तक पीलिये का सवाल है हालांकि यह मुझसे सम्बधित नहीं है, महिलाओं से सम्बन्धित मामला है, लेकिन इसके काफी केसेज हो रहे हैं। जिस गर्भवती स्त्री को पीलिया हो जाता है तो उस गर्भवती स्त्री का बचना बहुत ही ज्यादा

(श्री मोहन प्रकाश)

मुश्किल हो जाता है। ऐसी हालात में गर्भवती जच्चा और बच्चा दोनों का देहान्त हो जाता है लेकिन इस मामले में कभी भी राज्य सरकार ने कोई कदम उठाने का काम नहीं किया। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से स्वास्थ्य मंत्रीजी से निवेदन करना चाहता हूं किसी भी सभ्य समाज के लिए कुपोषण और प्रदूषण से मौत होना बड़ा लज्जाजनक बड़ा बुरा माना जाता है। तो कुपोषण और प्रदूषण से होने वाली रोगों की सारी जिम्मेदारी सरकार की होनी चाहिये। जो भी इस रोग से मरे उन सभी लोगों को पूरा-पूरा मुआवजा मिलना चाहिये।

श्री अध्यक्ष स्वास्थ्य मंत्रीजी

(व्यवधान)

श्री दाऊदयाल जोशी

(व्यवधान)

आॅर्डर प्लीज। काफी हो गया, माननीय सदस्य।

(व्यवधान)

श्री दाऊदयाल जोशी। बहुत ही संक्षेप में।

श्री दाऊदयाल जोशी (दीगोद) : माननीय स्वास्थ्य मंत्रीजी दो बीमारियों की ओर ध्यान दें, जो प्रतिवर्ष होती हैं…

श्री अध्यक्ष : आयुर्वेद का उपचार बताइये।

श्री दाऊदयाल जोशी : एक तो छोटी माता और दूसरा पीलिया, ये दो प्रतिवर्ष होती हैं लेकिन विचारणीय विषय यह है इस वर्ष मस्तिष्कआवरणतुलार अर्थात् मैनन्जाइटिस पहली बार राजस्थान में उभर कर के सामने आया है। जहां माननीय स्वास्थ्य मन्त्रीजी अन्य कारण खोज वहां इस बात की भी खोज अवश्य करें कि क्या कारण रहे हैं कि इस साल मैनन्जाइटिस की बीमारी राजस्थान में विशेष रूप से फैली। यह एक अहम् मुद्दा है, राज्य सरकार इस पर गम्भीरता से ध्यान दे। यह महान दूषित और बड़ी भयंकर बीमारी है जिसके कारण आदमी 105-106 डिग्री बुखार होते ही तुरन्त मर जाता है, उपचार सही प्रकार से करवा नहीं पाता है और उसके प्राण चले जाते हैं। माननीय मंत्री महोदय, खसरा भी करीब-करीब राजस्थान में समाप्त हो गया था, बड़ी माता के लिये तो बाकायदा घोषणा करके यह कहा गया था कि एक हजार रुपया इनाम।

श्री शोपत सिंह : आयुर्वेदिक में क्या दवाई है, दवा बताइये।

श्री दाऊदयाल जोशी : मेरा यह निवेदन है जहां राज्य सरकार एलोपैथिक की डींग मार रही है वहां आयुर्वेद के भी कुछ वैद्यों को एस.एम.एस. में कुछ वार्ड अलॉट कर दें। मस्तिष्कआवरणतुलार और पीलिया के लिए मेरा चैलेन्ज है, आपके जिम्मेदार अधिकारी बैठे हैं, एलोपैथी के अन्दर पीलिया की कोई भी दवा नहीं है, केवल आयुर्वेद के पास है। आयुर्वेद ही ठीक कर सकता है दुनियां की और कोई भी ताकत उसको ठीक नहीं कर सकती। मेरा निवेदन है एस.एम.एस. के वार्ड हैं उनमें आयुर्वेद के चिकित्सकों को बुलाकर उनको वार्ड अलॉट

(श्री दाऊदयाल जोशी)
कर दें। उनकी चिकित्सा से सुनिश्चित रूप से लाभ मिलेगा।

श्री अध्यक्ष : माननीय स्वास्थ्य मंत्रीजी

(व्यवधान)

यह जरूरी नहीं है, सबके सब बोलें। रिपीट करने से क्या मतलब है।

श्री नवरंगसिंह (नवलगढ़) : माननीय अध्यक्ष महोदय, सैंकड़ों मौतें हुई हैं, लेकिन मैं माननीय स्वास्थ्य मन्त्रीजी का ध्यान, आपके माध्यम से झुन्झुनूं की ओर आकर्षित करना चाहूंगा जो सीमावर्ती इलाका है। माननीय स्वास्थ्य मंत्रीजी ने अभी विस्तार से बीमारियों के बारे में प्रकाश डाला है। जो सीमावर्ती इलाके पर गांव हैं, कस्बे की बात तो कर रहे हैं, लेकिन झुन्झुनूं का नाम नहीं। माननीय स्वास्थ्य मंत्रीजी से निवेदन करना चाहूंगा कि मैं अभी नवलगढ़ क्षेत्र में ढाणियों में गया हूं। स्वास्थ्य मंत्रीजी भी इससे भलिभांति परिचित हैं कि हर घर में ऐसा कोई घर नहीं है, जिससे ओरी जिसको हम वहां बोदरी कहते हैं, से पीड़ित बच्चा न हो। आज हर घर में बच्चे बोदरी के शिकार हैं। अध्यक्ष महोदय, मैं स्वास्थ्य मंत्रीजी का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि बड़े शहरों में डिस्ट्रिक्ट हैडक्वाटर्स पर तो यदा-कदा इलाज का भी प्रबन्ध है लेकिन इन छोटी ढाणियों व गांवों की न तो कोई सुनने वाला है, न सी.एम.एच.ओ. पहुँचते हैं, न दवा का इन्तजाम है। मैं निवेदन करना चाहूंगा कि ढाणियों-गांवों के लिए, इन छोटी ढाणियों के लिए भी सी. एम. एच. ओ. को निवेदन कीजिये, उनको कहिए, निर्देश दीजिये कि वह उनकी भी देख रेख करें, उनके लिए भी समुचित दवा का इन्तजाम करें। गांव के लोग वैसे ही भोले होते हैं देवताओं के नाम पर बीमारी का इलाज नहीं करवाते हैं फिर भी मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा, माननीय स्वास्थ्य मंत्रीजी इस ओर विशेष ध्यान दें।

श्री अध्यक्ष : संक्षेप में।

श्री नवरंगसिंह : पीलिया पेशेन्ट भी झुन्झुनूं में बहुत हैं और मस्तिष्क ज्वर की बीमारी भी वहां काफी है इसलिए वहां के सी.एम.एच.ओ. को इस तरह के निर्देश देने की कृपा करेंगे ताकि बीमारियों के इलाज की समुचित व्यवस्था की जावे।

श्री अध्यक्ष : सारे राजस्थान के लिये ध्यान देंगे।

श्री शोपत सिंह : एम.एल.एज. को भी देखा जाए।

श्री अध्यक्ष : राजस्थान से एम.एल ए. बाहर नहीं हैं।

श्री रामदेवसिंह (स्वास्थ्य मंत्री) : माननीय अध्यक्ष महोदय, यह सही है कि इन बीमारियों का पीने के पानी से बहुत बड़ा सम्बन्ध है। माननीय सदस्यों के सुझावों का मैं स्वागत करता हूं उन्होंने यह सुझाव दिया उसके अनुसार मैं जलदाय मंत्रीजी से व्यक्तिगत रूप से मिलकर इस समस्या को हल करने का प्रयास करूंगा……

श्री शोपत सिंह : कुओं और तालाबों के लिए।

श्री मानिकचन्द सुराना : यह विभाग आप क्यों नहीं ले लेते ?

श्री रामदेवसिंह : जहां तक दवाइयों का सम्बन्ध है वह पहले ही इतनी हैं कि बीमारियां नहीं बढ़ें । हमने इस साल यह व्यवस्था की है दस हजार बच्चों को तो एडवान्स में टीके लगवा दिये हैं और 50 हजार के और लगाने का हमारा प्रोग्राम है । दरअसल कुछ दवाइयां बाहर से आती हैं, वह भी दो साल से आती हैं अब शायद कसौली में कारखाना शुरू हो रहा है जब उसकी दवाइयां आ जायेंगी अस्पतालों में उसके बाद में इस मस्तिष्क ज्वर का इलाज और भी आसान हो जायेगा, ऐसा मेरा मानना है ।

जहां तक भरतपुर का सवाल है इस साल यह बीमारी क्यों हुई ज्यादा, मुझे सूचना मिली, यह बीमारी ज्यादा आगरा, मथुरा और दिल्ली के आसपास हुई क्योंकि राजस्थान का अपना यह इलाका नजदीक लगता है और यह बीमारियां छुआछूत की हैं इसलिए या तो कई लोग वहां पर गये हैं या पास के इलाकों से इस जिले में आये इसलिए इस बीमारी का प्रकोप बढ़ा, ऐसा नहीं है कि राजस्थान में दूसरे जिलों में यह बीमारी नही है । मैं आपको निवेदन करना चाहता हूं माननीय अध्यक्ष महोदय, जैसा मैंने पहले भी निवेदन किया भरतपुर में 219 और बीकानेर में सात रोगी भर्ती हुए जिनमें से पांच की मौतें हो गयी । सीकर में 15 और जयपुर में 40 रोगी भर्ती हुए जिनमें से तीन मरे । लेकिन यह कोई नयी बात नहीं है । हर साल ऐसा सिलसिला रहता है यह भरतपुर की वजह से है क्योंकि…

एक माननीय सदस्य : यह असमान है।

श्री रामदेवसिंह : नहीं यह असमान नहीं है । आप पिछले साल के आंकड़े को देखें यह बीमारी तो होती ही है । इसमें दो राय नहीं है अपने हिन्दुस्तान में एक हजार के पीछे 18 मौतें औसतन आमतौर से होती हैं भरतपुर में ऐसा मानता हूँ कि आगरा, मथुरा और दिल्ली के नजदीक होने की वजह से यह सारी बीमारी इस इलाके में कुछ जल्दी आई है लेकिन हमारे विभाग ने प्रचार करने की पूरी चेष्टा की है । जबसे इस बीमारी का पता लगा पर्चे बंटवा कर अखबारों में सूचना देकर व जो हमारे संदन में लोग हैं उनके द्वारा, लेकिन दिक्कत तो हमारे सामने आती है जैसे कि इस बात को कई माननीय सदस्यों ने माना है, कई दफा लोग तब बाग आगे आकर बताते ही नहीं हैं कि बीमारी यह है । जब यह बीमारी डिटैक्ट होती है उसके बाद में उपचार की चेष्टा की जाती है । यह बीमारी ऐसी है कि अगर इसका जल्दी पता नहीं लगता तो फिर इसका इलाज भी बहुत मुश्किल हो जाता है हम इसका बहुत प्रचार करते है लोगों को सूचना हम प्रचार के जरिये, अखबारों के जरिये और दूसरे जरिये से करते हैं लेकिन फिर भी जैसा कि जोधपुर से आने वाले माननीय सदस्य ने बताया कि लोग-बाग आगे होकर इस बीमारी के बारे में नहीं बताते हैं ।

जहां तक उन्होंने एक सरपंच के बारे में जिक्र किया, इस सरपंच के साथ कुछ ज्यादती हुई जिन्होंने इस बीमारी की इत्तिला दी मुझे इस बात का पता नहीं है लेकिन मैं इसकी अवश्य जांच कराऊगां अगर शिकायत सही है तो उनके खिलाफ में एक्शन लिया जायेगा जिन लोगों ने उनके साथ में यह किया है ।

(77)

श्री ललितकिशोर चतुर्वेदी : यह आप पहले मंत्री हैं जिन्होंने यह कहा है ।

(व्यवधान)

श्री रामदेवसिंह : अन्त में यही विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि इस विभाग ने इस तरफ पूरा काम किया है बहुत से लोगों ने, हमारे आफीसर ने बहुत ही सतर्कता बरती है जहां दवाई की कमी है या जहां दवाई नहीं पहुँची है जहां तक सम्भव होगा, इस बात की चेष्टा की जायेगी कि अगले दो-तीन दिनों में सभी डिवीजनल हैड क्वार्टर्स या दूसरी जगह दवाई उपलब्ध कराई जाय ऐसा मेरा मानना है ।

श्री अध्यक्ष : चर्चा समाप्त हुई । चर्चा समाप्त हुई ।

(व्यवधान)

श्री रामचन्द्र (बनेड़ा) : ऑन ए पॉइन्ट ऑफ ऑर्डर ।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, कृपया बैठिये ।

श्री रामचन्द्र : व्यवस्था का प्रश्न उठाया है मैंने । व्यवस्था का प्रश्न है ।

श्री डूंगरराम पंवार (टीबी) : माननीय अध्यक्ष महोदय, स्वास्थ्य मन्त्री जी ने जो कहा है ।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, व्यवस्था का प्रश्न है ।

श्री डूंगरराम पंवार : : मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा एक मिनिट में कह दूंगा । मैं ज्यादा समय बिलकुल ही नहीं लूंगा अध्यक्ष महोदय ।

श्री अध्यक्ष : आर्डर, आर्डर । माननीय सदस्य कृपया बैठिये । व्यवस्था का प्रश्न है । कृपया बैठिये ।

श्री डूंगरराम पंवार : अध्यक्ष महोदय, मैं स्वास्थ्य मन्त्री जी से यह कहना चाहता हूँ कि आपके डॉक्टर्स की लापरवाही का पता लगाया जावे आप साईल बनके जाइये और डॉक्टर और नर्सेज और लेडी डॉक्टर्स हैं वह तो अपनी पर्सनिलिटी का ही ध्यान रखते हैं या मरीजों का ।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, माननीय सदस्य ।

श्री डूंगरराम पंवार : अध्यक्ष महोदय, उनको कहिये कि यह ब्यूटी हाउस नहीं है यह अस्पताल है उनको जाकर देखिये मेरी बात सही निकलेगी लाट साहब की परवाह नहीं करते हैं तीन दिन तो बुखार उतरता नहीं है ।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य कृपया बैठिये ।

श्री डूंगरराम पंवार : तीन दिन तक तो जांच ही करते हैं बीमारी का तो निदान तक ही नहीं होता है ।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य कृपया बैठिये । माननीय सदस्य कृपया नियमों का ध्यान रखें ।

श्री रामचन्द्र जाट : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि मैंने एक स्थगन प्रस्ताव दीगोद प्रकरण

(श्री रामचन्द्र जाट)

को लेकर दिया था और आज सुबह आपके चैम्बर में भी मैं आपसे मिला था। उस बात को आज पांच दिन हो गये। यह बड़ा ही गम्भीर मामला है।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य मैंने आपसे बात करली तो फिर आपको व्यवस्था का प्रश्न नहीं उठाना चाहिये था।

श्री रामचन्द्र जाट : आपने मुझे आश्वासन दिया था कि आप मुख्य मन्त्री जी से मिल करके व्यवस्था करेंगे।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य उसके बाद में टाईम कौनसा मिला मुझे, आप तो 11 बजने में पांच मिनट पहले मुझसे मिले हैं उसके बाद मैं सदन में आ गया। माननीय सदस्य, कृपया बैठें। राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर वाद-विवाद। श्रीमती बीना काक।

श्री नत्थी सिंह : आन ए पोइन्ट ऑफ आर्डर।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आर्डर, आर्डर।

श्री नत्थी सिंह : अध्यक्ष महोदय, आपने व्यवस्था दी थी कि एक सदस्य इधर से बोलेगा और एक सदस्य उधर से बोलेगा।

श्री अध्यक्ष : यह बिलकुल सही है।

श्री नत्थी सिंह : उस दिन उधर के माननीय सदस्य बोल चुके थे और इधर से अब्दुल अजीज साहब का नाम पुकारा जाने वाला था जब सदन स्थगित हो गया।

श्री अध्यक्ष : मुझे ध्यान है, माननीय सदस्य। माननीय सदस्य, कृपया बैठें। मुझे ध्यान है।

धन्यवाद प्रस्ताव पर वाद-विवाद

श्रीमती बीना काक (सुमेरपुर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण के बारे में जिस तरह धन्यवाद माननीय सदस्यों ने दिया है उसी तरह मैं भी अभिभाषण के लिये धन्यवाद राज्यपाल श्री को देना चाहती हूं। अपने अभिभाषण में राज्यपाल श्री ने यह खुशी दर्शायी, यह हर्ष दिखाया कि इस बार हमारे सदन के अन्दर महिला सदस्यों की संख्या पहले से कहीं अधिक है।

(2.18 म. प.)

(श्री गिरिराज प्रसाद तिवाड़ी, सभापति पदासीन)

यह इस बात का द्योतक है, यह इस बात का साक्षी है कि अब राष्ट्र के विकास, देश की प्रगति के लिये महिलायें आगे आ रही हैं और बहुत आगे आना चाहती हैं लेकिन क्या हमें यही सोच कर चुप हो जाना चाहिये, इसी बात से सन्तुष्ट हो जाना चाहिये कि आज 200 सदस्यों का जो यह सदन है उसके अन्दर मात्र 15 महिलायें आई हैं। आज भारत की जनसंख्या जो है उसका 50 प्रतिशत या 52 प्रतिशत जो भाग है वह महिलायें ही हैं। मैं तो यह कहना चाहूंगी—

जब आधा भारत नारी है,

जब आधा भारत नारी है तो फिर क्यों वह बेचारी है।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (सीकर) : अर्द्ध-नारीश्वर।

श्रीमती बीना काक : मैं इसी तरह के फिकरों पर आना चाहती हूं जब महिलायें इस सदन में कुछ भी बात कहने को खड़ी होती हैं तो इसी तरह के फिकरे कसे जाते हैं।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : यह फिकरा नहीं है।

(व्यवधान)

श्रीमती बीना काक : माफी चाहती हूं शुक्रिया, बहुत शुक्रिया पिछले समय जब एक महिला सदस्य 20 सूत्री कार्यक्रम के बारे में यह बात कहना चाहती थी, कि 20 सूत्री कार्यक्रम जो हमारे देश को आगे ले जाना चाहता है तो एक टिप्पणी की गयी थी मंगल सूत्र के ऊपर। मंगल सूत्र, जो कि महिलाओं के सुहाग की निशानी है, इज्जत से देखा जाना चाहिये, इज्जत से उसकी बात की जानी चाहिये। एक भाई एक बहन के, एक पिता अपनी बेटी के मंगल सूत्र की मंगल की कामना करता है बहुत अफसोस है उसी मंगल सूत्र के ऊपर इस सदन के अन्दर विपक्ष की तरफ से टिप्पणी की जाती है कि पहले मंगल सूत्र को पहन कर आइये। मैं बहुत अफसोस के साथ कहना चाहती हूं कि आज हमारा विपक्ष है वह महिलाओं के प्रति इस तरह का नजरिया रखते हैं। लेकिन—

शैले शले न माणिक्यम् मोक्तिकम् न गजे गजे।
चन्दनम् न वने वने, सज्जनम् न जने जने॥

जिस तरह से हर चमकता हुआ पत्थर हीरा नहीं होता, हर गजराज के मस्तिष्क पर मोती नहीं होता, हर जंगल के अन्दर चन्दन नहीं होता उसी प्रकार हर जन सज्जन नहीं होता। हमारे इस सदन के अन्दर भी कुछ ऐसे अपवाद हैं जो इस सदन की गरिमा को कम करते हैं, सदन की गरिमा को घटाते हैं। आज जब हम एक लाख या सवा लाख जनता का रिप्रजेन्टेशन करते हैं इस सदन के अन्दर तो हमको यह अधिकार है, हम इस इज्जत से यहां आये हैं उसको दृष्टि में रखते हुए हम यही चाहते हैं कि जो सदन की गरिमा है उस गरिमा को माननीय सदस्य बनाये रखें, उसे घटायें नहीं। महिलाओं का काफी विकास हो रहा है, प्रगति हो रही है, महिलायें आगे बढ़ती जा रही है लेकिन जो हमारी आज यह सोसायटी है, जो हमारा समाज है वह मेल डोमिनेटेड सोसायटी है जिसके अन्दर पुरुष हावी रहते हैं। आज भी स्टेटिस्टिकल फिगर्स के अन्दर महिलाओं को नॉन वर्किंग पापूलेशन माना है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है, आज] महिलायें हर क्षेत्र में आगे हैं उनमें बायोलोजिकल कमियां हैं उसके होते हुये मैं कहना चाहूंगी कि काम के क्षेत्र में महिलायें भी कम नहीं हैं जो कि पुरुष करने से, पीछे रह जाते हैं, मैं नहीं कहूंगी कि वह कर नहीं सकते, करने से झिझकते हैं। आज हम उन श्रीमती इन्दिरा गांधी की नीतियों पर चल रहे हैं जिन्होंने केवल कांग्रेस का ही नाम ऊंचा नहीं किया, भारत का ही नाम ऊंचा नहीं किया, लेकिन विश्व के अन्दर श्रीमती गांधी जी को जिस इज्जत के साथ देखा जाता है। श्रीमती गांधी, जैसा कि कहते हैं, कद की काफी छोटी थी, मेरे बराबर रही होंगी। लेकिन जब लम्बे-लम्बे, ऊंचे-ऊंचे आदमी उनके सामने आते थे तो वह बोने नजर आते थे। श्रीमती गांधी ने जो हमें एक नया दृष्टिकोण दिया, हमारी पार्टी को, हमारे देश को।

(श्रीमती वीना काक)

हम उन्हीं श्रीमती गांधी की बेटियां हैं और चाहती हैं कि इस सदन के अन्दर, इस देश के अन्दर हमें हमारा अधिकार मिले कार्य के रूप से भी महिलाओं को जो कार्य दिया जाता है, छोटा-मोटा कार्य, छोटा-मोटा रोजगार दिया जाता है, लेकिन मैं आपसे कहना चाहूँगी कि आज हम सक्षम हैं हर काम को करने के लिए। मैं चाहूँगी कि जो कार्यशील और अकार्यशील की जनसंख्या के आंकड़े हैं उन्हें सही आधार पर आंकलित किया जाना चाहिए। देश के सर्वांगीण विकास में महिलाओं का योगदान बहुत होना चाहिए। जो विपक्ष में हमारे सदस्य बैठे हैं वह अगर नकारात्मक दृष्टि से हमें नहीं देखें तो बहुत अच्छा होगा।

कांग्रेस पार्टी महात्मा गांधी के द्वारा प्रतिस्थापित की गई, नेहरूजी के द्वारा सींची गई, इन्दिरा जी ने उसका पालन-पोषण किया और राजीव जी ने उसे गौरवान्वित किया। आज कई ऐसे कार्यक्रम हैं जो हमारी पार्टी के द्वारा चलाये जा रहे हैं, सरकार के द्वारा चलाये जा रहे हैं। महिलाओं के लिए जो भी काम हुए, उनके ऊपर मैं नहीं जाना चाहूँगी, क्योंकि आप सभी जानते हैं। इस सदन के माननीय सदस्य हैं वह मुझसे बुजुर्ग हैं और मुझसे ज्यादा एक्सपीरियेन्स्ड हैं लेकिन एक बात कहना चाहूँगी कि·····

"क्या हुआ यदि मैं छोटा-सा कतरा हूं,
क्या हुआ यदि मैं एक छोटा-सा कतरा हूं,
कम से कम इस समुन्दर में मेरा वजूद तो है।"

हमारी जो शिक्षा है उसे जॉब ओरियेन्टेड बनाया जाना चाहिए। हमारे अन्दर शुरू से ही संस्कार भरे जाते हैं वह यह भरे जाते हैं कि जो औरत है वह परिवार की गरिमा है, घर के अन्दर रहना चाहिए, ससुराल में सबकी इज्जत करनी चाहिए बच्चों का पालन-पोषण करना चाहिए, बर्तन मांजने चाहिएं, कपड़े धोने चाहिएं। लेकिन मैं यह सभी माननीय सदस्यों से कहूँगी कि आज हर परिवार के अन्दर शुरू से ही बच्चों को खासतौर से पुत्रियों को इस तरह की शिक्षा दी जाय कि वह आगे बढ़कर अपने देश के विकास में योगदान दें। क्योंकि न्यूक्लियर परिवार आजकल हैं, जिसके अन्दर जो एक परिवार का सदस्य है जब महंगाई बढ़ रही है तो उसके लिये बहुत मुश्किल है कि पालन-पोषण एक परिवार में अकेला कर सके। हम महिलायें भी सक्षम हैं और हम चाहती हैं कि इस तरह की हमें शिक्षा दी जाय, इस तरह के जॉब ओरियेन्टेड प्रोग्राम दिये जायं कि हम आगे बढ़ सकें हमारे परिवार को आर्थिक स्थिति को आगे बढ़ा सकें, अच्छा कर सकें। हम परिवार की स्थिति को सुधार सकती हैं तो कल समाज की प्रगति होगी, जब समाज आगे बढ़ेगा तो देश आगे बढ़ेगा, और देश आगे बढ़ेगा तो हमारा भी इसमें गौरव होगा।

दहेज प्रथा के ऊपर आती हूँ। दहेज प्रथा उन्मूलन के लिए काफी कुछ किया जा रहा है। लेकिन जो दहेज को बढ़ावा देते हैं उन्हें दण्डित करने के लिए अभी कुछ खास मुद्दे नहीं उठाये गये हैं। मैं, माननीय सभापति जी, यही विनती करना चाहूंगी कि इस तरह के जो मुद्दे हैं उन्हें उठाया जाय और दहेज प्रथा को मिटाने में पूरा-पूरा योगदान पुरुष भी करें जितना कि

(श्रीमती वीना कॉक)

महिलायें करती हैं, इक्वालिटी के आधार पर जॉब हो, जब महिलायें जॉब करने के लिए जाती हैं, काम करने के लिए जाती हैं तो मैं यह कहने में झिझकूंगी नहीं कि जो पुरुष हैं आक्रमणकारी जो प्रवृत्ति होती है वह हम महिलाओं को रोकती है। तो जो इस तरह के मुद्दे हैं उन्हें उठाया जाना चाहिये जिससे महिलायें अपने आप को सुरक्षित मान सकें और आगे से आगे बढ़ कर अपने समाज के उत्थान में मदद कर सकें।

अनैतिक व्यापार के ऊपर आती हूं कि जो अनैतिक व्यापार होता है महिलाओं को उससे मुक्ति दिला कर उन्हें सुविधायें देनी चाहिए। अनैतिक व्यापार से पीड़ित महिलायें हैं उनके लिए सुरक्षा गृह होने चाहिए, उनके ऐसे आवास का प्रबन्ध करना चाहिए जिसके अन्दर उनका पोषण किया जाय, उन्हें शिक्षा दी जाये, काम भी उन्हें सिखाया जाये। दूसरी जो कारागार से मुक्त महिलायें होती हैं वह हमारे समाज के अन्दर तिरस्कार से देखी जाती हैं और नीची दृष्टि से देखी जाती हैं। उनके लिए भी मैं कहूंगी कि इस तरह के आवास का प्रबन्ध सरकार की तरफ से अवश्य होना चाहिए।

फैमिली प्लानिंग बहुत आवश्यक है क्योंकि ग्राड नेशनल प्रोडक्टिविटी जो है वह इफेक्ट करती है हमारी जो पर-कैपिटा नेशनल इन्कम है उसे। सीधे ही इफेक्ट करती है महिलाओं के स्वास्थ्य को। गांवों के अन्दर जो प्रोडक्शन होता है व अक्सर इस दृष्टि से देखा जाता है। जब मैं जाती थी, कभी बात करती थी फैमिली प्लानिंग के ऊपर तो यही कहा जाता था, हमारे पुरुष कहते हैं यह बात कि बच्चे होते हैं साहब वह खेत के अन्दर काम आयेंगे, कोई पिता के लिए हुक्का लायेगा; कोई गाय चराने लिए के जायेगा, चड़स अगर चल रहा है तो उसे चलायेंगे। इस तरह की वह बातें कहते हैं, लेकिन वह यह नहीं सोचते कि महिलाओं के स्वास्थ्य पर कितना असर होता है। सबसे बड़ी विपदा महिलाओं के ऊपर यही आती है फैमिली प्लानिंग में जो उन्हें मजबूर कर देती है आगे न बढ़ने के लिए, उनके काम में बाधा होती है। इसलिए पालना गृह होने चाहिए। अगर बच्चे भी हैं तो भी महिलायें अपने आपको इण्डिपेण्डेन्ट महसूस करें, पालना गृह के अन्दर बच्चों को छोड़ सकें उनके स्वास्थ्य का परीक्षण हो सके, उनके बच्चों की एजूकेशन के ऊपर ध्यान दिया जाना चाहिये, और पोषाहार कार्यक्रम भी उस गांव के अन्दर होना चाहिए, शिशु गृह होना चाहिए, निराश्रित बाल गृह होना चाहिए ताकि जिनके माता-पिता में से एक सदस्य रह गया हो, जिसकी इन्कम 250 रुपये से कम हो या कुष्ठ रोग से पिता या परिवार का व्यक्ति पीड़ित हो, ऐसे बच्चों को भी उसमें संरक्षण देना चाहिए। जो अविवाहित माताओं के बच्चे होते हैं उनके लिए भी अलग से गृह बनाये जाने चाहिए ताकि जो माता पिता की वजह से कलंकित होते हैं उन्हें समाज के अन्दर बाकी के बच्चों के समान महत्व मिल सके। जिस से वह भविष्य में हमारे देश को आगे बढ़ाने के लिए योगदान देने में सक्षम हो सके।

महामहिम राज्यपाल महोदय ने अपने अभिभाषण में महिलाओं के विकास कार्यक्रम की बात भी कही है।

(श्रीमती बीना काक)
ऐसे कई कार्यक्रम चल रहे हैं जैसे कि वूमेन डवलपमेंट प्रोग्राम है जिनके अन्दर 5 हजार से 6 हजार की जहां जनसंख्या है वहां महिला विकास केन्द्र खोले जा सके हैं। मैंने काफी बातचीत की थी इस बारे में, पता चला है कि 1989 और 90 के अन्दर हमारी सातवीं पंचवर्षीय योजना के अन्दर 2700 महिला विकास केन्द्र होंगे और 19 लाख 35 हजार 500 महिलाओं को लाभान्वित किया जायेगा। लेकिन जहां पर एक करोड़ की राजस्थान की जनसंख्या है वहां पर 19 लाख तो ऊंट के मुंह में जीरा के समान है।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : बहुत कम हैं।

श्रीमती बीना काक : दूध पिलाती माता और बच्चों के लिए भी कार्यक्रम है। 3.42 करोड़ राज्य की जनसंख्या है, 17 प्रतिशत जिनमें से एक से छः वर्ष की आयु के बच्चे हैं और 20 प्रतिशत 15 से 44 वर्ष की महिलायें हैं जो बच्चे व दूध पिलाती महिलायें होती हैं सबसे अधिक मोर्टेलिटी रेट इसी ग्रुप के अन्दर होती हैं। इनके पोषाहार का पूरा ध्यान रखते हुए हमें मोर्टेलिटी रेट से हमें उबरना है। इसके अन्दर भी सरकार को अच्छे मजबूत कदम उठाने की आवश्यकता है। बहुत आवश्यक है कि बच्चों का पोषण अच्छा हो, बच्चों का शारीरिक व मानसिक विकास हो और जैसा कि मैंने कहा, मोर्टेलिटी रेट, बाल मृत्यु दर कम हो।

माननीय सभापति महोदय, इस दशक में करीब 14 प्रतिशत भारत की जनसंख्या 18 से 28 वर्ष की है जो कि यूथ है। आज हमारे जो युवा भाई हैं इस सदन के अन्दर बहुत हैं बहुत खुशी की बात है, क्योंकि अब श्री राजीव गांधी·····

श्री शौपत सिंह : युवा विधायक हैं भाई नहीं।

श्रीमती बीना काक : युवा विधायक माननीय सदस्य हैं, राजीव गांधी हमारे प्रधान मंत्री हैं उनके लिए भी पहले काफी कुछ कहा जाता था। जब मैं शुरू में यहां पर दो-तीन दिन आई थी तो हमारे जो युवा विधायक हैं उनके लिये काफी बातें कही गई थीं। मैं आपसे कहना चाहूंगी कि जब राजीव गांधी प्रधान मंत्री नहीं बने थे तब भी इस तरह की काफी बातें होती थीं, यह कल का लड़का है, यह क्या देश को सम्भाल पायेगा। यही विपक्ष के हमारे माननीय सदस्य कहते थे, क्या देश को सम्भाल पायेगा, इन्हें राजनीति का क्या अनुभव है। उस वक्त में भी हमारे विपक्ष से कहा करती थी। आज विपक्ष बहुत मजबूत है, बहुत आवश्यक है कि एक मजबूत सरकार के लिए एक विपक्ष मजबूत हो तभी हमारी सरकार भी मजबूत हो सकती है। उस वक्त भी हमारे विपक्षी कहा करते थे कि राजीव गांधी क्या सम्भालेंगे तो मैं यही जवाब दिया करती थी कि वे आप सत्ता में थे, तो जनता ने 80-85 वर्ष के बुजुर्गों को सत्ता दी थी उन्होंने कितना काम कर लिया था और कितने दिन तक सत्ता की, हमारे देश की बागडोर को सम्भाल लिया था? स्वरोजगार योजना के अन्तर्गत जो राशि उपलब्ध कराई गई है वह बहुत कम है उसको भी बढ़ावा दिया जाना चाहिये। इसके अलावा औरतों के पोलीटेक्निक होने

(श्रीमती वीना काक)
चाहिये। वीमेन्स के जो वर्किंग होस्टल्स हैं उन्हें भी बढ़ावा मिलना चाहिये।

मैं, माननीय सभापति जी, आप सब माननीय सदस्यों की बहुत आभारी हूं कि उन्होंने आज मुझे पहली बार मौका दिया, बहुत अच्छी तरह से ध्यान से सुना। शुरू के जो तीन दिनों का इम्प्रेशन था उससे आज मुझे बेहतर लगा है। मैं उसके लिए भी अंत में कहना चाहूंगी, धीरे-धीरे वातावरण और यह मौसम बदलने लगा है।

पहले सदन आंख मलता था आज जागने लगा है।

श्री सभापति : माननीय श्री अब्दुल अजीज !

श्री अब्दुल अजीज (मकराना): आदरणीय सभापति जी, तवारीख इस बात की गवाह है कि जब-जब युग अच्छा होता है, तवारीख इस बात को लिखे बगैर नहीं रहती। सभापति महोदय, अभिभाषण पर धन्यवाद के पहले मैं सदस्या जी, जो अभी अभी फर्मा रही थी, को एक शब्द में यह कहना चाहता हूं कि इन्फीरियोरिटी काम्पलेक्स नहीं होना चाहिये। यह राजनैतिक सदन है। हम लोग इस बात का पूरा ध्यान रखते हैं कि कोई अपशब्द या कोई ऐसी बात हमारी ओर से आपकी शान में न हो और न होगी लेकिन यह राजनैतिक मंच है, हमें विचारों के आदान-प्रदान में, बातचीत में विशाल हृदय और विशाल दिमाग से काम लेना होगा।

सभापति ी, मैं अपने असली मुद्दों पर आते हुये एक ही बात कह ा चाहता हूं कि हमारे माननीय गवर्नर साहब ने जो तकरीर की उसमें कानून और व्यवस्था की बात को लेकर राजस्थान की सीमाओं की हिफाजत की बात कही, पूरा मुल्क इस बात को जानता है कि पंजाब की समस्या एक ज्वलंत समस्या रही है। यह नफरत की आग सूबाई सरहदों के बचाव से नहीं रुकती है। चाहे फिरका परस्ती कहीं भी हो हमें इसको लाजिमी जड़ से उखाड़ना है। इसमें फखिया कहने की कोई बात ही नहीं है जब कि सारा राष्ट्र कांग्रेस के अधीन था, हुकूमत के नजर था तो फिर यह फखिया कहने की बात कहां रह जाती हैं कि राजस्थान को हमने बचाया। राजस्थान में कई मुकामात पर फिरकावाराना फसाद हुये उनका कहीं जिक्र नहीं। उन हालात में लोगों को कितना नुकसान पहुँचा, उनको किस तरह से उन्होंने कम्पेन्सेट किया-इसका कहीं जिक्र नहीं, दो शब्द नहीं। असलियत में किस तरह से पशेमान और पशेमुर्द हो करके राजस्थान में कई मुकामात से मेरे पास इत्तला आती है कहीं कब्रिस्तान का मसला है, कहीं वक्फ-बोर्ड का मसला है, कहीं पजेशन का मसला है। मुख्तलिफ किस्म के मसाइल असलियत के आये हैं। पांच सालों में कांग्रेस (आई) की हुकूमत बाजाफ्ता तौर पर इन्तजामियात करने में नाकायाब रही है।

सभापति महोदय; मैं आपकी मार्फत इस मौजूदा हुकूमत को यह बताना चाहता हूं, यह कहते हैं कि हमने बड़े आला पैमाने पर चुनाव कराये हैं। सभापति जी; मैं आपको बताऊं कि मौजूदा चुनावों में क्या नहीं हुआ। हुकूमत ने; मुझे याद है श्री राजीव जी ने जो एक बयान पटना से जारी किया था,

(श्री अब्दुल अजीज)

वजीरे आजम का ओहदा संभालते हुए उन्होंने कहा कि हिन्दुस्तान में गैर कांग्रेस (आई) की हुकूमतें सत्ता का दुरुपयोग कर रही हैं। मैं आपको राजस्थान की मिसालें बताऊं। मेरे इलाके की मैं बात बताऊं। एक आपके सुपरवाइजर इन्चार्ज बोरावर, जो कि चुनाव केन्द्र के खुद इन्चार्ज थे, का नाम मोहनराम है, थांवला के रहने वाले हैं जिस पोलिंग स्टेशन के वह इन्चार्ज थे, उसका नम्बर है 531 मैंने उनको चश्मदीद देखा कि खुद मोहर लगा कर, कांग्रेस(आई) के बैलट पर मोहर लगाकर, खुद अपने हाथ से तकरीबन पौने ग्यारह बजे वोट डाल रहे थे। उन्होंने यह वोट डाले 141201 से 141211 नम्बर के वह मत पत्र थे एक साथ उसने ठप्पा लगाया, उनको डाला मैंने देखा, मैंने पकड़ लिया। वहां की जनता, बोरावर की जनता को जब यह मालूम हुआ कि इस तरह से इस शख्स ने ऐसा किया तो पूरी की पूरी भीड़ वहां पर जमा हो गई। एक घन्टे तक सारा का सारा जो मत केन्द्र था वह बन्द हो गया मतदान वहां का बन्द हो गया सभापति जी, आपको क्या निवेदन करूं, That supervisor was transferred from that camp उसे हटा दिया गया। जनता ने कहा कि बाहर निकालो इसे। जब मैंने देखा कि ऐसा क्यों होता है तो पता लगा कि कहीं न कहीं सरकार के इशारे पर कुछ लोग काम करते हैं। इस तरह की अव्यवस्था की हालत है। आप मुझसे कहेंगे कि उसकी शिकायत मैंने क्यों नहीं की। उसने जनता के सामने माफी मांगी। जो इलेक्शन इन्सपेक्टर था उन्होंने उसको वहां से हटा दिया। व्यवस्था तत्काल उन्होंने करवाई। मैं नहीं चाहता था कि वोट देने का मूल अधिकार है लोगों का, उस केन्द्र से हट जायें। वहां बाकायदा तौर पर वोट पड़े। लेकिन अव्यवस्था इस तरह की देखी गयी, कई बार तो ऐसा देखा गया कि जगह जगह सत्ता का दुरुपयोग होता है मैं बताऊं कि मीठड़ी ग्राम में एक ट्रान्सफार्मर रख दिया। आज वहां हालत यह है, बिजली विभाग को मैंने इसकी सूचना भी दी थी इलेक्शन डिपार्टमेंट को मैंने टेलीग्राम देकर यह इत्तिला दी थी :

Mis-use of Government Department PHED, RSEB, Post Office illegal working in Makrana Constituency villages by Congress (I) candidate. Serious concern, Please control. Abdul Azij.

यह मैंने टेलीग्राम उनको 18-2 को दे दिया था मकराना से। इसकी जांच भी चल रही है, यह भी मुझे मालुम हुआ। लेकिन कहने का मतलब यह है, मत-पत्र प्राप्त करने के लिए कांग्रेस (आई) के उम्मीदवारों की हैसियत मैं बताना चाहता हूं कि जिस प्रकार से धोखा देकर लोगों से वोट लेने की तरकीबें हैं उसकी मिसाल आपको नहीं मिलती। मीठड़ी ग्राम में ट्रान्सफार्मर रख दिया, आज उस ट्रान्सफार्मर के इधर तो रातों जाग रहे हैं गांव वाले कि बिजली विभाग वाले उठाकर नहीं ले जायें और इधर वह लाठी लेकर खड़े हैं कि वह रात को कब आयें। यह स्थिति है आपकी सरकार के कर्मचारियों की और आपकी। आपने सत्ता का खुद दुरुपयोग किया। जगह-जगह पोस्ट ऑफिस के दरख्तान के ऊपर डिब्बे रख दिये कि अब आपकी डाक जायेगी। आपके केन्द्रीय मंत्री श्री बंशीलाल

(श्री अब्दुल अजीज)

मकराना में आये, उसी मंच से एक वरिष्ठ नेता ने यह कहा कि कल से जो सुपरफास्ट जोधपुर मे दिल्ली जाती है वह रोक दी जायेगी। अब बताइये, यह आचरण और यह करेक्टर है एक वरिष्ठ रेलवे मंत्री मकराना में मौजूद थे उसके सामने यह कहा जाये तो यह वोट लेने का घिनौना तरीका है। यह इन्सानियत इखलाक और कानून आग की लपटों में चला गया और आप कहते हैं, आपके वजीरे आजम कहते हैं भारत के कि कांग्रेस (आई) गैर हुकूमतें, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश की तरफ गोया इशारा था इस बात का, सत्ता का दुरुपयोग कर रही हैं। मैं आपके माध्यम से बताऊं कि इलेक्शन कमीशन और आपकी जो मौजूदा सरकार है, न्यायसंगत तरीके से कानून से जमूरियत में इजाजत दें। और ठीक और नेकनामी के तरीके से नुमाइन्दे चुनकर आयें उनको आने दिया जाये।

दूसरा मुद्दा मैं आपके सामने यह पेश करना चाहता हूं कि हमारे गवर्नर साहब ने कहा सड़कों के बारे में। सड़कों का यह आलम था, आपने कहा कि करीब पौने तीन लाख मजदूर जनवरी और फरवरी के अन्दर काम के लिए कार्यरत रहे। सभापति जी, यह हाल था जनवरी और फरवरी में चुनावों के दौरान। यकीनन उन गरीबों को काम पर लगाया लेकिन तरीका क्या था। ठेकेदार और मजदूरों को मजबूर कर दिया गया कि वह कांग्रेस (आई) को वोट दें। कांग्रेस (आई) का झण्डा लगा हुआ था हर सड़क पर कोरी मिट्टी और धूल डाल कर के सरकारी पैसे का और सत्ता का दुरुपयोग करके हर तरह के यत्नों से इन्होंने कामयाबी हासिल की। इसके बावजूद तीन साल के अन्दर-अन्दर जो सेन्टर और मरकजी हुकूमत को जो मतदान किया अवाम ने अखण्डता के नाम पर या इन्दिराजी के नाम पर, किसी भी रहम के नाम पर लेकिन तीन महीने के बाद ही आपमें अविश्वास क्यों हो गया? क्योंकि यह शख्सीयत के नाम पर वोट था। कांग्रेस (आई) की हुकूमत पर आज भी मुझे यकीन नहीं है कि यह जो वादे करते है वह करेंगे। मेरा बुनियादीतौर पर कांग्रेस से कोई झगड़ा नहीं है। झगड़ा है तो इस बात का झगड़ा है कि जो यह कहते है वह यह करते नहीं हैं। जो यह कानून और व्यवस्था बनाते हैं उसमें इनका चलन नहीं है। जो लोग हकदार हैं उनको यह हक देते नहीं।

तालीम के बारे में देखिये। मैं आपसे निवेदन करूं कि शिक्षा की बात यह करते हैं, कितने प्राईवेट इन्स्टीट्यूशन्स हैं राजस्थान में, माइनोरिटीज के जगह जगह स्कूल हैं, क्या आप 100 पर्सेंट एड उन्हें देते हैं? जब वे राजस्थान में अच्छे रिजल्ट्स देते हैं, आपके सरकारी स्कूलों से बहतरीन रिजल्ट्स देते हैं लेकिन उनको एड नहीं देते। मुझे ठीक याद है जब मैं इसी सदन में विधायक था, जनता पार्टी का राज था, मैं भैरोंसिंह जी को मकराना ले गया और वहा का हाई स्कूल दिखाया उसके बाद वहां 10 पर्सेंट एड बढ़ी। मैं कहता हूं कई स्कूल हैं राजस्थान में जगह जगह जो उर्दू को कायम रखना चाहते हैं जो अपनी तहजीब तमदवस को कायम रखना चाहते हैं, एक प्राईवेट तौर पर स्पेशल काज के नाते भार ओढे हुए हैं। आर्थिक भार उठाते हुए प्राईवेट इन्स्टीट्यूशन्श

(श्री अब्दुल अजीज)

चलाते हैं, आपके देश के अन्दर अपना योगदान देते रहे हैं; अपने सहयोग दे रहे हैं, ऐसी संस्थाओं को असिस्ट करने के लिए टाइम टू टाइम पूरी तरह से सहायता देनी चाहिये। एडहाक ग्रान्ट-इन-एड देनी चाहिये। इस तरह से जाहिर होगा कि वाकई आपमें असलियत के लिए हमदर्दी है, आपमें मन में असलियत के बारे में इरादे हैं, पिछली बार जब मैं विधायक था, मैं आपको याद दिलाऊं, आपके वक्फ बोर्ड में सारे के सारे मसायल आज तक पड़े हुए हैं कोई पुर्सहाल नहीं है उनको देखने के लिए। जितने कब्रिस्तान की बाउण्ड्रीज़ के मसायल हैं, अनधिकृत कब्जे हैं उन जमीनों के, आप जानते हैं बढ़ते हुए शहरों में यह आलम हो गया, जगह जगह लोग कब्जे किये जा रहे हैं। मेरा यह निवेदन है कि जितनी बातें कहते हैं अवाम के लिए इन सब को प्रक्टिकल रूप में करने के लिए व्यवस्था करें। मुझे उम्मीद है कि हमारे इस भारत में वह दिन आयेगा जब हर आदमी की बात को कामयाबी के साथ, नेकदिली के साथ सोचा जायेगा।

इन्होंने खनिज के उत्पादन के लिए कुछ भी नहीं कहा। उत्पादन की बात करते हैं तो फिर खनिज के मजदूरों की बात कीजिये आप। खनिज में काम करने वाले जो इण्डस्ट्रियलिस्ट्स हैं उनकी बात कीजिये आप। अपने इलाके की बात कहूं, सभापति जी, मकराना तीन चार लाख रुपये की सरकार को प्रतिदिन आय देता है, 50 हजार मजदूरों का भार मकराना पर है। अस्पताल की दशा देखें तो वहां कोई व्यवस्था नहीं है सर्जन मैंने पिछली बार जनता पार्टी के समय में मन्जूर करवाया। उसके बाद वहां जाते हैं कोई व्यवस्था, उसमें कोई सूचारु ढंग से मेडिकल एड की व्यवस्था नहीं है। एक्सीडेंट हो जाये या कोई बात की तकलीफ हो तो हमें जयपुर या किशनगढ़ भागना पड़ता है। मजदूर के लिये आप हकीकत में हिमायत रखते हैं तो आप इन्तजाम कीजिये जब आप आमदनी के हकदार बनते हैं तो उनके प्रति ईमानदारी और न्याय के साथ रहम दिली के साथ काम कीजिये अच्छा हास्पिटल बनवा दीजिये वहां बच्चों के लिये कॉलेज दीजिये। मकराना में पेयजल बिल्कुल खराब है। बहुत बड़ी इण्डस्ट्रीज होने के कारण की पेयजल जो स्रोत कुचामन से आता है वह सारे का सारा पानी इण्डस्ट्रीज की तरफ चला जाता है क्योंकि जलदाय विभाग आमदनी का काम करने लग गया। जो 30 हजार गरीब लोगों की आबादी वाले क्षेत्र हैं वह पानी से महरूम रह जाते हैं। अब उन्होंने क्या तरीका किया है, सभापति जी? उन्होंने यह तरीका बनाया, जो पड़त कुए थे उनमें मोटर लगा दी। उन मोटरों से पेयजल सप्लाई करते हैं उससे बीमारी होने का डर है। कई कुओं में हार्ड वाटर है। मेरा मंत्री महोदय से भी निवेदन है कि इस तरह की तमाम व्यवस्थाओं के ऊपर आप ध्यान दें। जो मजदूर दूर-दूर से आते हैं उन मजदूरों के लिये पी. एफ. और लेबर लॉज नाफिज करें।

मैं आपसे निवेदन करूं, सभापति जी, प्रश्न इस बात का भी है कि जो अभी दौरान चल रहा है मकराना में यह एक्साइज मरकजी सरकार की तरफ से जिसका अभी मैंने मुद्दा उठाया था, मैं इसकी ओर

(श्री अब्दुल अजीज)

भी आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं कि इस तरह की जो इण्डस्ट्रीज हैं, एक इज्जत की इण्डस्ट्री है जिसने ताजमहल बनाने का भी गौरव हासिल किया ऐसी इण्डस्ट्रीज को पनपने का पूरापूरा मौका दिया जाये। मैं नहीं कहता मुनाफाखोरों पर टैक्स न लगायें, करोड़ों रुपया आमदनी करने वाले जो लोग हैं उन पर टैक्स लगना चाहिये, मैं उनका हामी नहीं। जो ज्यादा कमायें, सरकार को भी ज्यादा दें। लेकिन आपके कानून और व्यवस्था के अन्दर वह मोठ के साथ घुन की तरह छोटा कारोबार करने वाला आदमी पिस न जाये इसका भी ध्यान होना चाहिये सरकार को। इन बातों से क्या होता है, सभापति जी, अव्यवस्था फैलती है, हड़तालें होती हैं। अगर सक्षम और बुद्धिमान आदमी आगे न हों तो वह अव्यवस्था सारी की सारी कई रूप ले लेती है यहां तक कि अहमदाबाद के बारे में वजी-रे-आजम ने कहा कि फिरकादाराना फसाद विरोधी दलों ने करवाये। वहां एक दम से बात तो थी आरक्षण की और वहां आरोप लगे किसी प्रकार के। तो जो बदमाश लोग हैं, निश्चिततौर पर जो धारा है, मुख्य धारा है जो बात है उसको बदल देते हैं। तो मैं यह चाहता हूं कि इस प्रकार के सेन्सेटिव इलाके हैं जहां बराबर के तबके रहते हैं, सरकार को चाहिये कि हर प्रकार से सूझबूझ से उन लोगों की बहबूदी की बात करें। उनके मसायल को बड़ी तीव्रता से, बड़ी संजीदगी से हल करें।

मेरे मकराना में वैसे बहुत कुछ अमन है, आपकी कृपा है. लेकिन सरकार को जो काम करना चाहिये सड़कों का, अब दस दस कोस से मजदूर आते हैं माईनिंग पर और इण्डस्ट्रीज पर काम करने के लिये। करोड़ों रुपया आपको मिलता है। तो दस किलोमीटर सड़क के लिये आपने कहा है 1500 आबादी वाले हर छोटे कस्बे को हम सड़क से जोड़ देंगे। मेरा निवेदन है कि मकराना से आप बुडसे चले जायें, मकराना से बीठली चले जायें, मकराना से बोरावड़ से आगे आप बीलू, मोरेड, जहां के मजदूर आते हैं, चले जाइये तो मैं निवेदन करना चाहता हूं आपके माध्यम से सरकार से वह तत्काल सड़कें बनावें। उन सड़कों पर मजदूर साइकिल से मकराना आयेगा, बसों का आवागमन ठीक चलेगा लोग छतों पर बैठककर अपने घरों से आते हैं और 8 बजे तक घरों को जाते रहते हैं। तो सब प्रकार की व्यवस्था का काम सरकार को करना चाहिये। जहां से आपको पूंजी मिलती है, जहां से आपको खजाना मिलता है वह हाथ जो सरकार के खजाने को भरते हैं उनके प्रति भी आप अपने दायितत्व और फरायज का अंजाम दें।

सभापति जी, बहुत कुछ बातें इस तरह की ऐसी हैं...

श्री सभापति : माननीय सदस्य, टाइम काफी हो गया है।

श्री अब्दुल अजीज : टाइम का मुझे भी ध्यान है लेकिन मुझे आप कहने की जरा कृपा करवाइये।

श्री सभापति : बहुत टाइम हो गया।

श्री अब्दुल अजीज : इण्डस्ट्रीयल काम्पलेक्स, मैं यह चाहता था वहां पर एक घटना चक्र चल रहा है, बहुत बड़ी मिलें हैं मकराना में जो 50 लाख से 70 लाख

(श्री अब्दुल अजीज)

रुपये के इम्पोर्टेड प्लांट्स हैं उन प्लांट्स का और पांच साल से पहले जो देशी मशीनें थीं उनका टकराव व्यापार में हो गया। वह सारे के सारे चार पांच साल ठप्प पड़े थे। फिर आर एफ. सी. और इण्डस्ट्रीज डिपार्टमेंट ने मिलकर एक योजना बनाई, मुझे ठीक याद आ रहा है, गवर्नर महोदय एक विजिट में मकराना पधारे थे। मैंने उनको एक सुझाव दिया था, पूरे के पूरे इण्डस्ट्रीज एरिया में चार करोड़ रुपया जो आर. एफ. सी. का लगा है वह पुरानी मशीनों को पुनर्जीवित किया जा सकता है, उसका तरीका यह होगा कि इनको लोन दिया जाये। तो, सरकार ने लोन दिया तीन साल बाद। अब वे जरा खड़े हुए तो यह एक्साइज ड्यूटी उन पर आ गई। तुलनात्मक तौर पर इण्डस्ट्रीज, स्माल इण्डस्ट्रीज, जिनका टर्नओवर 20 लाख से नीचे है, जो पांच सात लाख के आस पास अपना कारोबार कर रहे हैं उन लोगों को किसी प्रकार के आर्थिक संकट में डालने की कृपा न करें। इस लिये मुझे मुख्य मंत्री महोदय ने अभी कहा कि मैं क्या कर सकता हूं, मेरे हाथ में तो राजस्थान की बात है। यह तो मरकजी सरकार के बारे में है। राजस्थान का एक मुख्य मंत्री क्या केन्द्रीय सरकार के किसी आला पैमाने पर बात करने के लायक नहीं कि वह इस बात की तवज्जह दिलायें कि सात, आठ दिन तक चल रही हड़ताल को खत्म करा दे। अपने इलाके की बात यह नहीं कहें। आखिर हमारे पास खजाना तो मिनरल्स का ही है चाहे फास्फेट हो, चाहे जिंक हो, चाहे लिग्नाइट हो, कुछ भी हो, जो कुछ हमारा खजाना है आमदनी का स्रोत है वह खनिज के माध्यम से है। इस खनिज के लिये विशेष तौर से केन्द्रीय सरकार से बात करनी चाहिये पूरी ताकत के साथ। राजस्थान सीमा जोड़ देने से कोई छोटा नहीं है, पूरी ताकत और हिम्मत से हमारे जोशी जी मुख्यमंत्री को कहनी चाहिये कि इण्डस्ट्रियल डवलपमेंट रुक गया है, हमारे सरकारी खजाने का मसला है इन सबको आप ठीक चलायें। यह जो नया कर है, इसको हटायें।

एक बात मैं अन्त में आपसे कहना चाहता हूं…………

श्री सभापति : बहुत समय हो गया।

श्री अब्दुल अजीज : सामाजिक न्याय की बात बड़ी जूनक है इन्होंने वह भी वजीरे-आजम की बात है राजीव जी की। उन्होंने कोई बार कौंसिल का फाउन्डेशन स्टोन दिल्ली में कहीं रखा है वहां इन्होंने कहा कि अदालतों को चाहिये कि आम आदमी को न्याय दें। सभापति जी, पांच साल के पूर्व मैं इस विधान सभा में था। पांच साल के बाद जब पिछली बार चुनाव हुए तो 33 वोट से मैं पीछे रह गया और मैंने इस मसले को हाइ कोर्ट में दिया। तो आम आदमी को न्याय दिलाने की बात हमारे वजीरे-आजम करते है, यहां तो खास को भी नहीं मिल रहा है। मैं भी पढ़ा लिखा हूं। पांच साल से इन्तजार में हूं कि हमारे न्यायालय हमको क्या न्याय बख्शेंगे। तो यह कहने की बातें हैं। राजनैतिक दबाव पड़ते हैं। न्याय के बारे में मेरा आपसे यह निवेदन है, यही कारण था, निश्चित तौर पर मैं कहता हूं, आप के ऊपर आरोप लगाता हूं आपकी कांग्रेस (आई) की सरकार

89

(श्री अब्दुल अजीज)
ने बेईमानी की मेरे साथ । मेरे खिलाफ 307 का मुकदमा बनाया रिकार्डेड रजिस्टर में । क्या बात करते हैं इन्साफ देने की ? 307 का मुकदमा मेरे वालिद के खिलाफ, मेरे भाई के खिलाफ, मेरे छोटे भाई के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया इसलिये कि मैं केस को विथ्ड्रा करूं । सभापति जी, यह कांग्रेस की बात कहने की और है, करने की और । मेरा बुनियादी झगड़ा नहीं कांग्रेस से, मेरा झगड़ा है ऐसी ताकतों से जो बेइन्साफी करती हैं जिनके पांव बेइन्साफी से चलते हैं । वे डूबेंगे, वे मरेंगे, आज नहीं कल मरेंगे । इसलिये मेरा निवेदन है कि आप इस तरह की जो पेचिदगियां हैं, मामलात हैं उन पर सरकार को ताड़ना दिलायें, सचेत करें, सजग करें । जय-हिन्द ।

श्री शोपतसिंह : सभापति महोदय, सभापति महोदय, एक मात्र सदस्य रह रहा हूं ।

श्री सभापति : प्रो. केदार ।

श्री देवीलाल (शाहपुरा) : एक मेरे को भी इजाजत देवो । सात दिन हो गया विधान सभा ने चालता । सात दिन में एक बार तो नम्बर आवो चावे ।

(व्यवधान)

सभापति महोदय, हमारे महामहिम राज्यपाल महोदय ने जो भाषण दिया तो मैं हमारी ओर से वाको स्वागत करूं ...

(व्यवधान)

तीन बार खड़्यो होग्यो और तीन बार बैठग्यो । सात दिन में एक बार तो नम्बर आनो चावे ।

श्री सभापति : माननीय सदस्य, कृपया विराजे ।

(व्यवधान)

श्री देवीलाल : सभापति जी, अबकी बार तो दीज्यो ।

श्री सभापति : माननीय प्रोफेसर केदार ।

(व्यवधान)

श्रीमती सुमित्रा सिंह (पिलानी) : पाइन्ट ऑफ आर्डर ।

(व्यवधान)

श्री केदारनाथ शर्मा (गंगानगर) : मान्यवर; राज्यपाल के भाषण पर तीन दिन से जो बहस हो रही है; मैं यह मानकर चलता हूं कि बहस का स्तर काफी ऊंचा, काफी अच्छे भाषण, कन्विन्सिंग आग्यूमेंट्स दिये गये और फैक्ट्स फिगर पेश किये गये । इस भाषण को हम भाषण नहीं कह सकते, हैं मान्यवर, अगर डिपार्टमेंट्स की प्रोग्रेस रिपोर्ट्स इकट्ठी की जाए, कम्पाइल की जाय, इतना ही भाषण है । इसमें कोई डाइरेक्शन्स नहीं, कोई कमिटमेंट्स नहीं, किसी वेल्यूज के प्रति, कोई आइडियोलोजिकल बेस नहीं, जो हमारे सामने पेश किया । मैं इसको भाषण की तारीफ में नहीं लेता, मान्यवर, पांच साल के पोलीटिकल इवेन्ट्स इस राजस्थान में हुए हैं, उसकी कोई झलक नहीं है । मान्यवर, मैं यहां यह नहीं कह सकता था कि जो भूतपूर्व मुख्य मंत्री है, वह आज बीमार है, जल्दी ही उनका स्वास्थ्य ठीक हो,

(श्री केदारनाथ शर्मा)

लम्बी उम्र हो मगर मुख्य मंत्री जी ने जो भूतपूर्व हमारी स्टेट को फेडरल स्ट्रक्चर में इसका जो बेस हुआ करता है, इसको कॉलोनी का रूप दे दिया, कॉलोनी से ज्यादा इसका रूप नहीं रहा। स्टेट ने अपना स्वरूप समाप्त कर दिया, स्टेट की पर्सनेलिटी और इन्डीविजुअलिटी हो सकती है वह समाप्त कर दी। हमारे भूतपूर्व मुख्य मंत्री जो भी सेन्टर में इकॉनामिक और फाइनेंशियल इश्यूज होते हैं, जो राइट हैं स्टेट के उनको कभी एसर्ट नहीं कर पाये। प्राइमिनिस्टर देश का First amongst the equals हुआ करता है। हमारे संविधान में जो हमें फेडरल स्ट्रक्चर मिला है उसमें प्राइमिनिस्टर और स्टेट का चीफ मिनिस्टर का बराबरी का दर्जा हुआ करता है First amongst the equals पर हमारे मुख्य मंत्री जी आज तक रहे, पिछले पांच साल में, न उनमें सेल्फ कॉन्फिडेन्स था न उनमें पॉलिटिकल विल थी और न ही पॉलिटिकल लीडरशिप दे पाये वह राजस्थान को, पार्टी को और सदन को। जो मसले थे आज तक सेन्टर में इन्टर स्टेट मसले थे पावर के और पानी के, सेन्टर से जो आउट-ले का एलोकेशन होना चाहिये था, उसमें स्टेट का राइट का एससर्न होना चाहिये था एससर्न ऑफ राइट जिसको कहते हैं वह भूतपूर्व मुख्य मंत्री पेश नहीं कर पाये तो मैं समझता हूं स्टेट की इण्डि-विजुअलिटी समाप्त की गई, स्टेट की पर्सनेलिटी समाप्त कर दी। मैं इसको उप-लब्धि मानूं या क्या मानूं? बहुत बड़ा चार्ज है आज, स्टेट की लीडरशिप पर बहुत बड़ा चार्ज है। इतना निवेदन करते हुए जो चुनाव लोक सभा के उसमें माननीय सदस्य, जो उस पक्ष में बैठे हैं, यह कहा हमारी वेल्यूज की जीत हुई है, हमारे पॉलिटिकल पॉलिसीज की जीत हुई है। मैं इस बात को नहीं मानता। इन्दिरा जी की हत्या हुई है असेसिनेशन, जिसे ब्रूटल कहो, टार्डी कहो विशेष परिस्थितियों में हुई और हिन्दू बैंकलैस हुआ है, वह जीत का पहला कारण है, मान्यवर हमारे देश में हिन्दू बैंक लैस होना यह हिन्दू कल्चर के खिलाफ तो है ही किन्तु हमारी फिलासफी के बेसिक एजेण्ट्स हैं इसके खिलाफ भी मिटीगेट करता है हमारे कॉन्स्टीट्यूशन के खिलाफ यह बोलता है और जो कांग्रेस की खुद की कल्चर है गान्धीजी और नेहरू जी की कल्चर है, फ्रीडम मूवमेंट में जो कल्चर पैदा हुई थी वेल्यूज के साथ जुड़ी हुई थी कल्चर उसके खिलाफ भी यह जीत है। हिन्दू बैंक लैस होना यह देश की एकता के खिलाफ, देश की प्रगति के खिलाफ, देश के इन्टेगरेशन्स के खिलाफ है यह पहला कारण जीत का था।

दूसरा, मान्यवर, जब पावर वेक्यूम हो गया सेन्टर में, हम लोग उस वेक्यूम को भर नहीं पाये, यह हमारा दोष रहा। जनता ने हमें दण्डित किया, ठीक था हम उसके लायक थे। यूनिटी की बात हम करते रहे, पर यूनिटी हम कर नहीं पाये। तीन साल, तीन माह का हम खींच ले गये पीरियड। अन्त में सार कुछ निकला नहीं। लोगों को गुस्सा जो सरकार के खिलाफ होना चाहिये था वह गुस्सा अपो-जीशन लीडर्स के खिलाफ हुआ। नेशनल लेवल पर हो गया दूसरा कारण। तीसरा कारण इस वेक्यूम के साथ यूनिटी का मसला जुड़ गया, कौन राज्य करे, विदेशी हुकूमतों के खतरे पैदा हो गये, चाइना और पाकिस्तान

(श्री केदारनाथ शर्मा)

से खतरे पैदा हो गये, यह हवा बनाई गई, प्रचार किया गया विडियों के मार्फत, कुछ खतरे थे भी, तो युनिटी का सवाल जब जुड़ गया इस देश के वेक्यूम के साथ तो माननीय राजीव को मौका मिल गया। केवल पाइलेट था, मान्यवर, मैं यहां कोई बात कह कर विघ्न पैदा नहीं करना चाहता, देश की पॉलिटिकल हिस्ट्री में कोई स्थान नहीं था, पॉलिटिकल इवेन्ट्स के साथ, मेन स्ट्रीम के साथ कोई स्थान नहीं था। पर मौका दिया, हमने स्वीकार किया वरडिक्ट को। पर उस जीत के साथ इनमें इगो पैदा हो गया, काम्प्लीसेन्सी पैदा हो गई, एक एरोजेन्स पैदा हो गया जो जीत के बाद होना नहीं चाहिये। देश में इतनी जीत के बाद चेनेलाइज करनी चाहिये थी ताकतें कुछ पॉलिसी मेटर होते सामने, जो इन्दिरा जी और नेहरू जी ने, गांधी जी ने लीगेसी पेश की थी, आज तक लीगेसी दी हमें उसकी और कोई कमिटमेंट होता। वह देश का प्रधान मंत्री दे नहीं पाया। उसके बाद चुनाव असेम्बलीज के हो गये, हम हार अपनी मान गये पर हमें मालूम नहीं था कि लोगों के दिलों में एक गुस्सा है, नारा यह दिया गया, एक थीसिस पेश की गई जिसके हाथ में सेन्टर हो स्टेट भी उसी के हाथ में आ जाय। यह थीसिस पेश की गई मास मीडिया को इसे खूब उछाला, जैसे आनन्दपुर रिजोल्यूशन उछाला लोक सभा के चुनाव में, एक्स्ट्रीमिस्ट की बात कही गई, अपोजीशन का उसके साथ रिलेशन जोड़ दिया, हमारा मेल जोल का रिश्ता जोड़ दिया। गलत बातें कही गई। अब जोड़ दिया, स्टेट तभी प्रोग्रेस कर पायेंगे, अगर स्टेट हमारे हाथ में आ गये, इनके हाथ में सैन्टर है, यह थीसिस, मान्यवर, क्या कॉन्स्टीट्यूशन को स्प्रिट के खिलाफ मिलिटेट नहीं करती है। यह मिलिटेट करती है। यह फेडरल सिस्टम है हमारा, देन है इस देश की। जो पुरलियू सिस्टम है, उसके खिलाफ यह मिलिटेट नहीं करती है क्या करती है? फिर, मान्यवर, प्रधान मंत्री ने जो थीसिस पेश की, लोगों ने नामंजूर कर दी, लोगों ने अपनी प्रभुसत्ता कायम कर दी। लोगों में जो कलेक्टिव विजडम है, जो इलेक्टोरल बिहेवियर है इस देश का नमूना अलग, जो न हम पहचान पाये न आप पहचान पाये, स्टेटिस्टिक्स फेल हो गये, जोतिष भी फेल हो गया। उन्होंने अपनी प्रभुसत्ता कायम कर दी और कमबेक कर दिया हमारा। तीन स्टेट में राजीव जीत गया बाकी में अर्स्टव्हाइल अपोजीशन जीत गया और देश में जो पॉलिटिकल इम्बेलेन्स पैदा हो गया था, लोक सभा के चुनाव के बाद, मान्यवर, उसमें एक नया बेलेन्स पैदा कर दिया। हम बहुत आभारी है इलेक्टोरल्स के जिन्होंने अपनी सोवरिनिटी को कायम किया और देश में फिर बेलेन्स पैदा किया। मैं यहां यह जिक्र नहीं करना चाहता, मान्यवर, पांच सालों में क्या घटनायें हुई। माननीय इन्दिरा जी नहीं हैं, बहुत अच्छे काम भी किये उसने मैं कह सकता हूं पर देश के सारे इवेन्ट्स देखिये आप जो पॉलिटिकल लाइफ का कम्पलेक्शन कैसे बदल दिया? पांच साल में लगातार जुडिशियरी पर दबाव रहा, प्रेस पर दबाव रहा, असेम्बली और पार्लियामेंट के वर्किंग पीरियड कम कर दिये। हमने हमारे फन्डामेन्टल राइट्स का इरोजन देखा। वेल्यूज है जो इस देश की फिलासफी वेसिक वेल्यूज है इनका इरोजन देखा और सबसे बड़ी बात खतरनाक जो क्रिमिनल एलिमेन्ट्स हैं इस

(श्री केदारनाथ शर्मा)

देश की ओर एन्टीसोशल जो फोर्सेस हैं उनको एक इन्स्टीट्यूशन का रूप दे दिया गया और पोलिटिकल एरिना में दाखिल हो गया; प्रविश कर गया वह आज वे अब। यह नहीं है कि मैं आपके पक्ष की बात करता, हमारे में भी है, देश में रैम्पेन्ट्स होते जा रहे हैं यह क्या देश की डेमोक्रेसी बच पायेगी। तीसरी जो ट्रेन्ड, डेन्जरस ट्रेण्ड पैदा हो गया ब्लैक मनी, इलैक्शन में इनफ्लूसिंग और पॉलिटिकल पार्टी इन सिस्टम, तीनो में नेक्सस हो गया।

(3.00 म.प.)

क्या बच पायेंगे ? कोई बच नहीं पायेंगे कोई इम्यून नहीं हो सकता इससे। जो डेन्जरस ट्रेन्ड है इसकी वजह से डेमोक्रेटिक इन्सटीट्यूशन थी वह डिसमैन्टल कर दी गई; समाप्त करने की बात की गयी। कांग्रेस में खुद के अन्दर न वहां पर वॉइस ऑफ डीसेन्ट रहो, न कलेक्टिव थींकिग रहा, सारा एडहाकिज्म चलता रहा, कोई चुनाव नहीं हुआ, कभी कैडर और लीडरशिप को बराबरी का दर्जा नहीं दिया गया जिस देश का नेता अपनी पार्टी के अन्दर डैमोक्रेसी पैदा नहीं कर सके, एलीमैन्ट्री ड्यूटीज न कर पाये वह देश की जनता को प्रजातन्त्र दे पायेगा, मैं नहीं समझता ज्योंही इलैक्शन हमारे पास आये और हम आपके बीच में हैं। मैं यही निवेदन करना चाहता हूँ कि जो आंकड़े पेश किये गये हैं, मैं दो तीन मिसालें ऐसी पेश करना चाहता हूँ जिनसे मालूम होगा यह केवल मैनीपुलेशन है, आंकड़ों का मैनीपुलेशन है। एक बात मैं आपसे निवेदन कर दूं मान्यवर, जो हमारे सामने सिक्स्थ फाइव ईयर प्लान की प्रोग्रेस रिपोर्ट आयी है सेन्ट्रल इसमें जो एनुअल एवरेज है ग्रोथ का वह तो 5 पर्सेंट है और हमारे जो आंकड़े पेश किये हैं उसमें 8 पर्सेंट कर दिये गये अब आंकड़े कैसे दिये हैं ? जो बेस ईयर माना है वह 1979 का माना है। यह बात वैसे इकोनोमिक्स के स्टूडेंट की बात है, मैं ज्यादा नहीं कहना चाहता था इस पर। बेसिक जो आंकड़े दिये हैं उसमें 1979 को इन्होंने बेस ईयर माना है। 1979 और 1984, 1722 करोड़ रुपया 1979-80 में, यह पेज 3 पर है, यह सारे भाषण के पेज 3 पर है आखिरी पैराग्राफ और 1983-84 में 2341 करोड़। छः सौ करोड़ रुपये का फर्क दे दिया जनवरी ग्रोथ का और 8 पर्सेन्ट कैलकुलेट कर दिया।

मान्यवर, मैं आपके मार्फत निवेदन करना चाहता हूं सरकार से, एक साल पहले ही ले लीजिए, 1978 का ही यह एबनार्मल ईयर था, सारे देश में, स्टेट में 14 पर्सेन्ट प्रोडक्शन कम हुआ। 1979 को आपने सलेक्ट कैसे कर लिया ? आप ऑफिशियल्स के आंकड़ों पर आ गये, आपने ध्यान नहीं किया इस बात का कि जो 1979 का ईयर है वह देश की हिस्ट्री में, इकॉनामिक हिस्ट्री में, प्लान हिस्ट्री में सबसे कड़ा साल था। उसको बेस ईयर मानकर चलते हो आप और फिर कहते हो 1979 के बाद 8 पर्सेन्ट एनुअल रेट ऑफ ग्रोथ बढ़ गयी। यह गलत बात है। सही आंकड़े यह हैं, 2011 करोड़ 1978 में राजस्थान की आमदनी थी और 1983 में 2341 करोड़ थी, कितना फर्क है। यह बनती कितनी है रेट ऑफ ग्रोथ। अगर पॉपुलेशन का राइज आप कम कर दो इसमें से तो 2 पर्सेन्ट बनती

(श्री केदारनाथ शर्मा)

है। केवल दो पर्सेन्ट। अब बताइये, इसे उपलब्धि मानेंगे आप ? मैं आंकड़ों की बात कर रहा हूं, मैं अपनी फिलासफी नहीं पेश कर रहा हूं। रेटोरिक नहीं है मेरे पास। मैं आपके सामने आंकड़े पेश कर रहा हूं। आपकी इकॉनोमिक स्टडी जो है, पेज नम्बर 56 पर पढ़िये। आप, 1978 में आपकी कितनी आमदनी थी और 1983 में आपकी कितनी आमदनी है। सारे देश में, मान्यवर, जो इकॉनामिस्ट्स की अभी 2-3 दिन पहले मीट हुई हैं दिल्ली में, बोम्बे में, जो उन्होंने 5 पर्सेन्ट ग्रोथ इकॉनामिक रेट कही है अपनी एनुअल रेट जो ग्रोथ की कही है वह भी गलत है। डॉ. राजकिशन ने जो अपनी लेटेस्ट थीसिस पेश की है सारे आंकड़ों के साथ उसमें केवल 2.5 एनुअल ग्रोथ रेट आती है देश के अन्दर। ये आंकड़े मैं पेश कर रहा हूं आपको।

जो बीस सूत्र की बात कर रहे हो आप कि राजस्थान नम्बर एक पर रहा दो सालों से, फिफ्थ फाइव ईयर प्लान के जो टार्गेट हैं उन सारे के सारे को रिड्यूस कर दिया आपने और फिर उपलब्धि दिखा रहे हो आप। आप देखिये, आपका कितना एनुअल प्लान था, सिक्स्थ फाइव ईयर प्लान कितना था आपका और टार्गेट अचीव करने में कितनी शार्ट फाल आयी आप देखिये, पहले 200 करोड़ की शार्ट फाल 2000 करोड़ का आपके सिक्स्थ फाइव ईयर प्लान था और 1440 करोड़ रुपये आपने 4 साल में खर्च किये और 400-450 करोड़ रुपये इस साल खर्च करोगे आप। 200 करोड़ शार्ट फाल है इसलिए कान्सीक्वेन्शियली सारे टार्गेट्स आपने रिड्यूस कर दिये और 20 सूत्री का ढिंढोरा पीट दिया हमारे सामने। कम से कम जो स्टूडेन्ट्स हैं इकॉनामिक्स के जो पढ़ते हैं, लिखते हैं उनके सामने ऐसे आंकड़े मत पेश कीजिए। आप अपने ब्यूरोक्रेट्स ऑफिशियल, जिनके पास स्टेटिस्टिशियन्स हैं, को कम से कम डायरेक्शन दीजिए कि ये गलत आंकड़े मत पेश करो।

तीसरी बात इन्होंने पावर्टी लाइन से नीचे की कह दी। देश के आधार पर कहते हैं कि 5 करोड़ लोग कम हुए हैं पावर्टी लाइन से। जो सही आंकड़े हैं, मान्यवर, इनके अनुसार केवल 80 लाख आदमी 5 सालों में पावर्टी लाइन से कम हुए हैं। जो दो एजेन्सी हैं, नेशनल रूरल एम्प्लायमेंन्ट प्रोग्राम और दूसरा है इन्टिग्रेटेड रूरल इम्प्रूवमेन्ट प्रोग्राम, दो एजेन्सी हैं देश के आधार पर, स्टेट के आधार पर। पहली एजेन्सी के मार्फत केवल 3 पर्सेन्ट कम हुए हैं, पावर्टी लाइन से नीचे आये हैं और दूसरी एजेन्सी के मार्फत केवल 9 पर्सेन्ट कम हुए हैं। अगर इस रफ्तार से आप पावर्टी लाइन से नीचे लोगों को रिड्यूस करके लायेंगे तो, मान्यवर, मैं जो आंकड़े पेश कर रहा हूं इकॉनामिस्ट के आज से 15 वर्ष बाद जब 20वीं सेन्चुरी समाप्त हो जायेगी तो कितनी गिनती हो जायेगी; उनकी जो पावर्टी लाइन के नीचे हैं ? आजादी से पहले फर्स्ट सेन्सस में हमारी आबादी थी 36 करोड़, यह आंकड़े मैं पेश कर रहा हूं आपके सामने। बड़ा सीरियस मैटर है सोचने का, अब तक जो हमने इनएडीक्वेट ग्रोथ, जो हमारी विवशता थी को रिड्यूस किया कुछ हद तक। मान्यवर, जो नया बजट आया है, 20 मोनोपली हाऊसेज हैं सारे बिग उनकी लिमिट्स भी एम. आर.

(94)

(श्री केदारनाथ शर्मा)
टी. पी. के तहत केवल 20 करोड़ पहले, उसको मालूम है कितना कर दिया अब 100 करोड़ कर दिया। टोटल जो प्राइवेट सैक्टर में पूंजी है, मान्यवर, 25 हजार करोड़ उसमें आधी पूंजी मान्यवर, चौथाई पूंजी केवल 2 परिवारों की है बिड़ला और टाटा की है। यह मैं आंकड़े पेश कर रहा हूं।

श्री यदुनाथ सिंह (नदवई) : 1800 करोड़ की है बिड़ला की।

श्री केदारनाथ शर्मा : यह आंकड़े मैं पेश कर रहा हूं। यह पोलिटिकल इकॉनामिक रिव्यू है, ये मेरे आंकड़े नहीं है। तो ये विश्वसनीयता कम कर रहे हो आप। मैंने आपको मिसाल बता दी है। मान्यवर, हमारे एट्थ फाइनेंस कमीशन में हमारी स्टेट की लीडरशिप ने क्या किया है वह भी मैं नमूना पेश करना चाहता हूं आपके सामने। एट्थ फाइनेंस कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार राजस्थान को 1676 करोड़ रुपये मिलेंगे। स्टेट का जो टोटल शेयर है यह केवल 4.25 है। सिक्स्थ फाइनेंस कमीशन ने, कितना हमें दिया शेयर 5.87, सेवन्थ कमीशन ने कितना दिया हमें 4.33 और एट्थ ने दिया 4.25। फिर भी यह कहते हैं कि हमारी उपलब्धि है। यह कहते हैं हमारी उपलब्धि है। मैं वह बात नहीं कहना चाहता कि 52 करोड़ आपको मिलना चाहिए था। जब कमीशन का वर्डिक्ट आया अगर उसी वक्त उसका इम्प्लीमेन्टेशन हो जाता तो 52 करोड़ आपको और मिल जाते तो डेफिसिट का आधार कम हो जाता। यह बात मैं नहीं कहना चाहता मगर एक्टिव लार्ज फिगर्स मैं पेश कर रहा हूं आपके सामने। इसको आप उपलब्धि मानोगे, क्या मानोगे ? बहुत बड़ा रिफ्लैक्शन आपकी लीडरशिप पर आता है आपने सही तरीके से लीडरशिप की है राजस्थान की जबकि साढ़े 16 साल में 11 साल अकाल के रहे हों, इतनी बड़ी पोपुलेशन हो, बोर्डर स्टेट हो, राजस्थान कैनाल जैसा प्रोजैक्ट हो, डैजर्ट का यह प्रोन इलाका हो, ड्रिंकिंग वाटर की बहुत भारी समस्या हो और यह उपलब्धि की बात आप कहते हो। मैं यही बात नहीं कहना चाहता था।

कुछ और आंकड़े देना चाहता हूं आपको, परकैपिटा सैन्ट्ल प्लान आउटले में जो है हमारा हिस्सा अगर 1950 से 1980 तक देखें आप तो पर इयर 230 करोड़ रुपये आता है, मध्य प्रदेश, बिहार में 590 करोड़, हिमाचल प्रदेश में 7000 करोड़ यह हमारी उपलब्धि की बात कर रहे हैं। मैंने कुछ आंकड़े पेश किए हैं आपके सामने। आज जो बजट है, राष्ट्रपति का भाषण है, माननीय प्राइम मिनिस्टर की घोषणायें हैं पॉलिसी मैटर्स पर, तीनों बातों को इकट्ठा कर लीजिए, आपका इकॉनामिक सर्वे, रिव्यू आया है इस बारे में हमारे सामने, ये तीनों मिलकर बताते हैं कि देश की इकॉनामी को क्या कर रहे हैं ? कहीं सोशलिज्म का नाम नहीं मिलेगा। मोडर्नाइजेशन के नाम से, लिबरलाइजेशन के नाम से, और एक नया नाम निकला है, मुझे मालूम नहीं क्या है वह, कम्प्यूटर मैनेजमेंट के नाम से सारे देश की इकॉनामी को डायरेक्शन किस बात का दे रहे हैं, इससे किसको फायदा होगा टैक्सेज का सारे बजट से ? मान्यवर, केवल चालीस लाख टैक्स पेयर में अपर मिडिल क्लास मुख्य

(श्री केदारनाथ शर्मा)

एलीमेंट है, इसमें कोई शक नहीं यह पब्लिक ओपिनियन को विल्ट करते हैं। माननीय राजीव जी की इमेज को ऊंचा करेंगे। उसको खुश करने के लिए। वे एनरजेटिक हैं, इसमें कोई शक नहीं। लेकिन छोड़ दिया सारे देश को, जिन्होंने देश की आजादी में हिस्सा लिया, देश को ऊंचा लाने में साथ दिया, मजदूर किसान की बात को छोड़ दिया, वीकर सैक्शन को छोड़ दिया, लैंडलैस को छोड़ दिया, हरिजन आदिवासी को छोड़ दिया, बैकवर्ड कम्युनिटी को छोड़ दिया, मायनोरिटी को छोड़ दिया जो देश के बेस है, बैक बोन हैं, देश जिन पर निर्भर है; जिनसे देश की तरक्की होगी, प्रोसपैरिटी आ जाएगी। सारे देश को एवेयेंस में रख दिया। यह आपका वजट बोलता है। आइन्दा एजूकेशन पॉलिसी क्या होगी, इण्डस्ट्रियल पॉलिसी क्या होगी, टैक्स पॉलिसी क्या होगी, एडमिनिस्ट्रेशन को आप कैसे स्ट्रीम लाइन करना चाहते हो? यह अभी मैं नहीं कह सकता क्योंकि हमारे सामने पेश नहीं हुई।

मैने आपके सामने दो-तीन बातें कही हैं जो वजट आपका बोलता है। मैं आपसे निवेदन कर दूं, मान्यवर, जो. कांग्रेस से आपको लीगेसी मिली है, मान्यवर, प्रधानमन्त्री यहां विवाद के सवाल नहीं हैं। कोई सवाल नहीं है विवाद का। जो सेंट्रल गवर्नमेंट है वह किस राह पर चल रही है? कीमतें बीस पर्सेन्ट बढ़ जायेंगी, आठ हजार करोड़ का डेफिसिट हो जाएगा आपके सैन्टर का। यह कीमतें बढ़ेंगी। आप एन्वीसेज करते हो कुल पांच पर्सेंट इन्फ्लेशन का। मैं समझता हूं कि पन्द्रह पर्सेंट से कम नहीं रहेगा जो आंकड़े मैने पेश किये है उनसे। जिस काश्तकार, जो खेती बाड़ी करता है, का देश की इकॉनोमी में बहुत बड़ा रोल है उसको आपने कितना दिया एक क्विण्टल पर, छः रुपये उसको यह दिया। टैक्स रिलीफ में उसका कोई नाम नहीं। कोई नाम नहीं। केवल छः रुपये बढ़ोतरी की है आपने। गरीब आदमी के लिए आपका यह है। मैं आपसे ज्यादा नहीं कहना चाहता, मेरे और माननीय सदस्य बोलेंगे, मैं आपसे यही निवेदन करना चाहता हूं कि यह सारा का सारा वजट पेश हुआ है, राज्यपाल का जो भाषण है, इसमें कोई इण्डीकेशन नहीं है, कोई कमिटमेंट नहीं है। मान्यवर, जो माननीय सदस्य नए आए हैं इस ओर, उस ओर, उन्होंने डिबेट में हिस्सा लिया, बड़ी अच्छी अपनी क्षमता दिखाई उनकी डोरमेंट पोटेंशियलिटी आगे आ कर उभरेगी। हम चाहेंगे कि वह अपना रोल अदा करें, भूमिका अदा करें। माननीय सदस्यों को मैं एक बात याद दिला दूं, साल में यहां का एडमिनिस्ट्रेशन जो है उसका काम्पलेक्शन बदल दिया। एम. एल. एज. की डिजायर पर तबादले होना, नियुक्तियां होना, प्रमोशन होना......

श्री हेमाराम चौधरी (गुढ़ामालानी): आपके वक्त में क्या नहीं हुआ था?

श्री केदारनाथ शर्मा: मैं भी यह नहीं कहता कि हमारे वक्त में नहीं हुआ।

(व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी: थानेदार लगे थे। तीन-तीन थानेदार लगे थे।

श्री केदारनाथ शर्मा : कोई तीन थानेदार नहीं लगे, एक ही लगा था।

मैं आपसे निवेदन कर रहा था, इसको जरूर ध्यान में रखना चाहिये, एम. एल. ए. का रोल क्या है। मैं आपकी मार्फत निवेदन कर देना चाहता हूं कि असेम्बली की वर्थ कम नहीं होगी, असेम्बली की अहमियत कम नहीं होगी, बाहर बैठा डेमोक्रेसी का जो ग्रास रूट है वह समाप्त नहीं होगा, आज जो बजट इण्डिकेशन आ रहे हैं उनको हम चैलेंज देंगे। जो कैपिलिस्ट पाथ इन्होंने सलेक्ट किया है कांग्रेस आयडियोलोजी, कांग्रेस की सेन्ट के खिलाफ, कांग्रेस लीगेसी के खिलाफ जो इन्होंने जिहाद बोला है उसको हम चलने नहीं देंगे। देश में प्राइजेज बढ़ेंगी, इन्फ्लेशन बढ़ेगा, ब्लैक मनी बढ़ेगी, देश की कम्पनीज और मल्टी नेशनल कम्पनीज है बाहर की वह ग्रेट होगी। हमारी जो खुद की जिसको हम नेट कहते हैं कैपिटल उसको वह मार करेंगी, उसको स्मैश करेंगी। ये चीजें सारी हैं। यह चलने वाली चीज नहीं है। देश का गरीब आदमी और गरीब बनेगा, इसको हम चलने नहीं देंगे। मैं कोई ज्योतिष में विश्वास नहीं करता, मान्यवर, लेकिन जो सलाहकार है सेंट्रल गवर्नमेन्ट के, उनका मैन स्ट्रीम में कोई वास्ता नहीं है। वे देहरादून कॉलेज के स्टूडेण्ट रहे हैं, उनका पब्लिक लाइफ से वास्ता नहीं रहा। चाहे वह माननीय अरुण सिंहजी हों, चाहे अरूण नेहरू हों, चाहे फोतेदार हो, मैं रिगार्ड करता हूं मैं ऐसे लोगों के बारे में विवाद नहीं खड़ा करना चाहता। उनकी सलाह के आधार पर आप सारे देश की इकॉनामिक लाइफ को, पॉलिटिकल लाइफ को ड्रेग करना चाहते हैं तो आज देश सोच सकता है। मैं कोई आज एन्वीसेज नहीं कर रहा हूं, एण्टीसिपेट नहीं कर रहा हूं; देश में मिड टर्म इलेक्शन हों, उसके लिए आप और हमको तैयारी करनी पड़ेगी। यह राज्य हमें और आपको सम्भालना पड़ेगा। हमारी आपकी जो कमजोरियां रही हैं उनको दूर करते हुये देश के सामने नहीं तो कम से कम प्रदेश के सामने एक विकल्प पेश करेंगे इन्हीं शब्दों के साथ मैं इस धन्यवाद प्रस्ताव का विरोध करता हूं और अपनी बात समाप्त करता हूं।

श्री सभापति : माननीय हेमाराम चौधरी।

श्री शोपत सिंह : सारी पार्टियों के बोल लिए, हमारी पार्टी का नम्बर कब आएगा ?

श्री हेमाराम चौधरी (गुढ़ामलानी) : सभापति महोदय, राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर नाथद्वारा से आने वाले माननीय सदस्य ने जो धन्यवाद प्रस्ताव सदन के सम्मुख प्रस्तुत किया और जिसका अनुमोदन भरतपुर से आने वाले माननीय सदस्य ने किया है, मैं उस धन्यवाद प्रस्ताव में अपने आपको सम्मिलित करता हूँ।

श्री भंवरलाल शर्मा (हवामहल) माननीय सभापति महोदय, हमारे दल का नम्बर कब आएगा ?

श्री शोपत सिंह : हमारे दल का नम्बर ही नहीं आया।

श्री हेमाराम चौधरी : राज्यपाल महोदय ने अपने अभिभाषण में……

श्री सभापति : माननीय शोपत सिंहजी ने अभी नाम दिया है।

श्री हेमाराम चौधरी : राज्य के मौजूदा हालात में जिस तरह से सरकार ने काम किया उसका लेखा-जोखा पेश किया है। सभापति महोदय, राज्यपाल महोदय ने अपने अभिभाषण में उन योजनाओं का भी उल्लेख किया जो योजनायें गरीब लोगों के उत्थान के लिए राजस्थान सरकार और भारत सरकार ने चलाई हैं। आई. आर. डी. पी., एन. आर. ई. पी.; एल. आर. ई. जी. पी. का सीधा सम्बन्ध गरीब तबके से है, शिक्षित बेरोजगारों को रोजगार देने की योजना है, यह सारी योजनायें गरीब और शिक्षित बेरोजगारों के लिए सरकार ने बनाई हैं और लागू की हैं। यह योजनाएं जिस तबके के लिए लागू की गई हैं उनको सही लाभ मिलता है या नहीं, इसके बारे में मैं, सभापति महोदय, आपके माध्यम से निवेदन करना चाहूंगा कि सरकार की मंशा गरीब तबके को आर्थिक सहायता दे करके, रोजगार दे करके, ऊंचा उठाने की है। जो बेरोजगार शिक्षित युवक हैं उनको भी ऋण सुविधा और अनुदान देकर रोजगार दिलाने की है। लेकिन सही रूप में इसका लाभ तभी मिलेगा जब उसको लागू करने के लिए जो एजेन्सियां हैं उन एजेन्सियों पर सरकार का पूरी तरह से नियन्त्रण होगा तभी सही लोगों को लाभ मिल सकेगा अन्यथा जो एजेन्सियां हैं वह एजेन्सियां सही ढंग से उसको कार्यान्वित नहीं कर रही है।

सभापति महोदय, जैसे शिक्षित बेरोजगार युवकों को ऋण और अनुदान की जहां तक बात है इसके अन्दर जो एजेन्सी इण्टरव्यू लेती है और ऋण पास करती है और उसके बाद जो बैंकें ऋण इन युवकों को देती हैं उसके अन्दर सरकार का कोई भी किसी प्रकार का नियन्त्रण नहीं है। इसलिए वह एजेंसियां अपने मनमाने ढंग से, मर्जी चाहे जिसको लोन दे देती हैं और मर्जी चाहे जिसको खारिज कर देती हैं। बिना कोई कारण बताए खारिज कर देती हैं और किसी को स्वीकृत कर देती हैं, कोई उनसे पूछ भी नहीं सकता और पूछने पर सही जवाब भी नहीं देती है। इस प्रकार की स्थिति है, सभापति महोदय, जिसको छिपाया नहीं जा सकता। इसलिए मैं आपके माध्यम से यह निवेदन करना चाहता हूं कि इसके ऊपर सबसे पहले हमको ध्यान देना होगा। यदि इस पर ध्यान नहीं देंगे तो सरकार का अरबों रुपया खर्च हो जाएगा योजनाओं में। उसका सही लाभ उन किसानों को मिले, यह हमको देखना है।

इसके साथ-साथ जो आई. आर. डी. पी. की योजनाएं हैं, सभापति महोदय, उसके तहत भी जिन लोगों को हम काम के लिए ऋण और अनुदान देते हैं वह उस तक पहुंचता है या नहीं पहुंचता है इस पर भी सरकार को पूरी तरह से नियंत्रण रखना जरूरी है। हमने देखा है कि जो बैंक ऋण देते हैं वह बैंक अपने मनमाने ढंग से देते हैं, अपनी मनमानी करते हैं। जिस काम के लिए, जिस यूनिट के लिए गरीब तबके का व्यक्ति लोन लेना चाहता है उस यूनिट का नहीं देकर उसे बाध्य किया जाता है कि आपको हम इस यूनिट के लिए लोन नहीं दे सकते, आपको दूसरी यूनिट चयन करनी पड़ेगी। इस तरह से एजेंसियां उसको सही ढंग से लागू नहीं कर रही हैं, उसके बारे में भी सरकार को, सभापति महोदय, बहुत ही गंभीरता से विचार करना होगा। यदि गंभीरता से विचार नहीं किया गया तो हमारा जो

(९४)

(श्री हेमाराम चौधरी)

उद्देश्य है वह पूर्ण नहीं होगा और गरीब तबके के लोगों तक लाभ पहुंचाना चाहते हैं वह नहीं पहुंच पाएगा, यह मैं निवेदन करना चाहता हूं।

इसके अलावा सभापति महोदय, अकाल के बारे में राज्यपाल महोदय ने अपने अभिभाषण में 617 गांवों को अकालग्रस्त घोषित करने की बात कही है लेकिन, सभापति महोदय, अभी तक अकाल के नाम से अकाल राहत कार्य एक भी शुरू नहीं हुआ है। दूसरे जो अन्य काम हैं जैसे राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार, खेतिहर मजदूर रोजगार गारण्टी कार्यक्रम के काम चल रहे हैं उनमें जो मजदूर कार्यरत हैं उनकी संख्या बहुत कम है। सभापति महोदय, उनके द्वारा अकाल से प्रभावित जनता है, उसको लाभ नहीं पहुंचाया जा सकता, उनको रोजगार उपलब्ध नहीं कराया जा सकता। इसलिए सभापति महोदय, सरकार को समय रहते बहुत ज्यादा संख्या में अकाल राहत कार्य खोल कर अकाल से प्रभावित लोगों को रोजगार उपलब्ध करवाना होगा। यदि रोजगार उपलब्ध नहीं करवाया गया तो अकाल से पीड़ित जो लोग हैं वे बहुत ही बुरी तरह से प्रभावित होंगे और उसका परिणाम, सभापति महोदय, बहुत ही खराब होगा। पहले जो लोक सभा चुनाव हुए और उसके बाद जो विधान सभा के चुनाव हुए उन के बीच में अकाल राहत कार्य नहीं खोले जाने की वजह से व्यवस्था नहीं हो पाने की वजह से बहुत से लोग गांव छोड़कर मजदूरी के लिये पलायन कर गये हैं। सभापति महोदय, यह ताजा उदाहरण है, जो लोक सभा के चुनावों में जो पोलिंग हुआ था और उसके बाद विधान सभा का जो पोलिंग हुआ था उसके अन्तर को आप देखेंगे तो यह स्पष्ट हो जायगा कि लोक सभा चुनाव में वोट पड़े और उसके बाद विधान सभा चुनाव में वोट बहुत कम पड़े, जैसे मेरे ही विधान सभा क्षेत्र गुड़ामालानी विधान सभा क्षेत्र में लोक सभा चुनाव में 6? हजार वोट पड़े थे और विधान सभा के चुनाव में 49 हजार वोट पड़े थे इस तरह से करीब 13-14 हजार वोट लोक सभा के चुनाव से कम पड़े जबकि हमेशा पहले चुनावों में यह रहा है कि लोक सभा के चुनावों की अपेक्षा विधान सभा के चुनाव में पोलिंग ज्यादा होता है। लेकिन विधान सभा चुनावों में पोलिंग कम हुआ इसका कारण यह है कि लोग मजदूरी और पीने के पानी की व्यवस्था नहीं होने की वजह से पलायन कर गये। होली जैसे पवित्र त्यौहार और विधान सभा के चुनावों में भी लोग रोजगार नहीं उपलब्ध करवा पाने और पीने के पानी की व्यवस्था नहीं करवा पाने की वजह से वापस अपने घरों को नहीं लौटे। इसलिए, सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से आगे के लिए निवेदन करना चाहूंगा कि समय रहते जल्दी ही अकाल के काम खोले जायं और पीने के पानी की जो बहुत ही भयंकर तथा विकट समस्या है, जहां पर रूरल वाटर सप्लाई स्कीम नहीं है, उन गांवों में टैंकरों से पीने के पानी की व्यवस्था करवाई जाएगी तभी उन लोगों को राहत मिलेगी। मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं कि अभिभाषण में बाड़मेर और नागौर के अन्दर टैंकरों से पीने का पानी उपलब्ध कराने की व्यवस्था करने की बात कहीं

(श्री हेमाराम चौधरी)

है लेकिन बाड़मेर के अन्दर जो टैंकर हैं वे बहुत ही पुराने टैंकर हैं और किसी काम के नहीं हैं। सभापति महोदय, एक टैंकर बाड़मेर तहसील को दिया है तो एक टैंकर से बाड़मेर तहसील के इतने सारे गांवों की बारी आती नहीं है। 15-20 दिन में उस गांव में टैंकर पहुचें तो 15-20 दिन तक किस तरह से गांव में पानी का इंतजाम करेंगे ? दूसरे जो टैंकर है, कोई टैंकर फूटा हुआ है किसी का टायर नहीं है, किसी के क्या खराबी है ? इस तरह से जो टैंकर खराब पड़े हैं उनको ठीक नहीं करवा कर सही ढंग से काम नहीं लेंगे तो वे टैंकर काम के नहीं हैं।

सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से यह भी निवेदन करना चाहता हूं, जहां तक पीने के पानी का सवाल है, सभापति महोदय, पिछले पांच वर्षों में पीने के पानी की तरफ सरकार ने बहुत ध्यान दिया है केन्द्र सरकार ने इसमें सबसे ज्यादा मदद राज्य सरकारों को दी है, ए. आर. पी. के अन्तर्गत बहुत सी योजनाएं स्वीकृत हुई हैं, जिसके अन्दर करोड़ों रुपये मिले हैं लेकिन उन योजनाओं की क्रियान्विति समय पर करवाने की तरफ जो ध्यान दिया जाना चाहिए वह नहीं दिया तो वह योजनाएं स्वीकृत हुई मात्र रह जाएंगी और लोगों को आप पानी उपलब्ध करवाना चाहते हैं वह उपलब्ध नहीं हो पाएगा। बहुत सी योजनाएं स्वीकृत हुए काफी समय हो गया है लेकिन फिर भी उनका काम अभी तक प्रारम्भ नहीं हुआ है। विभाग की लापरवाही से भी ऐसा होता रहता है और दूसरी भी कठिनाइयां ऐसी हो सकती हैं लेकिन उनकी तरफ विशेष ध्यान देना होगा और ध्यान देकर हमें उन गांवों में पीने के पानी की व्यवस्था करनी होगी। जिनके आसपास, 40–50 किलोमीटर की परिधि में पीने का पानी उपलब्ध नहीं होता। सभापति महोदय, जिन गांवों में पानी उपलब्ध है उन गांवों में तो कुएं पर कुआ बनवा कर इंजन लगा कर या बिजली लगा कर पीने के पानी का इंतजाम कर देते हैं विभाग वाले अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए, लेकिन जिन गांवों के आसपास, 50 किलोमीटर तक पानी नहीं है उनको हमेशा पीछे छोड़ देते हैं उनको प्राथमिकता नहीं देते। इसलिए, सभापति महोदय, मेरा यह निवेदन है कि पीने के पानी के मामले में हमेशा प्राथमिकता उसको दी जानी चाहिए जो सबसे ज्यादा दुखी है, जहां पर 50 किलोमीटर तक पानी मिलता ही नहीं हो और जहां अनुसूचित जाति और जनजाति के लोग रहते हों जिनके पास ऊंट या बैल जोड़ी, छकड़ा, पखाल किसी तरह का साधन न हो जिससे वे पानी ला सकें। अपने सिर पर घड़ा ला नहीं सकते इसलिए यह बहुत ही गंभीर मसला है। सरकार की मंशा है कि गांवों में, ढाणियों में पीने के पानी की व्यवस्था करनी है लेकिन विभाग जब तक इसमें जोर नहीं देगा तब तक यह काम···

श्री शोपतसिंह : जोर है ही नहीं देवें क्या ?

श्री हेमाराम चौधरी : जोर की बात विरोध पक्ष वाले माननीय सदस्य कह रहे हैं लेकिन विभाग की ओर भी सरकार को ध्यान देना होगा। विभाग के अन्दर कई ऐसे लोग बैठे हुए हैं जिनको कांग्रेस के

(श्री हेमाराम चौधरी)
नाम से बहुत चिढ होती है, गुस्सा आता है, जिन्होंने लोक सभा चुनावों के समय से पानी बन्द कर रखा है और जो योजनाएं हैं मौजूदा उनमें भी पानी इसलिए नहीं जाने दे रहे हैं कि आपने हमारे को वोट नहीं दिए तो अब पानी पी लो। पीने के पानी की व्यवस्था करने की हमने जो कोशिश की, सभापति महोदय उसमें क्या होगा, हम तो हमेशा यही कहते हैं गर्मियों के दिनों में दूसरे लोग तो प्याऊ लगा कर लोगों को पानी पिलाते हैं, घर से पैसे खर्च करते हैं, आदमी लगाते हैं, मैं कहता हूँ, इस विभाग में तुम्हें तो सरकार ने लगाया है फिर भी तुमने जानबूझ कर केवल कांग्रेस को वोट नहीं दिया इसलिए पानी नहीं पिलाते हो इसका इलाज यही है कि ×××

श्री शोभतसिंह : माननीय सभापति महोदय, क्या कह रहे हैं ?

श्री सभापति : कृपया समाप्त करें।

श्री डूंगरराम पंवार : यह ढाणी-ढाणी, गांव-गांव में पेय जल की समस्या दूर करने की बात कह रहे हैं। पेय जल समस्या तो दूर नहीं हुई लेकिन शेर के बच्चों ने ढाणी-ढाणी खेत खेत में शराब की व्यवस्था जरूर कर दी है उसमें कोई कमी नहीं रहने दी।

श्री सभापति : कृपया समाप्त करें।

श्री हेमाराम चौधरी : सभापति महोदय, यही नहीं अगर विरोधी दल के कहने में है तो उनको यह कर करवादें, मैं तो कहता हूं कि जो ऐसा करते हैं ×××।

श्री सभापति : कृपया समाप्त करें।

श्री हेमाराम चौधरी : सभापति महोदय, राज्यपाल ने अपने अभिभाषण में सहकारिता के बारे में बात कही।

श्री सभापति : कृपया समाप्त करें, बहुत समय हो गया।

श्री हेमाराम चौधरी : सभापति महोदय, एक सहकारी अभियान 1 सितम्बर से 15 अक्तूबर तक चलाया था मजमा लगाकर किसी ने लोन नहीं दिया या किसी ने अदा कर दिया लेकिन उसका जमा नहीं हुआ, इस तरह के जो भी मामले आये उनकी सुनवाई के लिए एक अभियान चलाया था। उस अभियान के दौरान बहुत सारे मामले सामने आये थे उनको मौके पर निपटारा करने वाली बात राज्यपाल महोदय ने कही है। कुछ मामले मौके पर सामने आये थे लेकिन आज तक उनका वापिस पूछने पर भी पता नहीं लग रहा है उनकी ओर ध्यान दिलाना चाहता हूँ। लाखों रुपयों के घोटालों के मामले हैं जैसे—ग्राम सेवा सहकारी समिति, सांजटा है, एक लाख रुपया रोकड़ बही में जमा थे, रोकड़ बड़ी मौके पर पकड़ ली गयी, तहसीलदार ले गया था...

श्री सभापति : कृपया इसको अलग से रखना, जब बजट आये।

श्री हेमाराम चौधरी : सभापति महोदय, इसमें मेरा यह निवेदन है कि राज्य सरकार ने जो अभियान चलाया राज्य सरकार की मन्शा यह थी कि जो भी सहकारी बन्धु हैं उनकी राशि का

××× अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई।

(श्री हेमाराम चौधरी)
किसी ने गबन किया है, उसको धोखा देकर उनके पैसे खाये हैं उसका पता लगा कर उनको राहत पहुँचाओ।

श्री सभापति : कृपया समाप्त करें।

श्री हेमाराम चौधरी : राहत पहुँची भी है...

एक माननीय सदस्य :

श्री हेमाराम चौधरी : लेकिन फिर भी कुछ मामले रह गये है जिनको या तो कोई न कोई बचाना चाहता है......

श्री सभापति : कृपया आप बैठिये। बहुत समय ले लिया।

श्री हेमाराम चौधरी : उनके खिलाफ कार्यवाही हो......

एक माननीय सदस्य : सरकार को श्राप दे रहे हैं।

श्री सभापति : कृपया समाप्त करें बहुत समय ले लिया, माननीय सदस्य।

श्री हेमाराम चौधरी : आप लोग पानी बन्द करवाते हो आपके पड़ेंगे, हम करेंगे तो हमारे पड़ेंगे। इसमें कोई बात नहीं। पानी जैसे मामले में भेदभाव जो करेगा वही भुगतेगा इसमें क्या है? भगवान उसको देखेगा।

श्री सभापति : कृपया समाप्त करें। बहुत समय ले लिया है।

एक माननीय सदस्य : गला साफ नहीं करें ज्यादा।

श्री हेमाराम चौधरी : सभापति महोदय, बाड़मेर जिले में कुछ ग्राम सेवा सहकारी समितियां हैं जिनमें बहुत ही घोटाले हैं, सांजटा, भीमथल, वायतू, भोपजी, सरणू, एक ग्राम सेवा सहकारी समिति हाथीतला को गर्त में मिला दिया, इनमें लाखों रुपयों के घोटाले हैं। जिन्होंने घोटाले किए हैं आज तक न तो उनके खिलाफ केस रजिस्टर हुए हैं और न ही...

एक माननीय सदस्य : सहकारी समितियों में बड़े घोटाले हैं। संबंधित मंत्री जी की हिस्सेदारी भी हो सकती है। यह भी निश्चित है।

श्री सभापति : माननीय सदस्य, बहुत समय हो गया। कृपया बैठ जायें। बहुत समय हो गया है।

श्री हेमाराम चौधरी : दो मिनट।

सही बात है आपके ध्यान में तो आये...

श्री यदुनाथ सिंह : माननीय सभापति महोदय, X X X

श्री सभापति : कृपया सहयोग कीजिये।

श्री अब्दुल अजीज : संबंधित मंत्रीजी से कह रहे हैं कि सहकारिता में बहुत बड़े घोटाले हैं।

(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : हमारा भी समय माननीय सदस्य को दे दो, इनको कहने दीजिये।

X X X अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई।

श्री सभापति : कृपया सहयोग कीजिये। माननीय शोपतसिंह। आपकी रक्षा कर रहा था, इधर भी रक्षा कर रहा हूं। आप लोगों की।

श्री शोपतसिंह : माननीय सभापति महोदय, राज्यपाल के अभिभाषण को पढ़ा, "खोदा पहाड़ निकली चूहिया"। एक ऐसा दस्तावेज इस पवित्र समय में पेश किया है जिसमें सच्चाई बहुत कम है। माननीय सभापति महोदय, माननीय राज्यपाल महोदय ने स्टार्ट भी बेढंगा लिया है, मुझे यह कहते हुए खुशी है कि राजस्थान में कानून एवं व्यवस्था की स्थिति बहुत ही सन्तोषजनक रही है, "बहुत ही"। माननीय सभापति महोदय, नाथद्वारा से आने वाले माननीय सदस्य एक बड़ा चार्टर बना कर लाये थे, बड़े आंकड़े पेश किए थे, मैं उनका मतलब नहीं समझ सका। राज्यपाल के अभिभाषण पर धन्यवाद के मौके पर उन्होंने कौन सी विद्वत्ता प्रदर्शित की है, यहां पर। वह आंकड़े पढ़े किस लिये ? आंकड़े बहुत सीधे साधे हैं, हमारे देश की प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की मौत जहां इस देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण थी, वहां वह इनके लिए वरदान सिद्ध हुई, सत्ता पक्ष के लिए वरदान सिद्ध हुई। मगर देश के लिए जरूर दुर्भाग्यपूर्ण थी। ऐसा होना देश के अन्दर किसी को पता नहीं था, हो गया ठीक है, हमदर्दी का वोट मिला।

माननीय सदस्य, जो नाथद्वारा से आये हैं, कह रहे थे कि हमारी प्रोग्रेस बहुत अच्छी है।

श्री भंवरराम (डीडवाना) : माननीय सभापति महोदय, इसका बार-बार विपक्षी सदस्य उदाहरण दे चुके हैं। मैं यह कह रहा हूँ कि सहानुभूति की वजह यह है कि, आप तो दिल्ली जाने वाले थे। सभी केन्डिडेट जो विपक्ष से चुन कर आये हैं, लोक सभा के चुनाव के अन्दर दिल्ली जाने वाले थे। जनता ने सहानुभूति रखी, दिल्ली तो नहीं पहुँचे लेकिन जयपुर में तो इनकी झौंपड़ी बना दी।

श्री सभापति : माननीय सदस्य कृपया बैठें। मुझे ज्यादा हमदर्दी है।

(व्यवधान)

श्री शोपतसिंह : माननीय सभापति महोदय, लोक सभा में 25 सीट मिल गई। विरोधी पार्टी को 13 विधान सभा क्षेत्रों में बहुमत मिला था, सिर्फ 200 में से 13 पर। 70 दिन के ठीक बाद अगर कहीं थोड़ी सी, मान्यता होती तो इस देश के करोड़ों रुपये, अरबों रुपये जो खर्च किए हैं वे बचाये जा सकते थे। इस गरीब देश के अन्दर पहले लोक सभा का चुनाव कराया और लोक सभा चुनाव के 70 दिन के बाद विधान सभा के चुनाव करवाये अगर कहीं आत्मविश्वास की, समझदारी की बात होती तो लोक सभा के साथ ही चुनाव होने चाहिये थे। लोक सभा के साथ चुनाव नहीं हुए.....

एक माननीय सदस्य : तो आप नहीं आते।

श्री शोपतसिंह : वह तो छोड़ दीजिये। हम आपकी मेहरबानियों से नहीं आये हैं।

लोक सभा के साथ चुनाव होने चाहिये थे। अगर लोक सभा के बाद चुनाव नहीं हुए तो फिर जून माह में होने चाहिए,

(श्री शोपत सिंह)

विधान सभा के चुनाव अगर जून में होते तो निश्चित तौर पर बहुत से माननीय सदस्य, जो यहां पर बैठे हैं, आपको नहीं मिलते, यहां पर।

श्री डूंगरराम पंवार : पता हो साफ हो जाता।

श्री भंवरराम : माननीय सभापति महोदय, अगर लोक सभा और विधान सभा के चुनाव साथ-साथ होते तो मैं कहता हूं माननीय विपक्ष के सदस्य हैं वे सदन में कैसे पहुंचते यह नहीं पहुंच सकते थे। यह तो सहानुभूति की लहर थी, जनता ने सोचा कि दिल्ली पहुंचने वाले थे, बड़े-बड़े नेता थे विपक्ष के, दिल्ली तो नहीं पहुंचे इनको जयपुर तो पहुंचा दिया जाए।

(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : जगह-जगह अस्थि कलश उठाये हुए रोते फिरे।

(व्यवधान)

श्री शोपतसिंह : माननीय सभापति महोदय, 70 दिन के बाद जहां लोक सभा चुनाव में विरोधी पार्टी का अल्प मत था वहां पर विधान सभा चुनाव में 85 लोगों का बहुमत आया। 85 इधर होते, विरोधी पार्टी के हमारे नेताओं में थोड़ा बहुत भी आत्म विश्वास और समझदारी होती तो आज उधर ट्रेजरी बैन्चेज पर बैठते। यह विरोधी पार्टी की गलतियों का परिणाम है कि आप यहां पर बैठे हैं वरना नहीं मिलते आप यहां पर।

(व्यवधान)

श्री भंवरराम - माननीय सदस्य बता रहे हैं कि सत्ता पक्ष की संख्या·····

(व्यवधान)

प्रजातन्त्र का फैसला है, जिसके माननीय सदस्य नेता रहे हैं·····

(व्यवधान)

श्री शोपतसिंह : मंत्रियों की कुर्सी पर विपक्षी होते, कांग्रेस पक्ष नहीं होता···

(व्यवधान)

कोई बात नहीं।

श्री सी. पी. जोशी (नाथद्वारा) : पोलिट ब्यूरो के भाषण दे रहे हैं।

(व्यवधान)

77 में जनता पार्टी के साथ थे····

(व्यवधान)

श्री शोपतसिंह : माननीय सभापति महोदय, हमारे पी. सी. सी. पी. जोशी साहब भी पहुंच गये हैं। मैं उनसे एक बात पूछना चाहता हूं······

श्री सभापति : माननीय सदस्य, किसी से न पूछें। अपने आप से पूछें।

श्री शोपतसिंह : आपकी मार्फत ही तो पूछना चाह रहा हूं······

(व्यवधान)

माननीय सभापति महोदय, इस चुनाव के फौरन बाद, लोक सभा के चुनाव के फौरन बाद करोड़ों रुपये के सीमेंट के पाइप, खम्बे बिजली के पोल गांव में ढेर लगा दिये, मगर फिर भी वोट नहीं मिले। बड़ी मुश्किल से बचे हैं। अगर 15 सीट और आ जाती तो यही हस्र होता। कोई पूछने वाला नहीं होता।

104

श्री डूंगरराम पंवार : इन्होंने खाली खाइयां भी खोदीं लेकिन उसमें गिरे कौन ? स्वयं ही गिर गये ।

श्री शोपतसिंह : इस सारी कोशिश के बावजूद भी ये 85 सदस्य यहां पर पहुंचे हैं जनता की इच्छा थी......

एक माननीय सदस्य : हमारी दया से पहुंचे हैं ।

श्री शोपतसिंह : जनता की बहुत इच्छा थी कि सत्ता पक्ष को सजा दी जाय परन्तु यह हमारी ही मंशा नहीं थी कि हम उधर बैठे । जनता की यह निश्चित तौर पर इच्छा थी कि विपक्षी इधर बैठे और कांग्रेस पक्ष इधर बैठे ।

अभी कह रहे थे कि हमारे देश में प्रधान मंत्री राजीव गांधी नौजवान हैं इसमें कोई शक नहीं है, डाउट नहीं है। मगर किस तरह से पांच साल तक चला पाते हैं...

एक माननीय सदस्य : एक भी नहीं बचता ।

श्री शोपतसिंह : लोगों ने तो जवान करके वोट दे दिया आपको मगर पांच साल में आप भगतसिंह बनेंगे या और कुछ बनेंगे यह हम को देखना है। यह आपकी अग्नि परीक्षा है ... .

(व्यवधान)

हम नागपुर की उस संस्कृति को कायम नहीं रखना चाहते हैं......

(व्यवधान)

श्री सी. पी. जोशी : नागपुर में सी. पी. एम. की जमानत जप्त हुई है ।

श्री अश्क अली टाक (फतेहपुर) : इस बात का जवाब दूं आपको...

(व्यवधान)

सी. पी. एम. का फतेहपुर में क्या हुआ, महोदय, नागपुर में भी हराया है आपको...

(व्यवधान)

श्री सी. पी. जोशी : ...नागपुर में हराने वाली लड़की है...

(व्यवधान)

श्री अश्क अली टाक : अध्यक्ष महोदय, नागपुर हो चाहे फतेहपुर हो,...

(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य, Please....

(व्यवधान)

श्री डूंगरराम पंवार : ये भगतसिंह क्या बनेंगे ? XXX जलियांवाला बाग वाले... ।

(व्यवधान)

श्री चुन्नीलाल : नागपुर में तो आर. एस. एस. का हैड क्वार्टर भी है, क्यों नाराज हो रहे हैं ?

(व्यवधान)

XXX अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई ।

श्री भंवराराम : माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने कहा, यह गलती हो गई कि हम सत्ता पक्ष में बैठते हैं और यह विपक्ष में बैठते हैं विपक्षी, सीटों का बंटवारा तक तो…

(व्यवधान)

श्री अशक अली टांक : सभापति महोदय, फतेहपुर में सी. पी. एम…

(व्यवधान)

श्री डूंगरराम पंवार : माननीय सदस्य, आप बम्बईया फिल्मों में खलनायक का रोल अदा करें तो बहुत ज्यादा जचेंगे।

श्री सभापति : सहयोग करें। माननीय सदस्य। Please.

श्री चुन्नीलाल : पाइन्ट ऑफ ऑर्डर।

(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य, कृपया।

श्री चुन्नीलाल : पाइन्ट आफ ऑर्डर…

(व्यवधान)

पाइन्ट आफ ऑर्डर।

(व्यवधान)

श्रीमती हमीदा बेगम : माननीय सभापति महोदय, माननीय सदस्य, अपनी सीट से बहुत फुदकते हैं। जरा नियंत्रण में करिये इन्हें।

(व्यवधान)

श्री चुन्नीलाल : पाइन्ट ऑफ आर्डर।

श्री सभापति : माननीय शोपत सिंह जी……

श्री चुन्नीलाल : पाइन्ट ऑफ ऑर्डर, आप सभा को सम्भालें, माननीय सभापति महोदय। ऐसा महसूस हो रहा है कि आप असफल हो रहे हैं। अगर ये इस तरह हल्ला करेंगे तो हम भी ऐसा ही करेंगे। हम भी करेंगे। हम भी करेंगे। हम यह बर्दाश्त नहीं करेंगे।

एक माननीय सदस्य : It is not point of order.

श्री सभापति : माननीय शोपतसिंह जी।

एक माननीय सदस्य : माननीय सदस्य इर्रेलेवेन्ट बात कर रहे हैं, इसलिये यह होता है।

श्री मोहन प्रकाश (राजाखेड़ा) : माननीय सभापति महोदय, नागपुर के नाम पर हर बार हल्ला हो जाता है। नागपुर में दो चीजें थीं, एक तो राष्ट्रीय छात्र संगठन का अधिवेशन हुआ था, दूसरा उससे भी पुरानी चीज है आर. एस. एस. का हैड क्वार्टर है। दोनों में से किस चीज पर हल्ला होता है।

श्री सभापति : माननीय सदस्य, मैं इस पर कमेंट नहीं करना चाहता हूँ।

श्री सी. पी. जोशी : लोक सभा में सी.पी.एम. का जो लीडर था उसको हराने वाला कौन था? युवा था। फतेहपुर में सी. पी. एम. को हराने वाला कौन था? युवा है, एन. एस. यू. आई. का लीडर है। इसलिये तकलीफ हो रही है……

(व्यवधान)

(106)

श्री सभापति : माननीय सी. पी.।

श्री अश्क अली टांक : माननीय सभापति महोदय, मैं बताना चाहूंगा कि नागपुर में क्या हुआ था ? नागपुर में छात्रों का सम्मेलन हुआ था इसका ही यह अन्जाम था कि संसद के चुनावों में नागपुर की सीट ए. आई. एस. एफ. के लीडर को मिली, इसके साथ-साथ आपको बताना चाहता हूँ कि वहीं से, उसी नागपुर से, उसी विश्वविद्यालय के अन्तर्गत···

(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य।

श्री अश्क अली टाक : वहां से एन. एस. यू. आई. के महाराष्ट्र के लीडर 16 हजार वोटों से जीते····

श्री सभापति : माननीय सदस्य, Please.

(व्यवधान)

श्री डूंगरराम पंवार : माननीय सभापति महोदय, नागपुर में हुआ था कि वहां पर लड़कियों की इज्जत उतारी गयी थी, लोगों को लूटा गया था, वेश्यालय खाली हो गये थे। यह हुआ था नागपुर में।

(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : ×××

श्रीमती हमीदा बेगम (चूरू) : माननीय सभापति महोदय, ये क्या···

(व्यवधान)

श्री शोपतसिंह : इसकी प्रशंसा करते हैं आप···

(व्यवधान)

श्री चुन्नीलाल इन्दलिया : आप अपनी बहादुरी सदन में दिखाना चाहते हैं, जनता को···

(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय टाक साहब। Please.

(व्यवधान)

श्री हरिकुमार औदिच्य (रामगंज मंडी): नागपुर की इतनी उपलब्धियां हैं तो चिढ़ते क्यों हैं ? जब नागपुर की इतनी उपलब्धियां हैं तो।

श्री सभापति : राजाखेड़ा से आने वाले माननीय सदस्य ने कहा है कि यह तो दोनों हैं। असली तो यह है वह तो ऐसे ही थे···

(व्यवधान)

श्री हीरालाल आर्य (पीपल्दा) : माननीय सभापति इनके आचरण से तो वहां की वेश्यायें भी त्राहि त्राहि कर उठी थीं।

श्री यदुनाथ सिंह : माननीय सभापति जी, मुझे आसन के रिमार्क्स पर आक्षेप है। मुझे ऐसा दुःख के साथ कहना पड़ रहा है······

श्री सभापति : कृपया, माननीय सदस्य माननीय सदस्य राजाखेड़ा वाले ने कहा है, मैंने नहीं कहा है।

××× अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई।

श्री यदुनाथ सिंह : नहीं, सभापति महोदय, यह प्रश्न जो है……

(व्यवधान)

जिस तरह से रिमार्क्स आसन ने किया वह उनको शोभा नहीं देता है। यह बैठे हैं, सुन रहे हैं……

(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य राजाखेड़ा वाले ने कहा है। मैंने नहीं कहा है। प्लीज।

श्री मोहन प्रकाश : माननीय सभापति महोदय उनकी उपलब्धियों पर इनको प्रसन्न होना चाहिए और आर. एस. एस. के हैडक्वार्टर से वे और प्रसन्न हैं।

(व्यवधान)

श्री सभापति : कृपया बठें, श्री शोपतसिंह जी………

(व्यवधान)

श्री घनश्याम तिवाड़ी : व्यवस्था का प्रश्न है।…

श्री सभापति : कृपया उलझेंगे नहीं सीधे सीधे……

(3.47 म. प.)

(श्री हीरालाल देवपुरा, अध्यक्ष, पदासीन)

श्री घनश्याम तिवाड़ी : मेरा व्यवस्था का प्रश्न है, अध्यक्ष महोदय, माननीय सभापति महोदय, जब आशन पर बिराज रहे थे, उन्होंने ऐसी बात कह दी जो आसन पर बैठने वाले किसी भी व्यक्ति के मुंह से शोभा नहीं देती है। उसके दो कारण हैं एक तो यह है कि वे क्या बोलते हैं सदन में किसी को समझ में नहीं आता क्योंकि बोलते समय उनका सारा का सारा मुंह पान की पीक से भरा रहता है…

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर प्लीज।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : अध्यक्ष महोदय, दूसरा जब वे प्लीज कहते हैं तो भी समझ में नहीं आता है। पहली बात तो यह है। दूसरी बात यह है कि नागपुर काण्ड के बारे में……

श्री अध्यक्ष : पाइंट ऑफ ऑर्डर क्या है ?

श्री घनश्याम तिवाड़ी : वही कह रहा हूं।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर, ऑर्डर।

श्री गिरिराज प्रसाद तिवाड़ी (भरतपुर) : मैंने नहीं कहा है। राजाखेड़ा से आने वाले माननीय सदस्य ने कहा था। गलत बात है……

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर प्लीज।

श्री गिरिराज प्रसाद तिवाड़ी : आप इसको मांइड मत कीजिये……

श्री अध्यक्ष : आर्डर, आर्डर।

श्री गिरिराज प्रसाद तिवाड़ी : राजाखेड़ा से आने वाले माननीय सदस्य ने कहा, मैं यह कह रहा था। कृपया……

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य।

श्री गिरिराज प्रसाद तिवाड़ी : I better know the dignity of the Chair.

श्री यदुनाथ सिंह : Better than the Speaker .

श्री घनश्याम तिवाड़ी : इन्होंने वापस ले लिया है तो मुझे कुछ नहीं कहना है। लेकिन, अध्यक्ष महोदय, आसन पर बैठकर कोई व्यक्ति इस ढंग से पान के मुंह से बोले......

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर प्लीज। माननीय सदस्य, ऑर्डर प्लीज ।

श्री गिरिराज प्रसाद तिवाड़ी : मेरे मुंह में पान नहीं है।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, ऑर्डर प्लीज। श्री शोपतसिंह जी !

(व्यवधान)

ऑर्डर प्लीज। Be relevant please.

श्री शोपतसिंह : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने कोई गलत बात नहीं कही थी। मैं समझता हूं कि निश्चित रूप से इस सदन में जो नौजवान आये हैं वे नागपुर की उपलब्धियां हैं हमारे......

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर प्लीज । ऑर्डर प्लीज। माननीय सदस्य। माननीय शोपतसिंह जी, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि आप रेलेवेन्ट सब्जेक्ट तक ही अपनी बात कहें ताकि अपनी बात कह सकें। Nagpur issue should not be raised.

(व्यवधान)

ऑर्डर प्लीज। नागपुर इश्यू का नाम नहीं लेंगे आप।

श्री शोपतसिंह : मैं राजस्थान के कर्णधारों को कुछ नहीं कहना चाहूंगा। नागपुर की उपलब्धियों के बारे में कुछ नहीं कहना चाहता हूं।

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर, ऑर्डर। ऑर्डर प्लीज।

श्री शोपतसिंह : मैं राजस्थान के इन कर्णधारों, जो नौजवान बैठे हैं, के लिये मैं कुछ नहीं कहना चाहता......

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर प्लीज, ऑर्डर, ऑर्डर।

श्री यदुनाथ सिंह : नागपुर का नाम क्यों नहीं लिया जा सकता ? देश के हर हिस्से का नाम इस सदन में लिया जाता है...

श्री अध्यक्ष: ऑर्डर, ऑर्डर। माननीय सदस्य।

श्री यदुनाथ सिंह : अध्यक्ष महोदय, समझ में नहीं आ रहा। मेरे को स्पष्ट करने में बहुत कन्फ्यूजन हो रहा है, आप बार-बार फरमा रहे हैं कि नागपुर का नाम नहीं लिया जा सकता। ऐसा क्या कारण है कि नागपुर का नाम नहीं लिया जा सकता ?

श्री अध्यक्ष : मैंने एक बार कहा।

(व्यवधान)

ऑर्डर प्लीज। इसलिये कहा कि जिस विषय पर आप बहस करना चाहते हैं उससे सदन की कार्यवाही में व्यवधान पड़ता है तो उसको जो सबजेक्ट है.... ऑर्डर प्लीज।

श्री शोपतसिंह : बीच में व्यवधान पैदा कर रहे थे तो मैं क्या कहूँ···

श्री अध्यक्ष : आप अपने सबजेक्ट पर रहिये। कोई व्यवधान नहीं होगा। आॅर्डर प्लीज।

श्री शोपतसिंह : माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे राज्यपाल महोदय ने कानून और व्यवस्था की बात कही सबसे पहले अपने भाषण में, यह अगर इस भाषण के आखिर में····

श्री अध्यक्ष : आॅर्डर प्लीज।

श्री शोपतसिंह : अगर कानून और व्यवस्था का शब्द इस भाषण के आखिर में होता तो हजम किया जा सकता था मगर उन्होंने तो शुरू में ही ले लिया इस सवाल को। मैं उन सालों की बात नहीं करता जो 5 साल बीच के रहे, मैं सिर्फ माथुर सहाब के करिश्मों की ही बात कर रहा हूं जो उन्होंने दो साल में इस राजस्थान को दिखाये और जो बहुत ही शर्मनाक थे। हमारे राजस्थान के लिये शर्मनाक दौर था वह। कानून और व्यवस्था की बात करने वाले लोगों से मैं एक बात कहता हूं, पिछले 5 साल की अवधि तक इस राजस्थान की नीयत यह थी कि मजदूर और किसानों को इस तरह से गोलियों का शिकार बनाया जाय जैसे कोई जानवरों का शिकार खेले। यह सबसे बड़ी उपलब्धि हमारे माथुर साहब की सरकार की है। 37 साल के अर्से, जब से कि राजस्थान बना है, को आज अगर कोई कम्परेटिव स्टेटमेंट बनाये कि कितनी बार गोलियां चलीं और कितने आदमी आज तक मारे गये तो मालूम होगा माथुर साहब के दो साल के शासन काल में सबसे ज्यादा मारे गये। इससे ज्यादा शर्म की क्या बात हो सकती है। कहां गये सारे के सारे आयोग? कहां गया नीम के थाने का आयोग? कहां गया घना का आयोग? कोटपूतली आयोग की रिपोर्ट कहां है? मेरे कहने का मतलब यह है कि जो कीतिमान कायम कर दिया माथुर साहब ने वैसा बेमिसाल कीर्तिमान अब तक कोई कायम नहीं कर सका। इसके साथ-साथ, माननीय अध्यक्ष महोदय, जितने बैंक लूटे गये, जितने पैट्रोल पम्प लूटे गये, जितनी बसों में लूट-खसोट हुई, डाकेजनी हुई, जितने ट्रक लूटे गये, उतने राजस्थान में इससे पहले कभी नहीं लूटे गये। आंकड़े देकर बताइये, जवाब दें······

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, अपनी बात कहते रहिये, आप जवाब तलब मत करिये।

श्री शोपतसिंह : मैं चाहूंगा कि मेरी बात का जवाब दें। मैं यह नहीं कहना चाह रहा।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आॅर्डर प्लीज। आॅर्डर प्लीज। माननीय सदस्य।

श्री शोपतसिंह : इनको भी हवा लग गई है नागपुर की······

श्री अध्यक्ष : आॅर्डर प्लीज। फिर आपने वही बात छेड़ दी।

श्री शोपतसिंह : बलात्कार की घटनाएं······

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर, ऑर्डर प्लीज । ऑर्डर, ऑर्डर ।

श्री शोपतसिंह : माननीय अध्यक्ष महोदय, बलात्कार की घटना अखबारों में पढ़ते हुये आम आदमी शर्म महसूस करता है। आम आदमी शर्म महसूस करता है मगर मेरे इस प्रदेश के लोगों का दुर्भाग्य है कि आये रोज सामूहिक बलात्कार, सामूहिक बलात्कार की खबरें आती हैं अखबारों में तो किसी भी परिवार में हम बठे हों, कहीं भी बठे हों हमारे लिए लज्जा की बात होती है, लज्जा अनुभव करते हैं। मगर मुझे मालूम नहीं, माथुर साहब की सरकार में किस तरह के मन्त्री थे और कौनसी मिट्टी के बने हुए थे कि उनको रत्ती भर भी कभी लज्जा नहीं आई इस बात की कि क्या हो रहा है? कीर्तिमान कायम किए हैं इस मामले में। बलात्कार के आज तक रिकार्ड उठाकर देखिये, बलात्कारों की ही घटना नहीं, इसके साथ-साथ में अभी हो क्या रहा है, माननीय अध्यक्ष महोदय, बीकानेर में परसों की बात है। अभी मेरे पास अखबार की कटिंग है। मिलिट्री और पुलिस के लोग जब हमारी बहन बेटियों से बलात्कार करें और लोग जब उसके प्रोटेक्शन में जायं तो सौ-सौ सिपाही आकर हमला बोल दें और आबादी को उजाड़ दें, तहस नहस कर दें जनसत्ता और राजस्थान पत्रिका के अन्दर बीकानेर की घटना का वर्णन है। मेरे पास एक लैटर आया है वहां के विद्यार्थियों का, उन्होंने लिखा है, जब लोगों ने इस बात का विरोध किया, पकड़ लिया एक मिलिट्री के सिपाही को घेर लिया तो उसकी इमदाद के लिए तीन सौ सिपाही आये और उन्होंने उन गरीबों की झोपड़ियों को तहस नहस कर दिया। बीकानेर के अन्दर आज तक आतंक है वहां के प्रशासन ने इस बात की पाबन्दी लगा दी कि मिलिट्री का कोई भी सिपाही शहर की सरहद में न घुसे। यह क्या हो रहा है? ये प्रशासन की बात करते हैं। आप कौनसे प्रशासन की बात करते हैं? आज हमारी बहन बेटियों की इज्जत हॉस्पिटल में महफूज नहीं है। हॉस्पिटल्स के डॉक्टर बलात्कार करें और स्कूल में हमारी बच्चियों के साथ टीचर बलात्कार करें, इससे ज्यादा और शर्मनाक बात क्या हो सकती है। आप यह कहें इसे·····

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर प्लीज ।

श्री शोपतसिंह : आपको शर्म है तो सही, लेकिन जरा थोड़ी सी। ठीक है मुझे······

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर प्लीज ।

श्री शोपतसिंह : माननीय अध्यक्ष महोदय, यह हो क्या रहा है? चाहे हम विरोध में बैठें हों चाहे सत्ता पक्ष में बैठें किसी के लिये भी इससे ज्यादा और शर्मनाक बात हो नहीं सकती, हम इतने बदनसीब हैं कि ऐसे प्रदेश के हम नागरिक हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इतने पर ही बस नहीं की, इनकी खूबियां तो बड़ी अजीब हैं। इनके पास एक बारह आई. जी. पी. की फौज है, 12 आई. जी. पी. की। किसी स्टेट में एक हो सकता है, किसी में दो रहे हैं, राजस्थान में भी एक रहा है, कानून व्यवस्था भी कायम रही है। मगर एक दर्जन आई. जी. पीज. भी हैं राजस्थान के अन्दर।···

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर प्लीज ।

श्री शोपतसिंह : खैर नो है तो कोई काम नहीं है । किस लिये रखा है आपने ? मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि यह आई. जी. पीज की फौज किस लिए रखी है । क्या कर रहे हैं आप ? आपके डायरेक्टर जनरल क्या करते हैं ? माननीय अध्यक्ष महोदय, ये कहते हैं उग्रवादियों के बारे में, पंजाब के हालात का हमारे यहां पर बहुत कम असर पड़ा है । यह लिखा है राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में संगरिया और बीलावाली गांव में मारा गया लोगों को । दिन दहाडे मारा गया । बम फेंके गये गंगानगर के आबादी क्षेत्र में । मुजरिम नहीं पकड़ा गया । मौके पर कोई मुजरिम नहीं पकड़ा गया । पुलिस स्टेशन के बिल्कुल 150 फीट के फासले पर, संगरिया के अन्दर पुलिस परिसर से दो सौ कदम की दूरी पर । घटना के फौरन बाद इत्तिला हो गयी, पुलिस पकड़ने में असमर्थ रही । फिर लॉ एण्ड ऑर्डर की सिचुएशन कहां है ? माननीय अध्यक्ष महोदय, और तो मैं अभी क्या कहूं राजस्थान की पुलिस ने सारे कीर्तिमान तोड़ दिये । × × × इससे ज्यादा और शर्म की क्या बात होगी ? अपने ही मंत्रि-परिषद् के लोगों को अपने मंत्रि-परिषद् में रहे लोगों को और कांग्रेस के विधायकों को ।

(व्यवधान)

आप जानते हैं शायद······

(3.58 म. प.)

(श्रीमती विद्या पाठक, सभापति पदासीन)

माननीय सभापति महोदय, जो पार्टी अपनी पार्टी के एम.एल.एज, अपनी पार्टी के लोगों, मंत्रि-परिषद् के लोगों × × × को पकड़-पकड़ कर निकाले, शासन यदि वह कानून और व्यवस्था की बात कहें तो इससे ज्यादा और × × × बात हो ही नहीं सकती । आपने क्या कार्यवाही करी ? क्योंकि दिल्ली की पुलिस थी वह इतनी सक्षम नहीं थी, इतनी काबिल नहीं थी कि × × × इसलिये हमारे यहां से ट्रेनिंग लेकर लगाया गया । ऐसी स्थिति में भी इस राज्यपाल के भाषण में ऐसा बयान देवें इससे ज्यादा शर्मनाक बात और क्या हो सकती है ? माननीय सभापति महोदय, आखिर में राजस्थान की पुलिस की कितनी काबलियत है, अंदाजा कीजिये आप । आज से कुछ अर्सा पहले इस देश की प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की दुर्भाग्यपूर्ण मौत हुई । हमको बहुत ही सख्त प्रीकॉशन लेने चाहिये थे और लिये जाने चाहिये थे 10 फरवरी को हमारे देश के प्रधान मंत्री राजीव गांधी जयपुर में पधारे । आपकी पुलिस को तमीज भी नहीं रही इस बात कि भी की कम से कम वह आयें तो रोशनी की व्यवस्था तो करे जलसे में । रोशनी ? घुप्प अन्धेरा था । यह मेरी बात नहीं, यह राजस्थान पत्रिका की खबर है, शायद और अखबारों में नहीं निकली है । आप मानोगे नहीं । जो पुलिस अपने देश के प्रधान मंत्री की मीटिंग की व्यवस्था न कर सके उसकी मीटिंग में लाइट की व्यवस्था नहीं कर सके·····

× × × अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित की गई ।

(4.00 म. प,)

(श्री शोपतसिंह)

उससे गयी-गुजरी कोई सरकार हो सकती है ? यह कोई काबिल है क्या ? यहां के अधिकारी या जो भी जिम्मेदार लोग थे, उनको मैं कहना चाहूंगा, उस अन्धेरे के अन्दर कोई घटना नहीं हुई। बहुत अच्छी बात था। मगर अब भी कुछ सदस्य हंस रहे हैं, उनके लिए कोई बात महत्व की नहीं रही, कभी नहीं नागपुर का नाम आया तो भी ····

श्री सभापति: ऑर्डर, माननीय सदस्य।

श्री शोपतसिंह : अगर यह नाम आया तो भी। इनको पता नहीं, कब हंसना चाहिए और कब गुस्सा करना चाहिए। माननीय सभापति महोदया, मैं एक सवाल पूछता हूं इस प्रदेश की पुलिस अपने प्रधान मन्त्री के जलसे की व्यवस्था नहीं कर सकी उसमें अन्धेरा रहा, घुप्प अंधेरा रहा। कुछ भी हो सकता था। इस अन्धेरे के अन्दर कोई भी बड़ी से बड़ी विपत्ति आ सकती थी। खैर है शुक्र है, मेहरबानी है हमारे इन अधिकारियों की यह कानून व्यवस्था रही और वह बिल्कुल सही सलामत रहे। मीटिंग हो चुकी।

माननीय सभापति महोदय, मैं कानून और व्यवस्था के बाद कुछ दूसरे सवाल······

(व्यवधान)

टाइम का लिमिट ? आपने डिस्टर्ब किया।

(समय-समाप्ति-सूचक घण्टी)

सारा का सारा हमारा मामला गड़बड़ कर दिया।

श्री भंवरा राम : आधा घण्टा तो ले लिया।

श्री सभापति : माननीय सदस्य, संक्षेप में समाप्त करें। ऑर्डर प्लीज।

श्री शोपतसिंह : जब तक आप बोलेंगे ·····

श्री सभापति : माननीय सदस्य, जल्दी समाप्त करें।

श्री शोपतसिंह : नहीं, साहब। बहुत लोग चाहते हैं कि मैं बोलूं कुछ।

श्री सभापति : माननीय सदस्य, आपकी पार्टी को दस मिनट का समय दिया था।

श्री भंवरा राम : माननीय सभापति महोदया, औरों को भी बोलने का मौका मिलना चाहिए।

श्री सभापति : माननीय सदस्य, कृपया स्थान ग्रहण करें।

एक माननीय सदस्य : आउट ऑफ वे जाकर बात कर रहे हैं।

श्री शोपतसिंह : माननीय सभापति महोदया, दूसरी बीस सूत्री कार्यक्रम की चर्चा की है, हमारे राज्यपाल महोदय ने बीस सूत्री कार्यक्रम की है, भूमिहीन किसान, बायोगैस की भी बात है, की और गरीबों को कर्ज की भी बात कही है कि हमने इतने लोगों को कर्ज दिया। माननीय सभापति महोदया, हमारे मन्त्रिमण्डल के जो एक मात्र सदस्य बैठे हैं, इस बात को वह शायद नोट कर रहे होंगे·····

एक माननीय सदस्य : दो हैं। एक ही बहुत है सबके लिए।

श्री शोपतसिंह : दो माननीय सदस्य बैठे हैं। मैं उनको आपकी मार्फत ध्यान दिलाना चाहूंगा......

श्री नरेन्द्र सिंह भाटी (राजस्थान नहर परियोजना मंत्री) : सभापति महोदया, I just wanted to know मीटिंग कहां हुई थी ? लिखना था। आप पुलिस मीटिंग के बारे में कुछ कह रहे थे।

श्री शोपतसिंह : स्टेडियम में। जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में।

श्री नरेन्द्र सिंह भाटी : क्या ओकेजन था ?

श्री शोपतसिंह : ड्यूटी मीट थी पुलिस की ?

सभापति महोदया, इसका जवाब दें। मैं चाहता हूँ।

(समय-समाप्ति-सूचक घण्टी)

(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य, आपस में बातें नहीं करें।

श्री जयकृष्ण तोसावड़ा (दूदू) : माननीय सदस्य सदन को गुमराह कर रहे हैं। जिस समय हमारे प्रधानमंत्री राजीव गांधी यहां आये थे उस समय फंक्शन में मैंने भी भाग लिया था। उस समय तो दिन था रात नहीं थी। लाइट की कोई आवश्यकता नहीं थी।

श्री शोपतसिंह : माननीय सदस्य थे ही नहीं, चुनाव में गये हुए थे। इनको मालूम नहीं है कि मामला क्या है ?

श्री सभापति : माननीय सदस्य, संक्षेप में बहुत जल्दी समाप्त करें।

श्री शोपतसिंह . माननीय सदस्य मुझे डिस्टर्ब कर रहे हैं। मुझे कहने नहीं देते जो मैं बात कहना चाहता हूं। या तो आप इनको रोकिये या मुझे कहने दें।

श्री सभापति : आप संक्षेप में समाप्त करिये।

श्री शोपतसिंह : मैं समाप्त कैसे कर सकता हूँ ?

श्री सभापति : दस मिनट का टाइम ओवर हो गया आपकी पार्टी का।

(व्यवधान)

ऑर्डर प्लीज। आपस में बात नहीं करें।

श्री शोपतसिंह : यह दस फरवरी की घटना है पुलिस ड्यूटी मीट थी ऑल इण्डिया की, उसके अन्दर सारा वाकया हुआ। दिन में नहीं रात को हुआ है। ट्रकों और मोटरों की लाइट से वहां लाइट रखी गई थी। प्रधानमन्त्री ने यह शब्द कहे "Can I see the audience ?" पूछा, माथुर साहब से पूछा.....

Yes, I was there.

(व्यवधान)

मैं वहीं पर उस दिन था। मैं उस दिन था वहां पर।

श्री सभापति : माननीय सदस्य, चेयर को एड्रेस करके बोलिए। आपस में इशारे से नहीं।

श्री शोपतसिंह : माननीय सभापति महोदया, मुझे बोलने नहीं देना चाहते हैं यह लोग।

माननीय सभापति महोदया, मैं बीस सूत्री प्रोग्राम की बात करूंगा। यह गरीबों की बात बहुत करते हैं। समाजवाद को तो इस किताब में भूल ही गये। अभिभाषण में कहीं समाजवाद की चर्चा नहीं है। इसलिए नहीं कि इस सरकार को गरीबों से कोई हमदर्दी है। मगर सी. पी. जोशी ने उस दिन राज्यपाल के अभिभाषण पर अपने धन्यवाद प्रस्ताव में बहुत बड़ी, लम्बी चौड़ी बातें कहीं। मैं तो एक ही सवाल पूछना चाहता हूं समाजवाद की बात करने वाले लोगों से, बीस सूत्री की बात करने वाले लोगों से एक सवाल पूछता हूं कि राजस्थान का······

श्री उम्मेदी लाल (हिण्डौन) : माननीय सभापति महोदया, माननीय सदस्य को काफी टाइम हो गया। हम माननीय सदस्यों को भी टाइम मिलना चाहिये।

श्री सभापति : माननीय सदस्य, बात सही है। दस मिनट हो चुके हैं। ऑर्डर, माननीय सदस्य। स्थान ग्रहण करें।

श्री शोपतसिंह : मैं कहना चाहता हूं तो यह बीच में आ गये।

मैं एक सवाल पूछना चाहता हूं, माननीय सभापति महोदया, भूमिहीन किसानों को जमीन न देकर जो सरकार अपनी जमीन नीलाम करे, मार्केट रेट पर बेचे, वह गरीबों की बात किस मुंह से कर सकती है? राजस्थान कैनाल के अन्दर आज लाखों बेजमीन गरीब बैठे हैं। गंगानगर जिले के अन्दर दो लाख भूमिहीन किसान हैं। तीस लाख भूमिहीन किसान वह हैं जिनको आपने भूमिहीन किसान करार दे दिया, आपकी अदालत ने दे दिया, तीस हजार लोग बैठे हैं। डेढ़ लाख लोग ऐसे हैं जो 1955 के बाद के भूमिहीन किसान हैं। राजस्थान के अन्दर लाखों के अन्दर गरीब किसान बैठे हैं उनको जमीन नहीं दी जाएगी। राजस्थान की जमीन पिछले पांच सालों से माथुर साहब की खास मेहरबानियों से बाजार भाव से बेची गई दो लाख रुपये कीमत पहले एक लाख छत्तीस हजार रुपए थी अब दो लाख में बेच रहे हो। राजस्थान कैनाल का प्रति मुरब्बा बाजार भाव पर बेचा जा रहा है। और आप भूमिहीन किसान की बात करते हो। कौनसा बीस सूत्र का प्रोग्राम है? सारा का सारा ढोंग है आपका। मैं अब, सभापति महोदया, आप से पूछना चाहता हूं···

(समय-समाप्ति-सूचक घण्टी)

सरकार अपनी सरकारी जमीन नीलाम करे, बेजमीनों को नहीं दे। इसमें कहां सीलिंग है? सीलिंग तुम क्या लागू करोगे? सरकारी जमीन को बेच रहे हो बाजार भाव में और गरीब लोग बैठे हैं बिना जमीन के। यह है हमारी सरकार का बीस सूत्री प्रोग्राम।

श्री सभापति : ऑर्डर। माननीय सदस्य, अब आप समाप्त करें।

श्री शोपतसिंह : थोड़े से बिन्दुओं पर। मैं बायोगैस की बात कहना चाहता हूं···

श्री सभापति : दो मिनट में कनक्लूड करें।

(व्यवधान)

श्री उम्मेदीलाल : माननीय सभापति महोदया, आधे घण्टे से बोल रहे हैं।

(व्यवधान)

श्री जयकृष्ण तोसावड़ा : पौन घण्टे से बोल रहे हैं। पौन घण्टे के अन्दर कोई तथ्य की बात नहीं की।

(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य, Please sit down। ऑर्डर, माननीय सदस्य।

(व्यवधान)

दो मिनट में अपनी बात समाप्त करें, माननीय सदस्य। ऑर्डर।

(व्यवधान)

माननीय सदस्य, इस सदन के कुछ नियम हैं। इस आसन की अवहेलना करना एक गंभीर, गलत बात है। कृपया ध्यान दें। माननीय सदस्य, जल्दी समाप्त करें।

श्री शोपतसिंह : मुझे बोलने नहीं दे रहे हैं।

श्री सभापति : You please conclude within two minutes.

श्री शोपतसिंह : Yes, माननीय सभापति महोदया, यह बायोगैस क्या बीमारी आ गई? गोबर गैस कहते हैं हमारे गांव में तो। गोबर गैस में क्या कर रहे हैं? उन्होंने टार्गेट फिक्स कर दिये। हर बी.डी.ओ. को कह दिया गया कि अगर तुमने टार्गेट पूरे नहीं किये तो हम तुम्हारे खिलाफ एक्शन लेंगे। बला क्या है? यह बीमारी 1947 मे चली। मैंने 1958 में देखा। सारे हिन्दुस्तान में घूमने का इत्फाक हुआ। मैं देखकर आया हूं। सारी की सारी स्कीम्स फेल थी। यह बायोगैस के नाम से क्या करते हैं गांव में? सभापति महोदया, रूरल एरिया की सारी की सारी सीमेंन्ट बायोगैस में दे देते हैं। तीस बैग देते हैं, बीस बैग देते हैं बायोगैस में। तीस बैग लेकर दस बैग लगाते हैं उसमें और 20 बैग ब्लैक में बेचते है। इसके साथ ही उसमें सब्सिडी भी मिलती है बहुत अधिक। किसी का कुछ नहीं लगता। अधिकतर 90 फीसदी कांग्रेस के लोग इस काम में लगे हुए थे। आप मालूम करके जांच करें। किन किन के पास है, यह मालूम करें। आपको मालूम करके बताना चाहिये कि कितने वर्किंग आर्डर में हैं।

एक माननीय सदस्य : आप लगाइये।

श्री शोपतसिंह : नहीं, यह आपका काम है मेरा काम नहीं है। यह बायोगैस जितने लगे, मैं चाहता हूं, जवाब देते वक्त बतायें कि कितने वर्किंग आर्डर में हैं, कितने काम कर रहे हैं? और कितने लोग रुपया लेकर खा गये? कैसे अनाप-शनाप हमारा राजस्थान का पैसा इस बायोगैस के पीछे लगा है।

गरीबों को कर्ज की बात करते हैं……

श्री सभापति : Please sit down. अब समाप्त करें, माननीय सदस्य……

श्री शोपतसिंह : सभापति महोदया, केवल लास्ट पाइन्ट……

श्री सभापति : अब फिनिश कीजिये माननीय सदस्य ।

श्री शोपतसिंह : लास्ट पाइन्ट।

श्री सभापति : एक मिनट में समाप्त करें उसके बाद कृपया आसन को बाध्य न करें।

(व्यवधान)

श्री शोपतसिंह : आप इनको खुश करना चाहती हैं, मुझे भी मौका दें।

श्री सभापति : मैं किसी को खुश नहीं करना चाहती। आप एक मिनट में अपनी बात समाप्त करिये।

श्री शोपतसिंह : तो मैं लास्ट पाइन्ट बोल रहा हूँ।

गरीबों को जो कर्ज दिया जा रहा है, गरीबों को कर्ज देने का तरीका····

एक माननीय सदस्य : इस समय भी दिया जा रहा है। यह सी. पी. एम. के अनोखे पुत्र हैं····

श्री शोपतसिंह : इन गरीबों को कर्ज दिलवाने में हमारी बैंकों को खुर्द-बुर्द कर दिया गया····

(व्यवधान)

श्री सभापति : ऑर्डर प्लीज, माननीय सदस्य ।

श्री शोपतसिंह : ये नहीं बोलने दें तो मैं बैठ जाऊं।

श्री सभापति : माननीय सदस्य, अपनी बात एक मिनट में समाप्त करें।

श्री शोपतसिंह : मैं उसी लास्ट पाइन्ट पर ही बोल रहा हूँ····

श्री सभापति : But let it be in short.

श्री शोपतसिंह : माननीय सभापति महोदया, यह जो गरीबों को कर्ज दिया जाता है मैं चाहता हूँ 4 हजार-पांच हजार रुपये जो दिये जाते हैं वह उस गरीब को हाथ में क्यों नहीं दिये जाते नकद ? ताकि उस गरीब की पर्चेजिंग पावर कोई अगर गरीब की जेब में पैसा होगा तो स्वयं जायेगा भेड़ लेने। 125 रुपये की भेड़ उसे 100 रुपये में मिल जायेगी, ढाई हजार रुपये की भैंस होगी तो उसे 2 हजार रुपये में मिल जायेगी, 2 हजार का ऊंट उसको डेढ़ हजार रुपये में मिल जायेगा अगर उसके पास पैसा होगा तो। वह चक्कर लगाता है बैंकों के अन्दर, बैंकों को खुर्द-बुर्द कर दिया और भ्रष्ट बना दिया गया। वह गरीब जब किसी के पास भेड़ लेने के लिये जाता है तो डॉक्टर से उसको वैरीफाई कराता है डॉक्टर क्या करता है कि उन चौधरियों को जो भेड़ वाले हैं, पैसे लेकर बूढ़ी भेड़ों को जवान दर्ज कर देता है। इससे होता क्या है कि आधी तो मर जाती हैं। मेरे कहने का मतलब यह है कि गरीब को आप अगर रुपया देना चाहते हैं तो नकद दीजिये ताकि उस गरीब को मालूम हो, वह बाजार में लेकर जावे, उसके पास पर्चेजिंग पावर हो। गरीब आदमी को अगर आप कहें कि भेड़ ले आओ, भैंस ले आओ, बकरी ले आओ लेकिन पैसा आप उसको दे नहीं और पैसा किसको दे बैंक उस चौधरी को देगा जो बैंक वालों से मिला हुआ है और डॉक्टर से मिला हुआ है। वह अपनी बूढ़ी भेड़ें, बूढ़ी बकरियां और सारा का सारा रद्दी माल उस गरीब के जिम्मे कर देता

(श्री शोपतसिंह)
है। यह हमारा गरीबों को ऊपर उठाने का तरीका है.........

श्री सभापति : माननीय सदस्य, Sit down. समाप्त करें, माननीय सदस्य।

श्री शोपतसिंह : इसलिये, सभापति महोदया, आपकी मार्फत मैं यह कहना चाहूंगा कि गरीबों का आप यदि भला करना चाहते हैं तो नकद दीजिये महरबानी करके ताकि उस रुपये की बरबादी न हो, उसमें भ्रष्टाचार भी कम हो। इन शब्दों के साथ मैं..........

श्री सभापति : श्री हरिमोहन शर्मा।

श्री शोपतसिंह : राज्यपाल के इन अभिभाषण को रिजेक्ट करता हूं और इसकी निन्दा करता हूं।

श्री सभापति : श्री हरिमोहन शर्मा।

श्री हनुमान प्रसाद प्रभाकर (मावली) : हनुमान प्रभाकर या हरिमोहन शर्मा।

श्री सभापति : श्री हरिमोहन शर्मा।

श्री हरिमोहन शर्मा (बून्दी) : माननीय सभापति महोदया, मैं इस विधान सभा के प्रथम सत्र में, प्रथम बार निवेदन करने जा रहा हूं जिसे संसदीय भाषा में मेंडन स्पीच कहते हैं, इसलिये मैं आसन से संरक्षण चाहूंगा। साथ ही.........

श्री सभापति : Maiden speech should be very short and sweet.

श्री भंवर लाल शर्मा : May not be sweet but should be short.

श्री हरिमोहन शर्मा (बूंदी): मैं आपके निर्देशों की पालना अवश्य करूंगा, जैसे मेरे पूर्ववर्ती माननीय सदस्य उल्लंघन कर रहे थे। मैं वह रास्ता अख्तियार नहीं करूंगा। साथ ही मैं ना पक्ष के माननीय सदस्यों से भी विनम्र अनुरोध और प्रार्थना कर रहा हूं कि मेरे इस अल्प भाषण के दौरान व्यवधान पैदा करने की कृपा न करें बल्कि सहयोग करें...

(व्यवधान)

श्री सभापति : आॅर्डर, आॅर्डर। माननीय सदस्य, आपस में बात नहीं करें।

(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : प्रश्न पढ़ रहे हैं क्या ?

श्री हरिमोहन शर्मा : प्रश्न पढ़ नहीं रहा हूं.........

(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य आसन को एड्रेस करें।

श्री हरिमोहन शर्मा : ठीक है। प्रश्न जो आज आपके सामने पैदा हुये हैं उनका उत्तर देने के लिये मैं कुछ कहना चाहूंगा।

माननीय महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर धन्यवाद का प्रस्ताव माननीय श्री सी. पी. जोशी ने रखा और उसका समर्थन तिवाड़ी साहब ने किया। मैं उस प्रस्ताव के समर्थन में अपने विचार आपके सामने रख रहा हूं। अनेक मुद्दे आपके सामने हैं।

श्री यदुनाथ सिंह : This is not a maiden speech.

श्री सभापति : Please sit down. ऑर्डर, ऑर्डर ।

श्री हरिमोहन शर्मा : मैंने पहले ही आपसे मेहरबानी करने के लिए निवेदन किया है और अधिक···

(व्यवधान)

श्री सभापति : ऑर्डर, ऑर्डर । माननीय सदस्य, आपस में बात नहीं करें । Please.

श्री हरिमोहन शर्मा : सभापति महोदया, सवाल सिद्धान्तों का है···

श्री शोपतसिंह : सवाल सिद्धान्तों का नहीं है, आपको नहीं बोलने देने का हैं। आपने जैसा किया वैसा हम करें तो···

श्री सभापति : ऑर्डर । माननीय सदस्य, आप इस सदन के बहुत अधिक अनुभवी सदस्य हैं । ······माननीय सदस्य बैठे-बैठे बात नहीं करें ।

(व्यवधान)

श्री शोपतसिंह : जैसा इन्होंने किया वैसा हम करें तो···

(व्यवधान)

श्री सभापति : ऑर्डर, ऑर्डर । माननीय सदस्य, Please co-operate with chair.

(व्यवधान)

श्री सभापति : Please बैठकर बात नहीं होती, माननीय सदस्य सदन में ।

श्री हरिमोहन शर्मा : यह जो वर्षों से चले आ रहे हैं माननीय सदस्य हैं, जो यहां विराजमान हैं उनसे हम सीखना चाहते हैं लेकिन जैसा वह सिखा रहे हैं वह सीखने की आदत थोड़ी कम है·········

(व्यवधान)

श्री सभापति : ऑर्डर, ऑर्डर । माननीय सदस्य, अपने इश्यू पर बोलें । सदन की कार्यवाही, आसन की व्यवस्था के विषय में सदन में चर्चा नहीं होगी । ऑर्डर प्लीज आप अपने टाइम पर बोलें ।

(व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा : कॉंग्रेस पार्टी जीती और चुनाव के नतीजे आपके सामने आये अनेक माननीय सदस्यों ने उसे इस आधार पर जीत मानी है कि यह न सिद्धान्तों की जीत है, न कोई आर्थिक नीतियों की जीत है और न कार्य-क्रमों की जीत है···

श्री शोपतसिंह : लाटरी का माल है···

श्री हरिमोहन शर्मा : मेहरबानी कीजिए। मैं आसन से निवेदन करूंगा, मैं पूर्व में भी निवेदन कर चुका हूं···

श्री भंवरलाल शर्मा (हवा महल) : कितनी बार निवेदन करेंगे आप ? आप तो बोलिये।

श्री हरिमोहन शर्मा : मैं इससे ठीक विपरीत मत रखता हूं, यह कांग्रेस पार्टी के सिद्धान्तों की जीत है, उसकी आर्थिक नीतियों की जीत है, उसके नेतृत्व की जीत है और उसके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों

(श्री हरिमोहन शर्मा)

की जीत है । अभी जो सन् 1985 में चुनाव हुए उसके नतीजे आपके सामने हैं। अगर इन नतीजों को देखने के बाद भी हम यह कह दें कि यह जीत केवल आतंकवाद से उत्पन्न हुई स्थिति के कारण, हिन्दुओं के मतदान करने के कारण है, तो सर्वथा गलत और अनुपयुक्त है। अगर हम यह कहें कि जो कांग्रेस की नीतियां हैं, धर्म निरपेक्षता की, लोकतन्त्र की और समाजवाद को जो नीतियां हैं उनकी जीत नहीं है तो यह गलत है। यह कोई जीत है तो देश में युवा पीढ़ी का नेतृत्व करने वाले राजीव जी गांधी के नेतृत्व, समाजवाद, धर्म निरपेक्षता और लोकतंत्र में अडिग आस्था और नियोजित आर्थिक नीतियों की जीत हैं। इसके कारण कितना विशाल बहुमत हिन्दुस्तान स्तर पर और राजस्थान स्तर पर हमको मिला है। आज हम विपक्ष के अधिक संख्या में सदस्य राजस्थान में जीतकर आने की बात करें अथवा यह कहें कि पूर्व के मुकाबले में, विधान सभा में हमें कम सीटें मिली, तो वह सिद्धान्तों के कारण नहीं मिली। महज एक झांसा जनता को दिया गया विपक्ष की ओर से, यह झांसा दिया गया, हमने अखबारों में पढ़ा कि विपक्ष के राजस्थान में सभी दलों मे एकता कायम कर श्रीमान भैरोंसिंह जो शेखावत को नेता घोषित कर दिया है। एक यह झांसा दिया गया राजस्थान की जनता को जिसके आधार पर हो सकता है कि राजस्थान के कुछ मतदाता भ्रमित हुये हों और उन्होंने इस बात की कल्पना की हो कि विपक्ष एक हो जायेगा, तो सशक्त विरोध के रूप में कुछ कार्य कर सकेगा। लेकिन आपने देखा कि सार्वजनिक रूप से आश्वासन देने के कारण आज की तारीख में हमारी कुछ सीटें संख्या के आधार पर इधर से उधर खिसक गई लेकिन जो आश्वासन आपने 1977 में हिन्दुस्तान की जनता को एक रहकर सरकार चलाने का दिया था, 5 साल तक सुदृढ़ शासन देने का वायदा किया था पर आप ढाई साल तक सरकार चला पाये। वह भी जिस स्थिति में चला पाये, उसी आधार पर, उसी तरीके से आपने सबक नहीं लिया और जनता को गुमराह करके कुछ सीटें आपने अधिक ले लीं। लेकिन विपक्ष की यह थोड़ी बहुत जीत, अधिक सीटों पर सिद्धान्तों की जीत नहीं है। न उसके पीछे आर्थिक नीति है, न उसके पीछे सिद्धान्त हैं, न उसके पीछे संगठित होकर कार्य करने की दिशा है। इसलिये मैं कहना चाहूंगा कि कांग्रेस ने जो विश्वास प्राप्त किया है वह एक सुदृढ़ आर्थिक नीतियों के कारण, नियोजित प्लान चलाने का तरीका होने के कारण प्राप्त किया है यह सिद्धान्तों की जीत है। सिद्धान्तों के कारण हिन्दुस्तान और राजस्थान की जनता ने राजीव जी गांधी के नेतृत्व में विश्वास व्यक्त किया है।

इसके साथ मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि कांग्रेस की नीतियां क्या हैं? यह सभी जानते हैं। कांग्रेस के विकास का केन्द्र बिन्दु गरीब तबका है, कांग्रेस के विकास का केन्द्र बिन्दु केवल हिन्दुस्तान का मध्यम वर्ग है, गरीब तबका है। किसान, पिछड़े वर्ग, अनुसूचित जाति वर्ग, अनुसूचित जन जाति के वर्ग ऐसे पिछड़े तबके जिसको पूरे साधन मिलते नहीं हैं के लिये हिन्दुस्तान और राजस्थान की सरकार

(120)

(श्री हरिमोहन शर्मा)

कुछ करना चाहती है। उस पिछड़े और गरीब तबके के दरिद्रनारायण की सेवा बीस सूत्री आर्थिक कार्यक्रम के माध्यम से करने की भारत सरकार ने योजना राजस्थान सरकार को दी। राजस्थान की सरकार ने 20 सूत्री कार्यक्रम से दरिद्रनारायण की सेवा जिस प्रकार की वह हिन्दुस्तान में दूसरे प्रदेशों के लिए मिसाल है। 82 में बीस सूत्री कार्यक्रम के तहत हिन्दुस्तान में राजस्थान दूसरे नम्बर पर आया, 83 और 84, 84 और 85 में प्रथम नम्बर पर बीस सूत्री कार्यक्रम के तहत उपलब्धियां प्राप्त कीं। जो दरिद्रनारायण की समस्या को हल करने और बेरोजगारों को रोजगार देने की व्यवस्था करने के लिये जो प्रयास किये हैं, जो गरीब को झौंपड़ी दी है, गांवों को नियोजित तरीके से सड़कों से जोड़ने की जो योजना बनाई है इन सब कारणों के कारण राजस्थान ने एक नई दिशा दी और हिन्दुस्तान में यह प्रथम 83 और 84 में आया।

आज आपके सामने राजस्थान में कानून और व्यवस्था का प्रश्न अनेक रूपों में उठाया गया। कानून और व्यवस्था की अगर एक घटना होने से पूरे साल की कानून और व्यवस्था बिगड़ी हुई मान ली जाय, अगर दो-पांच घटनाओं के आधार पर कानून और व्यवस्था बिगड़ी हुई मान ली जाय, अगर एक घटना की कल्पना किसी के दिमाग में हो और एक ही घटना नहीं हो, सारे प्रशासन को ही अच्छा शासन मान लिया जाय मैं समझता हूं यह एक भ्रान्ति है। आज राजस्थान में कानून और व्यवस्था की स्थिति का जो वर्णन माननीय राज्यपाल महोदय ने अपने अभिभाषण में किया है, निश्चित रूप से राजस्थान में कानून और व्यवस्था की स्थिति बेहतर है, और प्रदेशों के मुकाबले बेहतर रही है। वेस्ट बंगाल में सैंकड़ों आदमी गोलियों से भून दिये गये और साधारण कार्यकर्ता गोलियों से राजनीतिक मतभेदों में उड़ा दिये, वहां कानून की स्थिति अच्छी है वहां से सम्बन्धित, वहां की विचारधारा के पोषक, वहां की विचारधारा रखने वाले सदस्य यदि यह कहें कि राजस्थान में कानून और व्यवस्था की स्थिति गड़बड़ है, तो इस सदन को और अपने आपको धोखा देने के अलावा और दूसरी बात कोई हो नहीं सकती। मैं यह भी निवेदन करना चाहूँगा कि कानून और व्यवस्था की स्थिति बिगाड़ने के लिए हम भी जिम्मेदार हैं, राजनीतिक संरक्षण गुण्डों को मिलता है इस कारण कानून और व्यवस्था की स्थिति बिगड़ती है। जब हम यह कहते हैं कि......

श्री भंवरलाल शर्मा: यह बात सही कही आपने।

श्री हरिमोहन शर्मा: अभी गलत कहेंगे, दो मिनट बाद गलत कहेंगे।

जो कानून और व्यवस्था की बात कर रहे हैं, जब राजस्थान में कानून और व्यवस्था की स्थितियां ठीक चलती हैं, जब प्रशासन ठीक चलता है तो उनके मन में इस बात की भावना पैदा होती है कि कैसे गड़बड़ हो, कैसे कानून और व्यवस्था की स्थिति बदले। मैं कुछ उदाहरण आपके सामसे रखना चाहता हूं।

(श्री हरिमोहन शर्मा)

उदाहरण देना चाहूंगा 7-3-85 को हाड़ौती क्षेत्र में एक विधान सभाई क्षेत्र में विजय जुलूस निकाला गया। विजय जुलूस निकालने के बाद गांव डेडली में मथुरालाल नाम के आदमी, जो कांग्रेस का कार्यकर्ता था, के साथ कितने ही लोगों ने हथियारों से मारपीट की और उसका सिर फोड़ दिया। उसके सिर पर बहुत बड़ी चोट आई। यही नहीं, उसके बाद जब वह कार्यकर्ता सम्बन्धित थाने में रिपोर्ट कराने के लिए गया तो वहां पर स्थानीय विधायक महोदय बैठे थे। थानेदार कल्याणसिंह ने उसकी रिपोर्ट नहीं लिखी और उसको वहां से भगा दिया। एक ओर तो आप कानून और व्यवस्था की स्थिति बनाये रखने के लिए छोटी से छोटी बात के लिए बहुत कीमती समय इस विधान सभा में बरबाद करते हैं और दूसरी ओर स्थानीय विधायक साहब, जिनके सामने उस थानेदार ने मारपीट की घटना की अगर रिपोर्ट नहीं लिखी, चुपचाप बैठे रहे तो लगता है कि संरक्षण प्राप्त है।

एक माननीय सदस्य : यह तो आपके प्रशासन की कुशलता बता रहे हैं आप।

श्री यदुनाथसिंह : फलौदी में क्या हुआ फलौदी की बात भी बता दीजिये।

श्री हरिमोहन शर्मा : मैं माननीय सभापति महोदया से निवेदन कर रहा हूं।

(व्यवधान)

श्री सभापति : ऑर्डर, ऑर्डर प्लीज।

श्री हरिमोहन शर्मा : इसके बाद दूसरी घटना ग्राम धुनेद में हुई। 7-3-85 को वहां विजय जुलूस निकाला गया। एक अलानूर नाम के आदमी को जगह-जगह गण्डासे और कुल्हाड़ी से मारा। यही नहीं, सभापति महोदया, मैं उनसे जब कोटा अस्पताल में मिला, शर्म से चेहरा झुक जाता है, उस आदमी का एक पैर तलवार और गण्डासे से काटकर अलग कर दिया। यह विजय जुलूस का उन्माद रहा। उसके बाद क्योंकि वह राजनीतिक कार्यकर्ता मुसलमान था, इसलिए साम्प्रदायिक भावनायें फैलाकर सारी स्थिति बिगाड़ी; फिर लोगों के साथ ज्यादतियां हुई। इस तरह की बातें करने के लिए जो बहुत कीमती समय विधान सभा का है, जिस पर लाखों रुपया खर्च होता है उस विधान सभा का समय बिगाड़े जहां आदमी की टांग काट दी जाय, दूसरी टांग काटने के लिए डॉक्टर कहे कि दूसरी टांग काटी जायेगी इन सब बातों को क्षेत्रीय विधायक पैदा करें और फिर ढिंढोरा पीटें कि राजस्थान में कानून और व्यवस्था की स्थिति ठीक नहीं है तो मैं कहना चाहूंगा कि यह जिम्मा आपका और हमारा है कि कानून और व्यवस्था बनाये रखने में भी सहयोग दें। सरकार के पास कोई जादू का डण्डा नहीं है कि वह जादू का डण्डा घुमाये और कानून और व्यवस्था ठीक हो जाय। एक तरफ अराजकता पैदा करे, अराजकता पैदा करने के बाद प्रशासन और सरकार अगर कोई सख्ती करे तो दूसरी तरफ हम यहां आकर लोकतन्त्र के नाम पर उन ज्यादतियों को छिपाने के लिए बात करें तो इसका मतलब है कि इस पद पर चुनने के बाद और जीतने के बाद हमारी समाज में विशिष्ट स्थिति हो जाती है, हम उसका दुरुपयोग कर रहे हैं। मैं यह भी निवेदन

(श्री हरिमोहन शर्मा)
करना चाहूँगा, माननीय सभापति महोदया, हम सिद्धान्तों के आधार पर जीत कर आये हैं, एक नेता के आधार पर चुनकर आये हैं, हमने एक नेता माना, राजीव गांधी का नेतृत्व स्वीकार किया, हिन्दुस्तान की जनता ने उसको स्वीकार किया जबकि विपक्षी पार्टी के साथ न कोई आर्थिक मुद्दा है...

श्री यदुनाथसिंह : कहां से आ गये बीच में ?

श्री हरिमोहन शर्मा : आप मेहरबानी कीजिये, सभापति महोदया, मैं पहले ही नम्र निवेदन कर चुका हूँ, इसलिए प्रार्थना करता हूं।

कोई आपकी आर्थिक नीति नहीं है, आज सरकार की विफलताओं की बात करते हैं, आज हमारी नीतियां खराब हैं उसकी बात करते हैं। मैं समझता हूं रचनात्मक विरोध तो हो सकता है, विरोधी हमको यह सुझावें कि आपकी फलां आर्थिक नीति इन कारणों से गलत है, उससे हमें यह नुकसान हुआ है, उससे देश की प्रगति रुकी और उसकी एवज में दूसरी आर्थिक नीति, इस आर्थिक नीति पर चलने से देश का विकास होगा। लेकिन, माननीय सभापति महोदया, किसी भी विपक्षी सदस्य ने आज तक कोई भी ऐसी नीति हमें नहीं बताई जो विकल्प के रूप में प्रस्तुत की जा सके। इसके विपरीत सन् 1977 में जनता पार्टी का शासन आया और उस शासन में न कोई आर्थिक नीति थी, न कोई नई आर्थिक नीति दी गई बल्कि एक दायीं ओर झुकी हुई आर्थिक नीति थी। बायीं ओर झुकी हुई आर्थिक नीति नहीं थी, दायीं ओर झुकी हुई आर्थिक नीति थी। हमारा मानना यह है, हमारी पार्टी का मानना यह है कि दायीं ओर चलने वाली या बायीं ओर चलने वाली नीति ठीक है लेकिन मिश्रित अर्थ व्यवस्था वाली हमारी जो कांग्रेस की नीति है हम उस पर चल कर देश को आगे बढ़ाना चाहते हैं। माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में हमारी आर्थिक नीति परिलक्षित होती है बीस सूत्री कार्यक्रम के तहत। आपने पहले काम के बदले अनाज की योजना चलाई, आपको जो भण्डार मिला था, आपने बिना किसी योजना के उसको खर्च कर दिया और एक किलोमीटर मिट्टी डालने की बात नहीं की गई। आपको एक योजना बनानी थी कि यह सड़क कौनसे गांव से निकल कर कौनसा रास्ता तय करेगी, एक मास्टर प्लान होना चाहिये था आपके पास। लेकिन सन् 1977 में जिला स्तर पर कोई योजना नहीं थी। आपने गलत तरीके से पैसा खर्च किया और गलत तरीके से बिना योजनाबद्ध विकास किये हुए सरकारी खजाना, जो आपको पूर्ववर्ती सरकार ने दिया था, को लुटवाया। उसके ठीक विपरीत हमारे बीस सूत्री कार्यक्रम के तहत हमने जिला स्तर पर एक मास्टर प्लान दिया। उसमें यह दिया कि यह सड़क फलां गांव से निकल कर फलां गांव तक चलेगी। पहले दो किलोमीटर का एक टुकड़ा बनेगा, फिर चार किलोमीटर का बनेगा। अन्त में जाकर हम सड़क को यहां से वहां तक जोड़ेंगे। यह हमारा मास्टर प्लान है, यह हमारी योजना है जिसके तहत हमें सड़क निर्माण करना है। बीस सूत्री कार्यक्रम के तहत विभिन्न विभागों से बनने वाली सड़कों को पूल बनाकर योजनाबद्ध विकास की ओर हम बढ़ रहे हैं।

(श्री हरिमोहन शर्मा)

इसी प्रकार गरीब को छप्पर का सूत्र है। कभी सोचा था कि गांव में भूखे-नंगे भील को कोई मकान मिलेगा ? लेकिन साढ़े सत्रह सौ लागत का अनुदान देकर रहने के लिए गरीब को एक छप्पर देने की हमारे बीस सूत्री कार्यक्रम में जो योजना है उसकी हमने क्रियान्विति की।

इसी प्रकार बिजली का मामला है, आपका प्लानिंग था, सन् 1977 में आपने सस्ती लोकप्रियता हांसिल करने के लिए बेशुमार बिजली के कनेक्शन लोगों को दे दिये। आप बिजली के कनेक्शन देते ही गये।

(व्यवधान)

मेहरबानी कीजिये। यह कटु सत्य है, यह एक सही बात है। आपको विरोध करना है तो कीजिये जैसा कि अभी प्रोफेसर केदार ने किया।

(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य। ऑर्डर ऑर्डर।

श्री हरिमोहन शर्मा : आपने कनेक्शन तो दे दिये लेकिन आपने इसके लिये कोई योजना नहीं बनायी। उसका नतीजा यह हुआ कि लोगों को बिजली नहीं मिली आप आज यह भाषण दे रहे हैं कि किसानों को बिजली समय पर नहीं मिल रही है। तो आपको तो प्लानिंग के साथ काम करना चाहिये था, आपके पास प्लानिंग होना चाहिये था कि कितनी बिजली आप पैदा करेंगे, कितनी बिजली आप खपत करेंगे और आपके पास कितनी बिजली बैलेन्स में है, कितनी आपके पास बचेगी ? वह आपने तैयार नहीं किया और योजना की तरफ से आप आगे नहीं बढ़े उसका नतीजा जो हुआ उसकी सजा हमको भुगतनी पड़ रही है।

श्री शोपतसिंह : अब तो पांच साल हो रहे हैं पांच साल हो गये हैं अब।

(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य। माननीय सदस्य। ऑर्डर, ऑर्डर। अब आप संक्षेप में समाप्त करें। माननीय सदस्य। ऑर्डर, ऑर्डर।

श्री शोपतसिंह : पोल ही पोल डाल दिये पर तार कहीं भी नही खींचा।

(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य, आप अपनी बारी पर बोल चुके हैं दूसरों को बोलने दें। अब समाप्त करें, माननीय सदस्य।

श्री हरिमोहन शर्मा : तो सभापति महोदया; बिजली के कनेक्शन तो दे दिये गये पर बिजली पैदा जिस तरह से करनी चाहिये थी उस तरह से नहीं की गई। इसके विपरीत······

(व्यवधान)

श्री शोपतसिंह : आपको पांच साल हो गये हैं अब क्या बात है ?

श्री सभापति : माननीय सदस्य। ऑर्डर, ऑर्डर। माननीय सदस्य, आप अपनी बारी में बोले दूसरों को भी समय

(श्री सभापति)

देना है। ऑर्डर, ऑर्डर। माननीय सदस्य, Carry on संक्षेप में। अब समाप्त करें।

श्री हरिमोहन शर्मा : हां मैं संक्षेप में समाप्त करता हूं। सभापति महोदया, माननीय सदस्य दस मिनट के बदले 30 मिनट तक बोलें और दूसरों के बोलने पर आपत्ति करते हैं। मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं।.........

श्री सभापति : यह तो चेयर का लुक आउट है।

श्री हरिमोहन शर्मा : जनता पार्टी के शासन के बाद में तो इनकी सरकार ही नहीं बनी तो योजना क्या देते इसलिये यह कहना पड़ता है कि जनता पार्टी के शासन वाली बात उनकी कोई योजनाबद्ध विकास की नीति नहीं थी, उनकी कोई आर्थिक नीति ही नहीं थी। आर्थिक नीति की विफलता के कारण आज बिजली का संकट, सड़कों का संकट और दूसरे अन्य संकट हैं।

एक बात मैं और कहना चाहूँगा।

(व्यवधान)

आप तसल्ली करें।

श्री सभापति: ऑर्डर, ऑर्डर। माननीय सदस्य।

श्री हरिमोहन शर्मा : मैं जवाब देना चाहता हूँ आपकी बात का।

(व्यवधान)

श्री सभापति: ऑर्डर, ऑर्डर।

श्री हरिमोहन शर्मा : माननीय सभापति महोदया, काम के बदले अनाज का उदाहरण मैं आपके सामने प्रस्तुत करना चाहूँगा। सभापति महोदया, काम के बदले अनाज योजना में बैलगाड़ी का किराया देना पड़ता था उसके अन्दर पानी के ड्रम रखकर चलना पड़ता था। वास्तव में उसका किराया 30 रुपये था पर सरकार ने उसका किराया 15 या 16 रुपया रखा था तत्कालीन संबंधित मन्त्री जब नैनवा क्षेत्र में पधारे तो वहां पर सरपंच ने एक प्रश्न पैदा किया, मन्त्री महोदय, 15 रुपये में गाड़ी किराये पर नहीं मिलती है और 25 रुपये में गाड़ी किराये पर मिल रही है। तब मन्त्री महोदय ने जो जवाब दिया, मुझे बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि उन्होंने यह जवाब दिया, किसी प्रकार एडजस्टमेन्ट कर लीजिये। एक और आपने एडजस्टमेंट करने को कहा और दूसरी ओर आपने भ्रष्टाचार बढ़ाने का काम किया। तो इस प्रकार से कितना भ्रष्टाचार इस योजना में पनपा है।

एक बात मैं आपको और निवेदन करना चाहता हूँ।

(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य। ऑर्डर, ऑर्डर।

श्री शोपतसिंह : पांच साल तक क्या देखते ही रहे।

श्री हरिमोहन शर्मा : आपको तो ढाई साल मिले थे।

(व्यवधान)

श्री सभापति: ऑर्डर, ऑर्डर। माननीय सदस्य।

श्री हरिमोहन शर्मा : ढाई साल बाद तो हमने इन्तजार ही नहीं किया और कुर्सी पर आ गये ।

श्री सभापति : Please conclude. माननीय सदस्य, समाप्त करें ।

श्री हरिमोहन शर्मा : तो, सभापति महोदया, अन्त में मैं यह विनम्र शब्दों में निवेदन करना चाहता हूँ कि हमारे विकास के जो केन्द्र बिन्दु हैं गरीब लोग, दरिद्रनारायण, पिछड़ी जाति और अनुसूचित जाति के लोग, अल्पसंख्यक और सामान्य नागरिक हैं उनके उत्तरोत्तर उत्थान के लिये, उनकी उन्नति के लिये जो सरकार योजनाबद्ध तरीके से काम कर रही है जिसका उल्लेख हमारे राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में है और राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में जो कार्यक्रम हैं उनकी सफल क्रियान्विति के लिये मैं राजस्थान सरकार के मुख्य मन्त्री जी को और मन्त्री मण्डल के सदस्यों को और उन ईमानदार अधिकारियों को जिन्होंने 20 सूत्री कार्यक्रम की क्रियान्विति के लिए ईमानदारी से योगदान दिया ।

(व्यवधान)

श्री शौपतसिंह : आन ए पाइन्ट आफ इन्फारमेशन,

(व्यवधान)

श्री छोगाराम बकोलिया : There is no such provision for point of information.

श्री सभापति : आॅर्डर, आॅर्डर ।

श्री शोपतसिंह : आन ए पाइन्ट आॅफ इनफार्मेशन में एक बात पूछना चाहता हूं कि क्या पोल के साथ तार लगाना जरूरी नहीं होता है ? क्या योजना में पोल के साथ तार लगाना जरूरी होता है ? ...

(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य यह कोई इन्फार्मेशन नहीं है ।

आॅर्डर, आॅर्डर, आॅर्डर । माननीय सदस्य माननीय सदस्य, समाप्त करें ।

श्री हरिमोहन शर्मा : हमारे जो विकास के केन्द्र बिन्दु हैं मैं उन सभी लोगों को धन्यवाद देना चाहता हूं और यह निवेदन करना चाहता हूं कि अब इन सभी बातों को देखते हुए और इनको देखने के पश्चात् ऐसी कोई बात नहीं रह जाती है कि सर्वसम्मति से राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर आये धन्यवाद प्रस्ताव को पारित नहीं करें मैं चाहूंगा कि विपक्ष के माननीय सदस्य भी हठधर्मी का रास्ता छोड़कर सक्रिय सहयोग का रास्ता अपनायें और मेरा यह निवेदन है कि राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर जो धन्यवाद प्रस्ताव आया है उसको पारित किया जाय ।

धन्यवाद । जय हिन्द ।

श्री सभापति : माननीय श्री दाऊदयाल जोशी :

श्री दाऊदयाल जोशी (दीगोद) : माननीय सभापति महोदया, राज्यपाल महोदय विधान सभा के प्रारम्भ के दिन ठीक उसी प्रकार जबसे एक परम्परा चली आ रही थी, हम तो यह आशा लेकर बैठे थे कि नये प्रधान मंत्री नई परम्पराओं को जन्म देंगे लेकिन ठीक उसी प्रकार

(श्री दाऊदयाल जोशी)
राजाशाही के जमाने और अंग्रेजशाही के जमाने की पुनरावृत्ति ठीक कदम से कदम और ताल से ताल मिलाते हुए जहां केवल सरकारी अधिकारियों द्वारा निर्मित भाषण को केवल पढ़ा हुआ मान लिया जाय इतनी सी औपचारिकता करने मात्र राजस्थान की विधान सभा के इस सत्र में पधारें। मैं तो यह अपेक्षा करता था कि नौजवान देश के प्रधान मंत्री बने हैं इसलिये पुरानी परम्परायें टूटेंगी और अंग्रेजों के जमाने से आज जो यह करोड़ों रुपये हमारे हिन्दुस्तान की भूखी नंगी जनता के महामहिम राज्यपाल महोदय के नाम पर हिन्दुस्तान में बर्बाद हो रहे है, एक परम्परा बनती, एक नयी परम्परा बनती देश के अन्दर एक नयी चीज बनती कि राज्यपाल महोदय का पद हिन्दुस्तान की भूखी नंगी जनता के लिये, गरीब जनता के लिये है। यह बेकार है राज्यपाल महोदय का पद हमारी हिन्दुस्तान की भूखी नंगी जनता के लिये जहाँ पर लोगों के पास पहनने को कपड़ा नहीं वहां पर अरबों रुपया-करोड़ों रुपया राज्यपाल महोदय को सुशोभित करने के लिये और साल में एक बार चेयर के पास एक चेयर लगाकर केवल एक औपचारिकता निभाने के लिये कि इसको पढ़ा हुआ मान लिया जाये इतना सा ही कहने के लिये जिसे हमारे कांग्रेस के माननीय सदस्य कह रहे थे.महामहिम राज्यपाल महोदय ने बड़ी अनुकम्पा की मान्यवर, मेरा यह निवेदन है कि...

(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : मैं पूछना चाहता हूं आपके जनता पार्टी के शासनकाल में...

(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य, कृपया स्थान ग्रहण करें। कृपया शान्त रहें। ऑर्डर।

श्री दाऊदयाल जोशी : राज्यपाल महोदय ने युवा वर्ग के लोगों को नव चेतना का प्रतीक बताया। मैं अपने नौजवान दोस्तों को, माननीय सदस्यों को आपको पुनः निवेदन करना चाहता हूं कि आप राजस्थान के बेकारी के आंकड़ों को तो देखो। आज दुनिया के किसी भी राष्ट्र में जहां योजनायें चलती हों और वहां पर बेकारों की लाइन बढ़ती ही चली जा रही है। जहां हम आज सातवीं पंचवर्षीय योजना पर विचार करने जा रहे हैं अगर उसके बाद आठवीं योजना का कुछ साल बाद विचार करेंगे हमारे हिन्दुस्तान में बेकारों की संख्या को आप देखें। विधान सभा के पिछले सत्र में मेरे प्रश्न के जवाब में यह बताया गया था कि आज राजस्थान में जहां आबादी बढ़ रही है वहीं बेकारी की फौज भी दिन दूनी और रात चौगुनी बढ़ती जा रही है। आज पांच लाख 59 हजार और 654 नौ जवान हैं जिनके दोनों हाथ बेकार हैं। तो अब राज्यपाल महोदय को किस बात पर धन्यवाद देना चाहते है ? चार महीने से राजस्थान में टेक्नीकल लोग बेकार बैठे हैं और आज से चार साल पहले पोलीटेक्निक से निकलने वाले स्टुडेन्ट को तुरन्त नौकरी मिलती थी उनको आहूत किया जाता था कि तुमने पोलीटेक्निक कर ली है आओ आपके लिये नौकरी तैयार हैं लेकिन आज राजस्थान में

(श्री दाऊदयाल जोशी)

साढे सात सौ इन्जीनियर बेकार हैं। अभी आज से दो महीने पहले इन्टरव्यू था 50 लोगों के लिये। 50 लोगों के इन्टरव्यू थे उसमें भ्रष्टाचार पनपा। जोधपुर से एक विद्यार्थी ने जिसकी नियुक्ति हो चुकी थी अपने दोस्त को एक पत्र लिखा उसमें उसने लिखा कि अगर तुम नियुक्ति चाहते हो तो 15 हजार रुपये लेकर आ जाओ तुम्हें नौकरी मिल जायेगी। मैं अपने कांग्रेस के युवा सदस्यों को कहना चाहता हूं जो कि युवा पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं कि आज राजस्थान में यह हालत है, इसलिये मेरा निवेदन है कि ऐसे नौजवानों को कांग्रेस के अन्दर विद्रोह का झण्डा लेकर खड़े होना चाहिए, उसको निश्चित रूप से कांग्रेस के खिलाफ विद्रोह का झण्डा लेकर बगावत के लिए खड़े होना चाहिए जब तक शिक्षित बेरोजगार लोगों को बेरोजगारी भत्ता नहीं दिया जाये। यह फरेब है, असत्य है, यह धोखा है केवल स्नातक लोगों के लिए काम करने के लिए नई-नई योजनायें केवल धोखा है, चुनावी स्टंट है, चुनाव के समय आपने पच्चीस हजार लोगों को, अपने × × × को....

श्री जयकृष्ण तोसावड़ा : यह चिट्ठी भी सही है क्या ?

श्री सभापति : ऑर्डर प्लीज, माननीय सदस्य।

श्री दाऊदयाल जोशी : इस समस्या का हल नहीं होगा। अगर राजस्थान के मुख्य मंत्री नैतिक दायित्व समझते हैं अगर मेरे इन दो हाथों को काम देना चाहते हैं तो उनका नैतिक दायित्व है कि इस बजट सत्र के अन्दर जब बजट लेकर आयें तो वह घोषणा करें कि राजस्थान के नौजवानों को हम निश्चित रूप से बेरोजगारी भत्ता देगें या एक परिवार से एक व्यक्ति को काम देंगे। इस बात की गारण्टी के साथ अगर नया बजट आ रहा है तो हम समझेंगे कि राजस्थान के नये मंत्री ने नये बजट में राजस्थान के नौजवानों से, राजस्थान के नौजवानों की समस्या है उस समस्या का निराकरण किया है। महामहिम राज्यपाल महोदय ने, मैं कहना तो नहीं चाहता, लेकिन महिलाओं की बड़ी प्रशंसा की है। मैं बहनों को कहना नहीं चाहता हूँ माननीय सदस्याओं को एक ही घटना काफी है कि राजसाथ स्थान में पिछले साल मेरी मां और बहनों के 21 जगह बलात्कार हुये। 21 जगह में से 11 जगह पुलिस के थानों में बलात्कार हुआ। (शेम शेम) आप क्या आहूत करना चाहते हैं कि आज किस बात की प्रतीक है, आप कांग्रेस में बैठी हैं पुलिस के थानों पर बलात्कार हो, इलाज कराने के लिए डॉक्टर के पास जाये और डॉक्टर बलात्कार करे और आप कांग्रेस की बड़ी जोर से वाह-वाही कर रही हैं। कोटा की बात कहना चाहता हूँ। यह राजस्थान का औद्योगिक नगर है। कोटा की महानगरी में जो हादसा घटा ऐसा आज तक कोटा के इतिहास में, आपराधिक इतिहास में नहीं हुआ। कोटा अपराधियों की नगरी बन गयी है। गंगानगर भी कोई जमाने में था, वहां तो अब शान्ति है, लेकिन मेरा दुर्भाग्य है कि मेरा कोटा नगर अपराधियों

× × × शब्द माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार अपलोपित किया गया।

(128)

(श्री दाऊदयाल जोशी)

की नगरी की श्रेणियों में माना जाता है। राजस्थान पत्रिका ने अपने सम्पादकीय में उस घटना के लिए लिखा कि राजस्थान के इतिहास में औद्योगिक नगरी कोटा के अन्दर जो वीभत्स एवम् रोंगटे खड़े कर देने वाला हादसा घटा वह शर्मनाक है। एक नौजवान जो आर. एस. ई. बी. में फोर्थ क्लास की नौकरी करता था अपनी पत्नी को डेढ महीने पहले उत्तर प्रदेश से लेकर आया। यहां पत्नी ने बड़ा आग्रह किया, अच्छा पिक्चर है चलो देखें। पिक्चर हाल में बैठे चौथाई पिक्चर भी समाप्त नहीं हुई थी..........

श्री जयकृष्ण तोसावड़ा : आप भी गये थे ?

श्री दाऊदयाल जोशी : यह सारा जगत जानता है, श्रीमान्। आप टोकिये नहीं ××× दिल हो तो सुने। अगर दिल नहीं है तो चुपचाप बैठे रहिये। मैं निवेदन कर रहा हूँ सात गुण्डे वहां चाकू लेकर आये, यह औरत तुम्हारी नहीं है। उसने कहा कि मेरी पत्नी है। नहीं, नहीं खड़ी कर दो...

(व्यवधान)

पत्नी के साथ पांच खड़े रहे और बाकी के दो गुण्डे आर. एस. ई. बी. के कर्मचारी के पास खड़े हो गए।

एक माननीय सदस्य : ×××

श्री दाऊदयाल जोशी : ××× जो नागपुर में घटना हुई।

श्री सभापति : ऑर्डर प्लीज, माननीय सदस्य।

श्री जयकृष्ण तोसावड़ा : माननीय सभापति महोदया, पाइन्ट ऑफ ऑर्डर।

श्री शोपतसिंह : उन गुण्डों का लीडर कांग्रेस का कार्यकर्ता पाया गया।

श्री सभापति : ऑर्डर प्लीज। कृपया स्थान ग्रहण करें। पाइंट ऑफ ऑर्डर है।

श्री जयकृष्ण तोसावड़ा : माननीय सभापति महोदया, मेरा पाइंट ऑफ ऑर्डर यह था कि ××× यह असंसदीय शब्द है...

श्री सभापति: यह एक्सपंज किया जाए।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : मेरा भी पाइंट ऑफ ऑर्डर है।

श्री शोपतसिंह : आपके लिए भी खुशी का अवसर नहीं है कि आप हंसे।

श्री सभापति : बैठे-बैठे बात नहीं करें।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : माननीय सभापति महोदया, सदन के अन्दर बैठने की व्यवस्था समान होनी चाहिये। दूर से आने वाले माननीय सदस्य की बैंच में स्प्रिंग लगा हुआ है इसको निकालिये; यह बार बार खड़े हो जाते हैं।

श्री सभापति : ऑर्डर प्लीज। कृपया स्थान ग्रहण करें।

श्री दाऊदयाल जोशी : उस दिन महिला के साथ क्या हादसा हुआ...

×××अभिव्यक्ति माननीय अध्यक्ष/सभापति के आदेशानुसार अपलोपित की गई।

श्री जयकृष्ण तोसावड़ा : माननीय सभापति महोदया, माननीय सदस्य जो बात कह रहे हैं वह सदन के बाहर कहें कि स्प्रिंग लगा हुआ है या क्या लगा हुआ है यह तो मैं बाद में बताऊंगा ?

श्री सभापति : आर्डर प्लीज । सदन का समय खराब नहीं करें ।

श्री शोपतसिंह : बहुत गम्भीर मसला है ।

श्री दाऊदयाल जोशी : उस नवयुवती के साथ, षोडशी के साथ सिनेमा हाल के बाहर ले जाकर पति के पास दो चाकू वालों को छोड़कर पांच और दो सात व्यक्तियों ने क्रमशः 10 बजे से लेकर 12 बजे तक व्यभिचार किया ।

दूदू से आये हुए माननीय सदस्य आप बैठे हैं जरा शर्म करो ।

श्री जयकृष्ण तोसावड़ा : आप उस समय क्या कर रहे थे ?

श्री सभापति : आर्डर प्लीज । माननीय सदस्य स्थान ग्रहण करें ।

श्री दाऊदयाल जोशी : ऐसी घटना सदन के अन्दर नहीं आये तो किस बात के लिये यहां आये हो ?

श्री सभापति : ऑर्डर प्लीज माननीय सदस्य । मुझे माननीय सदस्यों से निवेदन करना है कि आपको एक-एक बैग दिया गया है उस बैग में कुछ किताबें हैं । मेहरबानी करके सभी उसका अध्ययन कर लें तो आसन को सहूलियत होगी । धन्यवाद । चेअर को एड्रेस करके बोलें माननीय सदस्य ।

श्री दाऊदयाल जोशी : सभापति महोदय, उसके बाद उन गुण्डों ने सिनेमा की समाप्ति के पहले चाकू की नोंक पर पति को लाकर पत्नी सम्भलाई, ले जाओ चुपचाप, मार डालेंगे, चाकू यहीं घोंप देंगे । एक स्कूटर किराये से करवाया और उसके बाद पीछे से और दूसरा स्कूटर लगाया । वह गरीब बोला नहीं, लेकिन उस गरीब की भी सुनने के लिए कोई बैठा था उसका एक बॉस पुलिस में नौकरी करता था उसने अपील की आखिरकार वहां सुनवाई हुई, लेकिन इतना बड़ा हादसा, सात व्यक्तियों के द्वारा व्यभिचार करना मैं समझता हूं राजस्थान के इतिहास में यह पहला उदाहरण है । सभापति महोदया, तिलहन दुगना, दलहन तिगनी का बखान इस पुस्तिका में किया गया है । माननीय सभापति महोदया, क्या हुआ, राजस्थान के हर सदस्य, जो सरसों पैदा होती है दिल पर हाथ रखकर देखें क्या हुआ सरसों का, उसे कौनसा रोग लग गया था उसका आपने कोई इलाज करवाया मेरे कोटा जिले में पहली बार किसान के साथ, इन योजनाओं के नाम पर जिनका बखान हमारे बूंदी से आये माननीय सदस्य कर रहे थे, बड़ी दमदार योजनायें हैं जरा बताइये तो माननीय सदस्य आपके एरिया में कितना चावल होता है, चावल की बढ़ोतरी हो गई ? जितना राजस्थान में पांच साल पहले चावल होता था । वह घटते-घटते आज नीचे आ रही है । कोटा जिले में, बूंदी जिले में चावल की पैदावार घटी । कोटा जिले में जो चावल की खेती पिछले आठ साल से वहां के गरीब काश्तकारों ने नहीं की, जिसके पहले करने के कारण उसका

(श्री दाऊदयाल जोशी)
थोड़ा सा स्तर ऊपर उठने लगा था। आज चावल के बाद उस गरीब ने सोचा कि तिल्ली की फसल उपजायें, मेरी कुछ इनकम बढ़ेगी उपज बढ़ेगी, क्या हुआ तिल्ली को किसान रोता रहा उसको उचित दाम नहीं मिला वह एकदम भागा, किसी विशेषज्ञ ने कहा कि तिल्ली नहीं सरसों बोओ, उस गरीब ने सरसों बोई, सरसों को कीड़ा लगा, वह बराबर चिल्लाता रहा मेरी सरसों जा रही है कोई उपचार करो, शासनकर्ताओं में आपसे पूछना चाहता हूं कि आपके हवाई जहाज हैं, दवा छिड़कने वाले छोटे-छोटे प्लेन डेकोटा हैं, उसका उपयोग किसलिये होता है यह कहां लगा रखे है ? क्या मुख्य मंत्री एक जगह से दूसरी जगह चुनाव प्रचार के लिए जाय इनमें और वहां पर जाने के बाद मानसिंह जैसे व्यक्ति की हत्या करवा दें इस के लिए इन वायुयानों का उपयोग किया जाता है, इन वायुयानों का उपयोग किया जाना था जब मेरे गो जिले का किसान······

श्रीमती हमीदा बेगम : माननीय सभापति महोदया, हमारे माननीय सदस्य की किसान के आंसू पोंछने की इतनी तमन्ना हो रही है, लेकिन 1977 में उन किसानों के साथ आपने क्या किया, उसके लिए आप क्या कहना चाहते हैं ?

श्री सभापति : आर्डर प्लीज अपनी बारी का इन्तजार करें ।

श्री दाऊदयाल जोशी : बेगम साहिबा मेरे खुद की खेती है। आप क्या जानें ?

श्रीमती हमीदा बेगम : उस समय किसान के आंसू किसने पोंछे थे ? जब हमारा किसान उपज मण्डी के अन्दर गन्नों की होली जला रहा था ।

श्री सभापति : आप अपनी बारी में बोलें । दूसरों को डिस्टर्ब न करें, प्लीज ।

श्री दाऊदयाल जोशी : आप किसानों के बारे में कुछ जानती नहीं आपको जो काम दिया है वही करो, याद है न आपको।

श्री सभापति : चेयर को एड्रेस करके बोलें ।

श्री दाऊदयाल जोशी : बेगम साहिबा आप शान्त रहें। कोटा में गरीब किसानों की सरसों को मोल रोग लग गया जो राजस्थान में सरसों के अन्दर पहली बार लगा। मैं पूछना चाहता हूं कि माननीय एग्रीकल्चर मिनिस्टर साहब अभी बने नहीं हैं, शायद मुख्य मन्त्री के पास यह विभाग हो, यह मोल रोग बीमारी जब पहली बार लगी उसका क्या उपचार किया गया बड़े जोरों से बखान किया जा रहा है कि हम सिंचाई में इतना आगे बढ़ गये। इस मामले में इतना आगे बढ़ गये हैं, क्या हुआ ? बूंदी से आये माननीय सदस्य बड़े जोरों से कह रहे थे, योजनायें कहां हैं ? सी. ए. डी. का प्रोग्राम है कहां है वह काश्तकारों का प्रोग्राम था अफसरशाही के कारण उस प्रोग्राम का सत्यानाश कर दिया और आज कोटा जिले का किसान बुरी तरह से सी.ए.डी. प्रोग्राम के नष्ट होने की वजह से परेशान हो रहा है, उसकी खेती बर्बाद हो रही है। इस किताब में कहा गया है कि इस साल हम कृषि के नाम पर बाड़ बन्दी करेंगे क्या होगा बाड़ बन्दी से

(श्री दाऊदयाल जोशी)

बाड़ बन्दी का मतलब यह है कि तिल्ली के किसान को आप पानी पहुंचायेंगे। पानी के बीच में जो सीपेज वाटर होगा सारा पानी चम्बल की कैनाल बहती है उसके पैरेलल दोनों साइड पर गड्ढे बने हुये हैं पानी का कोई उपयोग नहीं होता है। आपका यह प्रोग्राम किसान तक किस प्रकार पहुंचेगा आपके पास इसका कोई प्रोग्राम नहीं है, नीति नहीं है मैं निवेदन करना चाहता हूं कि इस सी. ए. डी. प्रोग्राम के नाम पर करोड़ों रुपया हाड़ौती के किसान के नाम पर कर्ज मांड दिया और आज उसको वसूल किया जा रहा है बैंकों के माध्यम से डण्डे के बल पर। कोई नहीं देगा। मैं शासन को चेतावनी दे देना चाहता हूँ कि जिस दिन यह शासन के पदाधिकारी, शासनकर्ता कोटा में सी. ए. डी. की वसूली के लिए किसानों पर कुर्की करके वसूल करेंगे वहां पर निश्चित रूप से कानून के पालनकर्ताओं में अभी से चेतावनी देना चाहता हूं कि वहां पर खून खराबा होगा। गरीब काश्तकार एक पाई नहीं देगा तुमको, क्योंकि गरीब काश्तकार की सी. ए. डी. के माध्यम से कैशमेंन्ट प्रोग्राम के आधार पर किसी प्रकार का कोई विकास कहीं दीख नहीं रहा। कैशमेन्ट प्रोग्राम को लागू होने के बाद वहां का किसान दबा हुआ है, बर्बाद हुआ है और करोड़ों रुपया गरीब काश्तकार के नाम उसके मत्थे मंड दिया और ऐसी स्थिति में आप यह कहें कि बड़ा विकास हो रहा है। क्या हुआ जनता की आलोचना करने वाले लोगों से मैं पूछना चाहता हूं कि चम्बल विकास योजना के तहत और लिफ्ट इरिगेशन के माध्यम से जो हमने योजनायें बनाई थीं उनका क्या हुआ? वह कौन से बंद बक्से के अन्दर, खामोशी के बक्से के अन्दर बन्द पड़ी हुई है? लिफ्ट योजनाओं के लिए, चम्बल मेरी वरदायिनी चम्बल है जिसके लिए मेरे भरतपुर के माननीय सदस्य कह रहे थे कि चम्बल लिफ्ट करके हमको पानी दो। ऐसी वरदायिनी चम्बल मां उस पर भी आप अपनी कोई योजना नहीं दे सके और यहां सदन में आकर बड़ जोर से शोर कर रहे हैं, मुझे आश्चर्य है इसके कारण कुछ नहीं होगा।

सीलिंग की बात बड़े जोरों से की जा रही है। सीलिंग के तहत आपने जमीन को अवाप्त कर ली। यहां बहुत लोग हैं जिनकी जमीन अवाप्त की। जैसे हमारे मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य के पिता जी की जमीन अवाप्त की गयी। मैं इनसे पूछना चाहता हूं कि भाई साहब आपके पिता जी को इस सरकार ने मुआवजा दे दिया क्या? जमीन पर कब्जा कर लिया आज से आठ साल पहले और कब्जा करने के बाद वह जमीन बेच दी बाजार भाव से। उस गरीब को कोई जमीन की राहत देंगे। गरीब काश्तकार को बड़े पैसे वाले की जमीन देते तो कोई हम समझते कि आपने बड़ा क्रांतिकारी कदम उठाया है। उस पैसे वाले की जमीन को यह कहकर कि तू पैसे वाला कहां से सीलिंग होगा जमीन का? कोई क्रांतिकारी कदम है। नौजवान साथियों मैं तुमको आह्वान करना चाहता हूं कि अगर तुम में कुछ क्रांतिकारी कदम हैं तो गांव के व्यक्ति पर जब सीलिंग लागू है तो शहरी सीलिंग क्यों नहीं लागू करवाना चाहते हैं? करो न हिम्मत? उस समय तो बड़े-बड़े धन्ना

(श्री दाऊदयाल जोशी)
सेठों का पैसा उस पर सीलिंग नहीं आयेगा। सीलिंग आयेगी गरीब काश्तकारों पर। गरीब काश्तकार पर इसलिए आयेगी कि गरीब काश्तकारों के पास पानी नहीं है और गरीब काश्तकार की बात बोलने वाले कितने हैं पाँच या दस। इसलिए गरीब काश्तकार मरे तो मरे। उसकी चिन्ता काहे की।...

सदन की कार्यवाही
विधान सभा की बैठक के
निर्धारित समय में वृद्धि

श्री बुलाकीदास कल्ला : सभापति महोदया, मैं निवेदन करता हूं कि सदन का समय एक घंटे के लिए बढ़ाया जाये।

श्री नत्थीसिंह : सभापति महोदया, इतने सदस्य हैं हमारी पार्टी के और एक ही सदस्य को मौका मिला है और उस दिन तय किया था आपके पार्लियामेन्ट्री अफेयर्स मिनिस्टर ने कि दो घंटे का समय बढ़ाया जायेगा। या तो फिर कल का सारा दिन इसके लिए रखें। काम नहीं चलेगा।

श्री बुलाकीदास कल्ला : सभापति महोदया, हमारे दल को 9 घंटे का समय दिया गया था उसमें से करीब यह समझिये कि चार या साढ़े चार घंटे भी पूरे नहीं हुये हैं एक घंटे का बढ़ा देते हैं फिर अध्यक्ष की राय से और सदन की राय से और बढ़ जायेगा।

श्री भंवरलाल शर्मा : हमारा संशोधन है कि दो घंटा किया जाये इसको।

श्री बुलाकीदास कल्ला : अभी एक घंटे का समय बढ़ा दिया जाय।

श्री भंवरलाल शर्मा : नहीं, हमारा संशोधन है कि दो घंटे के लिए बढ़ाया जाय।

श्री नत्थीसिंह : हां दो घंटे ही बढ़ाया जाय और कल का सारा दिन दिया जाय।

श्री भंवरलाल शर्मा : माननीय सभापति महोदया, मेरा यह प्रस्ताव है कि इसको दो घंटे बढ़ाया जाये। मत ले लीजिए उस पर।

श्री सभापति : माननीय सदस्य मैं समझता हूं कि सदन का समय एक घंटा बढ़ा दिया जाय।

(स्वीकृत)

(सदन का समय एक घंटे के लिए बढ़ाया गया)।

श्री शोपत सिंह : We have already taken decision in Business committee.

धन्यवाद प्रस्ताव पर वाद-विवाद

श्री दाऊदयाल जोशी : माननीय सभापति महोदया, मैं आपके माध्यम से सरकार से निवेदन करना चाहता हूं कि जिन लोगों की जमीन इस सरकार ने अवाप्त की है उस अवाप्त जमीन के मुआवजे की रकम जो सरकार वसूल कर चुकी है और अमानत में खयानत कर रही है उस जमीन का पैसा तुरन्त उनको दिया जाय।

मैं कहना चाहता हूं कि बिजली की बात इसमें की है। माननीय राजस्थान के मुख्य मंत्री महोदय ने 6 थर्मल पावर स्टेशन लगाने की 60-60 मेगावाट

(श्री दाऊदयाल जोशी)

के, जहां भी गये, राजस्थान के जिस कौने में गये लोगों ने कहा बिजली, बिजली नहीं बिजली घर। बिजली घर भी कितने का 60 मेगावाट का। क्या हुआ 60 मेगावाट के बिजली घरों का? आप गोबर गैस प्लान्ट ला रहे हैं। 532 गोबर गैस प्लान्ट कोटा जिले में लगाये। 3 गोबर गैस प्लान्ट चल रहे हैं 532 में से। इस बायो गैस के आधार पर आप राजस्थान का कल्याण करने जायगे।

श्रीमती उजला अरोड़ा (जयपुर ग्रामीण): सभापति महोदया, मेरा एक व्यवस्था का प्रश्न है। 295 के तहत कहना चाहूंगी कि जयपुर में गणगौर का मेला निकलने वाला है अभी और सारी मशीनरी से मैंने व्यवस्था की कोशिश की है, लेकिन कोई पानी की व्यवस्था नहीं की जा रही है। इतने लोगों की सुविधा का सवाल है और गांवों से लोग आते हैं। हमारा प्रसिद्ध मेला है। सभापति महोदया, सरकार यहां बैठी है और मेले में वहां अव्यवस्था फैल रही है। कोई महकमे का आदमी काम करने के लिए तैयार नहीं है। उनके दवादव टेलीफोन आ रहे हैं। मैंने महकमे से बात की लेकिन कोई पानी भिजवाने के लिए तैयार नहीं। इसकी व्यवस्था शीघ्र कराई जाय। आप इनको ताड़ना दीजिए। यह जयपुर का सबसे प्रसिद्ध मेला है; राजस्थान का प्रसिद्ध मेला है, गणगौर का मेला।

श्री सभापति: ऑर्डर; ऑर्डर

श्री दाऊदयाल जोशी: सभापति महोदया......

श्री सभापति: क्या इसकी व्यवस्था सरकार द्वारा की जाती रही है?

श्रीमती उजला अरोड़ा: हां बराबर की जाती रही है। दमकल विभाग की पानी की गाड़ियां पानी पहुंचाती हैं हर मेले में पहुंचाती हैं, ताजियों में पहुंचाती हैं, गणगौर में पहुंचाती हैं और आज इन्होंने सारी व्यवस्था सत्यानाश करके रख दी।

श्री सभापति: माननीय मंत्री महोदय।

श्रीमती उजला अरोड़ा: दो-दो मंत्री बैठे हैं कोई बात ही नहीं सुनता है।

श्री सभापति: ऑर्डर, ऑर्डर प्लीज।

श्रीमती उजला अरोड़ा: इनको व्यवस्था के बारे में आज्ञा दीजिए।

श्री सभापति: माननीय सदस्या निवेदन कर रही थी कि गणगौर के मेले में हमेशा पानी की व्यवस्था की जाती है। इस बार पानी की व्यवस्था गड़बड़ा रही है और सरकार से यह निवेदन करना चाहती है कि उनके पास कई टेलीफोन आ चुके हैं नियमानुसार कार्यवाही की जाय।

ऑर्डर ऑर्डर

श्री रामपाल उपाध्याय (सहकारिता मंत्री): सभापति महोदया, आपका और माननीय सदस्या का आदेश शिरोधार्य है। सरकार व्यवस्था करेगी।

श्रीमती उजला अरोड़ा: नगर परिषद की ओर से की जाती है। जल्दी कराइये।

श्री सभापति: ऑर्डर प्लीज माननीय सदस्या। माननीय सदस्य जल्दी समाप्त करें। ....ऑर्डर प्लीज

श्री दाऊदयाल जोशी : राजस्थान में कांग्रेस (आई) के माननीय सदस्यों से निवेदन करना चाहता हूं कि रेल बजट आया..........

श्री सभापति : कनक्लयूड करें माननीय सदस्य संक्षेप में।

श्री दाऊदयाल जोशी : राजस्थान के मुख्य मंत्री शिवचरण जी माथुर ने घोषणा की थी कि राजस्थान में कोटा-चित्तौड़ रेल लाइन बनेगी.........

श्रीमती उजला अरोड़ा : मंत्री महोदय यहीं बैठे बैठे आदेश दे रहे हैं। किसी को कुछ कहा नहीं। आपके यहां बैठे रहने से व्यवस्था नहीं होगी। आपके आश्वासन से पानी नहीं पहुँच जायेगा। आप उठकर नगर परिषद् वालों को आदेश दें कि जल्दी पानी पहुँचायें।

(व्यवधान)

श्री सभापति : ऑर्डर प्लीज माननीय सदस्य।

एक माननीय सदस्य : माननीय सभापति महोदया, माननीय सदस्य को बोलते हुए आधा घन्टा हो गया।

श्री दाऊदयाल जोशी : राजस्थान के शिक्षा मंत्री श्री रामपाल जी उपाध्याय से पूछना चाहता हूं कि आपके एरिया में जो रेल लाइन बनने वाली है कोटा-चित्तौड रेल्वे लाइन उसके कारण राजस्थान में सात सीमेंन्ट के बड़े-बड़े प्लान्ट लगने वाले थे क्या हुआ उन सीमेन्ट के प्लान्ट का ? 5 साल तक आप राजस्थान की जनता को झांसा देते रहे। आपके मुख्य मंत्री झांसा देते रहे। क्या हुआ कोटा के मैडीकल कॉलेज का ? क्या हुआ कोटा के पोलीटैक्नीक कॉलेज का ? क्या हुआ झालावाड़ के आई.टी.आई. कॉलेज का ? यह पिछले पांच साल कांग्रेस के सिर्फ झांसे के साल रहे हैं और अंत में एक ही बात मैं निवेदन करके मैं अपने भाषण को समाप्त करता हूं कि सम्माननीय शिक्षा मंत्री जी रामपाल जी उपाध्याय से निवेदन करना चाहता हूं कि आप संस्कृतज्ञ हैं......

श्री रामपाल उपाध्याय : नहीं आप रामपाल उपाध्याय से नहीं सरकार से कहें।

श्री दाऊदयाल जोशी : ....आप ब्राह्मण भी हैं। आपसे कहना चाहता हूं कि राजस्थान में संस्कृत अध्यापकों की बहुत बुरी दुर्दशा है। उनके वेतनमान में विसंगतियां हैं। बजट आपकी सरकार ला रही है आज ही रात को मुझे पता लगा है कि बजट पर आपकी ओपीनियन ली जाने वाली है। मैं आपसे आग्रह करता हूं कि इसी बजट में आप संस्कृत अध्यापकों के वेतनमान की विसंगतियों को समाप्त करके संस्कृत का सम्मान करेंगे तो मैं मानूंगा कि राजस्थान में एक शिक्षा मंत्री बना है.........

(5.00 म.प.)

जिसने उन गरीब अध्यापकों का, संस्कृत अध्यापकों का सम्मान किया है। इसी बात के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

श्री सभापति : श्री अश्क अली।

(अनुपस्थित)

श्रीमती नीलिमा शर्मा।

(व्यवधान)

श्रीमती नीलिमा शर्मा (भिनाय) : माननीय सभापति महोदया, राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर माननीय सी.पी. जोशी ने जो धन्यवाद प्रस्ताव रखा है उसके समर्थन में मैं खड़ी हुई हूं। माननीय सभापति महोदया, आज अभी हमने देखा कि बीस-सूत्री-कार्यक्रम को लेकर काफी जोर-शोर से विरोधी पक्ष बोल रहे थे। माननीय सदस्य मेरे से सभी एक्सपीरियेन्सड हैं। उन लोगों के लिये मैं एक वाक्य बोलना चाहती हूं, एक कोटेशन देना चाहती हूं :

"There should not be blind opposition to the progress, but opposition to blind progress."

श्री अब्दुल अजीज : हिन्दी भी कर दीजिये। हमें पता चलता रहे।

(व्यवधान)

श्रीमती नीलिमा शर्मा : माननीय सदस्य, जब आप उर्दू में बोलते हैं, तो मैं आपसे यह प्रश्न नहीं करती हूं।

श्री सभापति : ऑर्डर प्लीज। ऑर्डर।

श्री अब्दुल अजीज : सभापति महोदया, उर्दू-हिन्दी की बात नहीं है, अंग्रेजी का अनुवाद करना अनिवार्य है।

श्री सभापति : ऑर्डर। माननीय सदस्य। ऑर्डर प्लीज। Please carry on Continue.

श्रीमती नीलिमा शर्मा : ऑर्डर। माननीय सभापति महोदया जिस तरह से आपने अभी कहा था, मैडम स्पीच बहुत स्वीट और शोर्ट होनी चाहिये उसी के अनुरूप में बोलूंगी और आपको यह बताना चाहूंगी कि बीस-सूत्री-कार्यक्रम से विकास तो होता ही है, विकास होगा, कोई क्षेत्र पीछे नहीं जाता, आगे ही बढ़ता है यह हमारी सिविलाइजेशन कहती है। लेकिन हमें यह देखना है कि जो विकास हो रहा है वह सही दिशा में हो रहा है या नहीं हो रहा है। माननीय सभापति महोदया, मैं जिस क्षेत्र से आ रही हूं, अजमेर जिले का भिनाय क्षेत्र, वह बहुत ही पिछड़ा हुआ है। मेरे से पहले जो वक्ता कह गये हैं, खासतौर से महिला वक्ता जो हैं वे कह गई हैं महिलाओं के बारे में। मैं आपके सामने ग्रामीण महिलाओं के बारे में कुछ अर्ज करना चाहूंगी। माननीय सभापति महोदया, हमारी जो ग्रामीण स्वरोजगार की जो योजना है जिसके बारे में जो माननीय राज्यपाल महोदय ने कहा, अपने अभिभाषण में उसके सम्बन्ध में बाद में कहूंगी अभी मैं इतना ही कहूंगी कि कहीं भी ग्रामीण महिलाओं के रोजगार के बारे में जिक्र नहीं है। उनके कुछ दुख-दर्द मैं आपके सामने पेश करना चाहूंगी। आंकड़े मैं नहीं बनाती क्योंकि यहां पर जो जन प्रतिनिधि बैठे हैं, वह सब आज से 1½ महीने पहले एक-एक घर में, एक-एक गांव में, एक-एक गली में समस्यायें देखकर आये हैं, इसलिये आंकड़े शांति नहीं दे सकते। माननीय सभापति महोदया, जैसा मैं आपको अर्ज कर चुकी हूं कि हमारा ग्रामीण इलाका बहुत ही पिछड़ा हुआ इलाका है, अकालग्रस्त इलाका है, गिरदावरी गलत समय पर हुई इसलिये उसको समय पर अकाल ग्रस्त घोषित नहीं किया गया समस्या उनके सामने है, परिवार के

(श्रीमती नीलिमा शर्मा)

जो पुरुष हैं वे बाहर कमाने के लिये गये हैं। जो महिलायें हैं, जो कि पर्दा नशीन महिलायें हैं या वे महिलायें जो कुछ सामाजिक बन्धनों के कारण बाहर कमाने नहीं जाती हैं, उनकी घर गृहस्थी में बहुत बुरी हालत है। माननीय सभापति महोदया, मैं आपके माध्यम से यह कहना चाहूंगी कि कुछ ऐसी को-ऑपरेटिवज सहकारी समितियां बनाई जायें जिसके द्वारा ग्रामीण महिलायें ऊंची उठ सकें। पापड़, बड़ी, गोटा आदि का काम मोमबत्ती वगैरह बनाने की योजनायें हैं यह बहुत ही सफल हो सकती हैं। आपके माध्यम से मैं यह भी कहना चाहूंगी कि सरकार को शत-प्रतिशत अनुदान होना चाहिये क्योंकि ग्रामीण जनता बहुत गरीब है, बहुत भोली है।

माननीय सभापति महोदया, मेरी दूसरी बात होगी हमारी ग्रामीण महिलायें जो अपने स्वास्थ्य के कारण दुःख झेल रही हैं। माननीय सभापति महोदया, पिछड़ा इलाका होने की वजह से हमारे यहां कोई ट्रांसपोर्टेशन के साधन नहीं हैं। 10-10 किलो मीटर तक कोई डिस्पेन्सरी आदि नहीं है। परिवार नियोजन तो हो जाते हैं लेकिन उसके बाद जो समस्यायें आती हैं उनको दिखाने कहां जाय? अगर पास में कोई डिस्पेन्सरी है तो वहां कम्पाउण्डर होता है, कोई नर्स नहीं होती। जैसा आप सब जानते हैं ग्रामीण महिलायें हैं वह बहुत ही लज्जाशील होती हैं। वह अपनी समस्यायें पुरुष कम्पाउण्डर को बता नहीं सकती। माननीय सभापति महोदया, मैं आपके माध्यम से कहना चाहूंगी कि हमें फर्स्ट एड ट्रेनिंग सैन्टर खोलने चाहियें, और गांवों में खोलने चाहियें। उनमें महिलाओं को नर्सिंग ट्रेनिंग देनी चाहिये ताकि कुछ समस्यायें तो आपस में सलाह मशविरा करके ठीक कर सकें। यह दूसरी बात है, यह जल्दी खुल जायेंगे या नहीं। यह तो मैं नहीं कह सकती लेकिन मेरा एक सुझाव है कि हर दस पंचायत या पांच पंचायतों के बीच में एक जनाना अस्पताल होना बहुत जरूरी है क्योंकि जिस घर की महिला बीमार है, उस घर का विकास नहीं हो सकता। आप यकीन मानिये यहां आप अपने कितने भी सुझाव रखें और कितने भी प्रस्ताव पास हो जायं लेकिन अभी घर की महिला बीमार है तो उस घर का विकास नहीं होगा 10 घरों का विकास नहीं होगा, तो 10 गांवों का विकास नहीं होगा।

माननीय सभापति महोदया, आगे मैं अपनी बात सिंचाई के ऊपर लेकर आना चाहती हूँ मैं बहुत ही छोटा कर रही हूं क्योंकि मुझे पता है कि बहुत लोग आतुर हैं अपनी बात कहने के लिये।

श्री अब्दुल अजीज : नहीं, कहिये आप।

श्रीमती नीलिमा शर्मा : नहीं, जी अब तो आप सुनते ही रहेंगे।

सिंचाई के बारे में आप जानते हैं कि हमारा भारत देश डवलपिंग कन्ट्री है, डवलप्ड कन्ट्री नहीं है, डवलपिंग कन्ट्री है। पैसे का अभाव हरदम रहा ही है यह तो हमारा विरोध पक्ष अच्छी तरह से जानता है, 1977 उसका परिणाम है यह, मैं आपको बताना चाहती हूँ। सिंचाई के लिये बड़ी-बड़ी नहरों की मांग नहीं करती मैं पेयजल के बारे में अगर हां हो जाय तो बहुत अच्छा है बरसात आने वाली है, यह बरसात

(श्रीमती नीलिमा शर्मा)

हमारे लिये वरदान साबित हो सकती है यह हमारे क्षेत्र में छोटे-छोटे एनीकट बना दियें जायें और छोटे-छोटे बांध बना दिये जायें उनमें पानी जो इकट्ठा होगा वह सिंचाई के ही काम नहीं आयेगा बल्कि हमारे कुओं का जल स्तर भी बढ़ेगा जिससे थोड़ी बहुत हमको राहत भी मिलेगी।

माननीय सभापति महोदया, शिक्षा के बारे में मैं, माननीय ललित भाटी जी के सारे सुझाव, जो उन्होंने दिये है समर्थन करती हूं जब तक वैल्यू ओरियेन्टेड एजूकेशन नहीं होगी तब तक किसी भी तरह की शिक्षा पद्धति हमारे लिये अच्छी साबित नहीं हो सकती। जहां तक नयी शिक्षा पद्धति का सवाल है उसमें तो आखिर कुछ समय लगे लेकिन जो गांव में विद्यालय हैं जहां बच्चे पढ़ते हैं, उनकी हालात बहुत ही खराब है यहां हालत ऐसी है कि श्रमदान से विद्यालय बनाते हैं लोग श्रमदान करते हैं, एक कमरा यदि टूटा हुआ है तो पट्टियां वगैरह डलवा देते हैं लोग, पट्टियां कभी भी गिर सकती हैं इसकी नैतिक जिम्मेदारी हम सब सदस्यों पर है किसी एक सदस्य या एक पार्टी पर नहीं है क्योंकि हम सभी जन प्रतिनिधि हैं। जब हमारा विरोध पक्ष बोलता है यहां जो सत्ता पक्ष के लोग हैं उनके ऊपर सारी बातें डाल दी जाती हैं।

शांति व्यवस्था को लीजियें कानून को भी लीजिये।

माननीय सभापति महोदया, पिछले इलेक्शन के उन्होंने बहुत सारे एक्जाम्पल दिये जब मेरा इलेक्शन हुआ यह मेरा एक पहला अनुभव था उनके बीच में जाने का उनसे बात करने का। यही विरोध पक्ष जो शांति और अखण्डता की इतनी बात करता है उन्होने वहां जातिवाद को लेकर, खासतौर से स्वर्गीय राजा मानसिंह जी की मृत्यु को लेकर इतना बड़ा बबाल उठाया था कि उस वक्त कई लोगों की जानें भी जा सकती थीं। जब यह लोग एक स्पीच देते है, माननीय सदस्य, यहां नहीं बाहिर भी, तो क्या यह सोच सकते हैं कि एक खूनी कहानी अभी खत्म नहीं हुई और उसकी जगह तीन खूनी कहानियां और शुरू हो सकती हैं। अखण्डता और शांति कायम रखने के लिये सत्ता कोई फायर बिग्रेड नहीं होती है ठीक हैं कि यहां पर आग लगी हैं उसको बुझा दिया जाय। आग के क्या कारण है उसको भी देखा जाता है? अगर विरोधी पक्ष हमारी इस बात में सहयोग नहीं देगा तो यकीन मानिये कि आगे तो बढ़ती ही जाती है, कभी घटती नहीं हैं। माननीय सभापति महोदया की माननीय माथुर साहब की योजना है जो मास्टर प्लान बना है वह ठीक है लेकिन मेरा उसके लिए एक सुझाव है, वह यह है कि हमारा ग्रामीण सड़क मांगता है। एक ग्रेवल रोड तो बन जाती है उसमें मुश्किल यह होती है कि एक बारिश के बाद उस पर चलना मुश्किल हो जाता है जबकि पैसा उतना ही लगता है अच्छी बात तो यह है कि वह डामर रोड ही बने और गांवों को मण्डियों तक जोड़ा जाय क्योंकि गांवों का विकास मण्डियों पर निर्भर है। मेरा एक निवेदन है………

(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : आप यदि जरा जोर से बोलें तो मुझे कुछ सुनाई भी दे।

(व्यवधान)

श्रीमती नीलिमा शर्मा : जी

श्री सभापति : ऑर्डर, ऑर्डर, । माननीय सदस्या आप कन्टीन्यू करें ।

(व्यवधान)

श्रीमती नीलिमा शर्मा : धीरे-धीरे सब सीख जाऊंगी, आप बोलते रहिये ।

(व्यवधान)

माननीय सभापति महोदया, इसके साथ जो डेयरी विकास योजना है, उसके बारे में कहना चाहूंगी । महिला डेयरी शुरू की जाय, ऐसी डेयरी को-ऑपरेटिव शुरू की जायें जिसे महिलायें सम्भालें । ऐसे आज गुजरात में डेयरी को-ऑपरेटर्स काफी सफल हो रहे हैं ।

मैं आशा करती हूं कि मेरे ये सुझाव पसन्द आयेंगे ।

इसके साथ ही मैं सब सम्मानीय सदस्यों को धन्यवाद देती हूं कि इतनी देर तक उन्होंने सुना । जो कमेन्ट्स हैं, वह मुझे बाहर भी दें तो अच्छा है ताकि अगली स्पीच जरा बैटर हो ।

Thank you.

श्री सभापति : श्री मुलतानाराम ।

(अनुपस्थित)

श्री अर्जुनसिंह ।

एक माननीय सदस्य : क्यों साहब, आज की सूची में हमारा नाम नहीं है क्या ?

एक माननीय सदस्य : माननीय सभापति महोदया, इधर से केवल एक नम्बर और उधर से दो-दो नम्बर आये हैं ।

(व्यवधान)

श्री सभापति : यह निर्दलीय सदस्य हैं ।

श्री जयकृष्ण तोसावड़ा (दूदू) : सभापति महोदया, मेरा चौथा नम्बर था । उसी लिस्ट में था ।

श्री सभापति : आप अपने मुख्य सचेतक जी से पूछिये ।

श्री जयकृष्ण तोसावड़ा : उस लिस्ट में है या नहीं, जो आपके पास है ? सभापति महोदया, मेरा नाम है कि नहीं, मैं यह जानना चाहता हूं ।

(व्यवधान)

मेरा नाम नहीं है तो मैं चला जाऊं ।

श्री सभापति : आपका नम्बर नहीं आ रहा है । Sorry. माननीय सदस्य । आप अपने मुख्य सचेतक महोदय से पूछ लें ।

श्री जयकृष्ण तोसावड़ा : मेरा नाम जयकिशन तोसावड़ा है, मैं यह पूछना चाहता हूं कि मेरा नाम है या नहीं ।

श्री सभापति : आप अपने सचेतक महोदय के अ_ बातें करें । Sorry माननीय सदस्य । मैंने कहा न कि आप मुख्य सचेतक महोदय से बात करें ।

श्री अर्जुनसिंह देवड़ा ।

श्री अर्जुनसिंह (रानीवाड़ा) : सभापति महोदया, महामहिम राज्यपाल महोदय

(श्री अर्जुनसिंह)

ने अपने अभिभाषण में जो राजस्थान के विकास के बारे में बात कही है और जो बात बताई है, उस सम्बन्ध में मैं तो यही कहूंगा कि राज्यपाल महोदय ने सरकार के हित को देखने, सरकार को प्रोत्साहन देने के साथ-साथ, सरकार की तरफदारी ही की है।

श्री राज्यपाल महोदय ने राजस्थान के डेयरी विकास के बारे में बताया है कि राजस्थान में सात डेयरियां चल रही हैं। मुझे बड़े दुख के साथ कहना पड़ता है कि राजस्थान में जो हमारे यहां रानीवाड़ा डेयरी लगी हुई है, उसमें वह सबसे आधुनिक प्लान्ट लगा हुआ है; उसकी खपत करीब 1॥ लाख लीटर है। वह डेयरी करीब 1॥ साल से बन्द पड़ी हुई है। हमारे यहां पर जो किसान भाई हैं, उनका खेती के साथ-साथ पशु पालन भी मुख्य धन्धा रहा है। पशु-पालन के हिसाब से हम बहुत धनी है। जो डेयरी करीब डेढ़ साल से बन्द पड़ी है, उस पर राज्य सरकार ने अभी तक कोई विचार नहीं किया है, वहां के सब कर्मचारी बेकार बैठे हुए हैं। मैं सदन को और आपके माध्यम से सरकार को यह अवगत कराता हूं जैसे कई ऐसी मिलें हैं जो सही ढंग से नहीं चल पाती हैं, तो राज्य सरकार अपने अधीन लेकर उनको चलाती है, तो मेरा अनुरोध यही है राज्य सरकार से कि वह डेयरी काफी बड़ी है, उसको भी अपने अधीन लेकर चलाये तो दूध के उत्पादन में हम काफी सहयोग प्रदान कर सकेंगे और जो उत्पादन अभी हो रहा है, उसको काफी बढ़ा सकेंगे। साथ ही हमारे यहां के किसानों की जो समस्या है विद्युत के बारे में, मैं यह अवगत कराता हूं हमारे यहां करीब 10 सालों में किसानों ने अपने खेतों पर नये नये कुए खोदे हैं उससे सिंचाई कर पैदावार में काफी वृद्धि की है। हमारे यहां पर जो विद्युत कनेक्शन दिये गये हैं वे बहुत कम मात्रा में दिए गए हैं। उनको समय पर बिजली नहीं मिलने के कारण पम्प सेट्स लगाने पड़े हैं। उन पम्पिंग सेट्स के कारण तेल का जो खर्चा है, वह आज काफी बढ़ा हुआ है। तेल के खर्च को देखते हुए जो उत्पादन होता है, उसमें काफी खर्चा आ जाता है, उत्पादन काश्तकार के लिए काफी महंगा पड़ता है और इस महंगाई के जमाने में अपने उत्पादित माल को बेचने से जो मिलता है वह बहुत कम मिलता है। मैं इस ओर सदन का ध्यान आकर्षित करता हूं कि अगर हमारे यहां पर 132 के. वी. का स्टेशन लगा दिया जाय तो हमारे यहां के किसानों की काफी समस्या हल हो सकती है। जो अभी किसान खेती में प्रगति कर रहा है, नए नए कुए खोदे हैं, इनको विद्युत कनेक्शन दे दिया जाए तो काफी विकास होगा और राजस्थान के किसानों को आज जो खेती के लिए काफी पिछड़ा माना जाता है, हम खेती के विकास के लिए उन्हें काफी सहायता प्रदान कर सकते हैं।

इसके साथ शिक्षा के बारे में निवेदन करूंगा, हमारे यहां जसवन्तपुरा में एक शिक्षक ट्रेनिंग स्कूल था जो करीब दस साल से बन्द कर दिया गया है। उसके बारे में मेरा यही निवेदन है, हमारे यहां के गरीब छात्र हैं, वह बाहर जाकर अपनी ट्रेनिंग पूरी नहीं कर सकते हैं। पहले ट्रेनिंग वहीं से लिया करते थे लेकिन अभी

(श्री अर्जुनसिंह)

राज्य सरकार ने माउन्ट आबू में वह संस्था खोल दी है। वहां जाना हरेक व्यक्ति के लिए महंगा पड़ता है। आर्थिक स्थिति के कारण लोग वहां जा नहीं सकते हैं। इसके साथ ही हमारे यहां भरतपुर और धौलपुर से जो अध्यापक आते हैं वे करीब एक-डेढ़ साल रह कर वापिस चले जाते हैं। उनके जाने के साथ ही प्राइमरी स्कूल करीब-करीब बन्द हो जाते हैं। उसका मुख्य कारण यही है, क्योंकि हमारे यहां के लड़कों को ट्रेनिंग नहीं मिल पाती हैं। आज उनकी आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं है कि दूर जाकर ट्रेनिंग पा लें और हमारे यहां वे शिक्षा के विकास में सहायता प्रदान कर सकें। यह नहीं होता है इसलिए जो ट्रेनिंग स्कूल बन्द किया गया है, उसे चालू करें तो वह जालौर डिस्ट्रिक्ट के लिए ही नहीं बल्कि सारे पश्चिमी राजस्थान के लिए काफी सहायक सिद्ध हो सकती है। उस पर राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में ध्यान नहीं दिया गया है। मेरा निवेदन है कि इस सम्बन्ध में भी ध्यान दिलावें।

यातायात के सम्बन्ध में तो मुझे यही कहना है, हांलाकि राजस्थान के सभी विधायक यही कहते हैं कि हमारा इलाका काफी पिछड़ा हुआ है और दूसरे भी कहते है कि हमारा इलाका पिछड़ा हुआ है लेकिन मैं यही कहता हूं 20 सालों में जो यातायात के साधन थे आज भी उसी ढंग में हैं जिन पर किसान अपनी बैलगाड़ी को सही ढंग से नहीं चला पाते हैं। वे अपना उत्पादित माल कृषि उपज मण्डी की तरफ ले जाते हैं तो उनके बैल भी लंगड़े हो जाते हैं। उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया गया है। राज्यपाल महोदय ने यातायात और सड़क के बारे में कहा है कि हमने इतनी सड़कें बनाई और विकास के लिए काफी काम किया है। लेकिन जहां तक मेरे क्षेत्र की बात है, आज भी हमारे जसवन्तपुरा, जो सन् 1947 के पूर्व एक तहसील थी, की आज भी वही हालत है जो पहले थी।

मेरा इसी के साथ-साथ निवेदन है जो हमारे किसान भाई हैं, उनको उन्नत किस्म का जो बीज राज्य सरकार से मिलता है वह समय पर नहीं मिल पाता है। उसके लिए हमें हमेशा गुजरात सरकार की शरण लेनी पड़ती है। हमें अच्छी पैदावार के लिए अच्छे बीज की जरूरत होती है किन्तु वह हमें राजस्थान सरकार से प्राप्त नहीं होता है इसलिए गुजरात स्टेट में लेने जाना पड़ता है और वहां पर हमें दुगनी, तिगुनी कीमत देनी पड़ती है। आज कृषि का उत्पादन सब चाहते हैं लेकिन उन्नत किस्म का बीज जो हम राजस्थान में भी उत्पन्न कर सकते है उसके बारे में राज्यपाल महोदय ने और राजस्थान सरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया है। मैं चाहता हूं अगर वास्तव में राजस्थान का विकास करना चाहते हैं तो हमें राजस्थान में अच्छी किस्म के बीज सरकारी माध्यम से प्राप्त होने चाहिए। बीज बिल्कुल सही समय पर प्राप्त हो तो काफी अच्छी खेती करके पैदावार बढ़ा सकते हैं।

चिकित्सा सुविधा के लिए हमारे यहां जो पी.एस.सी. हैं वह करीब-करीब डाक्टर के अभाव से बन्द ही पड़े रहते हैं। राजस्थान रूरल डवलपमेंट की तरफ से हमारे यहां पर एक मिनी ऑपरेशन थियेटर और एक छोटा सा वार्ड आज से करीब चार साल पहले बनाया था लेकिन मुझे दुःख के साथ कहना पड़ता है कि उसमें कोई सामग्री

(श्री अर्जुन सिंह)

नहीं है। चिकित्सा सुविधा के लिए गरीब से गरीब आदमी को पड़ौसी राज्य गुजरात राज्य की तरफ ही देखना पड़ता है। क्योंकि प्राइमरी हैल्थ सेन्टर खुला हुआ है लेकिन उससे सुविधा नहीं है. डॉक्टर नहीं है, दूसरा स्टाफ नहीं है। हमें और हमारी जनता को पड़ौसी प्रदेश गुजरात में ही जाना पड़ता है जिसमें खर्चा ज्यादा आता है। जब राजस्थान सरकार चिकित्सा पर इतना खर्चा करती है और नए-नए सेंटर इस साल भी खोलेगी तो चिकित्सा मन्त्री जी से अनुरोध करूंगा कि नए-नए सेन्टर खोलने के साथ-साथ में जो पुराने सेन्टर हैं जिनमें स्टाफ की नियुक्ति नहीं हुई है वहां पर स्टाफ लगायें ताकि जो गरीब काश्तकार हमारे पड़ौसी राज्य गुजरात में जाते हैं, वह नहीं जायं, यही मेरा निवेदन है।

धन्यवाद !

श्री सभापति : श्री जयकृष्ण तोसावड़ा।

एक माननीय सदस्य : ताली की जरूरत ही नहीं है।

श्री जयकृष्ण तोसावड़ा : माननीय सभापति महोदय, एक ही बात है। आप पहले पढ़ो।

श्री सभापति : ऑर्डर प्लीज।

श्री जयकृष्ण तोसावड़ा : बुधवार, तारीख 20 मार्च को माननीय राज्यपाल महोदय ने जो हमारे यहां पर अभिभाषण प्रस्तुत किया। उसके अन्दर हमारी सरकार की ओर से कई प्रकार की योजनाएं जो निर्धारित की गयी हैं उन योजनाओं को कई विपक्षी माननीय सदस्य सही परिप्रेक्ष्य नहीं समझ कर केवल मात्र विरोध प्रकट करते रहें। इसके साथ ही मेरा यह निवेदन है कि उन्होंने जो विरोध प्रकट किया वह तथ्य से परे हट कर के किया है। मेरा निवेदन इसके तहत यह है कि माननीय सदस्य, जिनको कि जनता ने चुनकर के यहां भेजा है। के साथ हमको भी चुनकर के भेजा है। यदि माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण के तहत कोई नवीनतम योजनाएं या नवीनतम कोई प्रस्ताव हमारे समक्ष रखते हैं तो हमारी कांग्रेस सरकार, जिसके प्रधान मंत्री माननीय राजीव गांधी हैं, स्वर्गीया प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी थीं, इस देश को प्रगति की ओर ले जाने की कोशिश की है और आज हमारा देश प्रगति की ओर अग्रसर है। यही नहीं, विश्व के अन्दर डवलपमेंन्ट की दृष्टि से हमारा देश छठे स्थान पर आने की कोशिश कर रहा है।

मेरा निवेदन यह है कि माननीय सदस्य यदि एक देश की भावना को लेकर, विकास की लहर को अपने हृदय से ग्रहण करते हुए ऐसे सुझाव दें कि हमारी सरकार को तो कई प्रकार के विकास की कई प्रकार की योजनाएं हमारे देश और प्रान्त के अन्दर पैदा हो सकती हैं लेकिन इस सदन का माहौल जो मैंने देखा गत 5–7 रोज से माननीय विरोधी पार्टी के सदस्य केवल मात्र आपस में लड़ाई, झगड़ा और छींटाकशी की भावना लेकर इस सदन का माहौल खराब करते जा रहे हैं। इसके लिए मुझे बड़ा दुःख है, बड़ा ही एक आश्चर्य पैदा हो रहा है कि माननीय सदस्य, जो बड़े बुजुर्ग

(श्री जयकृष्ण तोसावड़ा)

हैं, कई बार जीतकर इस सदन में आ गये, उनका भाषा के ऊपर कन्ट्रोल नहीं है, उनका विचारों के ऊपर नियंत्रण नहीं है, पता नहीं किस प्रकार की अन्तर्गल, अन्य प्रकार की बातें एक प्रकार से वे बोल जाते हैं। मेरा निवेदन यह है माननीय सदस्यों से····

एक माननीय सदस्य : माननीय सदस्य, सदस्यों के ऊपर बोलने का कष्ट न करें प्रस्ताव के समर्थन में बोलने को, कहा है।

श्री जयकृष्ण तोसावड़ा : यदि प्रान्त की भावनाओं को लेकर, देश की भावनाओं को लेकर, हमारे प्रत्येक घर की स्थिति को लेकर, हमारे प्रत्येक गरीब, अच्छे किसान और मजदूर की भावनाओं को लेकर यदि इस सदन में अपने विचार रखतें तो मैं उन माननीय सदस्यों को धन्यवाद देता वह हमारी कई प्रकार की योजनाओं में अपना सहभाग, अपना सहयोग देने की कोशिश करें।

मेरा निवेदन यह है कि माननीय राज्यपाल महोदय के भाषण में, अभिभाषण के अन्दर कई प्रकार की सामाजिक, राजनैतिक, कानून-व्यवस्था ये बातें हमारे सामने रखी गई हैं। हमारी सरकार कई प्रकार से, कई प्रकार की अपनी योजनाएं जोड़कर कई प्रकार की अपनी भावनाएं जोड़कर; कई प्रकार के अपने कार्यक्रम जोड़कर हमारे इस प्रान्त की जो साधारण जनता है, गरीब जनता है उसको विकसित करने की ओर अग्रसर हैं। मेरा निवेदन यह है, माननीय सभापति महोदय, आपके माध्यम से मैं सरकार से एक निवेदन यह कर देना चाहता हूँ कि जिस प्रकार की योजनाएं गत वर्षों में हमारे प्रान्त के अन्दर पैदा की हैं उनके साथ ही साथ यदि और भी विकसित करने के लिए विभिन्न प्रकार की योजनाएं जोड़ी जायं तो हमारा यह प्रान्त बहुत ज्यादा विकास की ओर अग्रसर हो सकता है।

मेरा निवेदन है है, जैसे सिंचाई के साधन हमारे इस प्रान्त के अन्दर हैं। यदि सिंचाई के साधनों को आगे की ओर बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रकार की सिंचाई योजनाएं हमारे प्रान्त के अन्दर गठित हो सकती हैं। साधारण किसान खेत में अन्न तो बो देता है लेकिन केवल मात्र वर्षा के ऊपर हमारे यहां की जनता निर्भर रहती है। माननीय मुख्य मंत्री से मेरा निवेदन है माननीय सभापति महोदय के द्वारा कि इस प्रान्त की हर तहसील के अन्दर, हर विधान सभा क्षेत्र के अन्दर इस प्रकार की योजना सिंचाई के साधनों की बनायें हमेशा-हमेशा के लिए ताकि तालाब और बन्धे भरे रहें। इस प्रकार की योजना भी इस प्रदेश में है। जैसे राजस्थान नहर, अब उसका नाम परिवर्तित करने के पश्चात् इन्दिरा गांधी नहर के नाम से वह नहर प्रसिद्ध है। यदि उसकी योजना और विकसित रूप से बना दी जायें, अलग-अलग कैनाल उसके अन्दर से निकाल करके जहां पर सूखे की व्यवस्था है, जहां पर पानी की व्यवस्था नहीं है, जहां पर बरसात के कारण किसान केवल मात्र आसमान की ओर देखा करता है वहां पानी पहुंचाने की योजना बना दी जाय तो हमारी साधारण जनता को कई प्रकार का लाभ हो सकता है।

साथ ही साथ मेरा निवेदन यह है कि हमारे देश के अन्दर, हमारे प्रान्त के अन्दर, कई प्रकार के उद्योग धन्धे बड़े विकसित

(श्री जयकृष्ण तोसावड़ा)

हैं। मेरा निवेदन यह भी है हमारी सरकार से, माननीय सभापति महोदय, आपके माध्यम से कि राजस्थान प्रान्त के अन्दर एक कमेटी बनायी जाय और उस कमेटी के द्वारा पूरे प्रान्त का एक सर्वेक्षण कराया जाय। सर्वेक्षण करने के पश्चात् कहां पर कच्चा माल मिल सकता है, कहां पर पानी उपलब्ध हो सकता है और किस स्थान के ऊपर मजदूरों की अधिक संख्या हो वहां किसी बड़े भारी उद्योगपति को बुलाकर या सरकार की मदद करके या केन्द्रीय सरकार से मदद लेकर के विभिन्न प्रकार के उद्योग योजना के तहत चालू करें। जहां पर आसानी से कच्चा माल मिल सकता है, पानी की व्यवस्था सही हो सकती है वहां पर कारखाने खोल दिए जायें अभी-अभी माननीय सदस्य कुछ कह रहे थे माननीय सदस्या भी कह रही थी कि मेरे निर्वाचन क्षेत्र के अन्दर जो मजदूर मर्द हैं वह दूसरे प्रान्त में जाकर अपना जीवनयापन कर रहे हैं और उनकी औरतें किसी प्रकार का साधन उपलब्ध न होने के कारणवश, कोई उद्योग धन्धा वहां न होने के कारण वहां बेकारी की समस्या को भोग रही हैं, तो मेरा निवेदन यह है कि योजना बनाकर हमारे यहां पर बड़े-बड़े कारखाने, बड़े-बड़े उद्योग धन्धे खोल दिये जायें और आसपास के क्षेत्र के मजदूरों को उनमें व्यवस्थित कर दिये जायें, तो गरीबी और बेकारी की जो समस्या हमारे प्रान्त में है वह मिट सकती है।

साथ ही साथ मेरा निवेदन यह भी है कि अकाल की स्थिति राजस्थान के अन्दर बड़ी भयंकर रहती है हर वर्ष। हमारा देश कृषि प्रधान देश है, उसके साथ ही साथ हमारा राजस्थान उससे भी ज्यादा खेती प्रधान प्रदेश है। इसके अन्दर रेगिस्तान की समस्या बड़ी भयंकर है। एक माननीय सदस्य ने क्वेश्चन ऑवर के अन्दर एक क्वेश्चन भी किया था कि कैसे इस रेगिस्तान को दूर किया जाय, कैसे उसको विकसित किया जाय, इसका माननीय मुख्य मंत्री महोदय ने उत्तर भी दिया था कि केन्द्रीय योजना है, राजस्थान की योजना नहीं हो सकती इसलिए जब तक केन्द्रीय सरकार कोई विशेष योजना बनाकर इस रेगिस्तान को दूर नहीं करेगी तब तक हमारे प्रान्त के अन्दर इसी प्रकार की समस्या बनी रहेगी। मेरा, माननीय सभापति महोदया, आपके माध्यम से मेरी सरकार से निवेदन है कि इस प्रकार की योजना भी छोटे-छोटे रूप में बनायें। रेगिस्तान के अन्दर छोटे-छोटे उद्योग धन्धे न होने के कारणवश वहां का व्यक्ति कहीं भेड़ चराने जाता है, कहीं गाय चराने जाता है। जो इधर करौली साइड के अन्दर मवेशी लेकर जाते हैं कहीं कहीं तो ऐसी स्थिति हो जाती है कि वहां के जो डाकू क्षेत्र हैं उसके अन्दर हमारे मवेशी चराने वाले व्यक्तियों को मार दिया जाता है, उनके मवेशी छीन लिये जाते हैं, उनके साथ बड़ी भारी ज्यादती की जाती है। इसलिए मेरा यह निवेदन है माननीय सरकार से कि यदि पशुधन को विकसित करने के लिए, उस रेगिस्तान का लेवलिंग करते हुए वहां पर चरागाहों की व्यवस्था कर दी जावे तो मवेशी जो यहां से वहां जाते हैं उसका फायदा होगा वहां की जनता को, लेकिन वहां की जनता फायदा उठाने की स्थिति में नहीं है दूसरे प्रान्त के लोग उससे

(श्री जयकृष्ण तोसावड़ा)

फायदा उठाना चाहते हैं वह बड़ा भारी हमारे लिए नुकसानदायक है। इसलिए मैं मेरी सरकार से निवेदन करूंगा, माननीय सभापति महोदय, आपके द्वारा कि चरागाहों का विकास करने के साथ ही साथ रेगिस्तान को मिटाने की यदि कोशिश सरकार करे तो वास्तव में पशुधन हमारे लिए बहुत ज्यादा उपयोगी और लाभदायक बन सकता है।

अकाल की समस्या बड़ी भारी है। हमारे राजस्थान में कही एक फसल पैदा होती है, कहीं दो फसल पैदा होती हैं। मेरा निवेदन है, यदि सिंचाई के साधन विभिन्न प्रकार से हमारे यहां विकसित कर दिये जावें तो हमारे राजस्थान की मिट्टी के बारे में तो मैं कम बता सकता हूँ लेकिन मैं दो तीन तहसीलों के बारे में यह बता सकता हूं, जैसे चाकसू तहसील है, फागी तहसील है, दूदू तहसील है, किशनगढ़ तहसील है, फुलेरा तहसील है, इन तहसीलों की मिट्टी दोमट मिट्टी होने के कारण उसके अन्दर गंगानगर की मिट्टी के बराबर रस है। यह इसलिए कह रहा हूं कि जब मैं सन् 1972 से 77 में इसी सदन का मेम्बर था फागी क्षेत्र से, मैंने वहां पर सर्वेक्षण करवाया था। मिट्टी का सर्वे भी करवाया था, पानी का सर्वेक्षण भी करवाया था। इस सारे सर्वेक्षण की कई फाइलें पड़ी हुई हैं। कहीं एक करोड़ की योजना की फाइलें, कहीं दो करोड़ योजना की फाइल है। तो मेरा निवेदन यह है, माननीय सभापति महोदय, आपके माध्यम से मेरी सरकार से और माननीय मुख्य मंत्री से भी मेरा विशेष रूप से निवेदन है कि यदि योजना के तहत उस मिट्टी को सही रूप में सही समय पर यदि पानी पिला दिया जावे साधन दे दिये जावें, बिजली-पानी की व्यवस्था कर दी जावे हमारी सरकार के द्वारा तो गंगानगर को राजस्थान के अन्दर विकसित प्रान्त माना जाता है, मैं आपसे दावे के साथ कह देना चाहता हूं कि राजस्थान के अन्दर गंगानगर की मिट्टी केवल मात्र चार फसलें दे सकती हैं लेकिन हर समय जैसी भी फसल पैदा होनी चाहिये, जो-जो भी फसल हमारे किसान लेना चाहते हैं इन तीनों-चारों तहसीलों की मिट्टी; जो कि यहां की दोमट मिट्टी है, के अन्दर हम आसानी से वह पैदावार दे सकते हैं। इसलिए, मान्यवर, मेरी सरकार से मेरा निवेदन है कि इस प्रकार की योजनायें हमारे इन क्षेत्रों के लिए बना दी जावे तो यहां का किसान, यहां का मजदूर, यहां का व्यापारी, यहां का जो मवेशी चराने वाला व्यक्ति किसी प्रकार से बेकारी या भूखमरी से नहीं मर सकता है। उसके सामने समस्या नहीं आ सकती।

दूसरा मेरा निवेदन और है, जैसे अकाल तो पूर्ण रूप से मिटाने की कल्पना नहीं की जा सकती क्योंकि हर समय वर्षा के ऊपर निर्भर है हमारा प्रान्त अकाल की विभीषिका को दूर करने के लिए सिंचाई के साधन, व्यापार के साधन, खेती के साधन, कारखानों के साधन, की व्यवस्था कर दी जावे। अकाल तो गिरता और पड़ता है, इसमें कोई दो राय नहीं है। यह ईश्वर की देन है अकाल को रोकना ईश्वर के हाथ है। वर्षा को वह खुद रोकता भी है, वर्षा करता भी है। अनावृष्टि और अतिवृष्टि

(श्री जयकृष्ण तोसावड़ा)

दोनों ही से अकाल गिरता है देश के अन्दर और प्रदेश के अन्दर। अनावृष्टि भी भगवान के हाथ है और अतिवृष्टि भी भगवान के हाथ है। मेरा निवेदन यह है हमारी सरकार से, यदि राज्य सरकार उस चीज को नहीं रोक सके तो केन्द्र सरकार से निवेदन करे अतिवृष्टि से होने वाले नुकसान को रोकने के लिए। अतिवृष्टि से पानी का बहाव बड़ा तेज आता है, हमारे किसानों के जो खेत हैं, जो लहलहाती खेती है उसको नष्ट करते हुए पानी बह कर नदियों में चला जाता है। यदि उस पानी के बहाव को रोकने के लिए योजना बना दी जावे तो अतिवृष्टि से जो अकाल पड़ता है वह रुक सकता है। जो उर्वरा शक्ति जमीन की होती है वह अधिक पानी के बहाव से नष्ट हो जाती है। उदाहरण के रूप में मैं आपसे निवेदन कर देना चाहता हूं जैसे दूदू क्षेत्र के अन्दर एक बिचूण गांव है। बिचूण गांव के पश्चिमी साइड में एक पहाड़ है जिसको भराणा का पहाड़ पुकारा जाता है। माननीय सभापति महोदय, एक उदाहरण के रूप में बताया है, ऐसे उदाहरण तो हमारे प्रान्त में बहुत से मिलेंगे। उदाहरण स्वरूप मेरा निवेदन यह है कि बिचूण के पीछे पश्चिमी साइड, कस्बे से दूर बिल्कुल सटा हुआ वह पहाड़ है जिसको भराणा के नाम से पुकारा जाता है, उसके दोनों किनारे, दक्षिण साइड में और उत्तर साइड के अन्दर बड़े भारी दो नाले निकलते हैं। जब बरसात बड़ी तेज होती है उन नालों का बहाव इतना बड़ा तेज बन जाता है कि सामने रास्ते में आने वाले किसान के खेत को नष्ट कर देता है। लगातार कई वर्षों से उन सारे खेतों को नष्ट वह बड़े दो नाले करते हैं। इसलिए मेरा निवेदन है कि कोई योजना बना कर यदि उस पहाड़ के दोनों नालों को रोक दिया जावे क्योंकि जो कस्बा बगरू है, महला यहां से कुछ दूर है, 18 मील की दूरी है, वहां तक के किसानों के खेतों को बड़ा भारी नुकसान पहुँचा देता है। माननीय सभापति महोदय, मेरा निवेदन है कि उसका कई बार सर्वे भी हो चुका है किन्तु जो हमारी मशीनरी है, बांध को बांधने की मशीनरी है उसमें ढिलाई आने के कारणवश उस योजना को विफल कर दिया जाता है। उसके लिये जो पैसा मंजूर होता है उसको लैप्स कर दिया जाता है। ऐसे उदाहरण राजस्थान में कई है। यदि इन नालों को बन्द कर दिया जावे तो पानी भरा रहेगा। भरे हुए पानी से आस-पास के किसानों के कुओं के अन्दर पानी की व्यवस्था हो जावेगी जिससे पीने के पानी की दिक्कत हमारे सामने नहीं आएगी। कुओं के अन्दर पानी यदि बना रहेगा तो किसानों के छोटे-छोटे खेत जिनके पास कुओं की व्यवस्था है, की सिचाई करके पैदावार कर सकते हैं, अपना पेट पालने के लिए रोजी-रोटी कमा सकते हैं। इसलिए मेरा निवेदन है कि इस प्रकार की योजनाओं को लेप्स न किया जावे। तुरन्त सर्वे करवा करें इस प्रकार के कई पहाड़ी किनारे जो हैं, बरसात के कारण जहां से पानी निकल कर साधारण किसानों के खेतों को बर्बाद कर देते हैं, हर साल बर्बाद करते हैं, हर साल आठ महीने, सर्दी और गर्मी के अन्दर यह व्यवस्था करते हैं उनको मिटाया

(श्री जयकृष्ण तोसावड़ा)

जा सकता है। इसलिए मेरा निवेदन है कि जहां-जहां भी इस प्रकार की दिक्कतें हैं उनको मिटाने की कोशिश हर जगह यदि हमारी सरकार करें तो आसानी से हमारे इस प्रान्त की जनता के सामने जो दिक्कतें हैं वह मिट सकती हैं।

(समय-समाप्ति-सूचक-घण्टी)

इसके साथ ही मेरा यह भी निवेदन है कि गरीबों की गरीबी मिटाने के लिए, बेरोजगारों को रोजगार देने के लिए योजनायें बना दी जावें। आज हमारे कई नवयुवक व्यक्ति शिक्षा तो प्राप्त कर लेते हैं लेकिन जैसे ही वह कॉलेज और यूनिवर्सिटी से बाहर निकलते हैं उनके समक्ष बड़ी भारी दिक्कत यह आती है कि रोजी-रोटी कहां से कमायेंगे ? क्या खायेंगे ? साथ ही यह हमारा हिन्दुस्तान इससे खुद तो परेशान हैं ही लेकिन बाल विवाह की बड़ी भारी बीमारी होने के कारणवश, कई बच्चे और बच्चियों की बचपन में शादी उनके माता-पिता कर देते हैं। माननीय सभापति महोदय, वह विद्यार्थी जब यूनिवर्सिटी की एजूकेशन पूरी करने के पश्चात् अपने घर और परिवार की व्यवस्था करने के लिए अग्रसर होता है उसके सामने सबसे पहली बड़ी भारी दिक्कत यह आती है.........

श्री डूंगरराम पंवार (टी. बी.) : उन पर मुकदमा चलाइये जो बचपन में शादी करते हैं, शारदा एक्ट के अन्दर प्रावधान है। मुकदमा चलाइये उन लोगों पर।

श्री सभापति : आर्डर आर्डर, माननीय सदस्य !

श्री जयकृष्ण तोसावड़ा : और कोई सदस्य को मैं बिठा सकता हूँ, इनको नहीं बिठा सकता।

मेरा निवेदन है, माननीय सभापति महोदय, जब बेकार, बेरोजगार शिक्षित व्यक्ति अपने परिवार की ओर अग्रसर होता है उसके सामने खुद की बेकारी की समस्या तो होती ही है, उसके मां-बाप और भाई-बहिन की समस्या भी होती है, लेकिन बाल विवाह की बीमारी बड़ी भयंकर इस देश में होने के कारणवश जब हमारा नवयुवक पढ़ लिख कर यूनिवर्सिटी से बाहर जाता है, तो उसके सामने उसकी बीबी, उसके दो-तीन बच्चे बच्ची मुंह बाये खड़े रहते हैं। इसलिए मेरा निवेदन है, माननीय सभापति महोदय, आपके माध्यम से इस शिक्षा के क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन कर दिया जावे। वह परिवर्तन इस प्रकार का होना चाहिए कि जैसे ही विद्यार्थी अपनी एजूकेशन पूरी करने के पश्चात् अपने परिवार की ओर उन्मुख हो, इस प्रकार की योजना उसके दिमाग में रहे, मैं एजूकेशन प्राप्त करके बाहर जाना चाहता हूं, मेरे सामने भुखमरी की समस्या नहीं रहेगी। मैं मेरे परिवार का आसानी से पालन कर सकता हूं। इस प्रकार की टेक्नीकल शिक्षा हमारी यूनिवर्सिटीज में दे दी जाये तो हमारे सामने भुखमरी, बेकारी, शिक्षित व्यक्ति के बेरोजगार की समस्या है जिनके लिए स्वर्गीय माननीय प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने एक योजना बनाई थी उनको रोजगार देने के लिए छोटे-छोटे उद्योग-धन्धे खोलने के लिए, साधन उपलब्ध कराने के लिए योजना बनी हुई है उसमें और ज्यादा

(श्री जयकृष्ण तोसावड़ा)

चार चांद लगाए जा सकते हैं। यदि आप उच्च शिक्षा के अन्दर भी आमूल-चूल परिवर्तन करके ऐसी शिक्षा पर ध्यान दें तो आपके सामने भुखमरी और बेकारी की समस्या नहीं आ सकती।

श्री सभापति : समाप्त करें, माननीय सदस्य।

श्री जयकृष्ण तोसावड़ा : एक मिनट।

मेरा निवेदन यह भी है, सभापति महोदय, जैसे हमारे यहां शिक्षा की बात मैं कह चुका, गांव के अन्दर शिक्षा तो देनी ही चाहिए लेकिन गांव में इस तरह का प्रयास किया जाय कि हमारी जो कई योजनाएं हैं, ऐसी योजनाएं हैं जो गरीब तबके के व्यक्ति के लिये हैं, वे बेचारे साधन जुटा नहीं सकते, सरकार की ओर से उनको साधन उपलब्ध करवाए जायं। कहीं अशिक्षित भी हैं, कहीं मजदूर वर्ग भी हैं, कहीं किसान तबका ऐसा है जिसके पास जमीन सीमित है, सिंचाई के साधन नहीं हैं। जमीन सीमित होने के साथ-साथ वह अपनी रोटी-रोजी ठीक ढंग से पैदा नहीं कर सकता। इसलिए नहीं कर सकता कि उसके पास उस जमीन को बोने के लिए, उसको सिंचित करने के लिए, उसमें उर्वरा शक्ति पैदा करने के लिये कोई अर्थ की व्यवस्था, साधन मौजूद नहीं हैं। इसलिए मेरा निवेदन यह है······

(समय-समाप्ति-सूचक-घंटी)

सभापति महोदय, समय कम है, मुझे समय कम दिया गया। इन सारी व्यवस्थाओं को ध्यान में रखते हुए, सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से······

श्री डूंगरराम पंवार : उपाध्यक्ष महोदय, मेरे को राज्यपाल के अभिभाषण पर एक मिनट भी समय नहीं मिला है।

श्री जयकृष्ण तोसावड़ा : मैं निवेदन कर रहा हूं कि मैं जितना बोला, थोड़ा बोला, अधिक बोला मेरी भावनाओं को समझते हुए मेरे क्षेत्र के अन्दर, अन्य क्षेत्रों के अन्दर, पूरे प्रांत के अन्दर जो गरीब तबका है, जो छोटे किसान हैं, जो छोटे मजदूर हैं, जो छोटे व्यापारी हैं उनके लिए हम इस प्रकार की योजनाएं बनायें कि उनके सामने किसी प्रकार की दिक्कतें नहीं आवें और सर तरीके से उनके जीवन-यापन के साधन बन सकें। इस प्रकार की योजना बनालें तो हमारे माननीय राज्यपाल महोदय द्वारा दिया गया जो अभिभाषण है वह सफल हो सकता है। बाकी विरोधी पार्टी के जितने भी माननीय सदस्य हैं उनसे निवेदन करूंगा कि आपस में एक दूसरे की खींचातानी करने से, एक दूसरे को घसीटने से एक दूसरे को नीचा और ऊंचा लाने से कोई फायदा नहीं हो सकता। पांच वर्ष पूरे होते जा रहे हैं···

एक माननीय सदस्य : किसी ने नहीं घसीटा।

श्री सभापति : माननीय सदस्य, समाप्त करें, प्लीज।

श्री जयकृष्ण तोसावड़ा : माननीय सभापति महोदया, एक मिनट।

पांच वर्ष पूरे होते जा रहे हैं, पांच वर्ष में 17-18 रोज निकल गये हैं, आपको

(श्री जयकृष्ण तोसावड़ा)
भी जनता के सामने जाना पड़ेगा और हमको भी जनता के सामने जाना पड़ेगा, पब्लिक हमको पूछेगी कि आपको हमने चुन कर भेजा आपने हमारे लिए क्या योजना बनाई ? उस समय आप अपना मुंह पीछे हटा कर मत आ जाना। इसलिए, सभापति महोदया..............

(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य।

श्री जयकृष्ण तोसावड़ा : मैं आपसे तेज बोल सकता हूं, आपसे ज्यादा चुटकुले भी कह सकता हूं लेकिन मेरा निवेदन यह है कि इस सदन में बड़े अहोभाग्य से आये हैं इसको दुर्भाग्य में मत घसीटिए। यही मेरा निवेदन है।

श्री शोपत सिंह : आप तो मिनिस्टर बनने के योग्य हैं, आपको तो मिनिस्टरी में आना चाहिए।

श्री सभापति : माननीय मंत्री महोदय कुछ कहना चाहेंगे ?

श्री दिग्विजय सिंह (उनियारा) : वह मंत्री नहीं हैं, मुख्य सचेतक हैं।

श्री सभापति : सारी मुख्य सचेतक महोदय।

समिति का गठन
जनलेखा समिति, प्राक्कलन समिति (क), प्राक्कलन समिति (ख) एवं राजकीय उपक्रम समिति, 1985-86 के सदस्यों के निर्वाचन के सम्बन्ध में प्रस्ताव

श्री बुलाकीदास कल्ला (मुख्य-सचेतक) : मैं निम्नांकित प्रस्ताव प्रस्तुत करता हूं :–

जनलेखा समिति 1985-86

(1) इस सदन के सदस्यों द्वारा राजस्थान विधान सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन संबंधी नियमों के नियम 230 (1) के द्वारा निर्दिष्ट रीति से समस्त सदस्यों की संख्या में से जनलेखा समिति, 1985-86 के लिए पन्द्रह सदस्यों का निर्वाचन किया जाय।

प्राक्कलन समिति '(क)', 1985-86

(2) इस सदन के सदस्यों द्वारा राजस्थान विधान सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन संबंधी नियमों के नियम 231 के साथ पढ़े हुए नियम 232 (1) के द्वारा निर्दिष्ट रीति से समस्त सदस्यों की संख्या में से प्राक्कलन समिति '(क)', 1985-86 के लिये पन्द्रह सदस्यों का निर्वाचन किया जाय।

प्राक्कलन समिति '(ख)', 1985-86

(3) इस सदन के सदस्यों द्वारा राजस्थान विधान के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन संबंधी नियमों के नियम 231 के साथ पढ़े हुए नियम 232 (1) के द्वारा निर्दिष्ट रीति से समस्त सदस्यों की संख्या में से प्राक्कलन समिति '(ख)', 1985-86 के लिए पन्द्रह सदस्यों का निर्वाचन किया जाय।

राजकीय उपक्रम समिति, 1985-86

(4) इस सदन के सदस्यों द्वारा राजस्थान विधान सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन संबंधी नियमों के नियम 233 ख (1) द्वारा निर्दिष्ट रीति से समस्त सदस्यों

(श्री बुलाकीदास कल्ला)
की संख्या में से राजकीय उपक्रम समिति, 1985-86 के लिए पन्द्रह सदस्यों का निर्वाचन किया जाय।

श्री सभापति : क्या सदन की राय है कि इस प्रस्ताव को स्वीकार किया जाय ?

(स्वीकृत)

प्रस्ताव स्वीकार किया गया।

श्री सम्पत सिंह।

धन्यवाद प्रस्ताव पर वाद-विवाद

श्री सम्पत सिंह (नगर) : माननीय सभापति महोदय; राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर प्रस्तुत धन्यवाद प्रस्ताव पर मुझे बोलने के लिये इजाजत दी गई है, सबसे पहले मैं उनका आभार प्रकट करता हूं कि उन्होंने नये सदस्यों के रूप में सामूहिक रूप से हम लोगों को आशीर्वाद दिया। मैं उनका हृदय से आभारी हूं। फिर उस महान् जनता का आभारी हूं जिसने हमें यहां चुन कर भेजा, खासतौर से मुझ जैसे एक अदने से कार्यकर्ता को इस बड़े सदन में भेजा।

सबसे पहले राज्यपाल महोदय ने अपने अभिभाषण में कहा है, कानून और व्यवस्था के बारे में। बहुत से माननीय सदस्यों ने इस पर अपनी टिप्पणी की है और राय मशविरा दिया है। सबसे पहले मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि कानून और व्यवस्था के मामले में हमारे यहाँ चाहे प्रजातंत्र हो पर एक तानाशाह देश भी हमसे पीछे हैं। पड़ौस में देखिये, भुट्टो को फांसी दी गई तो वहां के फौजी तानाशाह ने वहां भी कानून का सहारा लेकर, अदालत का सहारा लेकर उनको फांसी दी। मुजीबुरहमान की हत्या के लिये जिस तरह से प्रयास किया गया, बाद में उनको दिखाया गया, कानूनी तरीके से उन पर मुकदमा चलाया गया तफसील में न जाकर मैं संक्षेप में ही अर्ज करना चाहता हूं, पिछले सालों में नियमों के हिसाब से देखिये इतने जघन्य अपराध हो गये जिनमें मुख्य रूप से कोटपूतली का काण्ड और भरतपुर घना का गोली काण्ड उदाहरण के बतौर अर्ज किये जा सकते हैं। घना में इस कदर गोली चलाई कि निहत्थे किसान, मजदूरों की पीठ पर गोलियां लगीं। आज तक उन हत्यारों का कोई नाम पता नहीं है। मैं निवेदन करना चाहता हूं कानून और व्यवस्था के पाइन्ट पर इस अभिभाषण में यह पंक्ति जुड़ी हुई होनी चाहिए थी कि हमसे यह भूल हुई और इसका यह जुर्म हमने किन-किन लोगों पर आयद किया। एक बहन जो कोटपूतली की थी, सारा राजस्थान जानता है कि उसकी अस्मत लूटी पुलिस के उन ट्रेण्ड कर्मचारियों ने, जिन पर इतना खर्चा आता है कि एक इंजीनियर पर भी नहीं होता सरकार का। इसमें अगर हम उनको जुर्म का भागी मान लेते, उनको सरकार की ओर से सजा मिलती तो यह चीज रख सकते थे। उसके बाद में चुनाव के दौरान राजा मानसिंह जैसी पुनीत आत्मा को सरे बाजार गोली से उड़ाया गया। दुनिया के किसी प्रजातान्त्रिक मुल्क में ऐसी मिसाल नहीं है अगर स्टेज को तोड़ने के लिए मौत की सजा है तो उसके लिए भी कानून का सहारा लेते, किसी अदालत से कहते। 15-15 साल के बच्चों ने देखा है निहत्थे राजा मानसिंह

(श्री सम्पत सिंह)

के गोली मारी गई। इसके बावजूद माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में यह कहा गया है, इस पर हमें हर्ष होता है कि कानून और व्यवस्था ठीक रही। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि परतन्त्र देश में अंग्रेज भी इतना जुल्म नहीं करते थे।

सदन की कार्यवाही
विधान सभा की बैठक के निर्धारित समय में वृद्धि

श्री बुलाकीदास कल्ला (मुख्य सचेतक): सभापति महोदया, मैं निवेदन करना चाहता हूं कि सदन का समय एक घंटे के लिये और बढ़ाया जाय।

श्री सभापति : सदन की अनुमति से समय बढ़ाया गया।

धन्यवाद प्रस्ताव पर वाद-विवाद

श्री सम्पतसिंह : माननीय सभापति महोदय, मैं यह निवेदन कर रहा था कि जिस वक्त अंग्रेज हम पर राज कर रहे थे उस वक्त जलियांवाला काण्ड हुआ, उस काण्ड की बदौलत वे पूरी दुनियां में इतने बदनाम हुए कि उनको देश तो छोड़कर भागना पड़ा। ब्यौरेवार एक इतिहास के छात्र के नाते हम ध्यान करें तो कुल 10 मिनट तक 1650 राउण्ड गोलियां चली थीं और 1516 आदमी जख्मी हुए थे या मारे गये थे। माननीय राज्यपाल महोदय ने यह कहा कि कानून व्यवस्था अच्छी रही। तो मैं बड़े अदब के साथ अर्ज करना चाहता हूं, यह बहुत खेद का विषय है, यह बड़ी शर्म की बात है। इनको संशोधित करना चाहिए कि कानून व्यवस्था राज्य में खराब से खराब चल रही है।

मैं अर्ज करूं, इसके बाद आपने चुनाव प्रक्रिया पर भी अपनी टिप्पणी अपने अभिभाषण में की है इतने अर्से से हम लोग देख रहे हैं, खास तौर से गरीब और मजदूर तबके के लोग इस चुनाव में कभी भी शिरकत नहीं कर सकते। अव्वल तो पैसा ही इतना बहाया जाता है कि बड़े-बड़े वर्ग के लोग ही चुनाव लड़ सकते हैं, उसके बावजूद चुनाव की धांधलियां एक से ज्यादा माननीय सदस्यों ने निवेदन की है, किस किस प्रकार 6 धांधलियां हुई उस पर भी राज्यपाल महोदय यह फक्र करते हैं कि चुनाव बड़े अच्छे तरीके से, व्यवस्थित रूप से, निष्पक्ष रूप से हुए।

तीसरा मेरा अर्ज करना यह है कि 20 सूत्री कार्यक्रम के बारे में भी माननीय राज्यपाल महोदय ने अपने अभिभाषण में कहा। यह प्रोग्राम कागजों पर ही रहा। दुनियां जानती है और राजस्थान के निवासी खासतौर से जानते हैं कि 20 सूत्री कार्यक्रम में अधिकारियों के भ्रष्टाचार का बोल-बाला है। गरीब आदमी के यदि एक हजार रुपये का कर्जा मन्जूर होता है तो, बमुश्किल 500 रुपये उस तक पहुँच पाते हैं। यह कहां जाती हैं सारी रकमें? और फिर हम दावा करते हैं कि 20 सूत्री प्रोग्राम सुचारू रूप से चल रहा है। मेरा निवेदन है कि यह 20 सूत्री कार्यक्रम सरकार की तरफ से अगर ईमानदारी से चलाया जाय तो भी नहीं चल सकता। दूसरे देशों की बात छोड़िये, दूसरे प्रांतों से ही हम राजस्थान वाले सबसे पीछे हैं।

श्री बुलाकीदास कल्ला : राजस्थान सबसे आगे है।

श्री सम्पत सिंह : यह आपका बखान है, आप मान लिजिये। आपका रेडियो जिस वक्त बोलता है उस वक्त गांव और शहर का हर आदमी इस बात पर शर्म महसूस करता है कि यह कितना उलाहना देते हैं। कभी आपका रेडियो यह नहीं कहता है कि हमने बिड़ला को इतना अनुदान दिया है उसकी फैक्ट्री के लिये या उस पर इतना टैक्स बकाया है पर यदि 500 रुपये का कर्जा आप एक किसान को, मजदूर को देते हो तो रेडियो पर 15 मिनट तक इस बात का बखान किया जाता है।

आपने औद्योगिक नीति के बारे में भी अपने अभिभाषण में कहा है। मैं इस पर निवेदन करना चाहता हूं कि ज्यादातर इकाइयां खासतौर से रीत्रो में आज ठप्प हैं। मैं जिस क्षेत्र का बाशिन्दा हूं, डीग क्षेत्र में आज एक भी फैक्ट्री चालू नहीं है। उन पर सरकार का कितना पैसा लग चुका है, कितनी रकम बट्टे खाते बैंकों में पड़ी हुई है ?

(5.53 म. प.)

(श्री गिरिराज प्रसाद तिवाड़ी, सभापति, पदासीन)

एक भी उद्योग चालू नहीं है। इस पर कौन से विशेषज्ञ राय देते हैं कि कौनसा उद्योग कहां लगे ? मैं जयपुर की बात ही निवेदन करना चाहता हूं जयपुर के ठीक पश्चिम में औद्योगिक क्षेत्र बनाया गया है। किसी भी उद्योग विशेषज्ञ ने, किसी भी बड़े से बड़े प्रशासनिक अधिकारी ने और किसी भी बड़े से बड़े नेता ने इस बात को नहीं कहा कि पश्चिम में कोई उद्योग मत लगाओ नहीं तो दूसरा भोपाल बन जायेगा। मैं छोटे मुंह बड़ी बात नहीं करना चाहता लेकिन कभी भी जयपुर और राजस्थान की जनता के साथ यह हादसा हो सकता है जो भोपाल में हुआ। सिर्फ एक पूर्व सदस्या संसद की माननीय महारानी गायत्री देवी ने उस वक्त प्रधान मंत्री को चिट्ठी लिखी थी कि जयपुर के ठीक पश्चिम में उद्योग मत लगाइये, इस बस्ती की तरफ मत लगाइये, पछुआ हवायें पूरे साल उधर की चलती हैं उद्योग के क्षेत्र में भी एक नौसिखिये के तरीके से यह प्रणाली चल रही है। दूसरे मुल्कों में इन चीजों पर लोग हंसते हैं और विशेषज्ञों की राय भी नहीं आ पाती।

दूसरी बात, सिंचाई के बारे में भी राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में चर्चा की गई है सिंचाई के बारे में जितना मेरा कद है सिर्फ उतनी ही बात करना चाहता हूं अपने क्षेत्र की बात करना चाहता हूं। पिछले 10 साल से गुड़गांवा नहर खुद रही हैं उसके लिये किसानों की जमीन ले ली गयी हैं लेकिन आधे से ज्यादा किसानों को आज तक मुआवजा नहीं दिया गया है, ना उसमें यह व्यवस्था हमारी सरकार की तरफ से हुई है। माननीय सभापति महोदय, मैं आपकी मार्फत यह गुजारिश करना चाहता हूं कि उस गुडगांवा नहर में जब तक गंगा और जमना का पानी नहीं आवेगा वह हमारे किस मतलब की है। करोड़ों रुपये उसमें बेकार गया। सीकरी-नगर क्षेत्र में रूपारेल है अलवर से हमारा एक मुख्यालय उस जमाने में यह हुआ था कि आधा पानी भरतपुर रियासत को मिलेगा, आधा पानी

(श्री सम्पत सिंह)

अलवर के लिये मिलेगा। परन्तु उस जगह पानी को रोक दिया गया है लिहाजा रूपारेल नदी सूखी रहती है। उसमें एक बीघा की सिंचाई के लिये भी गांव में पानी नहीं आ सकता।

इसके बाद माननीय राज्यपाल महोदय ने बिजली के बाबत जो कहा है वह भी तथ्यों से परे है। मैं सिर्फ अपने क्षेत्र की ही बात निवेदन करना चाहता हूं हमारे अकेले सीकरी क्षेत्र में कम से कम 15 हजार, 20 हजार ट्यूबवैल हैं और इतनी जरखेड़ा जमीन है इतना अण्डर ग्राउन्ड वाटर है, वहां ट्यूबवैल चला रहे हैं, किसान अपनी तरफ से सरकार से कर्जा लेकर इंजन से सिंचाई कर पाते हैं. एक भी ट्यूब वैल पर बिजली का कनेक्शन नहीं है। मैं अर्ज करना चाहता हूं, क्या उनका इतना हक नहीं बनता कि 36 साल के बाद इस देश में वह आजादी से सांस नहीं ले सकें। तो आजादी से बिजली का कनेक्शन तो लगा सकें। एक भी बिजली का कनेक्शन नहीं है। मैं अर्ज करना चाहता हूँ, माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में बिजली की व्यवस्था के बारे में जो कहा है वह बिल्कुल तथ्यों से परे है।

माननीय प्रोफेसर केदार जी कह रहे थे कि हमारे गेहूँ और अनाज के लिए रुपये बढ़ाये। बड़ी मुश्किल से ये 6 रुपये बढ़ें। मैं उनके इस रेफरेन्स में इतना ही अर्ज करना चाहता हूं कि जिनके पास सरप्लस अनाज पैदा होता है उनके तो 6 रुपये काम में आ सकते हैं लेकिन कुछ नीचे के किसान ऐसे हैं जो सरप्लस अनाज पैदा ही नहीं करते। साल भर का ही उनके मवेशियों और बच्चों के लिए अनाज नहीं होता। जब वह एक दाना भी नहीं बेचेगा तो उसके लिए उस भाव के मायने क्या हुए ? आपके इस अभिभाषण में अगले साल के लिए यह व्यवस्था है तो आपकी मार्फत, माननीय सभापति महोदय, मैं सरकार से यह निवेदन करना चाहता हूं कि जिनके पास एक दाना भी बेचने के लिए नहीं है वह कैसे अपनी घर गृहस्थी चलायें। जो भी किसी तरीके से अपने बच्चों की पढ़ाई-लिखाई तक की व्यवस्था नहीं कर सकते हैं तो उनके लिए भी कोई व्यवस्था होनी चाहिए।

गरीब हरिजन, सामाजिक व्यवस्था की जो चर्चा की है अभिभाषण में, गरीब हरिजन कितने शर्म की बात है आज भी झूंठण के लिये इन्तजार में बैठा रहता है दो-दो घंटों तक कि यह बारात उठ जायेगी उस वक्त उसकी झूंठण लेकर जायेंगे। और हम फक्र करते हैं। माननीय सी. पी. जोशीजी फरमा रहे थे कि राजनीति में इस वक्त गुणात्मक परिवर्तन आया है। हमको बड़ी शर्म आती है, हमारे गांव, देहात में ही नहीं, कस्बों में भी. आज एक तबका ऐसा है जनसंख्या का जो झूंठन को ले जाकर अपना खाना-पीना शुरू करता है। कितनी शर्म की बात है, और हम बड़े लहजे में कहते हैं कि हिन्दुस्तान दुनियां के बड़े प्रजातांत्रिक देशों में से एक है

सामाजिक व्यवस्था के अलावा माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में पीने के पानी की व्यवस्था की भी बहुत बढ़िया तरीके से बढ़ा चढ़ा कर चर्चा की

(श्री सम्पत सिंह)

गई है। मैं इसके बारे में बड़े अदब से यह निवेदन करना चाहता हूं कि बहुत से गांव ऐसे हैं जिनमें पानी खारा है, हमारे क्षेत्र में जिसे हमारी लोकल जुबान में चोहटा का पानी कहते हैं। 15 फीट के आसपास पानी निकल आये वह तो पीने लायक होता है वरना नीचे खारा पानी है। पीने के पानी की व्यवस्था नहीं है, कुनेन की गोलियां मुहैया नहीं हैं। 41 आदमी पिछले महीने सीकरी और नगर क्षेत्र में मस्तिष्क के बुखार से मरे हैं। पिछले साल जयपुर से एक स्पेशल टीम गई थी उसको मालूम है अच्छी तरह से, सात हजार मौतें अकेले हमारे उप-खण्ड में हुई और वह मलेरिया से हुई। माननीय सभापति महोदय, आप तो नजदीक वहां बिराजते हैं, आपको बखूबी मालूम है, कुनेन के अभाव में हिन्दुस्तान में नहीं, राजस्थान में और वह भी भरतपुर में आदमी मरता है और उस पर हम यह फक्र करते हैं कि राजनीति में बड़ा गुणात्मक परिवर्तन आया है।

मैं निवेदन करना चाहता हूं कि यह चीजें तीन बातों की वजह से हैं। अव्वल तो भ्रष्टाचार है। भ्रष्टाचार में पटवारी से लेकर मुख्य मंत्री तक लिप्त रहते हैं, चाहे आप मौजूदा मुख्य मंत्री साहिबान हों, चाहे पिछले मुख्य मंत्री साहिबान हों। उनको यह नहीं पता कि हमको आजादी किसने दिलाई? जिन लोगों ने, 20-22 साल की उम्र में फांसी के फन्दे पर चढ़कर अपनी कुर्बानी देकर हमको आजाद कराया, बहादुर शाह जफर जैसे आदमी तो इस मुल्क में दो गज जमीन के लिए तड़फते-तड़फते चले गये—

"दो गज जमीन मिली कूंचाये यार में,
कितना है बदनसीब जफर दफन के लिए।"

और यहां 40-40 एकड़ जमीन अजमेर और झोटवाड़ा रोड पर आज के गांधीवादी कांग्रेसी लोग हथियाए बैठे हैं।

(6.00 म. प.)

राजनीति में यह गुणात्मक परिवर्तन आया है।

श्री सभापति : कृपया व्यक्तिगत-रिमार्क्स न करें।

श्री सम्पत सिंह : यह व्यक्तिगत नहीं है।

श्री शोपतसिंह : गांधीवादी कहा है।

श्री सभापति : कृपया व्यक्तिगत-रिमार्क्स न करें।

श्री दिग्विजय सिंह : नाम नहीं लिया है।

(व्यवधान)

श्री सम्पत सिंह : माननीय सभापति महोदय, मैं गुणात्मक परिवर्तन के ऊपर अर्ज कर रहा हूं, दोषी को आगे करिये।

श्री सी. पी. जोशी : मैंने नहीं लिया।

श्री सम्पत सिंह : रूस ने जब आजादी ले ली तब लेनिन की पार्टी में, बोल्शेविक पार्टी में वे लोग शामिल होना चाहते थे जो उनकी मुखबरी किया करते थे, उनको गोलियों से मरवाया करते थे। मैं माननीय सी. पी. जोशी से अर्ज करना चाहता हूं उस वक्त यह रिमार्क्स दिया था

(श्री सम्पत सिंह)

लेनिन ने, जाइये यहां से, तुमको गोली मारने को जी चाहता है। आज कांग्रेस में गुणात्मक परिवर्तन यह हो रहा है, जो अंग्रेजों की मुखबरी किया करते थे, जो राजा-महाराजा, अंग्रेजों की जूतियां उठाया करते थे वह तो आज कांग्रेस में, नहीं आ रहे उल्टे कांग्रेस उनके घर पर जाकर दस्तक देती है, टिकटों को थालियों में सजा-सजा कर वहां पहुँचाती है। यह राजनीति में गुणात्मक परिवर्तन आया है। मैं माननीय सी. पी. जोशी से यह अर्ज करना चाहता हूं कि गुणात्मक परिवर्तन जो……

श्री सी. पी. जोशी : लोक दल का सदस्य बात कर रहा है गुणात्मक परिवर्तन की। गुणात्मक परिवर्तन की बात लोक दल का सदस्य कर रहा है। सी. पी. एम. की बात लोक दल का सदस्य कर रहा है, यह गुणात्मक परिवर्तन है।

श्री सम्पत सिंह : जी, हां। जिस वक्त आप कह रहे थे मैं चुप चाप सुन रहा था।

तो मैं यह अर्ज करना चाहता हूं कि भ्रष्टाचार को कांग्रेस सरकार, जिस पर जिम्मा है चूंकि वह राज में है, मिटा सकती है। मजिस्ट्रेट जो ग्रास रूट पर न्याय देते हैं वहां अगर बेईमान हैं तो आम जनता को बड़ी तकलीफ होती है। सुप्रीम कोर्ट के जज अगर बेईमान हैं, तो गांव के आदमी को पता नहीं लगता है। आप तलाशिये, आपके मजिस्ट्रेट एस.डी.ओ. इस तरह रिश्वत लेते हैं जैसे कोई राय और भाट भी भीख नहीं मांगते हैं। बोली लगती है मुकदमों में, बोली लगती है वहां हर काम के लिये। अगर चीनी का कोटा भी देना है एस. डी. ओ. को, तो बोली लगती है और उस वक्त कांग्रेस के नुमाइन्दे उनकी पीठ थपथपाते हैं। क्या होता है डाक बंगलों में? कोई खर्च बख्शा हुआ है क्या राजस्थान सरकार ने? कहां से आती है बरफी और मेवे? यह सब पटवारी, गिरदावर, तहसीलदार और एस. डी. ओ. इन्तजाम करते हैं। राजनीति में गुणात्मक परिवर्तन अगर लाना है तो भ्रष्टाचार पर बंदिश आप लगाइये, आप हमारे बड़े भाई हैं।

दूसरा जो अवगुण है हमारी राजनीति का वह है बेरोजगारी। बेरोजगारी अकेले हमारे राजस्थान में नहीं है हम यह मानते हैं, हिन्दुस्तान भर में है। लेकिन राजस्थान की खबर आप सब माननीय सदस्यों ने सुनी होगी, जोधपुर के टेलीफोन एक्सचेंज में कुत्ते काम करेंगे। दो-दो करोड़ पढ़े-लिखे नौजवान इस मुल्क में बेरोजगार हैं लेकिन टेलीफोन एक्सचेंज में कुत्तों को नौकरी दी जायेगी। कौन बना रहा है इन नीतियों को? छोटे-छोटे बच्चे चाय के कप प्लेट धोते हैं, बूट पॉलिस करते हैं और फिर हम फक्र करते हैं कि राजनीति में गुणात्मक परिवर्तन आ रहा है, हम दुनिया के बहुत बड़े प्रजातांत्रिक देशों में से एक हैं।

मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि हमारी शिक्षा को रोजगार से जोड़िये। ठीक फरमा रहे थे माननीय जयकृष्ण जी कि यूनिवर्सिटी और कॉलेज से जब लड़का निकले तो उसे इस बात की फिक्र नहीं होनी चाहिये कि मेरे मां-बाप और खुद

(श्री सम्पत सिंह)

मेरे लिये कहां से खर्चा आयेगा ? उसकी शिक्षा को रोजगार से शुरू में ही जोड़िये। दस जमा दो प्रणाली क्यों आज तक लागू नहीं हुई ? मैं, माननीय सभापति महोदय आपकी मार्फत यह अर्ज करना चाहता हूं, सरकार उसको तत्काल लागू करें जिससे बेरोजगारी की समस्या भी हल हो। टेलीफोन से जो आप रोजगार दिलाते हैं वह जिन कुत्तों की तरह दुम हिलाते रहते हैं। आपके सामने हमेशा सारी उम्र।

तीसरा और आखिरी हमारा जो अवगुण है…

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

अभी खत्म कर रहा हूं माननीय सभापति महोदय, तीसरा

जो सबसे बड़ा अवगुण हमारी राजनीति में आया है वह है महंगाई। हर साल चुनाव के पहले चीजें सस्ती हो जाती हैं और चुनाव के तुरन्त बाद भाव आसमान छूने लगते हैं। उनकी कीमत कौन कन्ट्रोल कर रहा है ? कन्ट्रोल में कौन बैठा हुआ है ? आर्थिक विभागों में कौन रीति-नीति तय कर रहा है ? यह महंगाई इस कदर बढ़ेगी तो वे एक मजिस्ट्रेट को, एक राजा को एक मंत्री को उसी भाव दूध मिलता है, जिस भाव एक गरीब चपरासी को, एक गरीब मजदूर को, एक गरीब किसान को मिलता है। दुनिया के अर्थशास्त्री इस पर हंसते हैं, यह कैसा मुल्क है ? अव्वल तो यह होना चाहिये राजा के लिये 100 रुपये किलो दूध मिले तो मजदूर के लिये 10 पैसे का एक किलो दूध मिले। यह नीतियां आप तय करिये तब आयेगा राजनीति में गुणात्मक परिवर्तन वरना हमारे बुजुर्गों ने जो हमें आजादी दिलायी है वह काफूर हो जायेगी। फिर यह जो चक्र है राजकीय प्रजातंत्र के बाद राजतंत्र भी आ सकता है, तानाशाही भी आ सकती है इसलिये अर्ज कर रहा हूं।

कृपया इसलिए तकदीर ने चुनवाये थे तिनके बन जायं नशेमन तो कोई आग लगा दे।

यह जो अपराधी तत्व राजनीति में आ गये हैं, चाहे विरोध पक्ष में हो, चाहे सत्तापक्ष में हो, यह खत्म कर देंगे हमारे प्रजातंत्र को। अगर हमने पहले से लेनिन की सी नीति नहीं अपनायी, जो अवसरवादी लोग हैं उनको पार्टियों में लिया तो सारी कल्चर, चाहे सोशलिस्ट कल्चर है, चाहे कांग्रेसी कल्चर है, दफन हो जाएगी, हमारा नशेमन चकनाचूर हो जाएगा। माननीय राज्यपाल महोदय के इस अभिलेख में यह संशोधन निश्चित रूप से किया जाये।

मैं आखिर में बड़े अदब से अर्ज कर रहा हूं, माननीय सभापति महोदय, खासतौर से यह शब्द इस अभिभाषण में आने चाहिए कि राजा मानसिंह हत्या काण्ड, कोटपूतली काण्ड और घना गोली काण्ड में जो कानून व्यवस्था हमने बिगड़ी है उसके लिए हमें शर्म महसूस होती है, खेद है और आगे उनको कानून के जरिये सजा दिलाने की कोशिश की जायेगी। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपना भाषण समाप्त करता हूं।

जय हिन्द।

श्री सभापति : श्री प्रणवीर व्यास।

(व्यवधान)

श्री प्रणवीर व्यास (भीलवाड़ा) : माननीय सभापति महोदय, महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर माननीय सदस्य श्री सी. पी. जोशी, जो नाथद्वारा से आये हैं, ने जो धन्यवाद प्रस्ताव रखा है और श्री गिरिराज प्रसाद जी तिवाड़ी ने जिसका समर्थन किया है उस धन्यवाद प्रस्ताव का समर्थन करते हुये मैं अपने विचार प्रस्तुत करना चाहता हूं।

यह बात सही है कि सदन में भी पहली बार चुनकर आया हूं और बोलने का भी यह पहला अवसर है। यह तो सभापति महोदय, सर्वविदित है कि राज्य की जनता ने सिद्धान्तहीन ताकतों को ठुकराकर कांग्रेस को राजीव गांधी के नेतृत्व में एक आदेश देकर इस प्रदेश का विकास करने का, प्रदेश में काम करने का मौका दिया है। हमारे यशस्वी नेता माननीय मुख्य मंत्री, हरिदेव जी जोशी काफी अनुभवी हैं और कुशल नेतृत्व के धनी हैं। मैं, सभापति महोदय, यह कहना चाहता हूं कि उनके नेतृत्व में राजस्थान दिनों दिन तरक्की करेगा।

माननीय सभापति महोदय, मैं जिस क्षेत्र से चुनकर आया हूं उस क्षेत्र की जनता को अपनी ओर से बधाई देना चाहता हूं। जिस जनता के मत मुझे प्राप्त हुये हैं, जिस मकसद के लिये मुझे यहां पर चुनकर भेजा है, मेरा कुछ दायित्व भी है कि मैं अपने क्षेत्र की कुछ बात यहां रखूं। माननीय सभापति महोदय, मैं भीलवाड़ा नगर, जो एक औद्योगिक नगर है, से चुनकर आया हूं। काफी अर्से से यह सीट विरोधियों के पास थी। विकास की जो गति वहां पर होनी चाहिये थी, जो विकास भीलवाड़ा जैसे औद्योगिक नगर का होना चाहिए था वह वहां की उचित पैरवी न करने के कारण नहीं हो सका। माननीय सभापति महोदय, मैं एक ऐसी समस्या की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। जिसे अभी तक पक्ष और विपक्ष के माननीय सदस्यों ने इस सदन में नहीं रखा है। यह समस्या वैसे तो राजस्थान से संबंधित है लेकिन मेरे क्षेत्र भीलवाड़ा से भी विशेष तौर से संबंधित है। जिस यूनिट्स की बात माननीय सभापति महोदय, मैं करना चाहता हूं। हमारे यहां मेवाड़ टैक्सटाइल मिल काफी दिनों से......

(6.10 सायं)

(श्री दामोदर आचार्य, सभापति, पदासीन)

बन्द है। एक साल के करीब उसको हो गया है। दो हजार परिवार रोजी-रोटी से महरूम हैं। मैं सदन के माध्यम से सदन के नेता को यह निवेदन करना चाहूँगा कि टैक्सटाइल मिल में 300 लूम हैं 28 हजार स्पिंडल हैं। डाईंग, ब्लीचिंग और होजरी और भी तरह-तरह के काम वहां पर होते हैं। मेटेक्स का नाम सुना होगा, मेटेक्स बनियान वहां का फेमस बनियान है काफी सदस्यगण पहनते भी होंगे......

श्री यदुनाथ सिंह : लाकर दीजिये, अबकी बार।

श्री प्रणवीर व्यास : मैं वहां का एजेन्ट नहीं हूं।

(श्री प्राणवीर व्यास)

मेरा यह निवेदन है कि यह मिल जून 84 से बन्द है, इस मिल को रिलीफ अण्डरटेकिंग एक्ट के तहत चालू किया जाय। अभी राज्य सरकार ने इस मिल को चालू करने की कोशिश की है उसमें एक आई. ए. एस. ऑफिसर, श्री कवड़िया को नियुक्त किया है। उन आई. ए. एस. ऑफिसर साहब का कहना है कि मेरे पास उचित फण्ड नहीं है। जो मिल की जमीन है, आहूजे की उसे वह बेचना चाहते हैं, जो मिल के कर्जदार हैं, उन्होंने उसके ऊपर स्टे लाया हुआ है। तो इन सारी परिस्थितियों को मद्देनजर रखते हुए इस मिल को रिलीफ अण्डरटेकिंग एक्ट के तहत जितनी जल्दी हो सके चालू किया जाय ताकि वहां के दो हजार श्रमिक और उनके परिवार राहत पा सकें।

इसी तरह राजस्थान के अन्दर जयपुर स्पिनिंग मिल भी है। कृष्णा मिल, ब्यावर भी है। मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि आदरणीय महामहिम राज्यपाल महोदय ने श्रमिकों के बारे में काफी जिक्र किया है कि न्यूनतम वेतन में बढोतरी कर कुछ ऐसे कानून बनाये जायेंगे कि जिस मिल में तीन सौ से अधिक मजदूर हों, उसको सरकार की अनुमति के बगैर मालिक बन्द नहीं कर सकें लेकिन मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि इस अभिभाषण में इन सिक यूनिटें के मजदूरों के प्रति और जो कई सिक यूनिटें हैं उसके बारे में कोई जिक्र नहीं है।

माननीय सभापति महोदय, न्यूनतम वेतन अधिनियम के अन्तर्गत न्यूनतम वेतन में जो बढोतरी हुई है एक अप्रेल से, उसके लिये तो राज्य सरकार को धन्यवाद देता ही हूं साथ साथ यह भी निवेदन करना चाहता हूँ कि जहां संगठित मजदूर हैं वहां पर तो यह 11 रुपये जो 9 रुपये से बढ़ाकर किये गये हैं, मिलेंगे लेकिन जहां संगठित मजदूर नहीं हैं वहां के लिये व्यवस्था कुछ ऐसी की जाय कि उनको उचित दर प्राप्त हो सके।

माननीय सभापति महोदय, मैं इस समस्या से आगे जाकर पेयजल सम्बन्धी कुछ बात यहां निवेदन करना चाहता हूं। काफी माननीय सदस्यों ने पक्ष-विपक्ष सभी ने इस समस्या के समाधान की बड़े पुरजोर शब्दों में मांग की है। काफी आवाज उठायी है। मैं तो अपने क्षेत्र की बात आपके माध्यम से कहना चाहता हूं। हमारे यहां मेजा बांध का निर्माण कर राज्य सरकार ने सिचाई की, पीने के पानी की काफी सुविधा उपलब्ध कराई है उसके लिये भी मैं सरकार का आभारी हूं, सरकार को धन्यवाद देता हूं। अभी बारिश नहीं होने से मेजा बांध खाली पड़ा हुआ है, उसका जो कमांड एरिया है उस कमांड एरिया में कोई फसल नहीं हुई है। मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि जिस कमांड एरिया में फसल नहीं हुई है वहां किसानों के लिये कुछ राहत के काम शुरू किये जायं। किसानों को छोटे-छोटे उद्योगों या निर्माण के कार्यो में लगाया जाय जिससे कि उनकी आमदनी में बढोतरी हो सके।

माननीय सभापति महोदय, मैं आपसे एक बात निवेदन करना चाहता हूं कि व्यापारी बारह महीने कमाता है, सर्विस मैन 12 महीने कमाता है मगर यह किसान जो है वह अपनी फसल के ऊपर निर्भर

(श्री प्रणवीर व्यास)

रहता है। इसलिये जहां पानी की व्यवस्था न हो, जहां ईली लग गई हो या और कोई रोग लग गया हो, और कोई व्यवस्था नहीं हुई हो, खाद-बीज की पूर्ण व्यवस्था नहीं होने से उसको तकलीफ होती है उसकी यह व्यवस्था की जानी चाहिये और छोटे उद्योग, चाहे गाय पालन का हो, चाहे भेड़ पालन का हो, चाहे हाथ करघा का हो, या ऐसा कार्यक्रम उन किसानों के लिये गांव में देना चाहिये जिससे वह अपनी आय पूरी कर सके, अपना पेट भर सके, अपने बच्चों को शिक्षा दिला सके।

श्री सभापति : माननीय सदस्य, समय का ध्यान रखें।

श्री प्रणवीर व्यास : माननीय सभापति महोदय, मैं दो मिनट और निवेदन करना चाहूंगा।

मेजा बांध की बात निवेदन कर रहा था। मेजा फीडर, जिसका मातृ कुंडिया में निर्माण हुआ है, करोड़ों रुपये की लागत से मेजा बांध के अन्दर लायी गई है, उस मेजा फीडर में फाटक या किसी कमी की वजह से पानी एकत्रित नहीं होने से मेजा बांध में पानी का भराव नहीं हो सकने से पानी के पीने की और दूसरी समस्याएं उत्पन्न हुई हैं। तो मैं इस सदन से निवेदन करना चाहूंगा कि इस बारिश से पूर्व वह फाटक चालू करायें। सिमको को या किसी को ऑर्डर दे रखा है, मेरे को जानकारी नहीं है, अपने क्षेत्र में जाऊंगा तब जानकारी करूंगा लेकिन उस फाटक को इस बारिश से पहले चालू करायें ताकि पानी का वहां पर भराव हो सके और फीडर के द्वारा मेजा बांध में पानी आ सके और भीलवाड़ा शहर को पीने का पानी तथा कमांड एरिया में खेतों के लिये पानी उपलब्ध हो सके।

मैं इसी संबंध में एक बात और निवेदन करना चाहूंगा, मेजा बांध से सीधी एक पाइप लाइन भीलवाड़ा तक वाटर वर्क्स की नयी बिछी है जिसका काम करीब-करीब पूर्ण होने को है, उसे प्राथमिकता देकर पूर्ण कराया जाय ताकि इस गर्मी में भीलवाड़ा शहर के निवासियों को पीने के पानी की किल्लत न हो।

माननीय सभापति महोदय, बोलने को तो काफी कुछ है, काफी बातें यहाँ पर रिपीट भी हो सकती हैं, कई माननीय सदस्यगण ने इन बातों का यहां जिक्र किया है लेकिन मेरे क्षेत्र की जो समस्या है, जहां से मैं जीत कर यहां आया हूं, जिन लोगों ने मेरे ऊपर विश्वास किया है उन लोगों की समस्याओं के ऊपर बोलने का थोड़ा समय आपसे और चाहता हुआ दो-तीन बातें सदन के समक्ष आपकी आज्ञा से रखना चाहूंगा।

(6.19 सायं)

(श्री हीरालाल देवपुरा, अध्यक्ष पदासीन)

नगरपालिका का एक प्रश्न था, मैंने उस पर बोलने की तैयारी की थी लेकिन माननीय नेता महोदय ने आज सुबह जो सदन को आश्वासन दिया है उस आधार पर इस बात को मैं नेता महोदय की आज्ञा सर्वोपरि मानता हुआ खत्म करता हूं। वहां यू.आई.टी., सहकारी संस्थाएं और दूसरी जो ऐसी संस्थाएं हैं उनमें सहकारी ऑफिसरों को बैठा रखा है, कि

(श्री प्रणवीर व्यास)
नगरपालिका में भी प्रशासक लगा रखा अब यह काम एम.एल.ए. का हो गया कि आप वहां गये, साहब यहां पर सफाई नहीं हुई, यहां नाली का यह हो गया

श्री अध्यक्ष: संक्षेप में, माननीय सदस्य ।

श्री प्रणवीर व्यास : माननीय अध्यक्ष महोदय, यह मेरे शहर की समस्या है और मैं इसको यहां तक पहुँचाना भी अपना दायित्व समझता हूं, अपना कर्त्तव्य समझता हूं। बहुत नम्र निवेदन करता हुआ इन बातों को मैं आपके समक्ष रख रहा हूं, मुझे पूर्ण आशा है कि आप इस पर पूर्ण गौर करेंगे मैं नगरपालिकाओं के चुनाव की बात सदन में काफी विस्तृत रूप से रखना चाहता था लेकिन हमारे नेता महोदय ने सुबह जो आश्वासन दिया है वह ठीक है। समय पर चुनाव होंगे, ऐसी मुझे पूर्ण आशा है।

भीलवाड़ा नगर में कुछ ऐसी बस्तियां हैं जो शहर के आजू बाजू फैली हुई हैं जिसे अवैध निर्माण कहा जाता है। कृषि भूमि से शहरी भूमि रूपान्तरण जिसे कहते हैं, ऐसी समस्यायें इतनी ज्यादा हैं कि इन सबको सुलटाने के लिये, सुलझाने के लिये इसमें समाधान करने के लिये सरकार को कोई ऐसी नीति बनानी चाहिए, कि कोई ऐसी योजना बनानी चाहिए जिससे आम आदमी को राहत मिले। जो दरें हैं, वह सब जगह समान हों। उन बस्तियों, जो कि अभी ऑथोराइज नहीं हुई हैं, में पानी की सुविधा नहीं है, बिजली की सुविधा नहीं है। इससे गन्दगी फैलती है और काफी बीमारियां फैलने का भी अंदेशा है। वह भी हो रहा है। इस समस्या के ऊपर भी मैं सदन में निवेदन करना चाहूंगा।

मैं अपनी बात को यहीं समाप्त करता हुआ एक बार फिर भीलवाड़ा मेवाड़ टैक्सटाइल मिल के बारे में इस सदन में ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा। मैंने इस सदन में आते ही पहले दिन ध्यानाकर्षण प्रस्ताव भी रखा था, माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी तक वह आपकी नजर में आया नहीं है क्योंकि मेरा नाम पुकारा नहीं गया था। इस समस्या की ओर एक बार फिर इस सदन का ध्यान आकर्षित करते हुए अपना स्थान लेता हूं। धन्यवाद।

जय हिन्द

समिति का गठन

जनलेखा समिति, प्राक्कलन समिति (क) एवं (ख) तथा राजकीय उपक्रम समिति 1985-86 के सदस्यों का निर्वाचन कार्यक्रम

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, मुझे एक सूचना देनी है।

राजस्थान विधान सभा की चारों वित्तीय समितियों अर्थात् जनलेखा समिति 1985-86, प्राक्कलन समिति (क) 1985-86, प्राक्कलन समिति (ख) 1985-86 तथा राजकीय उपक्रम समिति, 1985-86 के सदस्यों का निर्वाचन वर्तमान सत्र में किया जाना आवश्यक समझा गया है। समयावधि कम है, अतः पूर्व वर्षों में निर्वाचन के कार्यक्रम के लिए जो समय दिया जाता था उतना न दिया जाकर

160

(श्री अध्यक्ष)
सभी दलों की सहमति से कम रखा गया है जो निम्न प्रकार है :-

(1) मनोनयन पत्र प्रस्तुत करना	26 मार्च, 1985 के मध्याह्न पश्चात् 3.00 बजे तक ।
(2) मनोनयन पत्रों की जांच	26 मार्च, 1985 को मध्याह्न 3.30 बजे ।
(3) मनोनयन वापस लेना	27 मार्च, 1985 के मध्याह्न पश्चात् 3.00 बजे तक ।
(4) मतदान यदि आवश्यक हो	28 मार्च, 1985 को मध्याह्न पूर्व 11 बजे से मध्याह्न पश्चात् 3 बजे तक ।
(5) मतपत्रों की गणना	28 मार्च, 1985 को मध्याह्न पश्चात् 3 बजे से ।

मनोनयन पत्रों के खाली फार्म विधान सभा के सूचना कार्यालय से प्राप्त हो सकेंगे जिन्हें भरकर सचिव, राजस्थान विधान सभा को देना होगा ।

मनोनयन पत्रों को जांच निर्वाचन अधिकारी (सचिव, राजस्थान विधान सभा) द्वारा विधान सभा भवन स्थित उनके कक्ष में की जायेगी ।

मनोनयन पत्र सम्बन्धित सदस्यों द्वारा सदन में वक्तव्य के जरिये भी जिसमें केवल तथ्य को ही व्यक्त किया जाना चाहिए, वापस लिये जा सकते हैं ।

श्रीमती सुमित्रा सिंह :

(व्यवधान)

माननीय सदस्य, मैंने नाम पुकार लिया है ।

धन्यवाद प्रस्ताव पर वाद-विवाद

श्रीमती सुमित्रा सिंह (पिलानी): अध्यक्ष महोदय; इस सदन में राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर नाथद्वारा से आने वाले माननीय सदस्य ने जो धन्यवाद का प्रस्ताव पेश किया है उसके बारे में मुझे निवेदन यह करना है कि राज्यपाल महोदय का अभिभाषण जहां विगत वर्ष के सरकारी कार्यों का लेखा-जोखा होता है वहीं आने वाले वर्ष की नीतियों, कार्यक्रमों और विकास और विकास के बारे में किये जाने वाले कामों का एक दिशा-निर्देश भी होता है । उस दिशा-निर्देश और उन नीतियों में राज्य की जनता को विकास की एक झलक दिखाई देती है । माननीय राज्यपाल महोदय के इस अभिभाषण में न कोई विगत वर्ष के सरकारी कार्यों का लेखा-जोखा है और न कहीं भविष्य के निर्माण की झलक ही दिखाई दे रही है । मैं सबसे पहले राज्यपाल महोदय ने अपने अभिभाषण को प्रारम्भ करते हुए कानून और व्यवस्था की स्थिति पर बहुत सन्तोष व्यक्त किया है, उस सम्बन्ध में कहना चाहूंगी ।

अध्यक्ष महोदय, बजाय इन शब्दों के कि राजस्थान में कानून-व्यवस्था की स्थिति बहुत सन्तोषजनक रही, यह कहना चाहिए था कि राजस्थान में कानून

(श्रीमती सुमित्रासिंह)

एवं व्यवस्था की स्थिति बहुत असन्तोष-जनक रही। मैं असन्तोषजनक स्थिति इसलिए कहती हूँ, इस सदन में पहले चर्चा की जा चुकी है इस बात की, कि विगत वर्ष में बैंक डकैतियां हुईं, रेल डकैतियां हुई, बसों में डकैतियां हुई, बैंक लूटे गये। मैं उन सबकी चर्चा और उन सबके विस्तृत ब्यौरे में नहीं जाना चाहती हूँ। केवल इतना ही निवेदन करना चाहती हूं कि यहां के डी. जी. स्वयं ने अपने पत्रकार सम्मेलन में यह बात कही थी कि विगत वर्ष के अन्दर सामान्य अपराधों में तो तीन पर्सेन्ट की कमी आयी लेकिन बलात्कार के मामलों में साढ़े सात पर्सेन्ट की वृद्धि हुई इसका मतलब यह हुआ कि बलात्कारों में कुल अपराध साढ़े दस प्रतिशत और बढ़ गये हैं। एक तरीके से कहा जाय तो सन् 1983 के साल को बलात्कार का वर्ष ही कहा जाना चाहिए। मैं यह बात इसलिए कहती हूं कि जिस राज्य के अन्दर केवल पुलिस के गोली काण्डों में सत्रह से ज्यादा आदमी मारे जायं, धना में छः व्यक्ति मारे गये, डीग में मानसिंह हत्या काण्ड में आठ व्यक्ति पुलिस की गोली से मारे गये और कोटपूतली में तीन व्यक्ति मारे गये। जहां गोलियों का सिलसिला पूरे साल भर खत्म ही नहीं हुआ, न्यायिक जांच की घोषणा कर दी गयी, पिछली बार खुद मुख्य मंत्री महोदय ने यहां पर घोषणा की थी कि हाई कोर्ट के एक न्यायाधीश से धना काण्ड की जांच करवाई जायेगी लेकिन उसके बाद आज दिन तक रिपोर्ट आना तो दूर बल्कि जांच के सम्बन्ध में किसी भी तरह की कोई कार्यवाही शुरू नहीं हुई। मैं यह बात इसलिए कहती हूं की यह गोलियां लगातार इसी तरह से चलती रही हैं। न न्यायिक जांच की रिपोर्ट आयी, न न्यायाधीश की रिपोर्ट आयी और पुलिस गोलियों का यह क्रम इसी प्रकार से चलता रहा।

मैं एक और निवेदन करना चाहती हूं इसके साथ में कि पुलिस थानों के अन्दर 15 व्यक्ति पुलिस के जुल्मों का शिकार होकर मर गये। अलग-अलग थानों की, मैं एक-एक व्यक्ति का नाम बता सकती हूं मैं सन् 1983 को बलात्कार वर्ष के रूप में पुकारती हूं। इसलिए पुकारती हूं कि एक नहीं अनेक जगह पर पुलिस वर्दी में सामूहिक बलात्कार हुए हैं। मैं सदन को इस बात की जानकारी देना चाहूंगी कि पुलिस अकादमी में थानेदारों द्वारा तेरह वर्षीया मुन्नी के साथ बलात्कार किया, डूंगरपुर में कान्ता, राजगढ़, अलवर में उन्नीस वर्षीया सुशीला, अजमेर में विमला, कोटा में केसरबाई रतनगढ़ में रुक्मणी, सीकर में एक अनाम महिला, बीकानेर में बुर्जी, पाली में पार्वती, जयपुर में कान्ता, बांसवाड़ा में डाली नामक स्त्रियों के साथ पुलिस वालों ने बलात्कार किये हैं। पुलिस वर्दी में बलात्कार किये है। मैं इसके साथ सदन को इस बात की और जानकारी देना चाहूंगी, नसीराबाद थाने के सुन्दरी काण्ड को अखबारों में आप सब लोगों ने पढ़ा होगा। सुन्दरी के साथ सामूहिक बलात्कार किया गया, बलात्कार के बाद थाने में उसकी हत्या की गई। इस तरीके से थानों में हत्याओं का यह वर्ष रहा जिसके अन्दर, पुलिस के थानों में पुलिस के जुल्मों का शिकार होकर पन्द्रह लोग पुलिस हिरासत में दम तोड़ गये।

(श्रीमती सुमित्रासिंह)

मैं याद दिलाना चाहूंगी इस सदन को, जोधपुर में छोटू खां लगातार एक हफ्ते भर पुलिस जुल्मों का शिकार होकर, पुलिस की मार से 27 जनवरी, 1984 को चल बसा। जोधपुर, गोगुन्दा, अजमेर, कोटा, झुन्झुनू और सिरोही; सब जगहों पर अलग-अलग लोगों पर यह जो पुलिस के अत्याचार का सिलसिला था वह चलता रहा। हालांकि इसके बारे में चर्चा की जा चुकी है लेकिन यह रेफरेंस देना मैं भी आवश्यक समझूंगी। पुलिस राज की, उस मुख्य मन्त्री की क्या बात की जाय जिसके राज में स्वयं उनके विधायकों को ही नहीं बख्शा गया ? अपनी पार्टी के विधायकों को नहीं बख्शा गया, इसलिए इस पुलिस राज की, पुलिस की अक्षमता की और क्या बात की जाय ? जहां अपनी पार्टी के विधायकों, जिन्होंने कपड़े नहीं पहने हुए थे, को पुलिस संगीनों के साये में कमरे से बाहर निकाल दें तो क्या पुलिस राज की और क्या इस सबकी चर्चा करूं ? सबसे अधिक अफसोस तो मुझे इस बात का है कि राज्यपाल महोदय ने ऐसी सब घटनाओं का जिक्र नहीं किया, अपनी सफाई में कुछ इतना ही कह देते कि बहुत सन्तोषजनक नहीं रही तो भी समझ में आने वाली बात थी। पुलिस थानों के अन्दर जुल्म का शिकार होकर लोगों का दम तोड़ना, स्त्रियों के साथ बलात्कार होना, रेल-बस डकैतियां और इस सब के बाद गोलियों से सत्रह सत्रह आदमियों को भून दिया जाना, क्या यही सन्तोषप्रद स्थिति है ?

कानून और व्यवस्था की स्थिति के बाद में, माननीय अध्यक्ष महोदय, यह जो बीस सूत्री आर्थिक कार्यक्रम की क्रियान्विति का बहुत ढोल पीटा जा रहा है इसके बारे में भी अवश्य कुछ न कुछ मैं निवेदन करना चाहूँगी। माननीय राज्यपाल महोदय ने बड़ा संतोष व्यक्त किया है, बड़ा प्रशस्तिगान किया है राजस्थान सरकार का। यह कहा है कि राजस्थान सरकार ने बीस सूत्री आर्थिक कार्यक्रम की क्रियान्विती में एक बार इस राज्य को प्रथम नम्बर पर रखा है। 1982–83 में राजस्थान को देश में दूसरा स्थान मिला है और 1983–84 में राजस्थान को देश में सर्वोच्च स्थान मिला है। मैं, इस ढोल में कितनी पोल है इसके बारे में निवेदन करना चाहूँगी।

बन्धुआ मजदूरों के बारे में कहा गया है कि हमने अधिकांश बन्धुआ मजदूरों को पुनर्वासित किया है। यह प्लानिंग कमीशन की रिपोर्ट है जिसमें से पढ़कर मैं आपको कुछ सुनाना चाहती हूँ। यह मार्च, 1984 के आंकड़े हैं। इस पुस्तक में लिखा है,

"In Rajasthan, even though 2974 bonded labourers were released none of then was rehabilitated. This was mainly because of the scheme adopted by the Government to give share certificates to a large number of released bonded labourers."

मैं निवेदन करना चाहूँगी कि एक तरफ जो बन्धुआ मजदूरों के पुनर्वास की बात कही गई है, प्लानिंग कमीशन ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि 2974 आदमियों

(श्रीमती सुमित्रासिंह)

में से एक भी आदमी को रिहेबिलिटेड नहीं किया गया। इसके बारे में मैं इतना और निवेदन करना चाहूंगी कि बाण्डेड लेबर एक्ट में जिन लोगों के खिलाफ मुकदमें दायर किये गये थे, 192 मुकदमें थे वह राज्य सरकार ने विथड्रा कर लिये। विथड्रा किस लिये कर लिये ? विथड्रा इसलिये कर लिये कि किसी न किसी प्रकार का पॉलिटिकल प्रेशर पड़ा। 192 मुकदमें थे, बाण्डेड लेबर को रखने के। ऐसे आदमियों के 192 मुकदमों को राज्य सरकार ने वापस ले लिया। केवल 74 मुकदमों के अन्दर कन्विक्शन रहा है बाकी या तो एकविडल हो गये हैं या गवर्नमेंट ने विथड्रा कर लिये हैं। यह बीस सूत्री कार्यक्रम के क्रियान्वयन की रिपोर्ट है जिसके बारे में प्लानिंग कमीशन ने कहा है। इस बारे में सत्ता पक्ष में बैठे हुए एक भी माननीय सदस्य, खासतौर से नाथद्वारा से आने वाले माननीय सदस्य, जिनकी विद्वता के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था, ने कुछ नहीं कहा। मैं पिछली बार इस सदन में आई नहीं थी, उनकी विद्वता के बारे में मैंने बहुत कुछ सुन रखा था लेकिन मैंने जब उनका भाषण सुना तो मैंने जो कुछ सुन रखा था, मुझे तथ्य उस तरह के नहीं मिले और मेरी धारणा बिलकुल विपरीत हो गई।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं बीस सूत्री कार्यक्रम के अन्दर जैसा मैंने बाण्डेड लेबरर्स के बारे में कहा है, मैं वृक्षारोपण के बारे में भी निवेदन करना चाहूंगी। वैसे तो राज्यपाल महोदय खुद ने ही अपने अभिभाषण में इस चीज को स्वीकार कर लिया है कि जहां इकोलोजिकल बैलेन्स के लिये 33 पर्सेण्ट वनों का होना आवश्यक है वहां राजस्थान में केवल साढ़े 4 पर्सेण्ट वन हैं। वैसे भी यह बहुत दुःख की बात है। साढ़े 4 पर्सेण्ट जो वन हैं वृक्षारोपण के जितने आंकड़े दिये गये हैं, और जो संख्या बढ़ा-चढ़ा कर बताई गई है, पेड़ या पौधे लगा देने मात्र से पनपा नहीं जाता है, बड़ी चीज यह है कि आपने जितने पेड़ और पौधे लगाये हैं उनमें से पनपे कितने सर्वाईव कितने हुये, मॉर्टिलिटी कितनी हुई ? मैं रोजाना घूमने जाती हूं स्टेच्यू सर्किल से लेकर और मेरे घर तक, वहां कितने ही पेड़ लगा दिये गये थे लेकिन लगाने के बाद में आज हैं कितने ? प्रश्न इस बात का है, 8 करोड़ के आंकड़े तो बता दिये, हमने 8 करोड़ पेड़ लगा दिये लेकिन 8 करोड़ में से संभाले कितने हैं, पनपे कितने हैं ? एक करोड़ पनपे हैं, 50 लाख पनपे हैं इसके आंकड़े एकत्रित करने की राज्य सरकार को बिलकुल चिन्ता नहीं है। केवल पेड़ लगा कर ही संतोष यह राज्य सरकार कर लेती है।

मैं एक और निवेदन करना चाहूंगी, पीने के पानी का बहुत अहम् सवाल है। आज देश की आजादी के 37 साल बाद गर्व के साथ हम अपने आपको कल्याणकारी राज्य घोषित करते हैं, कल्याणकारी राज्य होने का जनता को आश्वासन देते हैं तो पीने के पानी का प्रबन्ध होना चाहिये था। मुझे बड़े दुःख और अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि जनता पार्टी के समय में निर्माण की हुई टंकियां आज सूखी पड़ी हुई हैं। मैं यह बात अभी इसलिये नहीं कहना चाहती हूं क्योंकि बजट पर जब अलग-अलग डिमाण्ड्स पर चर्चा होगी उस समय मैं यह बताऊंगी कि कहां-कहां पर

(श्रीमती सुमित्रासिंह)

कितनी टंकियां खाली पड़ी हुई हैं ? इस समय पर बता कर के सदन का वक्त जाया नहीं करना चाहती। मुझे बड़ा अफसोस हुआ है, जब मैंने चुनावों के दौरान में देखा, एक ही नहीं कम से कम बीसों गांवों में यह देखा कि जनता पार्टी के वक्त थी, सन् 1980 में कम्पलीट हुई टंकियों में आज भी पानी नहीं है, वह सूखी की सूखी पड़ी हैं। मेरा केवल यह कहना है कि 5 साल तक कांग्रेस सरकार ने 80 से लेकर 85 तक क्या किया ? मुझे इस बात के लिए बड़ी शर्म महसूस होती है और यह इस राज्य सरकार के लिये भी बड़े शर्म और लज्जा की बात है, 5 साल के अरसे में भी उन टंकियों में पानी नहीं पहुँचा सकी।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं इसके बाद विद्युत् के सवाल पर आती हूँ। एक तरफ तो राज्यपाल महोदय ने बड़ा संतोष व्यक्त किया है और बताया है कि इस बारे में जितने टार्गेट थे वह हमने अचीव कर लिये हैं, जितने कुए थे उनका भी विद्युतिकरण कर दिया गया है, जितने गांवों का हमारा टार्गेट था उसको भी हमने अचीव कर लिया है। कागजी टार्गेट मात्र की उपलब्धि से क्या होता है ? किसान को तो बिजली आज 5 या 6 घन्टे से ज्यादा नहीं मिलती है। जब आप लिहाफों में सोते हैं सब लोग, तो किसान को मजबूर करते हैं, रात में उन ठण्डी हवाओं में पानी देने के लिये। मैं आपसे निवेदन करना चाहूँगी कि केवल मात्र गांवों का विद्युतिकरण, कुओं का विद्युतिकरण कर देना पर्याप्त नहीं है। एक समय था 1980 और 1981 के अन्दर जब यह स्टेट सरप्लस स्टेट था विद्युत् के जनरेशन में अर्थात् जितनी विद्युत् जैनेरेट होती थी, बिजली जितनी कन्ज्यूम होती है उससे ज्यादा जनरेशन था लेकिन आज हमारी हालत यह हो गई है कि जितना जनरेशन है वह सारी की सारी बिजली कन्ज्यूम हो जाती है और किसान परेशान रहता है, किसान को बिजली नहीं मिल पाती है। इस बात का राज्य सरकार को मालूम ही होगा जो-जो लोग गांवों में जाते हैं उनको पता लगता होगा कि किसान कितना परेशान है आज बिजली के सवाल पर। फ्लैट रेट वही है, मिनिमम चार्जेज वही है जो जनता पार्टी के समय में थे लेकिन उस सबके बाद भी बिजली मिलती है केवल 5 घन्टे या 6 घन्टे यह बात किसान को बहुत उद्वेलित करती है, बहुत परेशान करती है। उसे बड़ा चिन्तित करती है।

श्री अध्यक्ष : संक्षेप में, माननीय सदस्या।

श्रीमती सुमित्रासिंह : संक्षेप में ही कह रही हूँ, अध्यक्ष महोदय।

अध्यक्ष महोदय, मैं इन सबके साथ-ही साथ निवेदन करना चाहती हूँ कि विकास की गति के अन्दर राजस्थान अपने पड़ौसी राज्यों से बहुत पिछड़ा हुआ प्रदेश है। किसी भी क्षेत्र को ले लीजिए, चाहे सार्वजनिक क्षेत्र में पूंजी नियोजन के मामले को ले लीजिये, चाहे आप औद्योगिकरण को ले लीजिये, चाहे आप सड़क को ले लीजिये, चाहे आप शिक्षा को ले लीजिये, चाहे आप मैडिकल फैसेलिटीज को ले लीजिये। किसी भी क्षेत्र को ले लीजिये, सब क्षेत्रों में राजस्थान अन्य राज्यों के मुकाबले, अपने पड़ौसी राज्यों

(श्रीमती सुमित्रासिंह)

के मुकाबले में बहुत पिछड़ा हुआ प्रान्त है। मैं इस बारे में यही निवेदन करना चाहूँगी। लेकिन कुछ बातें ऐसी हैं जिनमें यह राज्य बढ़ा-चढ़ा भी है। मैं निवेदन करना चाहूंगी आंकड़ों के जरिये से, माननीय अध्यक्ष जी, राजस्थान प्रदेश, जो एक अर्द्ध रेगिस्तानी और रेगिस्तानी प्रदेश है, पर केपिटा लैण्ड रेवेन्यू अन्य प्रान्तों के मुकाबले में अधिक लगती है। मैं आंकड़ों के जरिये से आपसे निवेदन करना चाहूँगी, आसाम में जहां पर कैपिटा लैण्ड रेवेन्यू केवल 1.42 लगती है, बिहार में 2.57 लगती है, गुजरात में 2.82 लगती है, हरियाणा में 3.94 लगती है, मध्य प्रदेश में 2.40 लगती है, वहां राजस्थान में 5.27 लगती है। यह रेगिस्तानी और अर्द्ध रेगिस्तानी इलाके के किसानों के साथ एक अन्याय है।

श्री शोपतसिंह : रॉक भी है।

श्रीमती सुमित्रासिंह : जी हां, रॉक भी है, रेगिस्तानी और अर्द्ध रेगिस्तानी भी है। सबसे ज्यादा ताज्जुब तो आप यह करेंगे, पश्चिम बंगाल और आन्ध्र प्रदेश, जहां काजू पैदा होता है, जहां सुपारी पैदा होती है, जहां नारियल पैदा होता है, में भी इस राज्य के मुकाबले में पर कैपिटा लैण्ड रेवेन्यू कम है। जहां तक राजस्थान का सैन्ट्रल असिस्टेन्स का सवाल है, सैन्ट्रल असिस्टेन्स के मामले में भी पता नहीं हमारा नेतृत्व कमजोर रहता है या हमारा नेतृत्व अक्षम है यह तो मैं नहीं कहना चाहती, केवल मैं इतना जरूर कहना चाहती हूँ कि सैन्ट्रल असिस्टेन्स के प्रश्न पर भी राजस्थान की उपेक्षा की जाती रही है। पिछले 3-4 साल से ग्रान्ट-इन-एड आसाम को 71.62 करोड़ मिली है, उड़ीसा को 63.90 करोड़ मिली है, वहां राजस्थान को केवल 35.85 करोड़ मिली है। उत्तर प्रदेश को भी इसके बराबर मिली है। पिछड़े हुए प्रान्त और भी हैं जैसे आसाम और उड़ीसा उनके मुकाबले में राजस्थान को सैन्ट्रल असिस्टेन्स कम मिलती है।

माननीय अध्यक्ष जी, मैं यह निवेदन करना चाहूंगी कि एक तरफ तो इलेक्ट्रिकसिटी की कमी है, विद्युत की कमी है और दूसरी तरफ विद्युत पर लगने वाला सरचार्ज है इलेक्ट्रिसिटी ड्यूटी में भी हमारा प्रान्त सबसे आगे है अन्य प्रान्तों के मुकाबले में राजस्थान में इलेक्ट्रिसिटी ड्यूटी 18.65 लगती है। और राज्यों में जैसे बिहार में केवल 5.82 ही लगती है, कर्नाटक में 6.71 लगती है, यू. पी. में 13.50 लगती है, महाराष्ट्र में 13.09 लगती है। राजस्थान जैसे पिछड़े प्रान्त के अन्दर 18.65 लगती है, यह बात भी न्यायोचित नहीं है।

श्री अध्यक्ष : कृपया समाप्त करें।

श्रीमती सुमित्रासिंह : हां, बस खतम कर रही हूं, माननीय अध्यक्ष महोदय। माननीय अध्यक्ष महोदय, कहना तो मैं बहुत चाहती थी आपने मुझे दस मिनट का समय भी नहीं दिया।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्या, 18 मिनट हो गये हैं।

श्रीमती सुमित्रासिंह : मैं खतम कर रही हूं।

माननीय अध्यक्ष जी, मैं निवेदन कर रही थी, राजस्थान पर कैपिटा इन्कम

(श्रीमती सुमित्रासिंह)

के मामले में भी सबसे पिछड़ा हुआ है। हम ऑल इण्डिया एवरेज तक भी अभी तक नहीं पहुँच पाये हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं यह निवेदन करना चाहती हूं कि जहां हमारे पड़ोसी राज्य पंजाब, हरियाणा के अन्दर जिस तेजी के साथ विकास हो रहा है, राजस्थान को देखते हुए लक्ष्य बहुत दूर है। मैं यह निवेदन करना चाहती हूँ इस बारे में कि राजस्थान ऑल इण्डिया एवरेज से हर चीज में पिछड़ा हुआ है, चाहे शिक्षा हो, चाहे हमारी पर केपिटा इन्कम हो, चाहे और चीजें हों, इसलिए मैं आपको यही निवेदन करती हूं कि राज्यपाल महोदय ने जो यह अपना अभिभाषण दिया है, इस अभिभाषण में न कोई विगत वर्ष के कार्यों का लेखा जोखा है, न कोई आने वाली नीतियों, कार्यक्रमों का जिक्र है।

मैं यह भी निवेदन करना चाहती हूं कि आज से दस साल पहले रोडवेज के राष्ट्रीयकरण का जो प्रश्न था, उस समय 40 पर्सेण्ट का टार्गेट था उसे हमें अधीन कर लेना चाहिए था 72 और 73 में, अब सन् 85 के अन्दर भी हम उसे नहीं कर पायेंगे।

इन्हीं शब्दों के साथ, राज्यपाल महोदय ने यह जो अपना 31 पेज का अभिभाषण दिया है, इस अभिभाषण के लिए उनको धन्यवाद देने की आवश्यकता मैं नहीं समझती क्योंकि इसमें उन्होंने कुछ भी ऐसा नहीं बताया है जिससे हमें राजस्थान राज्य के अगले वर्ष में विकास की नीतियों और कार्यक्रमों की झलक मिलती हो। ऐसा बिल्कुल भी नहीं है मैं, अध्यक्ष महोदय, इन्हीं शब्दों के साथ धन्यवाद देने के बजाय इस प्रस्ताव और इस अभिभाषण की निन्दा करती हूं। अपना स्थान ग्रहण करती हूँ।

श्री अध्यक्ष : श्री अश्क अली

श्री अश्क अली टांक (फतेहपुर) : अध्यक्ष महोदय, महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर हमारे वरिष्ठ सदस्य सी. पी. जोशी साहब जो धन्यवाद प्रस्ताव रखा, उसका मैं अनुमोदन करता हूँ, समर्थन करता हूं। अध्यक्ष महोदय, ना पक्ष के कुछ वरिष्ठ सदस्यों ने इस अभिभाषण में बताई गई उपलब्धियों पर नकारात्मक रुख अपनाया और बड़ी-बड़ी बातें कहीं। वह अपने अन्तर्मन और दलीय भावना से ऊपर उठकर इस बात को सोचें कि कांग्रेस के कार्यकाल में क्या राजस्थान ने चहुंमुखी विकास नहीं किया ? अगर वह सोचेंगे तो इस बात को सही मन से स्वीकार करने की स्थिति में होंगे। जहां तक सवाल है मेरे अपने सोचने का, यह साल अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष है। बड़ी-बड़ी बातें कर रहे थे कुछ युवा विधायक जो ना पक्ष में बैठे हैं। कह रहे थे, अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष के उपलक्ष में राज्य सरकार क्या करने जा रही है ? शायद वह अन्तर्मन में अर्थात् अपनी पार्टियों की गतिविधियों में इस बात को जानते। युवा वर्ष को काफी समय हो गया आरम्भ हुए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर, क्यां उन्होंने अपनी पार्टी स्तर पर युवको के लिए कोई कार्यक्रम चलाया, युवा जागृति का ? शायद नहीं। कांग्रेस की ऐसी जमात थी जिसको मेरे विरोध पक्ष के एक माननीय सदस्य जो हनुमानगढ़ से आते हैं, बड़ी सीखने की तमन्ना है हमें उनसे, उनके

(श्री अश्फ़ाक अली टांक)

द्वारा नागपुर संस्कृति, के नाम पर आरोपित किया जाता रहा। मैं माननीय सदस्य को अध्यक्ष महोदय के माध्यम से कहना चाहूंगा कि नागपुर की उपलब्धियों का बखान कांग्रेस के अन्दर रहकर हम करें तो निश्चित रूप से हमारे नेतृत्व को इस बात के लिए हमें धन्यवाद दे सकते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष के अन्तर्गत हमारी इस कांग्रेस की जमात के एन. एस. यू. आइ्वशन ने राजस्थान में अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस पर कार्यक्रम आरम्भ किये। तत्कालीन मुख्य मन्त्री जी उसमें आये, उनको हमने पॉजीटिव, सकरात्मक सुझाव दिये। वह क्या सुझाव थे? युवा निदेशालय की स्थापना हो, युवा मन्त्रालय बनाये जाने पर विचार हो, उसका अपना एक बजट हो। यह विचार था उस प्रोडक्ट का, उस पढ़े-लिखे विद्यार्थी का, जो अक्सर चिन्तन और मंथन किया करता है। विश्वविद्यालय की राजनीति में अगर आप हाहाकार, जिन्दाबाद-मुर्दाबाद, पत्थर मारो, हड़ताल करो, तालाबन्दी चाहते हो, तो निश्चित रूप से आप अपना उत्तरदायित्व पूरा नहीं करते। आप देश के नवनिर्माण की बात करते हैं, तो हमें इस अप्रोच को बदलना होगा। हमें कुछ कान्स्ट्रक्टिव विचार अपनाने पड़ेंगे। युवा पीढ़ी अर्थात् कॉलेज और विश्वविद्यालय में पढ़ने वालों को इस बात के लिए तैयार करना होगा कि पत्थर न उठें। आखिरकार हमारा युवा समाज, हमारा विद्यार्थी समाज इन बातों की तरफ क्यों चला जाता है? यह सदन में कभी सोचा नहीं गया। आज राजीव जी ने सोचा है। यही बात एक जमाने में नेहरूजी ने सोची थी, यही बात इन्दिराजी ने सोची थी। इसी परिप्रेक्ष्य में मेरी बात कहना चाहूंगा। विद्यार्थी के पास काफी समय क्लास के बाहर रहता है उसमें कई बार हसरत होती है कुछ करने की। नहीं कर पाता है तो फ्रस्ट्रेशन हो जाता है। फ्रस्ट्रेशन की हालत में उसे गुमराह किये जा सकता है। राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए दलगत राजनीति में लिप्त कुछ लोग, अक्सर विरोधी पक्ष के लोग पत्थर फिंकवाया करते हैं, कॉलेज बन्द करवाते हैं। इस बात को स्वीकार न करते हुए कांग्रेस पार्टी ने खेलों के महत्व को समझा। आज युवकों को खेलों के द्वारा अनुशासित किया गया तो निश्चित रूप से उनमें अनुशासन की भावना पैदा होगी, नई प्रतिभायें सामने आयेंगी। इस बात को स्वीकार करते हुए वर्ष 57-58 में 20 हजार रुपयों के बजट के साथ में खेल परिषद् की राजस्थान में स्थापना की गई। तदुपरान्त आज की स्थिति में यदि हम इस बात को सोचें कि इसके बाद हमारे यहां क्या विकास हुआ, नेहरूजी के द्वारा सन् 1963 में सवाई मानसिंह स्टेडियम का उद्घाटन किया गया। वह पूरा आज तक नहीं बना है। उसको पूरा बना कर आगे बढ़ाने की जरूरत है। इस बात पर चिन्तन किया जाना चाहिये। इसके साथ में ही एक कड़ी जुड़ी हुई है एशियाड 1982। हमारी प्रधान मन्त्री, स्वर्गीय श्रीमती इन्दिरा गांधी के नेतृत्व में युवा जगत में खेलों के प्रति जो लगाव, खेलों के प्रति जो भावना पैदा करने की बात 82 में की गई उसके अन्दर हमारा अपना राज्य राजस्थान ही एक ऐसा राज्य था जो सर्वाधिक पदक प्राप्त कर सका। 11 पदक प्राप्त करने वाला, तीन

168

(श्री अश्क अली टांक)

गोल्ड मेडल प्राप्त करने वाला यह स्टेट आपका अपना था। यानि कि आपकी प्रतिभायें बहुत हैं उनका आंकलन होना चाहिये, उनका संचय होना चाहिये। ठीक इसके बाद हमारे नेता तत्कालीन मुख्य मन्त्री जी कांग्रेस सरकार के, जिनके नेतृत्व में कांग्रेस यहां प्रकाश ले रही थी, द्वारा खिलाड़ियों के लिए खिलाड़ी कल्याण परिषद् की घोषणा की गई, एक लाख रुपये के बजट के साथ प्रतिभाओं का संग्रह करना चाहती थी, तत्कालीन सरकार अर्थात् हमारी कांग्रेस सरकार। यह सही बात है कि उस एक लाख रुपये का सही रूप में प्रयोग नहीं हुआ, प्रशासन की अकर्मण्यता के कारण, सुपरवीजन के कारण वह एक लाख रुपया पड़ा रहा।

हमने एक घोषणा और की थी कि बास्केट बाल हमारे राज्य का अपना गेम है, इसके बारे में भी हमें अपनी एप्रोच बनानी होगी, एक योजना बनानी होगी। बास्केट बाल के सर्वाधिक प्लेयर्स, जो अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में हिन्दुस्तान का प्रतिनिधित्व करते हैं, आपके अपने प्रदेश के हैं, खेल जगत में बास्केट बाल के खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। प्रतिभायें हैं और उनको मौका भी मिल रहा है परन्तु हमारे यहां मात्र 10 जिले ऐसे हैं जहां पर हमारे अपने स्टेडियम हैं कांग्रेस सरकार इस बात के लिये भी चिन्तित है। बहुत सारे स्टेडियम हम बनाने जा रहे हैं, और निर्माण कार्य चल रहे हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय के माध्यम से सुझाव देना चाहूंगा कि खेलों के विकास के लिये प्रतिभायें आपके पास बहुत हैं, उन्होंने पदक भी बहुत से जीते हैं, आगे आने वाले वक्त में......

(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से कहना चाहूंगा...

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज ! आर्डर, आर्डर व्यवधान नहीं होगा।

श्री अश्क अली टांक : कि खेलों का हमारे यहां पर आधुनिकीकरण होने जा रहा है। खेलों के मैदान निर्मित होते जा रहे हैं लेकिन इन्डोर स्टेडियम की व्यवस्था हमारे पूरे प्रदेश में है। अगर हम खेलों का विकास करना चाहते हैं तो इस दिशा में भी हमें अपनी नीतियों को मोड़ना होगा। कम से कम एक इन्डोर स्टेडियम इस प्रदेश की राजधानी में अनिवार्य रूप से होना चाहिये। इस बारे में भी राज्य सरकार सोचेगी, यह मैं आपके माध्यम से कहना चाहूंगा।

इसके साथ-साथ, आदरणीय अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से मैं यह कहना चाहूँगा हमारी अपनी सरकार को, हमारी कांग्रेस सरकार को कि हरियाणा, पंजाब, केरल और यू. पी., जो छोटे-छोटे प्रदेश हैं, में कम से कम एक करोड़ रुपये का खेल मंत्रालय के पास अपना बजट है लेकिन हमारी खेल परिषद् जिसको बने आज 27 साल हो चुके हैं, के पास सिर्फ 40 लाख रुपये का बजट है जो रख-रखाव में खर्च हो जाते हैं और बहुत कम राशि खेलों के विकास पर खर्च होती है।

(श्री अशफ अली टांक)

इसके साथ साथ, माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से मैं राज्य सरकार से निवेदन करना चाहूंगा कि राज्य में प्रतिभाओं को उभरने का मौका देने के लिये यह जरूरी है कि जिन माध्यमों से आपके पास खिलाड़ी आ रहे हैं, जिन माध्यमों से आपके पास पढ़ा-लिखा युवक आ रहा है, पढ़ा-लिखा विद्यार्थी आ रहा है उनको नेहरू युवक केन्द्र से को-आर्डिनेशन बैठायें। कॉलेज और पोस्ट ग्रेजूएट कॉलेज में एक को-आर्डिनेशन कमेटी बनाई जाय जिससे प्रतिभायें न केवल प्रदेश में बल्कि देश और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में ख्याति प्राप्त कर सकें।

राजस्थान प्रदेश एक बहुत बड़ा प्रदेश है। केरल का अपना एक गेम हो सकता है, यू. पी. का अपना एक हो सकता है, हरियाणा का अपना एक गेम हो सकता है, पंजाब का अपना एक गेम हो सकता है परन्तु राजस्थान में रीजनवाइज अपने अलग-अलग गेम चलते हैं जो वहां लोकप्रिय हैं। जिस प्रकार से अजमेर में बास्केट बाल अधिक लोकप्रिय है, कोटा में हॉकी लोकप्रिय है। हमारे शेखावाटी में बास्केट बाल और वालीबाल बहुत ज्यादा लोकप्रिय है। इन प्रतिभाओं को उभारने की दृष्टि से इन गेम्स को जोन वाइज बांटना चाहिये जिससे कॉलेज और विश्वविद्यालय में पढ़ने वाली प्रतिभायें फ्रस्ट्रेशन की हालत में नहीं आयें जब तक कि वह विद्याध्ययन करें। इसके साथ-साथ हमें इस प्रकार का कार्यक्रम तय करना होगा कि जब वह कॉलेज के बाहर आयें। तो उनको रोजगार मिल जाय। इस युवा वर्ष के अन्तर्गत जिनके लिये विशेष प्रकार के कार्यक्रम आपने चला रखे हैं उनको बढ़ाना होगा। जिस प्रकार से हमारी राज्य सरकार ने रोजगार कार्यक्रम 6 करोड़ रुपये के बजट से प्रारम्भ किया उसको बढ़ा कर हमने 9 करोड़ रुपये का पास किया, निश्चित रूप से यह स्वागत योग्य कदम है। अन्तर्मन से हृदय से, इसका स्वागत किया जाना चाहिये था परन्तु सिर्फ विरोध के नाम पर विरोध करने की बात की गई जो शायद इस सदन में परम्परा रही होगी पिछले टाइम से, वही निभाई गई। तीन करोड़ रुपये बढ़ा दिये गये। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहूंगा इस तीन करोड़ रुपये की राशि बढ़ाने से युवकों को सन्तुष्टि नहीं मिलेगी, अगर आप युवकों को सन्तुष्टि देना चाहते हैं तो इस बजट में जो प्रोविजन किये गये हैं उनका आपको सरलीकरण करना होगा, दूषित व्यवस्थाओं को बदलना होगा। जिससे किसी भी युवक को मिलने वाला लोन या धनराशि सीधी उसके हाथ में पहुँच सके, किसी भी व्यक्ति द्वारा एक पैसा भी इधर-उधर नहीं किया जा सके।

इसी के साथ-साथ......

सदन की कार्यवाही विधान सभा की बैठक के निर्धारित समय में वृद्धि

श्री बुलाकीदास कल्ला (मुख्य सचेतक) : अध्यक्ष महोदय, मेरा निवेदन है कि सदन का समय आधे घन्टे के लिये और बढ़ा दिया जाय।

(व्यवधान)

(170)

श्री भंवरलाल शर्मा : आधा घन्टा हमारी तरफ से और बढ़ा दिया जाय ।

श्री अध्यक्ष : आधे घन्टे का समय बढ़ाया गया ।

श्री भंवरलाल शर्मा : आधे घन्टे का नहीं साहब, आधा घन्टा आपकी तरफ से और आधा घन्टा हमारी तरफ से, एक घन्टे का समय बढ़ाया जाय ।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य संक्षेप में ।

धन्यवाद प्रस्ताव पर वाद-विवाद

श्री अश्क अली टाक : राजाखेड़ा से आने वाले वरिष्ठ सदस्य, जो मेरे साथ ही पहली बार इस सदन में आये हैं, विश्वविद्यालयों की कमी के बारे में बड़ी चिन्ता प्रकट की थी यहां पर । अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से यह निवेदन करना चाहूंगा कि ऐसे विश्वविद्यालय आज के विद्यार्थी समाज को नहीं चाहिये जिनकी डिग्रियों की कीमत 500 रुपये हो। हमें विश्वविद्यालय वह चाहिये जिनकी कीमत उनको अपनी परीक्षाएं हों, उनकी अपनी मेहनत हो और जो देश के पैमाने पर अपना कुछ स्थान रखते हों। राजस्थान विश्वविद्यालय, जिसमें तीन लाख 70 हजार विद्यार्थी बैठते हैं, न केवल हिन्दुस्तान का बल्कि एशिया का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय है । इसकी कुछ कमियां रही होंगी लेकिन उन मेरे वरिष्ठ सदस्य को आज मैं अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से कहना चाहूँगा कि राजस्थान विश्वविद्यालय को आज अपनी परीक्षाएं प्रारम्भ कराये 7 दिन हो चुके हैं और इस एकेडेमिक कलेण्डर को हण्ड्रेड पर्सेन्ट टाइम पर लागू करने वाली बात है। मेरे छात्र जीवन में गत 12 साल से जयपुर में रहा हूँ, मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि यह ही वह वर्ष है जिसमें सही समय पर परीक्षाएं करवा रहे हैं । इससे हमारे विद्यार्थी परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद आगे जायेंगे, आल इण्डिया कम्पीटिशन्स में वह पार्टिसिपेट कर सकेंगे ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, शिक्षा की जो उपलब्धियां रही हैं, राज्यपाल महोदय के अभिभाषण को पढ़ने के बाद पता लगता है कि चार सौ हायर सैकण्डरी स्कूल को क्रमोन्नत किया गया । 100 सैकण्डरी स्कूल को क्रमोन्नत करना, चार बी. एड. कॉलेज खोला जाना, कोटा में 90 सीट्स की जगह 180 सीट्स कर देना, भरतपुर और भीलवाड़ा में पुनः डिप्लोमा कॉलेजों का शुरू होना और 6 नये औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्रों का स्थापित होना निश्चित रूप से आने वाले समय में विद्यार्थी समाज के लिये एक उपलब्धि मानी जायेगी ।

इसके साथ-साथ गर्ल्स एवं वूमैन एजूकेशन को ध्यान में रखते हुए जिस प्रकार से हमारे यहां पर 4 नर्सिंग प्रशिक्षण केन्द्र अलग-अलग डिवीजन में खोले गये हैं वह स्वागत योग्य है। इसके अलावा, माननीय अध्यक्ष महोदय, छात्रावास अथवा होस्टल्स की कमी को महसूस किया गया है। यह बात जरूरी है और इस बात पर ध्यान दिया जाना चाहिये था ।

श्री अध्यक्ष : कृपया समाप्त करें ।

श्री अश्क अली टाक : अध्यक्ष महोदय, एक मिनट का वक्त चाहूँगा ।

(श्री अश्क अली टाक)

राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में नये होस्टल्स खोलने की बात कही गई है, जो विद्यार्थियों के लिए आज सबसे बड़ी जरूरत है, खासतौर से ग्रामीण अंचल से आने वाले विद्यार्थियों के लिये। मैं भी ग्रामीण अंचल से आने वाला विद्यार्थी हूं और आज भी विश्वविद्यालय का विद्यार्थी हूं, आज भी मेरा गोखले होस्टल में कमरा है, मुझे पता है कि आवासीय व्यवस्था नहीं होने के कारण विद्यार्थियों को कितनी दुविधा में रहना पड़ता है। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि यहां जो होस्टल्स हैं उनकी व्यवस्था को सुधारा जाय और नये होस्टल्स बनाये जायं। होस्टल्स में एडमिशन के जो प्रोविजन्स हैं उनको अच्छे ढंग से लागू किया जाना चाहिये। दस नये होस्टल्स बनाये जाने की इस अभिभाषण में चर्चा की गई है, इसका मैं स्वागत करता हूं। अधिक से अधिक होस्टल्स बनाये जाएं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आज जरूरत इस बात की है कि नये विश्वविद्यालय खोले जायं। नये विश्वविद्यालय वित्तीय साधनों की कमी के कारण खोले जाने संभव नहीं हैं तो इसके लिए वृहद् डिवीजन होने चाहियें। ऐसा पहले भी विश्वविद्यालय में हो चुका है। आज भी मैं समझता हूं हमारा विश्वविद्यालय जोधपुर और उदयपुर को छोड़कर जितनी भी शिक्षण संस्थायें राजस्थान में हैं उन सबके इम्तिहान करवाता है। इनका रजिस्ट्रेशन होना चाहिये, इनका अपना ऑफिस होना चाहिये चाहे वह उदयपुर में हो, चाहे जोधपुर में हो, चाहे बीकानेर में हो। बीकानेर में विश्वविद्यालय की मांग उठती रही है, कोटा में मांग उठती रही है उनकी मांगों को नजर अन्दाज नहीं करें। अगर राज्य सरकार के पास वित्तीय साधनों की कमी है तो विद्यार्थियों के हैल्पिग सैन्टर्स की व्यवस्था होनी चाहिये।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, समाप्त करिये।

श्री अश्क अली टाक : माननीय अध्यक्ष महोदय, एक बात मैं आपके माध्यम से कहना चाहूंगा, इस अभिभाषण को पढ़ने के बाद जो कमी मुझे महसूस हुई, छोटा सा कार्यकर्ता हूं मैं, वह कमी यह रही है कि इस अभिभाषण में "अल्पसंख्यक" शब्द नहीं है। इसका मतलब यह नहीं है कि हमने उनके लिये कुछ काम नहीं किया है या हम उनके लिये कोई नीति निर्धारित नहीं करने जा रहे हैं।

(7.00 सायं)

मैं आपके माध्यम से कहना चाहूंगा कि राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग की स्थापना राजस्थान में की जाए। साम्प्रदायिक तनाव हमारे प्रदेश के अन्दर रहा नहीं है, आगे लम्बे समय में भी नहीं रहेगा। मैंने ऐसा कभी महसूस नहीं किया है कि ऐसा वक्त आयेगा लेकिन विपदा आने से पहले, हमें सोचना चाहिए। जैसे यू. पी., बिहार, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, असम में अल्पसंख्यक आयोग बने हुए हैं उसी प्रकार यहां पर भी सम्भव हो तो इस दिशा में हमको बढ़ना चाहिए। साथ ही साथ उर्दू के विषय के अध्यापकों की बड़ी भारी समस्या चलती है। अध्यापक नहीं हैं। और अध्यापक हैं तो विद्यार्थी नहीं हैं इस व्यवस्था को सन्तुलित किया जाना चाहिए। जहां पर

(श्री अश्क अली टाक)

उर्दू के विद्यार्थी हैं वहां पर उर्दू के टीचरों को, जिस संबंध में पहले भी घोषणा हो चुकी है, भिजवाने की व्यवस्था की जानी चाहिए। ताकि यह अल्पसंख्यक समुदाय जिस प्रकार से कांग्रेस को अपनी संस्कृति और मर्यादाओं से पालता रहा है और अब नये जोश-खरोश के साथ कांग्रेस में जिस प्रकार अपनी निष्ठा और विश्वास को अंजाम दिया……

(व्यवधान)

श्री दाऊदयाल जोशी : क्यों नहीं हैं, दो हैं।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज।

श्री अश्क अली टाक : अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से कहना चाहूँगा कि अल्पसंख्यक समुदाय की शायद यह बड़ी समस्या नहीं है। उर्दू भाषा को हमें राजकीय संरक्षण देना होगा। इस समाज की जो खास बात है वह वक्फ बोर्ड से सम्बन्धित है। वक्फ बोर्ड राजस्थान में 1980 में स्थापित हुआ था।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, कृपया समाप्त करें।

श्री अश्क अली टाक : उसके बाद एक चेयरमैन बनाये गये थे वह रेवेन्यू विभाग में चले गए। उन्होंने कुछ काम किया होगा उसको प्रभावी ढंग से लागू करने की जरूरत है। उसके वजीफे भी मिलें, उसके कब्रिस्तान की बात भी हो सकती है, उसकी गन्दी बस्तियों की बात भी हो सकती है। समय नहीं है, कुछ बातें धर्म विशेष से, समाज विशेष से सम्बन्ध रखती हैं उस बात के लिए हमारे यहां अच्छी स्कीम वक्फ बोर्ड की है। उसको सही ढंग से वक्फ बोर्ड की सब-कमेटियां बनाकर इम्प्लीमेंट किया जाए तो मैं समझता हूं कि राजस्थान का अल्पसंख्यक समुदाय जो कांग्रेस के साथ रहा है, एक नए जोश-खरोश के साथ कांग्रेस के साथ रहेगा, ऐसी मेरी निष्ठा और विश्वास है।

इसी आशा और विश्वास के साथ धन्यवाद।

श्री अध्यक्ष : श्री रमजान खां।

एक माननीय सदस्य : मेरा नाम दिया हुआ है, कृपया करके…

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, कृपया बैठें।

(व्यवधान)

श्री रमजान खां (पुष्कर) : अध्यक्ष महोदय, मेरी बात शुरू करूं उससे पहले निवेदन करना चाहता हूं कि मैं निर्वाचित होकर आया हूं, तीर्थराज पुष्कर से। वहां की जनता ने मुझे आदेश दिया था कि जब कभी मुझे सदन में बोलने का प्रथम मौका मिले, तो मैं वहां की मुख्य समस्या के बारे में बात करूं। मुख्य समस्या यह है, माननीय अध्यक्ष महोदय, तीर्थराज पुष्कर के अन्दर एक पुष्कर सरोवर है, उस पुष्कर सरोवर का पानी हर जगह काम में लिया जाता है। यहां तक कि भगवान की मूर्तियां उससे धोई जाती हैं। उस पुष्कर सरोवर के पानी से खाना बनता है। मन्दिरों के अन्दर उस पुष्कर सरोवर का पानी काम में लिया जाता है। उस पवित्र

(श्री रमजान खां)

जल को दूर-दूर तक इस देश में और विदेशों में भी डिब्बों में पैक करके, बोतलों में बन्द करके भेजा जाता है। माननीय अध्यक्ष महोदय, उस पुष्कर सरोवर के अन्दर पुष्कर का गन्दा पानी आकर पड़ता है वह इस राज्य के ऊपर, इस सरकार के ऊपर एक कलंक का टीका है। मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहूंगा, माननीय भैरोंसिंह जी शेखावत की सरकार के समय सोलह लाख रुपये इस स्कीम के लिए मंजूर किए गए थे उसमें से करीब नौ लाख रुपये तो खर्च हो गए परन्तु पता नहीं किन कारणों की वजह से वह स्कीम रोक दी गई है और अब भी वह गन्दा पानी का नाला उस पवित्र सरोवर के अन्दर मिल रहा है जिससे हम लोगों को भ्रमित कर रहे हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करना चाहूंगा कि इस अपूर्ण कार्य को तुरन्त शुरू किया जाये और इस गन्दे पानी, जो तीर्थराज पुष्कर के पवित्र सरोवर के अन्दर आकर पानी को गन्दा कर रहा है, उसको तुरन्त रोका जाये।

दूसरा, मैं अर्ज करना चाहता हूं, माननीय अध्यक्ष जी, यहां पर चार दिन से बड़ा वाद-विवाद चल रहा है, ऐसे बहुत से लोग हैं जो काश्तकारों के वोटों से जीत कर आये हैं मगर काश्तकारों की जो दुखती रग है उसको, माननीय अध्यक्ष महोदय, किसी ने नहीं पकड़ा। उनका मुख्य दुःख यह है, माननीय अध्यक्ष महोदय, रात्रि के एक बजे, तीन बजे उन काश्तकारों को उठ कर अपने खेतों के अन्दर काश्त के लिए जाना पड़ता है दिसम्बर और जनवरी के महीने में, माघ और पोष के महीने में। यह काश्तकारों के लिए एक सज़ा है। मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि इस सज़ा को या तो राज्य सरकार समाप्त कर दे और आगे आने वाले महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण के अन्दर इसकी व्यवस्था कर दें कि आइन्दा काश्तकार को दिन के अन्दर बिजली दी जायेगी वरना मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि काश्तकार को दिन में बिजली नहीं दी गई, काश्तकार को मजबूर किया रात को जाकर काम करने के लिये, काश्तकार को मजबूर किया ठिठुर कर निमोनिया से मरने के लिए, काश्तकार को मजबूर किया, कीड़े काटने से मरने के लिए तो काश्तकार पैदल मार्च करके इस राज्य सरकार की विधान सभा को घेर लेंगे। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं जैसा महाराष्ट्र के अन्दर एक आन्दोलन हुआ था, काश्तकारों ने पैदल मार्च शुरू किया था और राजधानी को घेर लिया था, राजस्थान के काश्तकार भी इस बिजली की वजह से इतना तंग हैं, माननीय अध्यक्ष महोदय, कि वह भी उसी तरह पैदल मार्च शुरू कर देगा और यहां पर लॉ एण्ड ऑर्डर की स्थिति से निपटना बड़ा मुश्किल हो जायेगा।

दूसरा, मैं अर्ज करना चाहूंगा कि महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में स्कूल खोलने की, प्राथमिक शालायें खोलने की, कुछ प्राथमिक शालायें क्रमोन्नत करने की, उच्च माध्यमिक शालायें क्रमोन्नत करने की बड़ी चर्चा की गई है। मैं आपसे निवेदन करूं कि जब मैं पंचायत समिति जवाजा का प्रधान था तो वहां, जब चुनाव वर्ष आया अक्टूबर-नवम्बर का महीना था, विकास अधिकारी ने यह बात कही कि चार प्राथमिक शालायें हमारे वहां पर खुली हैं

(श्री रमजान खां)

तो मैंने उनसे पूछा कि अध्यापक कितने दिये ? उन्होंने जवाब दिया, एक भी नहीं दिया। पांच-सात दिन के बाद आठ स्कूल और प्राथमिक शाला और खोली गई। फिर मैंने पूछा कि कितने अध्यापक दिये ? उन्होंने कहा कि एक भी अध्यापक नहीं दिया। थोड़े दिनों के बाद जब लोक सभा चुनाव होने जा रहे थे, अध्यक्ष महोदय, तो वहां पर 12 और प्राथमिक शालायें खोल दी गई। एक सैशन के अन्दर 24 प्राथमिक शालायें खोलीं और अध्यापक दिये सिर्फ आठ। अब आप यह सोच सकते हैं अध्यक्ष महोदय, इस चीज पर आज तक किसी का ध्यान क्यों नहीं गया ? शिक्षा का ढिंढोरा तो पीटते हैं मगर आने वाली पीढ़ी को कमजोर कर रहे हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, अगर आप जयपुर से उदयपुर जायें, कम से कम 100 प्राथमिक शालायें बीच में पड़ेंगी। एक ही प्राथमिक शाला में जाकर निरीक्षण कीजिये और पांचवी कक्षा के छात्रों से पूछिये, क्या उनको जोड़-बाकी, गुणा और भाग आता है ? नहीं आयेगा। अध्यक्ष महोदय, इस तरह की यह जो भावी पीढ़ी आने वाली है, जो आगे शासन और प्रशासन को सम्भालने वाली है, कितनी कमजोर होकर आयेगी इसकी कल्पना नहीं की जा सकती।

एक उदाहरण दूं, जब मैं प्रधान था तब मैं एक शाला में गया निरीक्षण करने के लिए। वहां पर पांचवी कक्षा के बच्चों से जोड़ और बाकी पूछा। जोड़ और बाकी उनको नहीं आई। मैंने उनसे कहा कि तुम्हारे अध्यापक को कितनी तनख्वाह मिलती है ? पांचवी कक्षा की बात कर रहा हूँ, अध्यक्ष महोदय, उन्होंने नहीं कहा। अध्यापक ने कहा कि एक हजार सैंतालीस रुपये मिलते हैं। मैंने पांचवी कक्षा के बच्चों को यह कहा कि एक हजार सैंतालीस को संख्या में लिखो। मैं, माननीय अध्यक्ष महोदय, आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि एक हजार सैंतालीस की संख्या वह पांचवी कक्षा के बच्चे नहीं लिख सके। यह हमारी शिक्षा का दुर्भाग्य है, अध्यक्ष महोदय, इसलिए मैं निवेदन करना चाहता हूं कि स्कूल खोले जायें, क्रमोन्नत किये जायें, यह एक अच्छा प्रोग्राम है, एक अच्छी बात है परन्तु जब तक 49 और 1 के रेश्यो के हिसाब से अध्यापक नियुक्त नहीं किये जायं तब तक यह फालतू का ढिंढोरा, स्कूल खोलने का लोगों को खुश करने का ढिंढोरा बिलकुल बंद कर दिया जाये।

दूसरी बात, मैं अर्ज करना चाहता हूं, अध्यक्ष महोदय, 20 सूत्री कार्यक्रम के बारे में कई बातें यहां पर हुई। 20 सूत्री कार्यक्रम के बारे में चार दिन से सुनने को मुझे यहां मिल रहा है। उदाहरण देना चाहता हूं, पिछले पांच साल के अन्दर राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना के तहत कई ऐसी ग्राम पंचायतें बाकी रही हैं जहां पर एक भी काम नहीं हुआ और जहां पर एक-एक काम हुआ है, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि वह भी अभी अपूर्ण है। जिस तरह से बीस सूत्री कार्यक्रम का यह यहां पर ढिंढोरा पीटा जाता है और जब रेडियो में समाचार आते हैं, अध्यक्ष महोदय, तो गांव वाले हंसते हैं। गांव वाले सोचते है कि फालतू यह आंकड़े आ रहे हैं।

दूसरा, अध्यक्ष महोदय, जैसे यह बायोगैस का मामला है बायोगैस के मामले में मैं निवेदन करना

(श्री रमजान खां)

चाहता हूं कि पिछले टाइम में आंकड़े इकट्ठे करने के लिए काफी बनाये गये। आज आंकड़े इकट्ठे कर लीजिये, 90 प्रतिशत बायोगैस प्लांट या तो बने नहीं हैं, बने हैं तो खाखला और कुट्टी डालने के काम में आ रहे हैं। यहां पर मुश्किल से 10 प्रतिशत बायोगैस प्लांट चालू हैं। इसका एक ही मुख्य कारण है कि टैक्निकल शिक्षा नहीं दी जाती गांव वालों को कि किस तरह से गोबर भरा जाता है और किस तरह इनको चालू किया जाता है। खाली सीमेंट और अनुदान देकर बायोगैस प्लांट बना दिये जाते हैं उससे तो कोई मतलब, अध्यक्ष महोदय, निकलता नहीं है।

दूसरा, मैं आपसे अर्ज करना चाहता हूं, सड़कों से जोड़ने के बारे में महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में यह कहा गया है कि 1500 की आबादी और 1000 की आबादी वाली ग्राम पंचायतों के मुख्यालयों को सड़कों से जोड़ दिया जायेगा। मेरा निवेदन है, पहली बात तो यह है कि 50 प्रतिशत ग्राम पंचायतों के मुख्यालयों को सड़कों से नहीं जोड़ा गया है और जिनको जोड़ा गया है, अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि वहां कच्ची सड़कें बनाई हैं। वहां पर केवल गिट्टी और सड़क के आस-पास से उठाकर मिट्टी डाल दी गई है। उसके ऊपर रोलर फेर दिया गया है और उसको एक पक्की सड़क का नाम दे दिया गया है। अध्यक्ष महोदय, जब पहली बरसात आती है तो सड़क की रेत बहकर चली जाती है और गिट्टी निकल जाती है। उस गिट्टी पर पहले तो ग्रामवासी पैदल भी चल सकते थे पर अब उस निकली हुई गिट्टी पर पैदल चलना भी मुश्किल हो गया है। इस तरह की हालत है, इसलिए मेरा निवेदन है कि इस नीति में संशोधन किया जाये। या तो ग्राम पंचायतों को सड़कों से जोड़िये मत, उनके रास्ते जैसे कच्चे पड़े हैं वैसे ही पड़े रहने दें और अगर जोड़ते हैं तो माननीय अध्यक्ष महोदय, डामर की सड़क उसमें बननी चाहिए।

दूसरा एक अर्ज यह करना चाहता हूं, अध्यक्ष महोदय, मेरे निर्वाचन क्षेत्र के अन्दर करीबन 39 ग्राम ऐसे हैं जो नगर परिषद् अजमेर की सीमा में मिला दिये गये हैं। 39 गांव ऐसे हैं जिनका कोई धनी-धोरी नहीं है। दस साल हो गये हैं। अध्यक्ष महोदय, उन गांवों के अन्दर एक हैंडपम्प नहीं लगा, दस साल हो गये हैं, उन गांवों में कोई सड़क नहीं बनी। दस साल हो गये हैं, राज्य सरकार ने चाहे वह नगर परिषद् की तरफ से हो, चाहे पंचायत समिति की तरफ से हो, एक पैसा वहां पर खर्च नहीं किया। मैं आपके माध्यम से सरकार से यह पूछना चाहता हूँ कि उसका धनी-धोरी कौन है? मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि उन गांवों को इस नगर परिषद् की सीमा से निकालिये। काश्तकार नहीं समझता कि किस तरह से नक्शे बनाये जाते हैं, काश्तकार यह भी नहीं समझते कि किस तरह से नक्शे पास कराये जाते हैं, मकान बनाये जाते हैं। वह नगरपालिका और नगर परिषद् के कायदे कानून को समझते नहीं हैं इसलिये मेरा आपसे निवेदन है कि उन गांवों को नगर परिषद् की सीमा से निकाल करके उनमें विकास के काम शुरू किये जायें। जब तक वह नगर परिषद् की सीमा से नहीं निकलें, आप नगर परिषद् को आदेश दीजिये,

(श्री रमजान खां)

सरकार से में निवेदन करना चाहता हूं आपकी मार्फत, अध्यक्ष महोदय, सरकार मे भी कहिये कि उन गांवों के अन्दर भी हैंड-पम्प लगाये। वह लोग भी हमारे प्रदेश के रहने वाले हैं, वह लोग भी हमारे प्रदेश के बाशिन्दे हैं। उन गावों के अन्दर भी सड़कें बनाई जायें, उन गांवों के अन्दर भी रपट बनवाई जायें। उन गांवों के काश्तकारों को भी सम्भालें। अध्यक्ष महोदय, उनके साथ एक बहुत बड़ा अन्याय हो रहा है, यह मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं।

इतना ही कहकर मैं आखिर में महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण की निन्दा करते हुए मेरा स्थान ग्रहण करूंगा।

श्री अध्यक्ष : श्री माणक डाणी।

श्री माणक डाणी (ब्यावर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, महामहिम राज्यपाल जी के अभिभाषण के ऊपर नाथद्वारा से आने वाले भाई श्री सी. पी. जोशी ने जो धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया, मैं उसका समर्थन करना चाहता हूं। मैं इसी के साथ-साथ श्री राजीव गांधी के नेतृत्व की सराहना करना चाहता हूं। इस बात का गर्व है मुझे, स्वर्गीय जयप्रकाश नारायण के समग्र क्रांति के नारे की चकाचौंध के अन्दर इस देश में खूनी क्रांति लाने का श्रेय विपक्षी पार्टी को रहा, उसी क्रांति को मोड़ देने वाले इस देश के युवा नेता श्री राजीव गांधी ने कथनी और करनी के अन्तर को मिटा करके इस बात को सिद्ध करके दिया कि वह युवकों को किस ढंग से मोड़ देकर इस देश के अन्दर अधिक से अधिक स्थान राजनीति के अन्दर और इस देश को आगे लाने में दिला सकते हैं। उन्होंने इस प्रकार का परिवर्तन करके दिखलाया। मुझे गर्व है ऐसी पार्टी पर। मैं उस पार्टी का सदस्य हूं जिस पार्टी ने कथनी और करनी के अन्तर को मिटाया।

मैं निवेदन करना चाहता हूं, विपक्षी दल के एक बहुत बुजुर्ग साथी, बहुत बुजुर्ग सम्माननीय सदस्य, जो यहां पर बैठे हुए हैं, जब ब्यावर पधारे थे तब शिक्षा मंत्री थे। जब वह ब्यावर आये, पत्रकार वार्ता में हमारी उनसे मुलाकात हुई तो उन्होंने इस बात को स्वीकार किया था कि हम इस देश की शिक्षा नीति में असफल सिद्ध हुए हैं। उन्होंने इस देश के अन्दर चरित्र पैदा करने की बात कही थी किन्तु वह इस देश में चरित्र का कोई पाठ्यक्रम लागू नहीं कर पाये। वह लोग, वह विपक्षी पार्टियां, वह सम्माननीय सदस्यगण हमारे सामने ना पक्ष की दीर्घा में बैठे हुये हैं। इस सदन के अन्दर जो सामने बैठे हुए हैं वह कहा करते थे, कथनी और करनी के अन्तर को मिटाने की बात। जिस बात को लेकर वह वोट मांगा करते थे, ब्यावर को जिला बनाने की बात का झूठा नारा दिया करते थे। उसी बात का परिणाम सामने आया। ढाई साल के शासन के दौरान के तत्कालीन मुख्य मंत्री महोदय जब श्री भैरोंसिंह जी शेखावत ब्यावर पधारे तब उन्होंने कहा कि ब्यावर को जिला बनाने की बात मानी नहीं जा सकती, तो आज विपक्षी दल किस प्रकार से यह बात कहा करते हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, राज्यपाल जी के अभिभाषण के तहत इस प्रदेश की

(श्री माणक डागा)

सरकार ने, राजस्थान की इस सरकार ने अपने बहुत ही कार्यक्रम रखे हैं और काफी बातें कही हैं। उसी के सन्दर्भ में मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि हमारे क्षेत्र की समस्या दूसरी है। उन समस्याओं को कई माध्यमों से आपके सामने रखने का मैं प्रयास करूंगा। आपसे कहना चाहता हूं कि ब्यावर की कृष्णा मिल गत 20 माह से बन्द है। कृष्णा मिल को प्रारम्भ करने के लिए राजस्थान सरकार का ध्यान आपके द्वारा आकर्षित करना चाहता हूं। उसके 1600 श्रमिक बेरोजगार हैं। उनके परिवार के लगभग 7 हजार लोग रोजी-रोटी के लिए तड़प रहे हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि इस देश के अन्दर जहां पेय-जल की व्यवस्था कर रहे हैं, जहां नये-नये उद्योग-धन्धे इस देश के अन्दर लगा रहे हैं, राजस्थान सरकार और उद्योगों की मांग कर रही है, वहां मैं सर्वप्रथम निवेदन करना चाहता हूं कि कृष्णा मिल को प्रारम्भ कराने के अन्दर राजस्थान सरकार पहल करे। राजस्थान की मात्र तीन मिलें बन्द हैं उन तीनों मिलों के लिए पहल करे। कृष्णा मिल को प्रारम्भ करायें ताकि 1600 श्रमिकों को रोजगार मिल सके।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मेरे विपक्षी सम्माननीय सदस्य जो यहां बैठे हुये हैं, बहुत बड़ी-बड़ी बातें कही करते थे; ढाई साल के शासन के दौरान। मुझे गर्व है इस बात का, मेरे विपक्षी सदस्य इस बात को महसूस नहीं कर सकते लेकिन मैं कह सकता हूं कि मैं कांग्रेस पार्टी का सदस्य हूं; कांग्रेस संस्था का सदस्य हूं। इस संस्था के लिए विपक्षी पार्टी नहीं कह सकती, सिर्फ मैं ही कह सकता हूं कि मैं कांग्रेस का सदस्य हूं। वह नहीं कह सकते क्योंकि वह विपक्ष में बैठे हैं। वह हमारे यहां से निकल करके गए हैं लेकिन हमारे अन्दर आकर के मिलने का साहस उनमें नहीं है। वह आए तो हम स्वागत कर सकते हैं यहां बैठने के लिए। लेकिन वह बैठ नहीं सकते। मैं उनसे कहना चाहता हूं कि तत्कालीन विदेश मंत्री, जिनकी कोई विदेश नीति नहीं थी, ने इस देश में ढाई साल में कुछ नहीं किया। विदेश नीति में उन्होंने कोई परिवर्तन नहीं किया, वह हमारी विदेश नीति पर ही चले। जब वह विदेश नीति में परिवर्तन करने के लिए चीन गए तो चीन से उनको भाग करके आना पड़ा। यह थीं उनकी नीतियां, यह थे उनके कार्यक्रम। मैं बहुत ज्यादा विस्तार में नहीं जानना चाहता हूं, मैं तो सिर्फ आपसे निवेदन करना चाहता हूं अपने क्षेत्र की समस्या के मामले में, लघु उद्योगों के मामले में। राजस्थान सरकार ने लघु उद्योगों को आमंत्रित करके कई नये लघु उद्योगों का रजिस्ट्रेशन किया है लेकिन इसके लिए राजस्थान सरकार की तरफ से जो सुविधायें मिलनी चाहिए वह 1 अप्रैल, 84 से क्यों बन्द कर दी गई, यह मेरी जानकारी में नहीं आया। मैं, माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं कि ब्यावर के अन्दर प्राइवेट सैक्टर में 3 लघु उद्योग क्षेत्र बनाए गए हैं। पूरे हिन्दुस्तान के अन्दर ब्यावर ही एक मात्र ऐसा शहर है, ऐसा नगर है, जहां तीन लघु उद्योग क्षेत्र प्राइवेट सैक्टर में काम कर रहे हैं। वहां रीको का नया औद्योगिक क्षेत्र बनाया गया है। उस क्षेत्र के अन्दर 25

(178)

(श्री माणक डाणी)

प्रतिशत की छूट रीको ने अगस्त 84 से देने की अपने बुलेटिन के अन्दर घोषणा की थी लेकिन, माननीय अध्यक्ष महोदय, पता नहीं क्या कारण है ब्यावर नगर में ऐसी क्या कमी रही कि वह सुविधायें, जो अगस्त, 84 से देनी रीको की बुलेटिन में डिक्लेयर की गई थी 15 से 25 पर्सेन्ट के बीच की, ब्यावर नगर को देने से इन्कार कर दिया गया। इस बात की जानकारी मुझे नहीं हो पाई।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि रीको के अन्दर ब्यावर में 122 अर्जियां लगी हुई हैं 122 उद्योग प्रस्तावित हो चुके हैं काम करने के लिये, अगर इनको सुविधा मिल जाये तो 122 के 122 उद्योग ब्यावर में लग सकते हैं। राजस्थान का एक बहुत बड़ा लघु उद्योग संस्थान ब्यावर में खुल सकता है।

अध्यक्ष महोदय, मैं इस बात के लिये गर्व महसूस करता हूँ कि राजस्थान सरकार ने अपने पिछले कार्यकाल के अन्दर नाथद्वारा और सागवाड़ा में दो नये उप-खण्डों की स्थापना की, बेहतर प्रशासन बनाने के लिये। इसी क्रम में मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं, क्या कमी है ब्यावर के अन्दर जो ब्यावर को जिला नहीं बनाया जा सकता जबकि आपके पाली, भीलवाड़ा बूंदी, चित्तौड़गढ़, सिरोही; झालावाड़ डिस्ट्रिक्ट से ब्यावर बड़ा है जहां एक लाख की पापूलेशन है। यहां विपक्ष के भी कई माननीय सदस्यगण बैठे हैं और भीम क्षेत्र के विधायक भी यहां हैं इन सबकी राय ली जाये यह सब इस बात के लिये तैयार हैं उदयपुर डिस्ट्रिक्ट से माननीय अध्यक्ष महोदय आप पधारे हैं मैं निवेदन करना चाहूंगा कि भीम क्षेत्र की पंचायत के लोगों को 180 किलोमीटर जाना पड़ता है, ब्यावर मात्र 40 या 45 किलोमीटर के आस-पास होगा। नीमाज और जैतारण तहसील क्षेत्र के लोगों को पाली जाना पड़ता है बहुत लम्बा 80 किलोमीटर का...

एक माननीय सदस्य : सरकार से मनवाओ।

श्री अध्यक्ष : आर्डर, आर्डर, आर्डर प्लीज, माननीय सदस्य।

श्री माणक डाणी : सफर उनको करना पड़ता है ब्यावर उनको मात्र 30 किलोमीटर जाना होगा। इसी प्रकार से बदनौर क्षेत्र का हिस्सा है जहां के लोगों को भीलवाड़ा बहुत दूर जाना पड़ता है, उन्हें ब्यावर बिल्कुल नजदीक रहेगा। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं, माननीय अध्यक्ष महोदय,......

श्री अध्यक्ष : संक्षेप में माननीय सदस्य।

श्री माणक डाणी : कि आप भी ब्यावर को जिला बनाने के लिये भी सहयोग करें।

रीको की जमीन के बारे में, अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन कर चुका हूं और इस बात पर गर्व महसूस करता हूं कि 140 उद्योगों में रीको के माध्यम से राजस्थान में उत्पादन हुआ है, 6343 भू-खण्ड वितरित किये गये हैं। यह राजस्थान सरकार को, कांग्रेस पार्टी को ही श्रेय जाता है अपने शासन के अन्दर जब जब न्यूनतम वेतन बढ़ाने की बात आई तब

(श्री माणक डाणी)

तब कांग्रेस पार्टी ने बढ़ाया। 9 रुपये से 11 रुपये बढ़ोतरी भी कांग्रेस पार्टी ने की। मैं इस बात के लिये भी गर्व महसूस करता हूं कि खनिजों के विकास के लिये अनुसंधान मण्डल की स्थापना की गई। मैं निवेदन करना चाहूंगा, अध्यक्ष महोदय, लघु उद्योग सेवा संस्थान के माध्यम से एक स्कीम बनाई जाये···

श्री अध्यक्ष : संक्षेप में, माननीय सदस्य।

श्री माणक डाणी : अध्यक्ष महोदय, स्टेट गवर्नमेंट ब्यावर में सिरेमिक भट्टी की स्थापना करें। सिरेमिक खनिजों का एक भण्डार है ब्यावर के अन्दर, एशिया का सबसे बड़ा संयंत्र श्री सीमेंट ब्यावर में लगाया गया है। मुझे इस बात का गर्व है कि इसी कांग्रेस के शासन की देन है कि ब्यावर नगर इण्डस्ट्री के क्षेत्र में बढ़ रहा है।

मान्यवर, ब्यावर के खनिज उद्योगों के सर्वेक्षण की रिपोर्ट आपके यहां जा चुकी है। मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि अणु प्रोजेक्ट से विद्युत न मिलने की बात की जा रही है। अध्यक्ष महोदय, मुझे याद है 10 साल मैंने मिल में काम किया है, मैंने विद्युत का संकट कभी नहीं देखा लेकिन जब जनता पार्टी की सरकार थी 1977 से 80 के बीच में, मैं अपनी तारीफ की बात नहीं करता, दिसम्बर, 80 का समय ध्यान है, चुनाव का पीरियड था, जनता पार्टी के शासन के अन्दर पहली बार अणु प्रोजेक्ट बन्द हुआ उसके बाद नियमित रूप से अणु प्रोजेक्ट बन्द होता रहा। क्या तकनीकी खराबी वह छोड़ कर गये, क्या नाराजगी थी उनको इस उद्योग धंधे से, बिजली के मामले में वह यह जानते थे कि उनकी सरकार आने वाली नहीं है इसलिये इस तरह की गड़बड़ी पैदा करवाकर गई कि अणु प्रोजेक्ट आज तक चालू नहीं हो पाया और गड़बड़ी आज तक बराबर चल रही है···

श्री अध्यक्ष : समाप्त करें, माननीय सदस्य।

(व्यवधान)

श्री माणक डाणी : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं मेरी पंचायत समिति, जवाजा के प्रधान विधायक के रूप में यहां पर मौजूद हैं और वह भी इस बात का समर्थन करते हैं, मात्र 22 पर्सेन्ट विद्युतिकरण हुआ है। जवाजा पंचायत समिति विधान सभा क्षेत्र का। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से विद्युत मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं उन्होंने मुझे विश्वास दिलाया है कि 50 पर्सेन्ट विद्युतिकरण तो मैं इस बार करूंगा ही, मैं आपसे कहना चाहता हूं कि अगर मेरे क्षेत्र का विद्युतिकरण हो जाता है···

श्री अध्यक्ष : समाप्त करें, माननीय सदस्य।

श्री माणक डाणी : तो खनिजों के भंडार के आधार पर बहुत बड़ा कार्य हो पायेगा।

एक बहुत बड़ा अहम् मसला है, माननीय अध्यक्ष महोदय, पीने के पानी का। पीने का पानी का कितना बड़ा संकट है ब्यावर में इससे आप परिचित हैं।

(180)

(श्री माणक डाणी)

मुझे गर्व है इस बात का कि राजस्थान सरकार ने और कांग्रेस पार्टी ने अपने घोषणा-पत्र में इस बार कहा है कि सातवीं पंचवर्षीय योजना के अन्दर हम शत-प्रतिशत देहातों में पेयजल उपलब्ध करायेंगे। मुझे इस बात का गर्व है।

सदन की कार्यवाही विधान सभा की बैठक के निर्धारित समय में वृद्धि

श्री गुलाबसिंह शक्तावत (सिंचाई मंत्री) : माननीय अध्यक्ष महोदय, और कई माननीय सदस्य डिबेट में भाग लेना चाहते हैं इसलिए मेरा प्रस्ताव है कि सदन का समय 8.00 बजे तक के लिये बढ़ा दिया जाय।

श्री अध्यक्ष : सदन की अनुमति से सदन का समय 8.00 बजे तक के लिये और बढ़ाया जाता है।

धन्यवाद प्रस्ताव पर वाद-विवाद

श्री माणक डाणी : माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे गर्व है, राजस्थान सरकार पर, मुझे गर्व है इस देश की सरकार पर, मुझे गर्व है कांग्रेस पार्टी पर जिसने अपने घोषणा-पत्र में इस बात की व्यवस्था की है कि हम आगामी सातवीं पंचवर्षीय योजना के अन्दर शत-प्रतिशत देहाती क्षेत्रों में पेयजल उपलब्ध करायेंगे। मुझे गर्व है कांग्रेस पार्टी पर जिसने इस बात की व्यवस्था की कि आने वाली सातवीं पंचवर्षीय योजना में शहरी क्षेत्र में हम स्वच्छ पीने का पानी उपलब्ध करायेंगे। हमने कथनी और करनी का अन्तर मिटाया है। दल-बदल कानून के लिये विपक्षी दल बोलते रहे, ढाई साल का शासन मिला लेकिन उसको लेकर नहीं आ पाये, कांग्रेस पार्टी के इस युवा नेता ने कथनी और करनी के अन्तर को मिटाते हुये दल-बदल कानून इसी सत्र के अन्दर अल्प अवधि में पेश किया और सर्वसम्मति से स्वीकार कराया। यह गर्व की बात है कांग्रेस पार्टी के लिये, कांग्रेस पार्टी के शासन के लिये, इसीलिये मेरा अपना विश्वास यह कहता है कि कथनी और करनी के अन्तर को मिटाते हुये हम लोग, हमारी कांग्रेस पार्टी की सरकार आने वाले पांच साल के कार्यकाल में हमने जो घोषणा-पत्र दिया है, उस घोषणा-पत्र को पूर्णरूप से लागू करेगी। उसी के तहत मैं कहना चाहता हूं, माननीय मंत्री जी, आपसे माननीय अध्यक्ष महोदय के माध्यम से, ब्यावर के पेयजल के संकट को दूर कीजिये, ब्यावर के पेयजल के संकट को हल कीजिये, दुआयें देगी आपको ब्यावर की जनता।

(7.27 सायं)

(श्री गिरिराज प्रसाद तिवारी, सभापति, पदासीन)

आज तक ब्यावर से तीन हजार से ज्यादा वोट से कोई पार्टी जीत कर नहीं आयी लेकिन पहली बार आपका यह सदस्य, कांग्रेस पार्टी का सदस्य, आपके सदन का यह सदस्य 11,661 वोटों से जीत कर आया है। इस बात के लिये जीत कर आया है कि मैंने उन्हें कहा है कि आपकी समस्याओं को विधान सभा में कभी मौका मिलेगा तो मैं कहूंगा। मुझे मौका दिया है इस बात के लिए मैं आभारी हूं आपका। पीने के पानी की जो इस सदन के सामने एक गम्भीर समस्या है, इसे सभी

(श्री माणक डाणी)

मिलकर हल करेंगे और ब्यावर के जल संकट का समाधान करेंगे।

श्री रमजान खां : इस गर्मी में ही शुरू किया जाय।

श्री माणक डाणी : इसके लिए, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि ब्यावर में टैंकर और हैण्ड पम्प की व्यवस्था तत्काल की जानी चाहिये। बीसलपुर योजना का कार्य जो चल रहा है उसे निश्चित तौर पर पूरा किया जाना चाहिये। निमाज में जो पानी नहीं मिल रहा है उसके लिये सेंदड़ा से लेकर निमाज तक 33 के. वी. की एक शहरी विद्युत लाइन डाली जानी चाहिये ताकि जो रूरल फीडर लगा हुआ है वह विद्युत के अभाव में बारबार बन्द नहीं हो और ब्यावर का पेयजल संकट सदा-सदा के लिए दूर हो जाय।

मैं इसी के साथ, माननीय सभापति महोदय, आपके माध्यम से निवेदन करना चाहूंगा कि 3 करोड़ 42 लाख की एक स्कीम ब्यावर के पी. एच. ई. डी. से भेजी हुई है। राजस्थान सरकार ब्यावर के पेयजल संकट को दूर करे। ब्यावर एक लाख की पापूलेशन वाला ऐतिहासिक नगर है जिसने स्वतंत्रता आन्दोलन को जन्म दिया है। स्वतंत्रता आन्दोलन के अन्दर ब्यावर नगर ने एक ऐतिहासिक भूमिका निभाई है। इस देश का प्रत्येक नौजवान, जो उस समय आजादी की लड़ाई में सहायक सिद्ध रहा, चाहे किसी का नाम ले ले, इस ब्यावर नगर की पवित्र धरती से पवित्र होकर गया है। मैं उसी जन्मभूमि से आया हूं, उसी भूमि में मैं जन्मा हूं। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि मुझे गर्व है कि ऐसी जन्मभूमि ने मुझे जन्म दिया है जिसने देश की आजादी की लड़ाई का नेतृत्व किया। मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि उसके पेयजल के संकट का समाधान करें और ब्यावर के पेयजल के लिए जो 3 करोड़ 42 लाख की योजना है उसको आप शीघ्र स्वीकृत करायें।

सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से आवासन मण्डल की उस स्कीम के लिए भी कहना चाहूंगा जो जनता पार्टी की सरकार ने एक बार लागू करने की घोषणा कर दी लेकिन क्या करें दुर्भाग्य रहा उस पार्टी का कि वह अपने कार्यकाल में उसको लागू नहीं कर पायी। मुझे गर्व है उस पार्टी की सरकार पर जिसने अपने कार्यकाल के अन्दर उस की हुई घोषणा को पूरा नहीं किया, उस अधूरे छोड़े हुए कार्य, जिसके लिए वह सक्षम नहीं थे, पूरा करके दिखाया मेरी पार्टी ने, मेरी कांग्रेस पार्टी की सरकार ने।

निःशुल्क भू-आवंटन की बात राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में कही गई है। मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि ब्यावर के अन्दर भी इसी प्रकार की एक योजना दो साल पहले नगर परिषद् द्वारा लागू की गई थी लेकिन उनको पट्टे नहीं मिले हैं। मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहूंगा सभापति महोदय, उनको पट्टे दिलाये जाने की व्यवस्था करायें।

मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं, सभापति महोदय, शैक्षणिक, सामाजिक और आर्थिक विकास के बारे में भी राज्यपाल

(श्री माणक डाणी)

महोदय ने इस अभिभाषण में कहा है। मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि ब्यावर में छात्रों के लिये एक पृथक् कॉलेज खोला जाय, ब्यावर में एक पोस्ट ग्रेजूएट कॉलेज है, ब्यावर के अन्दर एल. एल. बी. की क्लासेज चल रही हैं। ब्यावर में एम. ए. हिन्दी की और कई प्रकार की क्लासेज चल रही हैं उनका विकास करें। मैं एक बात और निवेदन करना चाहता हूं कि यह ब्यावर के एस. डी. गवर्नमेन्ट कॉलेज का एक सौभाग्य हैं कि प्रति वर्ष राजस्थान को एक या दो स्वर्ण पदक विजेता और कम से कम पांच या दस पोजिशन होल्डर देता है। गुणात्मक परिवर्तन की बात हमारे साथियों ने कही उस दृष्टि से देखें, तो आज ब्यावर में अधिक से अधिक व्यक्ति स्वर्ण पदक प्राप्त करके निकलते है। ब्यावर के अन्दर छात्राओं के पृथक् कॉलेज की आवश्यकता है।

इसी के साथ-साथ में यह भी निवेदन करना चाहता हूँ कि जो स्कूल खोले गये हैं उनमें वास्तव में टीचर्स का अभाव है इसलिये उनमें टीचर्स की व्यवस्था की जानी चाहिये, इस बात से मैं सहमत हूं। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि जो स्कूल खोले गये हैं उनमें अध्यापकों की व्यवस्था की जानी चाहिये। जवाजा के प्रधान जी जो बी. जे. पी. के, चुनाव के पहले उन्होंने कहा था लेकिन अब मैं वहां से एम. एल. ए. हूं जहां से वे प्रधान रहे हैं, एक बात कहना चाहता हूँ हमारे क्षेत्र का विकास काफी हुआ है लेकिन मगरा कई दृष्टिकोण से उपेक्षित रहा है, अब उस मगरा का विकास किया जाना चाहिये।

प्रौढ़ शिक्षा के अन्दर राजस्थान सरकार ने 30 हजार प्रौढ़ों को शिक्षित करने का अपना लक्ष्य पूरा किया है। इस बात का हमें गर्व है कि सन् 1983-84 में राजस्थान सरकार को अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में अच्छे कार्य किये जाने पर भारत सरकार ने 25 लाख का पारितोषिक दिया। यह भी कोई कम बात नहीं है यह भी उपलब्धि है राजस्थान सरकार की, जिस पर मैं गर्व कर सकता हूं।

श्री सभापति: माननीय सदस्य।

श्री माणक डाणी : माननीय सभापति महोदय, एक मिनट में अपनी बात समाप्त कर दूंगा।

माननीय सभापति महोदय, राजस्थान सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में डिस्पेन्सरी एड पोस्ट, चिकित्सालयों की व्यवस्था की है। मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि पंचायत समिति क्षेत्र जवाजा और दूसरी पंचायत समिति के अन्दर आप उदयपुर से आगे देवगढ़ तक चलें, ब्यावर तक आयें तो आपको कहीं 10 या 15 बैड का अस्पताल नहीं मिल सकता है। आज 80-80 किलोमीटर से आपके जैतारण, पाली डिस्ट्रिक्ट, उदयपुर डिस्ट्रिक्ट और नागौर डिस्ट्रिक्ट से लोग ब्यावर में आते हैं और यहां आकर अपना इलाज करवाते हैं। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि जवाजा के अन्दर एक रेफरल चिकित्सालय खोला जाय अगर रेफरल चिकित्सालय की इस बजट में व्यवस्था नहीं हो, तो वहां कम से कम 20 या 25 बैड के हॉस्पिटल की व्यवस्था की जाय। वहां पर इस प्रकार का अस्पताल बनाया जाय

(श्री माणक डाणी)
तो इसके लिये वहां के दानदाता बिल्डिंग बनाने को तैयार हैं डेढ़ लाख की बिल्डिंग हमारी बनी हुई तैयार है। मैं निवेदन करना चाहता हूं, आप जवाजा के अन्दर इस प्रकार की व्यवस्था करें ताकि जो मरीज चिकित्सा के अभाव में मरीज ही रह जाते हैं वह नहीं रहें।

पर्यटकों को आकर्षित करने के उद्देश्य से राज्य में मेलों और त्यौहारों के साथ-साथ राज्य से बाहर भी पर्यटन विभाग ने बहुत सारे कार्य अपने हाथ में लिये हैं। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूँ कि दुदालेश्वर के लिये राजस्थान सरकार ने···

(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य।

माणक डाणी : माननीय सभापति महोदय, एक-आध मिनट में अपनी बात समाप्त कर दूंगा। अन्तिम रूप से मैं आपसे कहना चाहूंगा कि हमारा विपक्षी दल यहां बैठकर जिस प्रकार की बातें कर रहा है, बाहर बैठकर भी वह इसी प्रकार की अजीबो गरीब बातें करता है। आज देश में समस्या चाहे असम की हो, चाहे पंजाब की हो, छेड़ तो यह लोग कर आते हैं, अकालियों से मिलकर सरकार यह बनाते है और दिक्कत हमारी जान को छोड़ जाते हैं। यह तो ढाई साल शासन करके चले गये और भुगतना हमें पड़ रहा है·······

(व्यवधान)

इस प्रकार बीच-बीच में बोल-बोल करके··········

श्री सभापति : माननीय सदस्य। माननीय सदस्य।

(व्यवधान)

श्री माणक डाणी : लेकिन हम बहुत उत्साहित हैं। हम में काम करने की क्षमता है यह नौजवानों की जो टीम आई है यह काम करके दिखा जायेगी।

(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य। माननीय सदस्य, कृपया समाप्त करें।

श्री माणक डाणी : पर्यटकों के मामले में, माननीय सभापति महोदय,···

(व्यवधान)

यह जितना मुझे टोकेंगे उतनी बातें मैं इनके लिये कहूंगा। सभापति महोदय, मैं एक मिनट में अपनी बात समाप्त कर दूंगा।

(व्यवधान)

दुदालेश्वर, टाटगढ़ पहाड़ पर स्थित है। इसके साथ अजमेर जिले का भी हृदयस्थल है इसलिये पर्यटन का विकास करने की दृष्टि से आप इसमें योगदान कीजिये। आप उस क्षेत्र के अन्दर पर्यटन विभाग से डवलपमेंट करायें, यह बात मैं आपसे कहना चाहता था।

मैं बहुत-बहुत आभारी हूं, आपने मुझे बहुत समय दिया। 5-6 बिन्दु मैं आपके सामने रखना चाहता था परन्तु अन्त में मैं एक बात कहकर अपनी बात समाप्त करता हूं···

श्री सभापति : माननीय सदस्य ! माननीय सदस्य ।

श्री माणिक डागो : एक सैकिण्ड में अपनी बात समाप्त कर दूंगा ।

इस देश में पहली बार 50 प्रतिशत युवा मतदाताओं को अपने मताधिकार का मौका मिला । देश के अन्दर 1947 की आजादी के बाद वोट के अधिकारी हैं तो युवा हैं और युवकों ने पहली बार इस देश के अन्दर अधिक से अधिक नौजवानों को चुनकर के भेजा है । बहुत बहुत धन्यवाद । सभापति महोदय, मैं···

(व्यवधान)

एक लाइन में और कहना चाहता हूं, कृषि के संबंध में । गांवों में जो स्कूलें खोली जाय जो सबजेक्ट खोले जायं वह कृषि प्रधान होने चाहियें ताकि वहां के स्टूडेन्ट्स उनको पढ़ सकें और कृषि में पारंगत हो सकें । वह नौकरियों के लिये भागता नहीं फिरे, वहीं पर रहकर खेती कर सकें, यही बात मैं कहना चाहता हूं । इसी के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं ।

बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री सभापति : माननीय सदस्य, जरा समय का ख्याल रखेंगे ।

माननीय श्री भंवरा राम !

श्री नत्थी सिंह : सभापति महोदय, हमें भी समय दिया जाय ।

श्री सभापति : हिसाब से ज्यादा दिया जा रहा है ।

श्री नत्थी सिंह : कहां दिया जा रहा है ? दिया ही नहीं गया ।

(व्यवधान)

श्री सभापति : दिया जा रहा है चार्ट सामने रखा है । ज्यादा टाइम दिया है ।

श्री भंवरा राम ।

श्री भंवरा राम (डीडवाना) : माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर माननीय सदस्य, सी. पी. जोशी द्वारा सदन में पेश किये गये धन्यवाद प्रस्ताव, जिसका समर्थन माननीय सदस्य गिरिराज प्रसाद तिवारी ने किया है, पर मैं आपके माध्यम से कुछ मेरे विचार सदन के सामने व्यक्त करना चाहता हूं ।

माननीय सभापति महोदय, कानून और व्यवस्था की स्थिति बहुत सन्तोषजनक रही है । महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में यह कहा गया कि लोक सभा और विधान सभाओं के जो चुनाव हुए वे बहुत ही शांतिपूर्ण वातावरण में हुए । मैं, माननीय सभापति महोदय, आपका ध्यान नागौर जिले की ओर आकर्षित करना चाहता हूं । आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं कि दिनांक 23-3-85 को सायंकालीन समाचार जगत में एक समाचार प्रकाशित हुआ, उसके अन्दर पेज नम्बर 3 में लिखा है, इनको तो वोट देने पर पानी बन्द । माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से इस सदन को यह जानकारी देना चाहता हूं कि नागौर जिले में मेड़ता निर्वाचन क्षेत्र और डेगाना निर्वाचन क्षेत्र में 95 प्रतिशत

(श्री भंवरा राम)

मतदान हुआ है, वह 95 प्रतिशत मतदान एक तरफा हुआ है। मैं समझता हूं कि आज के इस प्रजातन्त्र के अन्दर हिन्दुस्तान के अन्दर शायद पहले ही यह दो ऐसे निर्वाचन क्षेत्र हैं जहां ऐसा हुआ है। या तो जियाउलहक को पाकिस्तान के अन्दर 95 या 96 प्रतिशत मत मिले हैं या अयातुल्ला खुमैनी को। जिस स्थिति में मिले हैं वही स्थिति मेड़ता और डेगाना में हुई है। उसके बाद की जो स्थिति बनी हुई है, नागौर जिले के अन्दर, मैं तो यह कहता हूं यहां से माननीय विपक्षी सदस्य और पक्ष के सदस्यों का एक दल या कमेटी गठित करके नागौर जिले में भेजी जाय जो उसका अध्ययन करें। माननीय सभापति महोदय, आपके माध्यम से निर्वाचन आयोग को मेरी ओर से निवेदन करना चाहता हूँ, जहां पोलिंग 98 पर्सेन्ट और 95 पर्सेन्ट हुआ हो, वहां के चुनाव की समीक्षा कराई जाकर दुबारा चुनाव करवाये जायं। चुनाव के बाद जो स्थिति वहां पर है उसके लिये मैं आपसे यही निवेदन करना चाहता हूं कि वहां पर दलित मजदूर किसान पार्टी के नेता.....

एक माननीय सदस्य : यह बात यहां क्यों कही जा रही है ?

श्री भंवरा राम : माननीय सभापति महोदय मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूँ कि वहां जो मौजूदा स्थिति बनी हुई है और जो चुनाव के दौरान हुआ है विपक्षी सदस्य गड़बड़ जिस हिसाब से करते हैं उसके बारे में निवेदन करना चाहता हूं। मैं इस संबंध में ज्यादा न कह कर यही निवेदन करूंगा कि सदन के सदस्यों की एक कमेटी का गठन करके जो मौजूदा हालात है उनका अध्ययन किया जाय, उनका जायजा लिया जाय। उसके बाद में जैसा सही आपको लगे वैसा निर्णय लिया जाय।

माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से व्यवस्था चाहता हूं सिंचाई और कृषि के सम्बन्ध में। जहां तक सिंचाई और कृषि का सम्बन्ध है, अपने राजस्थान में खुश्क खेती कम होती है। उसका तो सारा कुदरत पर भरोसा है और सिंचाई का ताल्लुक है ऊर्जा से। राजस्थान के अन्दर जो सिंचाई होती है वह नहरों और छोटे-मोटे बान्धों से होती है लेकिन 60 पर्सेन्ट से ज्यादा सिंचाई हमारे यहां कुओं के द्वारा होती है। कुओं को जो बिजली दी जाती है उसमें विद्युत् मण्डल के जो नियम बने हुए हैं, प्रायोरिटी बेसिस, उसमें एक तो शिड्यूल्ड कास्ट को प्रायोरिटी दी जाती है और दूसरी लघु और सीमान्त काश्तकारों को माननीय सभापति महोदय, मन्त्री महोदय से निवेदन करना चाहता हूं आपके माध्यम से कि लघु और सीमान्त काश्तकार और शिड्यूल्ड कास्ट्स पर्सेन्टेज के हिसाब से कोटा तय कर दिया जाय। जो नियम से कनेक्शन दिये जा रहे हैं कुओं को वह बहुत ही गलत ढंग से दिये जा रहे हैं। पश्चिमी राजस्थान के अन्दर जहां कि पानी 100-100, 150-150 फीट गहरा है वहां कोई भी काश्तकार 10 बीघा सीमा के अन्दर अपना कुंआ नहीं बनाता है। उनको बिजली लेनी है, कुये पर कनेक्शन लेना है। बड़े काश्तकार 50 बीघा, 60 बीघा, 40 बीघा और मिनिमम 30 बीघा से नीचे किसी भी खेत पर कुंआ नहीं मिलेगा। खाली कनेक्शन लेने के लिये काश्तकार

(186)

(श्री भंवरा राम)

को अपना छोटा खाता करवाना पड़ता है। छोटा काश्तकार को खाता करवाने के बाद में भी बैंक से लोन लेने के लिये दिक्कत होती है तो जो नियमों के अन्दर प्रावधान हैं उनको बदलना बहुत जरूरी है।

माननीय सभापति महोदय, आपके माध्यम से मेरा दूसरा निवेदन पशुपालन से सम्बन्धित है। पश्चिमी राजस्थान में गांवों के अन्दर ग्रामीण काश्तकार और गरीब के लिये खासतौर से पशुपालन का धन्धा इन्कम का माध्यम है। दिन-प्रतिदिन जनसंख्या बढ़ती जा रही है, जमीन वह की वह है। पहले व्यवस्था थी गांवों के अन्दर कि कुछ जमीन काश्तकार जुताई कर लेते थे और कुछ जमीन पशुओं के चरने के लिए छोड़ देते थे। अब दिन-प्रतिदिन हालत यह होती जा रही है कि जमीन बहुत कम रहती है जमीन के टुकड़े होते जा रहे हैं खासतौर से पशुधन का यूनिट कम होता जा रहा है। पशुधन के स्वास्थ्य के लिये पशु चिकित्सा और भेड़ चिकित्सा दो तरह की व्यवस्था है। माननीय सभापति महोदय, आपके द्वारा मैं निवेदन करना चाहता हूं कि तहसील हैडक्वार्टर्स पर जितने पशु चिकित्सालय हैं, और भेड़ों के चिकित्सालय हैं उनकी उपयोगिता नहीं के बराबर है। जैसे एक चल पशु चिकित्सा इकाई अपने यहां कायम है उसका मुख्यालय तहसील हैडक्वार्टर पर है जबकि 80 परसेन्ट से ज्यादा, यहां तक मैं कहूंगा कि 95 परसेन्ट से ज्यादा पशु गांवों के अन्दर रहता है। एक यूनिट के अन्दर दो डाक्टर और कम से कम 10 कम्पाउण्डर हैं, उन कम्पाउण्डरों को ग्रामीण क्षेत्रों में लगा दिया जाय। जिस किसी भी काश्तकार की या पशुपालक की भेड़ बीमार होगी तो वह भी उसको तहसील हैडक्वार्टर पर नहीं ले जायेगा। जिसकी कोई गाय या भैंस बीमार होगी तो बीमारी की हालत के अन्दर वह वहां तक पहुँचेगी नहीं। ट्रैक्टर के अन्दर वह ले जायेगा तो उसका किराया 200-300 रुपये लगेगा माननीय सभापति महोदय, आपके द्वारा मैं यह निवेदन करना चाहता हूँ, यह सुझाव रखना चाहता हूं कि जो पशु चिकित्सा इकाइयों के चिकित्सक हैं और भेड़ पालन और ऊन प्रसार अधिकारी हैं दोनों के अन्दर समानता है। दोनों को एक कर दिया जाय। एक करके उनके जितने भी कम्पाउण्डर हैं उनको हर पंचायत हैडक्वार्टर या दो पंचायत हैड-क्वार्टर के बीच लगा दिया जाय ताकि काश्तकारों और पशुपालकों को उसका फायदा मिल सके।

दूसरा, मैं निवेदन करना चाहता था कि पशु मेले पश्चिमी राजस्थान के अन्दर लगते हैं, खासतौर से, नागौर के अन्दर मेड़ता, नागौर और परबतसर में राज्य सरकार या पशुपालन विभाग द्वारा मेले संचालित किये जाते हैं उनमें पीने के पानी का सवाल है। पशु मेलों में नागौर जिले से, पश्चिमी राजस्थान से खरीदे हुए जो पशु राजस्थान से बाहर जाते हैं उनसे टैक्स के रूप में राज्य सरकार को करोड़ों रुपये की आय होती है। उन मेलों के अन्दर अभी तक पीने के पानी की व्यवस्था नहीं के बराबर है जो राज्य सरकार और विभाग के जिम्मे है।

दूसरा मेन जो मुद्दा है, हमारे परबतसर की नागौरी नस्ल का मेला

(श्री भंवरा राम)

सबसे बड़ा पशु मेला है उस नागौरी नस्ल के पशु मेले का नाम वीर तेजाजी पशु मेला है, वीर तेजाजी के मन्दिर का जो प्रसाद चढ़ता है मेले के दौरान, उसकी नीलामी होती है विभाग के द्वारा माननीय सभापति महोदय, आपके द्वारा मैं यह निवेदन करना चाहता हूं, सम्बन्धित मन्त्री महोदय से, आज तक उस मन्दिर, जिसके प्रसाद की नीलामी विभाग के द्वारा होती है, की न तो मरम्मत हुई है और न ही उसके अन्दर कोई निर्माण कार्य ही हुआ है तो आपके माध्यम से मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि इसके लिये कोई ट्रस्ट बना दिया जाय। भगवान के प्रसाद की नीलामी होती है फिर भी इस मन्दिर के ऊपर एक पैसा आज तक भी खर्च नहीं हुआ है, यह बहुत ही दुर्भाग्य का विषय है। जो हमारे वर्किंग के अध्यक्ष हैं, माननीय नाथूरामजी मिर्धा कृषि मन्त्री रह चुके हैं, पशुपालन मन्त्री भी रह चुके हैं लेकिन उनसे यह व्यवस्था आज तक नहीं हुई है।

एक माननीय सदस्य : अब तो करवा लो।

श्री भंवरा राम : माननीय सभापति महोदय, दूसरा, मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं, शिक्षा के सम्बन्ध में। शिक्षा में समानता का जहां तक सवाल है, अपने देश के अन्दर जो शिक्षा पद्धति है वह तो बहुत बढ़िया है, लेकिन जो समान व्यवस्था का सवाल है, अरबन एरिया और गांवों के अन्दर उस व्यवस्था में भारी डिफरेन्स है। पर्सन्टेज के हिसाब से थोड़ा बहुत लगना चाहिये। कम्पीटिशन के जो पेपर्स होते हैं, कम्पीटिशन के जितने भी एग्जाम होते हैं वह तो समान होते हैं। कहां एक जयपुर में पढ़ा हुआ लड़का जहां मॉण्टेसरी स्कूल, इंगलिश स्कूल और बड़े-बड़े लोगों से शिक्षा ग्रहण की व्यवस्था है और कहां एक ग्रामीण लड़का जिसकी प्राथमिक एजूकेशन में ही 100 बच्चे और एक अध्यापक लगा हुआ है। वह आगे जाकर पर्सन्टेज के हिसाब से, कम्पीटिशन के हिसाब से उन लड़कों से पिछड़ जायेगा। इसी के कारण से, गांवों के अन्दर आज शिक्षित बेरोजगारों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। आज न तो वे खेती करने के लायक रहे हैं, न वह नौकरी या सर्विस के लायक रहे हैं और न इतनी जमीन है। ऊंची शिक्षा लेकर गांव के अन्दर जाकर कई लोग कृषि में नया माध्यम अपना चुके हैं। तो जमीन तो वह की वह है। माननीय सभापति महोदय, आपके माध्यम से......

श्री नत्थी सिंह : बढ़े हुए समय में से विपक्ष को क्या कोई समय नहीं मिलेगा? बढ़े हुए समय में से क्या विपक्ष को कतई समय नहीं मिलेगा?

श्री भंवरा राम : माननीय सभापति महोदय, दो मिनट।

माननीय सभापति महोदय, राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम के बारे में मैं आप से निवेदन करना चाहूंगा कि जब त्योहार और सावे आते हैं, बड़े त्योहारों और सावों के अवसर पर खासतौर से, आखातीज, राम नवमी, पीपल पूनम के अवसर पर अतिरिक्त बसों की व्यवस्था की जाय।

(श्री भंवरा राम)

बड़े-बड़े बस स्टैण्ड पर सवारियां हो जाती हैं और रात को बस का टाइम होता है 6 बजे तक, उसके बाद में कोई बस जाती नहीं। प्राइवेट बसों में जैसी व्यवस्था है इसी तरह यदि पर्याप्त सवारियां हो जायं तो उनको यथास्थान पहुँचाने की निगम के द्वारा व्यवस्था होनी चाहिए।

माननीय सभापति महोदय, मैं डीडवाना क्षेत्र से निर्वाचित होकर आया हूं, वहां पर नमक की झील बनी हुई है। राजस्थान के अन्दर दो ही नमक उत्पादक क्षेत्र हैं, एक तो डीडवाना और दूसरा पचपदरा। उन पर गवर्नमेन्ट का नियन्त्रण है। गवर्नमेन्ट नमक खरीदती है राजस्थान के अन्दर जो नमक उत्पादन के क्षेत्र हैं वहां का नमक टैक्स फ्री है। एक निश्चित एरिया के ऊपर एक निश्चित कर लगा दिया जाय जिससे वहां के नमक उत्पादकों को तकलीफ न हो और वह माल पैदा करने वाले जो नमक उत्पादित करने वाले, अपना माल सही कीमत पर मार्केट में बेच सकें और उसको उचित मुनाफा मिल सके। राज्य सरकार के नियन्त्रण से जो नमक उत्पादक हैं उनको नमक उत्पादन के अन्दर तकलीफ हो रही है। खासतौर से पिछड़े को पहले कार्यक्रम में गरीबों को जो क्यारियां अलाट की गई थीं, इस व्यवस्था के तहत..........

श्री सभापति : माननीय सदस्य, कृपया एक को मौका और। एक माननीय सदस्य को मौका और मिलेगा।

श्री भंवरा राम : एक मिनट और कह दूं। माननीय सभापति महोदय, मैं आपसे थोड़ा सा निवेदन करूंगा। आपसे एक मिनट के लिए पंचायत राज के बारे में....

(व्यवधान)

श्री चुन्नीलाल इन्दलिया (नोखा) : सभापति जी, एक व्यवस्था का प्रश्न है। माननीय सभापति जी, व्यवस्था का प्रश्न है।

(व्यवधान)

श्री सभापति : कृपया इस समय व्यवस्था का प्रश्न न उठायें।

श्री चुन्नीलाल इन्दलिया : माननीय सभापति जी, इस व्यवस्था के प्रश्न को सुनना चाहिए आपको। मेरा व्यवस्था का प्रश्न यह है कि आसन जो है सत्ता पक्ष से बहुत ज्यादा प्रभावित है और हम विरोधियों को, सुबह से हम उठ बैठ कर रहे हैं हमें समय नहीं दिया है। इस बात पर मैं सदन से वाक आउट करता हूं।

(बहिर्गमन)

श्री भंवरा राम : माननीय सदस्य, आप विराजिये। आपको एक मिनट के बाद में मौका दे दिया जायेगा। माननीय सदस्य, एक मिनट के बाद में मौका दे दिया जायेगा।

(व्यवधान)

श्री नत्थी सिंह : बढ़ा हुआ समय भी आपको ही दे दिया। टोकते ही नहीं हैं।

श्री सभापति : माननीय सदस्य, कांग्रेस पार्टी का टाइम 5 घन्टा 40 मिनट, बी. जे. पी. का एक घन्टा 35 मिनट, दमकिपा का एक घन्टा 13 मिनट। और कितना समय चाहते हैं? हिसाब से देखा जाय तो दोनों पार्टियों को समय मिला है।

श्री नत्थी सिंह : कहां दिया है ? जो क्रम दिया था, आपने तो वह क्रम भी तोड़ दिया । हमने रिक्वेस्ट की कि समय बढ़ावें और उसके बाद जब समय ही नहीं दे रहे..........

(व्यवधान)

श्री दिग्विजय सिंह : कांग्रेस को 5 घन्टे ही मिले क्या ?

श्री बुलाकीदास कल्ला : कांग्रेस पार्टी को 5 घन्टे 40 मिनट का समय दिया गया था उसमें से करीब करीब आधे से ज्यादा समय उनको मिला है, आधा समय हमारा बाकी है ।

(व्यवधान)

श्री सभापति : शान्त रहें कृपया । चांस मौजूद है ।

श्री नत्थी सिंह : आप अगर इन्हीं को बुलाना चाहते हैं तो हम क्यों बैठे रहें यहां पर ?

श्री सभापति : आपके साथ अन्याय नहीं होगा ।

श्री नत्थी सिंह : कांग्रेस पार्टी के लोग ही बोलेंगे और कोई नहीं बोलेगा इनके सिवाय ।

श्री सभापति : कृपया जल्दी समाप्त करें ।

श्री भंवरा राम : माननीय सभापति महोदय, पंचायत राज से सम्बन्धित कुछ बातें आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं । पंचायत राज महात्मा गांधी का एक बहुत बड़ा सपना था ।

श्री सभापति : कृपया समाप्त करें ।

श्री भंवरा राम : एक मिनट में, मेरा एक छोटा सा निवेदन है ।

जनता के द्वारा सीधा चुनाव होता है पार्लियामेंट के मेम्बर और विधान सभा के मेम्बर का, उसी तरह से सरपंच का सीधा चुनाव होता है जनता के द्वारा । जिस प्रकार पार्लियामेंट के मेम्बर और विधान सभा के मेम्बर के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव नहीं आ सकता उसी प्रकार ऐसी व्यवस्था की जावे कि सरपंच के खिलाफ भी अविश्वास का प्रस्ताव नहीं आवे । क्योंकि सरपंच भी उसी प्रकार से चुन कर आता है, डायरेक्ट चुन कर आता है जिस प्रकार से पार्लियामेंट का मेम्बर और असेम्बली का मेम्बर चुनकर आता है । इसलिए ऐसी व्यवस्था की जावे ।

श्री सभापति : कृपया समाप्त करें ।

श्री भंवरा राम : माननीय सभापति महोदय, आपने मेरे को समय दिया और माननीय सदस्यों ने मेरे को सुना इसके लिए बहुत बहुत धन्यवाद ।

श्री सभापति : माननीय नारायणराम बेड़ा ।

श्री नारायणराम बेड़ा (भोपालगढ़) : आदरणीय सभापति महोदय, 20 तारीख को राज्यपाल महोदय द्वारा जो अभिभाषण पढ़ा गया था, जो एक लेखा जोखा राजस्थान के सदन में पेश हुआ उसमें सबसे पहले कानून और व्यवस्था का प्रश्न आया । कानून-व्यवस्था के प्रश्न में स्थिति संतोषजनक बताई लेकिन हम लोग स्थिति

(श्री नारायणराम बेड़ा)

को संतोषजनक नहीं मानते । क्यों ? इसका कुछ मुद्दा भी आपके सामने प्रस्तुत करना चाहता हूं । राज्य सरकार दूसरे प्रान्तों की तुलना की दृष्टि में जरूर संतोष कर सकती है मगर वास्तव में देखा जाये तो यहां जो असामाजिक तत्व हैं उनके द्वारा जो भी कोई घटना की जाती है उस घटना के घटित होने के पहले राजस्थान का प्रशासन कोई भी प्रिवेन्टिव एक्शन नहीं लेता है । वैसे राजस्थान की जनता शुरू से शांतिप्रिय रही है इसलिए ज्यादातर यह वाकिये हुए नहीं और जो भी वाकिये हुये या जो कुछ भी घटनायें हुई उसके पहले प्रिवेन्टिव एक्शन कभी भी हमारी पुलिस द्वारा नहीं लिया गया । दूसरा, एक उदाहरण 10 फरवरी, 1985 का मैं देना चाहता हूं । हमें मालूम है कि हमारी प्रिय नेता प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को सुरक्षा की कमी की दृष्टि से हमने खो दिया । एक हमारी अच्छी प्रिय नेता, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की नेता को तो हमने खोया और दूसरे, जिन्हें हम सभी युवा साथी कहते हैं कि हमारे युवा सम्राट हैं वह राजस्थान आए 10 फरवरी, 1985 को । उस दिन पुलिस मीट थी । उस वक्त के हालात देखें । राजस्थान की पुलिस, कानून व्यवस्था की स्थिति से हम यह मानते हैं कि यह दूसरा टीका हम पर लग सकता था । पहले प्राइम मिनिस्टर, प्रधान मंत्री को मारने के बाद कानून-व्यवस्था और सुरक्षा की दृष्टि से जो कमी थी उससे यह दूसरा टीका हमारे राजस्थान के लोगों पर लग सकता था क्योंकि पुलिस ने लाइट की व्यवस्था नहीं की थी । जिस ढंग से लाइट की, टार्गेट बनाया गया प्रधान मंत्री को, चारों तरफ से लाइटें की जीपों से और जीपों से लाइट करके उसको दिखाया गया । पब्लिक कोई देख नहीं सके, प्रधान मंत्री देख नहीं पायें । मारने वाला या हरकत करने वाला अगर कोई व्यक्ति वहां होता तो इसमें कोई शक नहीं कि प्रधानमंत्री को मारने की घटना वहां घटित हो सकती थी । अब हम कानून-व्यवस्था की कहां तक बात करें । जिस सरकार का राज प्रधान मंत्री को सुरक्षा-व्यवस्था नहीं कर सकता, तो मैं पूछना चाहता हूं, सभापति महोदय, हम जो गांव में दूर दराज ढाणियों में बैठे हैं उनकी सुरक्षा व्यवस्था का तो प्रश्न ही नहीं है और उसकी आशा करना भी बेकार है ।

सभापति महोदय, हम चुनकर आये हैं इसलिये हमारा कुछ नैतिक दायित्व भी है जो कुछ घटनायें हमारे क्षेत्र में हुई वह भी मैं आपको बताना चाहता हूं । राजा मानसिंह का काफी जिक्र कर चुके हैं पूनासर गांव जो एक छोटा सा गांव है, में हत्या भी हुई और डकैती भी । घाणा मगरा में साठ वर्ष के बूढे और बूढी दो ही थे, दोनों को मार दिया गया । उनके यहां डकैती हुई उसका आज तक सुराग भी मालूम नहीं हुआ कि किसने मारा, क्या किया ? तीसरी, अभी फरवरी की बात है, राह चलते एक औरत को लूटा गया । उसको लूट कर ले गए उनका मालूम पड़ा नहीं । मुकदमा दर्ज हुआ उसका भी मालूम नहीं । तो मैं यह पूछना चाहता हूं जो प्रधान मंत्री की सुरक्षा नहीं कर सकते वह आम जनता और आम सदस्य महोदय की सुरक्षा कैसे कर सकते हैं, यह हमारे सोचने की बात है । यह तो रही कानून-व्यवस्था की बात ।

(श्री नारायणराम बेड़ा)

अब कानून-व्यवस्था के बाद में पेय जल पर आना चाहता हूं। जैसा आपको इस अभिभाषण में बताया कि 24 हजार गांव समस्याग्रस्त थे और 17738 गांवों में हमने समस्या का समाधान कर दिया। मैं आपको एक उदाहरण देकर बताना चाहता हूं, हमारे जोधपुर क्षेत्र में पालड़ीसिद्धा की एक समस्या है। पालड़ी-सिद्धा की एक योजना बनी हुई है, ट्यूबवैल पर ओवरहैड टैंक बना कर 15 गांवों में पानी देने की यह क्षेत्रीय जल योजना है। खेड़ी सालवा और पीपाड़ रोड में सन् 71 में आपने पाइप डाले थे किन्तु आज तक एक बूंद भी पानी नहीं गया शहर में, इस योजना से। क्या कहेंगे इस योजना को ? 71 में पाइप डाले गये और आज तक पानी की बूंद तक नहीं गई।

दूसरी चार तरह की जल योजनायें बनाई गई हैं उसमें एक तो है ओपन वैल में पम्प सैट लगाने की। तो पम्प सैट की निगरानी के लिए एक भी व्यक्ति नहीं रखा। वह पम्प सैट चुरा कर ले गए। पर्टीक्यूलर मैं मेरे गांव की बात आपको बता सकता हूं कि पम्प सैट और पंखे की चोरी हो गई। वह आज तक बरामद नहीं हुई। वह खाली पड़ा है और कोई पीने के पानी की व्यवस्था नहीं है।

(व्यवधान)

हां, निकाल ले गये, कुएं में से पाइप ले गए। यह हालत है रड़ोद गांव में। मालूम नहीं वह पम्प कहां है ? क्यों नहीं आपने उनके रख-रखाव की कोई व्यवस्था की ? यह हालत है। यह योजना फेल हो गई। क्षेत्रीय जल प्रदाय योजना जो आपने बनाई थी उसमें मुख्य तौर से दो कमियां रखीं, योजना बनाने वालों ने। एक कमी यह रखी कि मनुष्यों के साथ मवेशियों को जोड़ना चाहिए था किन्तु मवेशियों को जोड़ा नहीं गया। दूसरा, आबादी की आपने ढाई प्रतिशत के हिसाब से बढ़ोतरी मानी थी उसकी जगह भी 20, 35 और

सदन की कार्यवाही विधान सभा की बैठक के निर्धारित समय में वृद्धि

श्री गुलाबसिंह शक्तावत (संसदीय कार्य मंत्री) : माननीय सभापति महोदय, इनका भाषण समाप्त होने तक सदन का समय बढ़ा दिया जावे।

श्री सभापति : सदन की क्या राय है ?

श्री बिहारीलाल पारीक (मांडल) : यह तो आखी रात बोलते रहेंगे।

श्री गुलाबसिंह शक्तावत : माननीय सदस्य, समय सीमा निर्धारित है। अधिक से अधिक कितना समय दिया जा सकता है, एक माननीय सदस्य को।

(व्यवधान)

वह तो पार्टी का टाइम है उनका।

श्री सभापति : माननीय सदस्य के भाषण तक समय बढ़ाया जाता है।

धन्यवाद प्रस्ताव पर वाद-विवाद

श्री नारायणराम बेड़ा : जो क्षेत्रीय जल प्रदाय योजना थी उसमें ढाई पर्सेंट आबादी बढ़ाने की व्यवस्था थी उसकी जगह 25 से 30 पर्सेंट तक आबादी बढ़ोतरी हुई इसलिए वहां पानी की कमी आई और

(श्री नारायणराम बेड़ा)

आगे जाने वाले गांवों में पानी की व्यवस्था बिगड़ गई । यह आंकडे हैं। इस तरह क्षेत्रीय जल प्रदाय योजना में कमी रही ।

दूसरी हैंडपम्प की योजना है । हैंडपम्प के लिए तो चाहे हां पक्ष के सदस्य हों, चाहे ना पक्ष के सदस्य हों यह नहीं मानते कि हैंडपम्प नहीं लगे । आपके आंकड़ों के अन्दर हम नहीं जाते मगर व्यावहारिक दृष्टि से यह मानते हैं कि जहां हैंडपम्प लगे होंगे पानी बहुत ही कम हैंडपम्पों से पीने योग्य है और अगर कहीं पीने योग्य है तो वह हैंडपम्प खराब हैं। उनको सुचारू रूप से चलाने की हमारे पास और हमारी सरकार के पास अभी तक कोई व्यवस्था नहीं हैं । यह भी योजना फेल है उस हिसाब से । चौथी, नहरी पानी देने की योजना है वह भी मुझे तो विशेष रूप से कहीं लगी नहीं । विशेष तौर से पश्चिमी राजस्थान से चुन कर आया हूं वहां के हालात तो विपरीत हैं । वहां तो हर तीसरे साल अकाल की स्थिति रहती है । अकाल की स्थिति को देखते हुए पानी की एक विकट समस्या बनी हुई है । मुझे याद है मेरी पंचायत का सरपंच होने के नाते, सन् 1979 में एक योजना स्वीकृत हुई थी जिसमें साढ़े सात लाख रुपये विश्व बैंक से मन्जूर हुए थे , गजसिंहपुरा पंचायत के लिये और नासर पंचायत के लिये । दोनों पंचायतों में यह आदेश आए थे कि ढाई पर्सेंट पंचायत की तरफ से सरकार में जमा कराइये, आपकी योजना बना दी जाएगी, काम शुरू कर देंगे । आज छः साल हो गये, आज तक न तो वहां पाइप डाले गये और न कोई ओवरहैड टैंक बनाया गया । सिर्फ एक ट्यूब वैल जरूर बनाया था उसके अन्दर भी किट फंसा हुआ है मशीन का वह वहां पड़ा है आज तक । पिछली बार गांव के लोगों ने अपना साधन जुटा कर पानी पीया है ये हालात हैं । दस-दस किलो मीटर से लोग पानी लेकर आये हैं ।

(8.00 रात्रि)

पेयजल और अकाल की स्थिति को देखते हुए अभी जैसा आपने बताया कि अकाल के लिए 142 करोड़ रुपये की हमारी सरकार ने केन्द्र से सहायता मांगी उसके लिए साढ़े पांच करोड़ रुपये तो मिल गए । साढ़े पांच करोड़ रुपये से जोधपुर डिवीजन में जो सात जिले हैं उन सात जिलों में एक महिने तक अकाल राहत कार्य अगर सुचारू रूप से चलाया जाय तब तो काम चलेगा अन्यथा नहीं । अब आपके सामने कुछ मार्जिन हो सकता है। वह 25-30 करोड़ से ज्यादा का नहीं हो सकता है। तो इस 25-30 करोड़ कुल रुपये से कहां पेयजल की व्यवस्था हो सकती है, और कहां मजदूरों को मजदूरी दे सकते हैं, यह दोनों सोचने की बात है । फेमिन के तहत रतपुड़िया गांव में सात रुपये आपने मिनिमम वेजेज के दिये । 11 रुपये 9 रुपये के बजाय, तीन रुपये और 1.05 पैसा कई गैंगों को चुकाया गया । यह हालत है मजदूरी देने की । उन्होंने आप पर मुकदमा करके पूरे सात रुपये वसूल किये थे । यह है अकाल राहत की स्थिति ।

अब मैं आता हूं आपके 20 सूत्री कार्यक्रम पर । हमें बड़ी खुशी है, सभी वक्ता हैं, सभी राजस्थान के लोग ··

श्री सभापति : कृपया समाप्त करें ।

श्री नारायणराम बेड़ा : मैं थोड़ा-सा 20 सूत्री कार्यक्रम पर बता ही दूं। साहब यह क्यों पीछे रखूं 20 सूत्री कार्यक्रम का मामला सबसे तगड़ा मामला राजस्थान की सरकार का है। सत्ता पक्ष के माननीय सदस्य जनता में कहते हैं, कि 20 सूत्री कार्यक्रम के अन्दर देश में प्रथम स्थान राजस्थान ने प्राप्त किया है। मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूं कि यह आपके आंकड़ों का मामला है। आंकड़ों के बजाय हम व्यवहारिकता में जाकर देखें, हकीकत में क्या हुआ, क्या नहीं हुआ? आंकड़े जरूर आपको मिल जायेंगे कि 50 हजार लोगों को रहने के लिए प्लॉट दिए या 50 हजार लोगों को रहने के लिए भू-आवंटन किया। व्यवहारिकता में अगर पूछा जाय तो कब्जा कितनों को मिला? आंकड़े आयेंगे 5 हजार। कब्जा मिलने की स्थिति है, पांच हजार और पट्टे देने की स्थिति है 50 हजार। एक तरफ अपने जा रहे हैं, 100 पर्सेन्ट और दूसरी तरफ आ रहे हैं 10 पर्सेन्ट इसमें मैं यह पूछना चाहता हूं 10 पर्सेन्ट वाले सही हैं या 100 पर्सेन्ट वाले सही हैं। आंकड़े कौनसे सही हैं। मुझे याद है, एक बार अन्तर्राष्ट्रीय आंकड़ेबाजों का सम्मेलन हुआ था जिसमें हमारी पूर्व प्रधान मन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने कहा था कि आंकड़े वे हैं जिनको जब जिस जगह चाहें फिट किया जा सकता है।

एक माननीय सदस्य : आप भी थे क्या वहां?

श्री नारायणराम बेड़ा : मैं नहीं था मगर मैंने अखबार में पढ़ा जरूर था शिक्षित होने के नाते पढ़ने का मौका मिल गया।

श्री गुलाबसिंह शक्तावत : आप भी उसी तरह से फिट कर रहे हो क्या?

श्री ललितकिशोर चतुर्वेदी (कोटा) : आपने फिट किये वह बता रहे हैं।

श्री नारायणराम बेड़ा : मैं फिट नहीं कर रहा हूं, वस्तुस्थिति बता रहा हूं, मंत्री महोदय, सभापति महोदय की मार्फत आप तक पहुंचाने की इच्छा पूरी कर रहा हूं। तो मुझे याद आता है आंकड़ों का एक मामला......

(व्यवधान)

श्री बुलाकीदास कल्ला : आप क्या बात करते हैं, एक भी हायर सेकण्डरी स्कूल खोल नहीं सके?

श्री नारायणराम बेड़ा : बीरबल और अकबर का किस्सा मुझे याद आ गया, वह आंकड़ों से सम्बन्धित है, आपको बता दूं। अकबर ने पूछा, बीरबल जी बताइये, आज आगरे के अन्दर कौवे कितने है? बीरबल ने कहा, आगरा के अन्दर 24,530 कौवे हैं। अकबर ने फिर पूछा दिल्ली में कितने हैं? बीरबल ने जवाब दिया, दिल्ली में 49,530 हैं, अकबर ने पूछा यह सही बता रहे हो? बीरबल बोला, साहब बिल्कुल सही बता रहा हूं। अकबर ने कहा अगर गलत हुए तो सजा मिलेगी। बीरबल ने कहा, सजा मिलने से पहले दो बात और कहना चाहता हूं आगरे में 24,530 कौवे हैं यह तो मैंने कहा ही है, अगर उससे कम हो जायं तो समझ लेना कि वह अपने रिश्तेदारों के यहां दिल्ली गये हैं और अगर उससे ज्यादा हो जांय तो समझ लेना कि दिल्ली वाले आगरा में रिश्तेदारों के यहां आ

(194)

(श्री नारायणराम बेड़ा)

गये। तो यह आंकड़ेबाजी की स्थिति इस प्रकार की है इसलिए आंकड़ों को आधार मानकर हम सदन को जरूर उत्साहित कर सकते हैं मगर व्यवहारिक रूप से आम जनता, जो अपने को चुनकर प्रतिनिधि की हैसियत से सदन में भेजती है, संतुष्ट नहीं हो सकती। जब तक वह संतुष्ट नहीं होगी तब तक चाहे विपक्ष हो या पक्ष हो, दोनों के लिए विवादास्पद चीज बनी रहेगी। इतना ही कह कर मैं अपना स्थान ग्रहण करता हूं।

धन्यवाद। जय हिन्द।

श्री सभापति : सदन की कार्यवाही दिनांक 26 मार्च, 1985 प्रातः 11.00 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

[तदनन्तर सदन की बैठक रात्रि 8.06 बजे, मंगलवार, दिनांक 26 मार्च, 1985 को म. पू. 11.00 बजे तक के लिए स्थगित हुई।]

---

(195)

परिशिष्ट—1

तारांकित प्रश्न संख्या 4 की सूचियां

कार्यालय, तहसीलदार (उप-कोष फुलेरा, मुख्यालय सांभर लेक)

विधान सभा क्षेत्र दूदू वृद्धावस्था पेन्शन सूची परिशिष्ट-'क'

क्र. सं.	पी. पी. ओ.	नाम पेन्शनर्स
1.	13703	नारायण पुत्र बाबू बलाई काल्या पो. हरबंसपुरा
2.	5073	गंगाराम पुत्र गोविन्द राम कुम्हार श्यामी की ढाणी
3.	3182	नारायण पुत्र रामदेव नि. हिरनोदा
4.	4019	रमेश चन्द्र शर्मा पुत्र लक्ष्मीनारायण ढाणी बोराज
5.	4030	चन्दराम पुत्र देवाराम बलाई रोजड़ी
6.	—	सूरजदा चेला गोविन्दराम नि. ढाणी बोराज
7.	—	हीरा पुत्र लादू जाट नि. पिथ्यावात
8.	8040	रामेश्वर लाल पुत्र हरबक्श शर्मा नरायणा
9.	5040	सेवादास स्वामी पुत्र कनीदास स्वामी हिरनोदा
10.	5734	भैरू पुत्र गोपाल कुमावत नि. रोजड़ी
11.	—	माना पुत्र बिरमा नि. श्योसिंहपुरा
12.	8414	भैरू पुत्र कालू जाट नि. भूण्डोती
13.	8420	काना पुत्र पन्ना नि. श्योसिंह पुरा पो. शादुंलपुरा
14.	8513	मूला पुत्र नोला बलाई नि. खेडिराम पो. आकोदा
15.	8580	किशना पुत्र श्योकरण नि. कुम्हार मिडक्या
16.	8792	काना पुत्र बना गूजर नि. दोवडी पो. ममाणा
17.	9288	जिबंहादास पुत्र बिरदा बलाई मौडया पो. श्रीरामपुरा
18.	—	रामेश्वर पुत्र बोदू स्वामी कोरसीना
19.	446	रामकृष्ण चेला दयालबक्ष स्वामी बिचून
20.	—	मांगीलाल पुत्र घीसीराम नि. आसलपुर
21.	5380	गंगाराम पुत्र जीवण राम नि. आसलपुर
22.	—	बंशीधर पुत्र मुरलीधर ग्राम ध्यावडी आसलपुर
23.	—	भागीरथ पुत्र बालू गुंजर नरायणा

(196)

कार्यालय तहसीलदार, फुलेरा मु. सांभर, जिला जयपुर

विधान सभा क्षेत्र दूदू वृद्धावस्था पेंशन महिला सूची

क्र. सं.	पी. पी. ओ.	नाम पेन्शनर्स
1	2	3
1.	4051	आनी स्त्री राम मुग्यार श्यामी की ढाणी
2.	3049	दाखा स्त्री राम बन्जारा आसलपुर
3.	4041	दाखा स्त्री कल्याण खाती श्यामी की ढाणी
4.	4045	गिरा बाई स्त्री रामसुख पुजारी नागल
5.	5014	धौवू स्त्री भैरूदान नि. आकोदा
6.	5059	गेंदी स्त्री मगललाल पारीक आसलपुर
7.	5061	सायर कंवर स्त्री सिराई सिंह आसलपुर
8.	5077	जिजा देवी स्त्री भैरूदराम आसलपुर
9.	5728	भवरी स्त्री देवाराम नि. रोजड़ी
10.	6421	गेंदी स्त्री चौथमल नि. श्योसिंहपुरा
11.	3436	गेंदी स्त्री पिरूमल शर्मा नरायणा
12.	5370	भंवरी स्त्री लादूसिंह नि. आसलपुर
13.	5413	मांगी स्त्री चतुर्भुज नि. आसलपुर
14.	819	धन्ना खातून स्त्री करीब खां पठान भिरवता
15.	8456	प्रभाबाई स्त्री घोकलसिंह राजपूत माल्यावास
16.	8483	चुनी स्त्री पन्ना खटीक नि. आकोदा
17.	8493	कुन्ती बाई स्त्री गिरधारी माल्यावास
18.	8512	बरजी स्त्री जगदीश नि. खेडीराम पो. आकोदा
19.	8797	पनी स्त्री वैणा नि. बलाई नि. भगवतपुरा
20.	8796	सन्तरा स्त्री छीतर दरोगा नरायणा
21.	8793	मगनी स्त्री ग्यारसा बलाई नि. भामसंगपुरा
22.	9309	गोडली स्त्री आत्माराम बलाई नि. मोरूदा
23.	2118	लादी स्त्री गंगाराम नि. आसलपुर
24.	4050	मांगी स्त्री कल्याण बागडा नरायणा
25.	6277	केसर बाई स्त्री रूपनारायण ढिंढा
26.	6438	भंवर स्त्री तेजाराम दरोगा रोजडी
27.	8494	चम्पादेवी स्त्री श्योराम रोजडी
28.	5027	पुम्मा स्त्री भोमसिंह बागडा आसलपुर

1	2	3
29.	2980	गुलाब देवी स्त्री लालूराम विचून
30.	8068	सकीला स्त्री इमाम बक्स हिरनोदा
31.	11439	मूलकंवर स्त्री जतनसिंह मोरडी खुर्द
32.	12670	भगवती व्यास स्त्री गंगाराम सोमाणी नरायणा
33.	12684	केसर स्त्री देवी सिंह राजपूत नरायणा
34.	12672	गुलाबी स्त्री हरदेव माली नरायणा
35.	10132	मोहनी स्त्री रामनारायण नरायणा

विधान सभा क्षेत्र दूदू के पेंशन प्रकरण जो तहसील कार्यालय सांभर में विचाराधीन हैं।

क्र. सं.	नाम
1.	श्रीमती गफूरन पत्नी बन्दुखां ग्राम नरायणा

सूची पेंशनर जो उप-कोष, दूदू मु. मोजमाबाद से पेन्शन प्राप्त कर रहे हैं—

क्र. सं	नाम पेंशनर
1	2
1.	श्रीमती सोनकंवर पत्नी उगमसिंह
2.	,, नर्वदादेवी पत्नी श्यामसुन्दर
3.	श्री भीकमसिंह पुत्र उमरावसिंह
4.	श्रीमती आनन्दीबाई पत्नी बजरंगदान
5.	,, गुलाबकंवर पत्नी गोपसिंह
6.	,, रुकमा पुत्री नारायण बलाई
7.	,, बरजी पत्नी लक्ष्मण रेगर
8.	श्री काना पुत्र भूथा
9.	श्रीमती रतनी पत्नी रुगनाथ
10.	,, दादीदेवी पत्नी मदनलाल
11.	श्री गोगा पुत्र दूला
12.	श्रीमती केशर पत्नी ओंकारमल

1	2
13.	श्री घासीराम पुत्र संतराम
14.	श्री हनुमान पुत्र रोडमल
15.	श्रीमती मांगी पत्नी रामनारायण
16.	श्री रतनलाल पुत्र लादू दरोगा
17.	श्रीमती कानी पत्नी लालाराम
18.	श्री जीवनराम पुत्र दयालराम
19.	,, रामभक्तदास पुत्र कानदास
20.	,, धन्ना पुत्र बालू रैगर
21.	,, रूपदास पुत्र मंगादास
22.	श्रीमती भेली पत्नी कल्लानाथ
23.	श्री नोली पुत्र छोटू रैगर
24.	श्रीमती ग्यारसीदेवी पत्नी घीसाराम
25.	श्री नानगराम पुत्र घीसाराम रैगर
26.	श्रीमती गुमानकंवर पत्नी सांभलसिंह
27.	श्रीमती मांगी पत्नी किशन दरोगा
28.	श्री भोलूराम पुत्र भूराराम
29.	श्री नोला पुत्र कालू
30.	श्री मांगू पुत्र मोती
31.	श्रीमती परती पत्नी बद्रीनारायण
32.	,, भगवतीदेवी पत्नी घीसाराम
33.	,, गुल्ली पत्नी गोपीराम जाट
34.	श्री रामकरण पुत्र दयालराम
35.	श्रीमती हूरा पत्नी रसूल खां
36.	श्रीमती सुंदरी पत्नी घीसालाल
37.	श्रीमती सुगनकंवर पत्नी भंवरसिंह
38.	श्री मुश्ताक अहमद पुत्र करीम खां
39.	श्री मांगीलाल पुत्र रोडू कुम्हार
40.	श्री चंगोन पुत्र चन्द्रा मीणा
41.	श्री भूंथा पुत्र उदा जाट
42.	श्री दयाला पुत्र नोला अहीर
43.	श्रीमती नाथो पत्नी रामदेव बैरवा
44.	श्रीमती तीजा बेवा ईशर खटीक
45.	श्रीमती धन्नी बेवा काना बलाई

1	2
46.	श्रीमती सिरेकंवर पत्नी वचनसिंह
47.	श्री धन्ना पुत्र अर्जुन बागरिया
48.	श्रीमती भोली पत्नी लादूराम बडवा
49.	श्री पोला पुत्र बीजाराम पत्नी पोला खटीक
50.	श्री गोपी पुत्र नानग सोनी पत्नी गोपी
51.	श्रीमती दाखा बेवा भूरा बैरवा
52.	श्रीमती चण्डी बेवा भागीरथ रैगर
53.	श्री लादू पुत्र बालूराम खाती
54.	श्रीमती गेन्दीबाई पत्नी सूवालाल ब्राह्मण
55.	श्रीमती राफिया बेवा कालू बेहरूपिया
56.	श्रीमती कानी बेवा काना रैगर
57.	श्रीमती भूरा बेवा बिरधा बलाई
58.	श्रीमती सुगनी बेवा भागीरथ खटीक
59.	श्रीमती गंगा देवी पत्नी खीवजी दरोगा
60.	श्रीमती बसंती पत्नी चन्दना नाई
61.	श्रीमती गलकू पत्नी मांगू रैगर
62.	श्रीमती भूरी पुत्री माधो ब्राह्मण
63.	श्रीमती छगनी बेवा नारायणदास
64.	श्रीमती जशोदादेवी पत्नी कल्लाराम
65.	श्रीमती मुन्नी उर्फ मुमताज पत्नी इसमालखां
66	श्रीमती गुलाब बेवा गजानन्द पारीक
67.	श्रीमती भूरी बेवा वर्जुना बलाई
68.	श्री सन्तोषनाथ चेला भूरानाथ
69.	श्रीमती हाजरा पत्नी अली मोहम्मद
70.	श्रीमती चौथी पत्नी नाथू बलाई
71.	श्रीमती रामप्यारी पत्नी मांगीलाल बलाई
72.	श्री लादू पुत्र नानगा, कज्जी पत्नी लादू
73.	श्री राधाकिशन पुत्र घासी
74.	श्रीमती तीजा पत्नी लादूराम शर्मा
75.	श्रीमती भूरी पत्नी भूरेखां
76.	श्रीमती गोविन्दी पत्नी महादेव
77.	श्रीमती जमना पत्नी बालू बलाई
78.	श्रीमती भूरी पत्नी नन्दा

1	2
79.	श्री सावलदास पुत्र बालूदास
80.	श्रीमती सुन्दरी पुत्री भूरा दरोगा
81.	श्रीमती दाखाकंवर पत्नी राजूसिंह
82.	श्रीमती हरकू पत्नी मूला खटीक
83.	श्रीमती हगामा कंवर पत्नी देवीसिंह
84.	श्री मूंथा पुत्र लक्ष्मण जाट
85.	श्रीमती सुन्दरी पत्नी मूला दरोगा
86.	श्रीमती मोहनो पत्नी चुन्नीलाल
87.	श्रीमती भगवती पत्नी गणेश खटीक
88.	श्री कल्लूखां पुत्र नाथू खां जैतून स्त्री कालूखां कापडियावास
89.	श्री कमालुदीन पुत्र यासीन खां बनूप स्त्री कमालुदीन
90.	श्री देवा पुत्र जवारा जाट
91.	श्रीमती राम पत्नी देवा रैगर
92.	श्री अर्जुन पुत्र जीवण भोली पत्नी अर्जुन मीणा
93.	श्रीमती रामलीला पत्नी छीतर दरोगा
94.	श्रीमती मुगली बेवा करका
95.	श्री काना पुत्र देवा गूजर
96.	श्रीमती तोजा बेवा हरजी बलाई
97.	श्रीमती गुलकु बेवा स्त्री भुवाना बैरवा
98.	श्री मांगू पुत्र मेधा रैगर
99.	श्री श्रवण पुत्र हीरा केली स्त्री श्रवण
100.	श्रीमती नाथी स्त्री हनुमान
101.	श्रीमती देवीबाई स्त्री मोहन
102.	श्रीमती केसरा स्त्री जोतू दरोगा
103.	श्रीमती भवरी देवी पत्नी भगवत शर्मा
104.	श्री रूपनारायण पुत्र रामगोपाल राजा
105.	श्रीमती बीला पत्नी मनु कौर
106.	श्रीमती नन्दू पत्नी देवा गूजर
107.	,, राधा पत्नी कुमदा रैबारी
108.	,, धापू पत्नी बोरदा बलाई
109.	,; हरकूदेवी पत्नी रामनारायण खाती
110.	श्री नन्दलाल पुत्र मूलचन्द
111.	श्रीमती धूलकंवर पत्नी मूलसिंह

1	2
112.	श्री भंवरलाल पुत्र गोरीलाल
113.	श्रीमती ग्यारसी पत्नी सोनारायण खटीक
114.	श्रीमती मनभर पत्नी शोदयाल
115.	श्री रूपनारायण पुत्र जगनाथ धापू पत्नी रूपनारायण
116.	श्री घीसा पुत्र धन्ना गोरा पत्नी घीसा गुर्जर
117.	श्री नाथू पुत्र काना धापू पुत्री नाथू
118.	श्री अली मोहम्मद पुत्र सुलेमान
119.	श्रीमती हमाम वेवा रामकुबीर
120.	श्री रामदास चेला रामचन्द
121.	श्रीमती संखरी वेवा अब्दुल रजाक
122.	,, सकीना पत्नी गुलाब खां
123.	,, सुन्दर वेवा सुबान खां
124.	श्री जवारदास चेला हरनाथदास
125.	श्री चन्दा पुत्र अर्जुन वागरिया
126.	श्रीमती किशनकंवर वेवा माधोसिंह
127.	श्री ईशर पुत्र लादू दरोगा
128.	श्रीमती सुरावा वेवा सोनाथन
129.	श्री छोटू पुत्र नाथू धापू पत्नी छोटू
130.	श्रीमती सुन्दरी पत्नी रामदेव गुर्जर
131.	,, केशर देवी पत्नी केशरदास
132	श्री विश्वानन्द पुत्र सुरेशानन्द
133.	श्रीमती कमन वेवा वन्दु मुसलमान
134.	,, दाखा वेवा रामदेव माली
135.	,, गलकु वेवा सुवा कुम्हार
136.	श्री धन्ना पुत्र घीसा बैरवा
137.	श्रीमती भंवर देवी पत्नी डालचन्द खटीक
138.	श्री प्रभात पुत्र वलदेवा बैरवा
139.	श्री कल्याण पुत्र गोगा गुर्जर
140.	श्री गोपाल पुत्र जगन्नाथ खाती
141.	श्रीमती गजकु वेवा बिरदा राम नाइक
142.	,, मोहरी देवी पत्नी टोकूडा रैगर
143.	श्रीमती जसवंत कुंवर पत्नी हरिसिंह
144.	श्रीमती अजुकी पत्नी माधो बलाई

1	2
145.	श्रीमती गुलाब देवी पत्नी नारायण खाती
146.	श्रीमती गलकु वेवा सुजा बैरवा
147.	श्रीमती शकुनी वेवा मुनीर खां
148.	श्री हाजी मोहम्मद पुत्र रहीम बक्स
149.	श्रीमती रोशनी वेवा बद्रीसिंह
150.	श्रीमती कजोड़ी वेवा वना बागरिया
151.	श्रीमती केसरी वेवा बदनलाल रैगर
152.	श्री बालू पुत्र छीतर बलाई
153.	श्री श्रवण लाल पुत्र बीजा रैगर
154.	श्री परमानन्द पुत्र बीजा रैगर
155.	श्रीमती लक्ष्मी पत्नी नन्दा माली
156.	श्रीमती नाथू पत्नी मूलचन्द
157.	श्रीमती केली वेवा लादू बागरिया
158.	श्रीमती शान्ति पत्नी तेजराम जाट
159.	श्री सांवता पुत्र सुखदेव तीजा पत्नी सांवता
160.	श्रीमती गलकु पत्नी छीतर
161.	श्रीमती वरजी देवी वेवा पांचू गूजर
162.	श्रीमती नोरतकंवर पत्नी रेवत सिंह
163.	श्री केशर लाल पुत्र भुवाना
164.	श्री भागीरथ पुत्र गंगाराम भमरी पत्नी भागीरथ
165.	श्री मांगू पुत्र हरला जाट
166.	श्रीमती केशर पत्नी रघुनाथ शर्मा
167.	श्रीमती जुमा देवी पत्नी ईसर खां
168.	श्रीमती सोमकंवर पत्नी रामनारायण
169.	श्रीमती गुलाब देवी पत्नी हीरा लाल खाती
170.	श्रीमती सन्ती वेवा पत्नी रामदेव जाट
171.	श्रीमती मगद वेवा रणजीत सिंह
172.	श्रीमती चन्द्र वेवा हेमराज कुमावत
173.	श्री छीतर पुत्र सुखाराम छोटी पत्नी छीतर
174.	श्री सोहन सिंह पुत्र भंवर सिंह
175.	श्रीमती पांची वेवा गोरधन रैगर
176.	श्रीमती अयुतकंवर पत्नी लादू सिंह
177.	श्रीमती भोगा वेवा छोटू
178.	श्री बजरंग लाल पुत्र नाथू बैरवा
179.	श्री मूला पुत्र मांगू केसरी पत्नी मूला

परिशिष्ट "ख"

सूची वृद्धावस्था पेंशन केसेज जो पंचायत समिति, दूदू वि. स. क्षेत्र दूदू के पेन्डिंग हैं।

1	2	3
1.	हनुमान पुत्र भूरा नाई लोरड़ी	जांच रिपोर्ट के अभाव में।
2.	गणेश पुत्र रामेश्वर दरोगा लोरड़ी	,, ,, ,,
3.	हरिनारायण पुत्र लादू जाट कड़वाकावास	,, ,, ,,
4.	गोपी पुत्र रामकरण बलाई मोखमपुरा	,, ,, ,,
5.	गोविन्द नारायण पुत्र नाथूराम ढाणी बोराज	,, ,, ,,
6.	बबलूलाल पुत्र लक्ष्मीनारायण ढाणी बोराज	,, ,, ,,
7.	सूरज पुत्र मांगू बलाई	मानपुरा पंचायत द्वारा पूर्ति कर नहीं भेजने बावत।
8.	भूरा पुत्र मांगू बलाई	माल्यावास जांच अधिकारी की रिपोर्ट के अभाव में।
9.	रतनलाल पुत्र नाथूलाल रहलाना	जांच रिपोर्ट के अभाव में
10.	भूरा पुत्र मांगू बलाई माल्यावास	,, ,, ,,
11.	हीरा पुत्र कजोड रैगर सीतारामपुरा	,, ,, ,,
12.	भागा पुत्र सुवा बलाई काल्या	,, ,, ,,
13.	नारायण पुत्र मांगू बलाई काल्या	,, ,, ,,
14.	नारायण पुत्र हरजी गुर्जर काल्या	,, ,, ,,
15.	मांगू पुत्र मंगला गूजर कोरसोना	,, ,, ,,
16.	सुवा पुत्र काना नायक कोरसोना	,, ,, ,,
17.	छीतर खां पुत्र बकतावर खां मोजमाबाद	,, ,, ,,
18.	घीसी बेवा छोटू सेवा	,, ,, ,,
19.	मांगू पुत्र बोदू व धापू श्री सावरदा	,, ,, ,,
20.	हनुमान पुत्र गेन्दा लाल रोजड़ी	पंचायत द्वारा कमी पूर्ति कर नहीं लौटाने के कारण।
21.	सेवादास पुत्र रामदास रोजड़ी	जांच द्वारा कमी पूर्ति कर नहीं लौटाने के कारण।
22.	पाबूदान पुत्र जीवनदास मथुराका वास	पंचायत द्वारा कमी पूर्ति कर नहीं लौटाने के कारण।

सूची आवेदक पेंशन स्वीकृति जारी नहीं होने के कारण

1. खातून बेवा महमूद मुसलमान निवासी मोजमाबाद	कमी पूर्ति हेतु पंचायत को भेज रखा है।
2. गीता बेवा मांगू दरोगा लोरड़ी	पुत्र की आयु का प्रमाण-पत्र प्रस्तुत नहीं करने पर।
3. भवती बेवा रामपाल मोरडा	जांच रिपोर्ट के अभाव में।
4. शांती बेवा हनुमान खाती मोखमपुरा	,, ,, ,,
5. नारंगी बेवा नाथू दरोगा सावरदा	पंचायत द्वारा कमी पूर्ति नहीं आने के कारण।
6. शकुन्तला बेवा फूलसिंह सावरदा	,, ,, ,,
7. संतरा बेवा चोथू खटीक रहलाना	जांच रिपोर्ट के अभाव में।
8. शोरत बेवा श्योजी रहलाना	,, ,, ,,
9. बिदाम बेवा सुवालाल गागरड़	स्वीकृति कार्यवाही जारी।
10. श्रवणी बेवा सुवा मुनाड़िया	फोटो के अभाव में।
11. मोनी बेवा सीताराम लेवा	पंचायत द्वारा कमी पूर्ति कर नहीं लौटाने के अभाव में।
12. तीजा बेवा रूपाराम बलाई रोजड़ी	पंचायत द्वारा कमी पूर्ति कर नहीं भेजने के कारण।
13. रुकमणी बेवा मेवा कोरसना	जांच रिपोर्ट जारी है।
14. रूपा बेवा बीसा मुमावत श्रीरामपुरा	स्वीकृति कार्यवाही जारी है।
15. नर्बदा बेवा ईदू मुसलमान पडासोली	,, ,, ,,
16. मुन्नी बेवा हरिमोहन लाटाबिचून	,, ,, ,,
17. नाथी बेवा भंवरलाल ढाणी बोराज	,, ,, ,,
18. नानूडी बेवा गंगाराम बैरवा	जांच अधिकारी की रिपोर्ट के क्रम में।
19. केशर बेवा फूलसिंह आसलपुर	,, ,, ,,
20. गोमती बेवा शंकरलाल ढाणी बोराज	,, ,, ,,
21. सदाकंवर बेवा भंवरसिंह मथुरा का वास	पंचायत समिति द्वारा कमी कर नहीं लौटाने के कारण।

परिशिष्ट–2

समयाभाव के कारण सदन में नहीं लिये जा सके तारांकित प्रश्न एवं उनके उत्तर

अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के लिये वाणिज्यिक प्रयोजनार्थ सहायता

8. श्री राज कुमार जयपाल (अजमेर पूर्व) : क्या समाज कल्याण मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे:–

(1) क्या यह सही है कि वर्ष 1984-85 में राज्य सरकार द्वारा अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के लिये दुकानें, सिनेमा, ईंट के भट्टे आदि योजना के तहत भूमि एवं वित्तीय सहायता का प्रावधान रखा गया था ? यदि हां, तो उसके लक्ष्य क्या थे ?

(2) सन् 1984 में अनूसूचित जाति के कितने व्यक्तियों को दूकानें आवंटित की गई, कितने ईंटों के भट्टे लगवाये गये तथा कितने सिनेमा बनवाये गये ?

(3) यदि नहीं, तो इस योजना की क्रियान्वित नहीं करने के क्या कारण थे ? उसके लिये कौन दोषी हैं तथा दोषी अधिकारियों के विरुद्ध राज्य सरकार क्या कार्यवाही करने का विचार रखती है ?

उत्तर

(1) जी हां। वर्ष 84-85 की दुकान योजना के अन्तर्गत 3,000 दुकानें बनवाने हेतु निर्णय दिनांक 21-11-84 को लिया गया था। सिनेमा तथा ईंट भट्टा योजना के अन्तर्गत सहकारी समितियों के माध्यम से प्रत्येक योजना से 300 परिवारों को लाभान्वित किये जाने का प्रस्ताव था।

(2) वर्ष 1984 में अनुसूचित जाति के 433 व्यक्तियों को दुकानों के आवंटन पत्र वितरित किये गये थे, तथा 2,360 व्यक्तियों का दुकान आवंटन हेतु चयन कर लिया गया है। लेकिन ईंट भट्टा, सिनेमा गृह स्थापित नहीं किये जा सके हैं।

(3) सिनेमा की योजना अव्यवहारिक मानते हुए वित्त विभाग द्वारा स्वीकृति नहीं दी गई। इसी कारण आगे कोई कार्यवाही नहीं की गई। इसी प्रकार ईंट भट्टों की योजना को भी पहले प्रयोग के रूप में चलाने का सुझाव दिया गया है। अभी तक पर्याप्त मात्रा में ईंट भट्टा लगाने हेतु प्रार्थना-पत्र प्राप्त नहीं हुए हैं। दुकानों का निर्माण स्थानीय निकाय के माध्यम से कराया जाता है इनके निर्माण में पर्याप्त समय लगता है। जैसे-जैसे दुकान निर्मित होती जाती है वैसे-वैसे आवंटन की कार्यवाही की जाती है। इस योजना की क्रियान्विति में किसी अधिकारी की लापरवाही नहीं पाई गई।

दिल्ली एवं हरियाणा से लाये बंधुआ मजदूरों का पुनर्वास

9. श्री चम्पालाल बांठिया (पचपदरा) : क्या विशिष्ट योजना संगठन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) क्या यह सही है कि कुछ माह पूर्व विधान सभा क्षेत्र पचपदरा में दिल्ली एवं हरियाणा से कुछ बंधुआ मजदूरों को लाकर बसाया गया ? यदि हां, तो इनकी

(श्री चम्पालाल बांठिया)
कुल कितनी संख्या हैं एवं इस क्षेत्र के किन-किन स्थानों पर इन्हें बसाया गया ?

(2) उक्त बंधुआ मजदूरों को यहीं लाने पर सम्बन्धित राज्य सरकारों से क्या कोई मुआवजा या शर्त तय की गई ? यदि हां, तो क्या शर्तें थीं एवं मुआवजे की राशि क्या तय की गई ?

(3) राज्य सरकार ने उक्त मजदूरों के लिए क्या-क्या सुविधायें प्रदान कीं ?

(4) क्या यह यही है कि उक्त मजदूरों की स्थिति दयनीय है जिनके लिए न पानी की व्यवस्था है और न ही रहने हेतु आवास की ?

(5) राज्य सरकार इस सम्बन्ध में क्या कदम उठाने जा रही है ?

उत्तर

(1) जी हां, बन्धक श्रमिकों की संख्या 97 है। इन्हें जसोल, जानियाना, बुडीवाड़ा, मेवानगर, सिमालिया नामक गांवों में बसाया गया है।

(2) जी नहीं, इसलिये मुआवजे की राशि का प्रश्न नहीं उठता।

(3) उक्त बंधुवा मजदूरों को जिला ग्रामीण विकास अभिकरण बाड़मेर द्वारा रोटी, कपड़ा एवं आवासीय व्यवस्था के रूप में 500/-रु. की तत्काल सहायता प्रति बन्धुवा मजदूर की दर से उपलब्ध कराई गई है।

(4) जी नहीं।

(5) उक्त बन्धुवा मजदूरों के पुनर्वास हेतु राज्य सरकार द्वारा 5,04,000/-रु. की पुनर्वास योजना स्वीकृत की जा चुकी है जिस पर जिला प्रशासन द्वारा कार्यवाही शुरू कर दी गई है।

वन्य जीव सलाहकार मण्डल

10. **श्री दिग्विजयसिंह (उनियारा)** : क्या वन मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) राज्य में वन्य जीव सलाहकार मण्डल का गठन कब हुआ ? इसमें कौन-कौन सदस्य हैं ? कृपया सूची सदन की मेज पर रखें। इसमें विधायक व भूतपूर्व विधायक कितने हैं ?

(2) इन सदस्यों के अतिरिक्त क्या और भी सदस्य मनोनीत हैं ? यदि हां, तो वे कौन-कौन हैं और किस श्रेणी में आते हैं ?

(3) इस सलाहकार मण्डल में सदस्यों को मनोनीत या सदस्य रखते समय क्या उनकी वन्य जीवों व वनों के प्रति रुचि को भी देखा जाता है ? यदि हां, तो क्या इसमें ऐसे भी सदस्य हैं जिन्हें ऐसा ज्ञान नहीं है ?

(4) क्या सरकार इस सलाहकार मण्डल की सिफारिशों पर भी अमल करती है ? यदि हां, तो अब तक कितनी सिफारिशें की गईं और उनमें से सरकार ने कितनी स्वीकार कर उन्हें लागू किया ?

उत्तर

(1) वन्य जीव सलाहकार मण्डल का पुनर्गठन दिनांक 13-8-84 को हुआ। सूची सदन के पटल पर रख दी गयी है।

(वन मंत्री)
दो विधायक व दो भूतपूर्व विधायक सदस्य हैं।

(2) जी नहीं। सदस्यों के अतिरिक्त और कोई सदस्य मनोनीत नहीं है।

(3) जी हां। वन्य जीवों व वनों के प्रति रुचि देखी जाती है ज्ञान नहीं।

(4) जी हां। सलाहकार मण्डल की सिफारिशों को ध्यान में रखकर सरकार उन पर अमल करती है। मण्डल के पुनर्गठन के पश्चात बैठक जैसलमेर में दिनांक 15 व 16 सितम्बर, 1984 को हुई थी। इसमें 7 सिफारिशें की गयी थी। 2 सिफारिशों की क्रियान्विति की जा चुकी है। अन्य सिफारिशें विचाराधीन हैं।

राजस्थान सरकार

राजस्व [ग्रुप-8] विभाग

क्रमांक एफ. 3 (5) (14) राज.-8/72 जयपुर, दिनांक 13 अगस्त, 1984

अधिसूचना

वन्य जीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 (केन्द्रीय अधिनियम 53, सन् 1972) की धारा 6 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुये, राज्य सरकार एतद्द्वारा राज्य वन प्राणी सलाहकार मण्डल का, जिसमें निम्नांकित सदस्य होंगे, तत्काल प्रभाव से पुनर्गठन करती है :–

क्रमांक	नाम/पद		धारा/उप-धारा जिसके अन्तर्गत नियुक्ति की गई है
1	2	3	4
1.	राज्य वन मंत्री, राजस्थान सरकार, जयपुर।	अध्यक्ष	6 (1) ए
2.	श्री भैरू सिंह गुर्जर, विधान सभा सदस्य	सदस्य	6 (1) बी
3.	श्री रामसिंह विश्नोई विधान सभा सदस्य	सदस्य	6 (1) बी
4.	शासन सचिव, राजस्व एवं वन विभाग	सदस्य	6 (1) सी

1	2	3	4
5.	मुख्य वन संरक्षक, राजस्थान, जयपुर	पदेन सदस्य	6 (1) डी
6.	उप निदेशक, वन्य जीव संरक्षक, बम्बई	सदस्य	6 (1) ई
7.	मुख्य वन्य जीव प्रतिपालक, राजस्थान, जयपुर	पदेन सदस्य सचिव	6 (1) एफ
8.	श्री देवी सिंह, जोधपुर	सदस्य	6 (1) जी
9	श्री हनुमानसिंह विश्नोई	सदस्य	6 (1) जी
10.	श्री महेन्द्र विक्रम सिंह, अजमेर	सदस्य	6 (1) जी
11.	श्री दिपेन्द्रसिंह, सदस्य विधान सभा, श्रीमाधोपुर	सदस्य	6 (1) जी 6 (1) जी
12.	श्री यदुनाथ सिंह, सदस्य विधान सभा, नदबई	सदस्य	6 (1) जी
13.	महानिदेशक एवं महानिरीक्षक आरक्षी, राजस्थान, जयपुर	सदस्य	6 (1) जी
14.	निदेशक, पर्यटन विभाग अध्यक्ष, आर. टी. डी. सी., जयपुर	सदस्य	6 (1) जी
15.	निदेशक, पशुपालन विभाग	सदस्य	6 (1) जी
16.	निदेशक, जनसम्पर्क निदेशालय राजस्थान, जयपुर	सदस्य	6 (1) जी
17.	श्री धर्मकुमार सिंह जी, बम्बई	सदस्य	6 (1) जी
18.	श्री ईश्वर प्रकाश काजरी, जोधपुर	सदस्य	6 (1) जी
19	श्री डेनियल जेमी नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी, बम्बई	सदस्य	6 (1) जी
20.	श्री शिवकुमार शर्मा, रीडर (बोटनी) राजस्थान विश्व विद्यालय, जयपुर	सदस्य	6 (1) जी

1	2	3	4
21.	श्री महेन्द्र व्यास, एडवोकेट नई दिल्ली	सदस्य	6 (1) जी
22.	श्री रावत नाहर सिंह	सदस्य	6 (1) जी

वन्य जीव (संरक्षण) राजस्थान नियम, 1977 के नियम 3 के अन्तर्गत निम्नांकित सदस्यों का कार्यकाल निम्न प्रकार होगा :—

क्रम संख्या 2, 3 एवं 8 से 12 पर अंकित सदस्य	11-2-1985 तक (पूर्व कार्यकाल की शेष अवधि तक)
क्रम संख्या 13 से 22 पर अंकित सदस्य	इस अधिसूचना से जारी होने के दिनांक से 3 वर्ष तक।

राज्यपाल की आज्ञा से।

ह.

उप-शासन सचिव, राजस्व (वन) विभाग

प्रतिलिपि सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित है :—

1. सचिव, राज्यपाल महोदय, राजस्थान, जयपुर।
2. सचिव, मुख्य मंत्री महोदय, राजस्थान, जयपुर।
3. विशिष्ट सहायक/निजी सचिव, मंत्रीगण/राज्य मंत्रीगण/उप मंत्रीगण, राजस्थान, जयपुर।
4. निजी सचिव, मुख्य सचिव, राजस्थान, जयपुर।
5. समस्त संचिवगण, राजस्थान, जयपुर।
6. समस्त सदस्यगण।
7. रक्षित पत्रावली।
8. अधीक्षक, राज्य केन्द्रीय मुद्रणालय, जयपुर को राज-पत्र के विशेषांक में प्रकाशन हेतु प्रेषित है :

ह.

उप-शासन सचिव

प्रतिलिपि निम्नांकित को भी सूचनार्थ प्रेषित है :—

1. सचिव, भारत सरकार, कृषि एवं सहकारिता मंत्रालय, (कृषि विभाग) नई दिल्ली।
2. सचिव, भारत सरकार, पर्यावरण विभाग (वन्य जीव संभाग) नई दिल्ली।

ह

उप-शासन सचिव

रेडियोग्राफर्स के पदों पर पदोन्नति

11. श्री जयकृष्ण तोसावड़ा (दूदू): क्या चिकित्सा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) राज्य के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग में रेडियोग्राफर्स के कुल रिक्त पद कितने हैं जिन पर पदोन्नतियां करना शेष है ?

(2) ये पद कब से रिक्त पड़े हुए हैं तथा क्यों ? इन पदों पर अब कब तक पदोन्नतियां कर दी जायेंगी ?

उत्तर

(1) राज्य के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग में 17 पद रिक्त हैं।

(2) वर्ष 84-85 में 28 पद सृजित हुए थे जिनमें से 11 पद भर दिये हैं और शेष 17 पद एक्सरे मशीनें उपलब्ध होते ही भर दिये जायेंगे।

रेवासा (सीकर) झील से नमक उत्पादन

12. श्री घनश्याम तिवाड़ी (सीकर):- क्या उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(1) क्या यह सही है कि सीकर जिले की दांता रामगढ़ तहसील में रेवासा झील में पानी आने से नमक उत्पादन नहीं हो रहा है ?

(2) क्या यह भी सही है कि सोभावती नदी, हरिपुरा बांध हारयाज बांध बन जाने से रेवासा झील में पानी आना रुक सकता है ?

(3) क्या यह भी सही है कि सिचाई विभाग ने इन बांधों के लिए 40 प्रतिशत धनराशि उद्योग विभाग से मांगी है ?

(4) इस झील का कुल क्षेत्रफल कितना है ? इसमें पानी न आने से कितना नमक उत्पादन हो सकता है और कितनों को रोजगार मिल सकता है ?

उत्तर

(1) जी हां।

(2) जी हां।

(3) जी नहीं।

(4) इस झील के भराव का क्षेत्रफल 4.50 वर्गमील (7200 बीघा) है। राज्य सरकार द्वारा जारी विज्ञप्ति के अनुसार सवाईपुरा, काछोर, रेवासा लवण क्षेत्र का क्षेत्रफल 1709.10 बीघा (1.07 वर्ग मील) है। नमक का उत्पादन ब्राईन की सांद्रता (कन्सेन्ट्रेशन) एवं उपलब्धता पर निर्भर करता है। लगभग 500 मजदूरों को आंशिक रोजगार मिल सकता है।

जिला जयपुर में पशु चिकित्सालय

13. श्री वैद्य भैरूंलाल भारद्वाज (जमुवा रामगढ़): क्या पशुपालन मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) सरकार कितने पशुओं की संख्या पर पशु चिकित्सालय खोलती है ?

(श्री वैद्य भैरूंलाल भारद्वाज)

(2) (क) जयपुर जिले के ग्राम पंचायत रायसर, बहलोड़, माथासूला, महंगी, सामरेडकलां के लगभग 25 गांवों में करीब 15 हजार पशुओं के उपचार हेतु क्या सरकार रायसर सैन्टर में पशु चिकित्सालय खोले जाने का विचार रखती है ? यदि हां, तो कब तक ? नहीं, तो क्यों ?

(ख) ग्राम पंचायत चांवडिया, धर्मपुरा मानोता, वूज नेवर के लगभग 20 गांवों में करीब 13-14 हजार पशुओं के उपचार हेतु क्या सरकार चांवडिया सैंटर में पशु चिकित्सालय खोले जाने का विचार रखती है ? यदि हां, तो कब तक ? नहीं, तो क्यों?

उत्तर

(1) वर्तमान में सरकार का लक्ष्य 25,000 मवेशियों पर एक पशु चिकित्सा-लय औषधालय खोलने का है।

(2) (क) जी नहीं। निर्धारित मापदण्ड में नहीं जाता है।

(ख) जी नहीं। निर्धारित मापदण्ड में नहीं आता।

नवीन औषधालयों की व्यवस्था

14. **जगदीश प्रसाद तिवाड़ी** (बस्सी) क्या आयुर्वेद मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) क्या यह बात सच है कि वर्ष 1984-85 में जो औषधालय खोले गये हैं उनमें औषधियों का आवंटन नहीं किया गया ? यदि हां, तो क्यों ?

(2) नवीन औषधालयों में कहां–कहां अभी स्टाफ की नियुक्ति नहीं की गयी ? कृपया सूची सदन के पटल पर रखें।

उत्तर

(1) चालू वित्तीय वर्ष 1984–85 में खोले गये नवीन औषधालयों के लिये औषध हेतु बजट निम्न प्रकार आवंटित किया गया है :—

(क) 180 औषधालय = रु. 1500/- प्रति औषधालय

(ख) 220 औषधालय = रु. 2000/- प्रति औषधालय

अगले वर्ष में उक्त 180 औषधालयों को पांच सौ रुपये की पूर्ति करते हुऐ बजट आवंटित किया जायेगा।

लगभग 55 विभिन्न औषधियों की सप्लाई प्रारम्भ की जा चुकी है तथा शेष औषधियां औषधालयों को अधिकांशत: चालू माह में एवं आगामी एक दो माह में सप्लाई करदी जायेगी।

(2) वर्ष 1984–85 में नवीन खुले औषधालयों में जिन स्थानों पर स्टाफ का पदस्थापन नहीं किया गया है, उनकी सूची सदन के पटल पर रख दी गई है।

(212)

सूची

वर्ष 1984-85 में नवीन खुले उन औषधालयों की सूची, जहां निदेशालय स्तर से स्टाफ का पदस्थापन नहीं किया गया है।

क. सं.	नाम स्थान	जिला		
1	2	3		
1.	चांवड़ीकलां	अलवर		
2.	घाणा	सीकर		
3.	श्यामपुरा पचार	सीकर		
4.	भरथला	टौंक		
5.	थांवला	टौंक		
6.	गोगागेट (हरिजन बस्ती)	बीकानेर		
7.	कुचोर आगुनी	बीकानेर		
8.	धीरदेसर पुरोहितान	चूरू		
9.	19 पी. टी. डी.	श्री गंगानगर		
10.	गाड़	श्री गंगानगर		
11.	सणया	बाड़मेर		
12.	खान क्षेत्र केरू	जोधपुर		
13.	भूडवा	जालौर		
14.	रूपपुरा होरड़ा	नागौर		
15.	कूरणा	पाली		
16.	भड़िया	सिरोही		
17.	गोपालपुरा	बून्दी	इस स्थान पर पूर्व से ही औषधालय संचालित है। पुनः एक और खोल दिया गया है।	अन्य स्थानों का चयन विचाराधीन है।
18.	ऊंटड़ा	अजमेर	इस स्थान पर पूर्व से ही औषधालय संचालित है। पुनः एक और खोल दिया गया है।	
19.	हींगी	कोटा		
20.	बमनगवा	कोटा		

1	2	3
21.	खलदा खलदी	कोटा
22.	सोनियाना	भीलवाड़ा
23.	भीलवाड़ा (प्राकृतिक)	भीलवाड़ा
24.	नान्दसा	भीलवाड़ा
25.	बुल का खेड़ा	चित्तौड़गढ़
26.	भोपाल सागर	चित्तौड़गढ़
27.	गोयला	अजमेर
28.	सनोद	अजमेर
29.	डुमाड़ा	अजमेर
30.	कल्याणीपुरा	अजमेर
31.	मदनगंज	अजमेर
32.	राजनगर	अजमेर
33.	गुलगांव	अजमेर
34.	सराधना	अजमेर
35.	सिलारपुर	अलवर
36.	केरवावाल	अलवर
37.	टिटपुरी	अलवर
38.	खूंदरोठ	अलवर
39.	खानपुर अहीर	अलवर
40.	राजपुर जाटान	अलवर
41.	भूपखेड़ा	अलवर
42.	कालेड़ा	अलवर
43.	तिलवाड़	अलवर
44.	लखनपुर	भरतपुर
45.	मोलोनी	भरतपुर
46.	बसेरी	भरतपुर
47.	तुरतीपुरा	भरतपुर
48.	कंचनपुरा	भरतपुर
49.	गुढ़ावली	भरतपुर
50.	पाखर	स. माधोपुर
51.	बगलाई	स. माधोपुर
52.	दादनपुर	स. माधोपुर
53.	उकरूंद	स. माधोपुर

1	2	3
54.	खरा (पनियाला)	स. माधोपुर
55.	महावीरजी	स. माधोपुर
56.	अनोखू	सीकर
57.	ढाणी अहीरान	सीकर
58.	कोलवा	सीकर
59.	लछमणगढ़ खहर	सीकर
60.	रोल साहबसर	सीकर
61.	कुडली	सीकर
62.	छापर	सीकर
63.	बसावा	सीकर
64.	जाखल	सीकर
65.	जालुपुरा अनाज मंडी	जयपुर
66.	बूज	जयपुर
67.	थोलाई	जयपुर
68.	दांतरी	जयपुर
69.	कांसली	जयपुर
70.	देहलाला	जयपुर
71.	किशनपुरा	जयपुर
72.	बिदारा	जयपुर
73.	नोनपुरा	जयपुर
74.	मभांणा	जयपुर
75.	बासणा	जयपुर
76.	मंडा भोपावास	जयपुर
77	कानपुरा	जयपुर
78.	जग्गो की बावड़ी	जयपुर
79.	कोसाना (कोलाना)	जयपुर
80	बापूनगर (सिवाड एरिया)	जयपुर
81.	झोटवाड़ा	जयपुर
82.	धूमणसर	झुंझुनूं
83.	नीमवाली ढाणी	झुन्झुनूं
84.	सहदपुर	झुन्झुनूं
85.	शीश्रल	झुन्झुनूं
86.	हरिपुरा	झुन्झुनूं

1	2	3
87.	सुनारा	टोंक
88.	थांवला	टोंक
89.	लोंहरवाड़ा	टोंक
90.	आटोली	टोंक
91.	चन्दवाड़	टोंक
92.	सिक्कों का मोहल्ला	बीकानेर
93.	बारह गुवाड़ का चौक	बीकानेर
94.	मन्सूरी (सादासर)	बीकानेर
95.	सदासर बड़ा (कलासर)	बीकानेर
96.	नकोदेसर	बीकानेर
97.	वरजांगरसर	चूरू
98	भोजूसर उपाधियान	चूरू
99.	मेरसर	चूरू
100.	मेलूसर	चूरू
101.	बैंजवा	चूरू
102.	ढिंगारला	चूरू
103.	चांरिया	चूरू
104.	अमरपुरा जालू	श्रीगंगानगर
105.	67 आर. बी.	श्रीगंगानगर
106.	गुहवाला	श्रीगंगानगर
107.	बिरान	श्रीगंगानगर
108.	वनवाली	श्रीगंगानगर
109.	रामसरा जाखड़ान	श्रीगंगानगर
110.	बखीर	श्रीगंगानगर
111.	दईवास	श्रीगंगानगर
112.	कमाना	श्रीगंगानगर
113.	मेघाना	श्रीगंगानगर
114.	जूना मीठा खेड़ा	बाड़मेर
115.	खडीनवड़ी(शांहदार का पार)	बाड़मेर
116.	शिवनगरी	बाड़मेर
117.	उंडखा	बाड़मेर
118.	खुड़ाला	बाड़मेर
119.	नवातला जेठमाल	बाड़मेर

1	2	3
120,	गिलाकोपर	जोधपुर
121.	देवाता	जोधपुर
122.	दयाकोर	जोधपुर
123.	चापासर	जोधपुर
124.	सोयला	जोधपुर
125.	बुचेटी	जोधपुर
126.	हरिजन बस्ती राई का बाग	जोधपुर
127.	धून्धाड़ा	जोधपुर
128.	नया ताला	जोधपुर
129.	कलावला	जोधपुर
130.	चान्दूर	जालौर
131.	गोदन	जालौर
132.	मेटाला	जालौर
133.	ववाल	नागौर
134.	तंवरा	नागौर
135.	खारड़िया	नागौर
136.	धानजवा	नागौर
137.	चूंटीसरा	नागौर
138.	रोटू	नागौर
139.	माथा	पाली
140.	भादरलाऊ	पाली
141.	छोड़ा	पाली
142.	लोटोती	पाली
143.	निपल	पाली
144.	लाभड़ा	पाली
145.	कराड़ी	पाली
146.	दूजाणा	पाली
147.	डेण्डा	पाली
148.	रेन्दड़ी	पाली
149.	नया गांव (चौपड़ा)	पाली
150.	सबलपुर	पाली
151.	गेलावास	पाली
152.	मेरमाण्डवाड़ा	सिरोही

1	2	3
153.	पेशुआ	सिरोही
154.	सिलोड	बून्दी
155.	सिसोला	बून्दी
156.	बम्बोरी	बून्दी
157.	कालपुरिया	बून्दी
158.	लाडपुरा	बून्दी
159.	डोबड़ा	झालावाड़
160.	रूडवाल	झालावाड़
161.	हापाहेड़ी	कोटा
162.	पुरोहित जी की टापरी	कोटा
163.	बधाना	कोटा
164.	काठड़ी	उदयपुर
165.	साकर खाईया	उदयपुर
166.	कठार	उदयपुर
167.	पानेर	उदयपुर
168.	पीपली डांडीयान	उदयपुर
169.	रखलिया कलां	उदयपुर
170.	गोदाजी	उदयपुर
171.	दूदालिया	उदयपुर
172	मेनापादर	बांसवाड़ा
173.	रेणवास	भीलवाड़ा
174.	श्रीनगर	भीलवाड़ा
175.	उन्दरों का खेड़ा	भीलवाड़ा
176.	भीलवाड़ा	भीलवाड़ा
177.	बामनिया	भीलवाड़ा
178.	लाम्बिया खुर्द	भीलवाडा
179.	बासडा	भीलवाड़ा
180.	अड़ीन्दा	भीलवाड़ा
181.	कांगड़ी	भीलवाड़ा
182.	सगरेव	भीलवाड़ा
183.	मन्शा	भीलवाड़ा
184.	तखवारिया	भीलवाड़ा
185.	जोरावरपुर	भीलवाड़ा
186.	सोतीला	भीलवाड़ा
187.	राजपुरा	चित्तौड़गढ़
188.	बिनायका	चित्तौड़गढ़
189.	जाड़ाना	चित्तौड़गढ़
190.	बसई घीयाराम	धौलपुर
191.	कोटरा	धौलपुर
192.	झिरी	धौलपुर
193.	गोमत	जसलमेर

1	2	3
194.	सरू	उदयपुर
195.	खेरवाड़ा	उदयपुर
196.	सराड़ा	उदयपुर
197.	झाड़ोल	उदयपुर
198.	सलूम्बर	उदयपुर
199.	कालीवास	उदयपुर
200.	जावर माईन्स	उदयपुर
201.	बलिचा	उदयपुर
202.	सरोपाल	उदयपुर
203.	बड़ावली	उदयपुर
204.	मादड़ी	उदयपुर
205.	कन्तोड़ा	उदयपुर
206.	टोडा	उदयपुर
207.	सागवाड़ा	उदयपुर
208.	जोगीवड़	उदयपुर
209.	बोड़मली	डूंगरपुर
210.	बिच्छीवाड़ा	डूंगरपुर
211.	खलील	डूंगरपुर
212.	टामटिया	डूंगरपुर
213.	अम्बाड़ा	डूंगरपुर
214.	गरीयता	डूंगरपुर
215.	महूडी	डूंगरपुर
216.	खडलई	डूंगरपुर
217.	हडमतिया	डूंगरपुर
218.	बालई	डूंगरपुर
219.	हडमाला	डूंगरपुर
220.	नवलश्याम	डूंगरपुर
221.	नोखना	डूंगरपुर
222.	गिरवर	सिरोही
223.	किवरली	सिरोही
224.	नौगाम	चित्तौड़गढ़
225.	मकथलो	चित्तौड़गढ़
226.	गडो	बांसवाड़ा
227.	बागीडोरा	बांसवाड़ा
228.	घाटोल	बांसवाड़ा
229.	बस्सी	बांसवाड़ा
230.	लसाड़ा	बांसवाड़ा
231.	बसीवाड़ा	बांसवाड़ा
232.	बिलोदा	बांसवाड़ा
233.	भड़स	बांसवाड़ा

सातवीं पंचवर्षीय योजना

15. श्री यदुनाथ सिंह (नदबई),
श्री नत्थीसिंह (कुम्हेर),
श्री जगतसिंह (बानसूर),
श्री जगमाल सिंह यादव (तिजारा),

श्री सम्पत सिंह (नगर):–क्या योजना मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) राज्य की सातवीं पंचवर्षीय योजना में कितनी धन राशि प्रस्तावित है ? राज्य सरकार का कितनी राशि की योजना का प्रस्ताव था ?

(2) क्या योजना आयोग ने सातवीं योजना की स्वीकृति दे दी है ? यदि हां, तो कब और कितने की ?

उत्तर

(1) राज्य की प्रारूप सातवीं पंचवर्षीय योजना रु. 6549.40 करोड़ के आकार की योजना आयोग को प्रस्तावित है।

(2) योजना आयोग ने राज्य की सातवीं पंचवर्षीय योजना की स्वीकृति अभी नहीं दी है।

आयुर्वेदिक औषधालयों में औषधियों का अभाव

16. श्री जगदीश प्रसाद तिवाड़ी (बस्सी): क्या आयुर्वेद मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

क्या यह बात सही है कि राज्य में आयुर्वेदिक औषधालयों में प्राथमिक चिकित्सा के लिये भी औषधि उपलब्ध नहीं है ? यदि हां, तो क्यों और कब तक व्यवस्था कर दी जायेगी ?

उत्तर

औषधालयों में प्राथमिक चिकित्सा के काम में आने वाली निम्न औषधियां, वस्तुएं उपलब्ध हैं:—

1. जात्यादि तेल
2. कृष्ण मरहम
3. वेसलीन
4. तारपीन का तेल
5. कपुर धारा
6. एडिसिव प्लास्टर
7. रूई
8. बैन्डेज
9. गाज

उपरोक्त के अतिरिक्त लगभग 50 अन्य विभिन्न औषधियों की सप्लाई भी प्रारम्भ की जा चुकी है। शेष औषधियां चालू माह तथा आगामी एक-दो माह में औषधालयों में उपलब्ध करा दी जावेंगी।

उद्योग लगाने हेतु जारी आशय-पत्र

17. श्री घनश्याम तिवाड़ी (सीकर):—क्या उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) राज्य में सन् 1983-84 एवं 1984-85 में 28 फरवरी, 1985 तक केन्द्र सरकार द्वारा क्रमशः कितने-कितने आशय-पत्र किन-किन व्यक्तियों को जारी किये गये तथा कितने-कितने लाईसेन्स प्राप्त कर किन-किन व्यक्तियों ने कार्य प्रारम्भ किया ? कृपया क्रमवार सूची सदन के पटल पर रखें।

(श्री घनश्याम तिवाड़ी)

(2) ये आशय पत्र क्रमशः किस-किस उद्योग के लिये जारी किये गये थे तथा उनमें से कितना-कितना पूंजी निवेशन होना था ? कृपया क्रमवार सूची सदन के पटल पर रखें।

(3) क्या यह सही है कि उद्यमी केन्द्र सरकार से आशय-पत्र तो प्राप्त कर लेते हैं किन्तु राज्य सरकार की उदासीनता के कारण लाइसेन्स लेने में हिचकिचाते हैं ? यदि हां, तो सरकार पूंजी निवेशन को बढ़ाने के लिये क्या कार्यवाही कर रही है ?

उत्तर

(1) वर्ष 1983-84 में 39 एवं वर्ष 1984-85 में माह फरवरी तक 23 आशय-पत्र विभिन्न उद्यमियों को जारी हुए हैं जिनकी सूची सदन के पटल पर रख दी गई है। इसमें से 4 आशय-पत्र औद्योगिक लाइसेन्स में परिवर्तित हो चुके हैं जो ऊपर वर्णित सूची के कॉलम 7 में दर्शाये गये हैं।

(2) ये आशय-पत्र जिन उत्पादों के लिये जारी किये गये तथा उनमें प्रस्तावित पूंजी निवेशन संबंधी विवरण सूची के कॉलम संख्या 4 व 6 में अंकित हैं।

(3) जी, नहीं। प्रश्न नहीं उठता।

सूची–"क"

भारत सरकार द्वारा वर्ष 1983-84 में राजस्थान हेतु जारी किये गये ग्राशय-पत्रों की सूची

क्र. सं.	पार्टी का नाम एवं पता	स्थान	उत्पादन का नाम	ग्राशय-पत्र संख्या एवं दिनांक	प्रस्तावित पूंजी निवेशन (लाख रुपयों में)	विशेष विवरण
1	2	3	4	5	6	7
1.	मैसर्स मॉर्डन वूलन (प्रा.) लिमिटेड डी–22, मोती डूंगरी रोड़, जयपुर	भीलवाड़ा	नोन वर्संटेड स्पिंडल्स 5 पावर लूम	एल. ग्राई. 276 (83), दिनांक 19-4-1983	20.50	
2.	मैसर्स डॉ. बलदेव कृष्णा, यू. के. द्वारा श्री पी. एन. सहगल, बी–7, ग्रीन पार्क एक्सटेन्शन, नई दिल्ली	भिवाड़ी (अलवर)	लेदर टक्सीलरीज एण्ड फिनिशिंग केमिकल्स 1510 टन	एल. ग्राई. 316 (83), दिनांक 6-5-1983	103.00	
3.	मैसर्स जे. के. सिन्थेटिक लिमिटेड ग्रशोका एस्टेट (द्वितीय फ्लोर) 24, बाराखम्बा रोड़, नई दिल्ली	कोटा	एक्सपेनशन ग्रॉफ नाइलोन फिलामेन्ट यार्न 5376 टी.पी. ए. प्रति. 0624=6000 टी. पी. ए.	एल. ग्राई. 251 (83), दिनांक 8-4-1983	2500.00	

1	2	3	4	5	6	7
4.	मैसर्स देहली क्लोथ एण्ड जनरल मिल्स, (श्रीराम रायन) आकाश दीप बाराखम्बा रोड, नई दिल्ली	कोटा	विसकोज फिलामेन्ट यार्न 3,000 टी. पी. ए.	एल. आई. 239 (83), दिनांक 8-4-1983	600.00	
5.	मैसर्स श्रीराम फाईबर्स लिमिटेड, हैमकुन्ट हाऊस, 6, राजेन्द्रा प्लेस, पूसा रोड, नई दिल्ली	कोटा	फ्लोरोकार्बन पोलीमर्स 1,000 टी. पी. ए.	एल. आई. 259 (83), दिनांक 8-4-1983	817.00	
6.	मैसर्स ओझा वूलन मिल्स 94, इण्डस्ट्रीयल एरिया, बीकानेर	बीकानेर	वूलन क्लोथ 2 पावरलूमर	एल. आई. 290 (83), दिनांक 23-4-1983	3.07	
7.	मैसर्स राजस्थान एक्सप्लोसिव एण्ड कैमिकल्स लिमिटेड, मेकुण्ड के पास, धौलपुर	धौलपुर	डिटोनेटर्स 45 मिलियन नं.	एल. आई. 344 (83), दिनांक 23-5-1983	145.00	औद्योगिक अनुज्ञप्ति में परिवर्तित
8.	मैसर्स राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास एवं विनियोजन निगम, जयपुर	अजमेर	डिजिटल इलेक्ट्रोनिक वाचेज 2 लाख नं.	एल. आई. 455 (83), दिनांक 13-7-1983	46.00	

9.	मैसर्स राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास एवं विनियोजन निगम, जयपुर	जयपुर	कलर टी. वी. सेट्स 25,000 नं.	एल. आई. 485 (83), दिनांक 23-7-1983	37.40	औद्योगिक अनुज्ञप्ति में परिवर्तित
10.	मैसर्स वेस्टर्न इण्डिया स्टेट मोटर्स, लिमिटेड, रेल्वे रोड, जोधपुर	जोधपुर	ओक्सीजन गैस 0.9 एम.सी.एम. नाईट्रोजन गैस 0.9 ,,	एल. आई. 466 (83), दिनांक 19-7-1983	59.00	
11.	मैसर्स प्रीतपाल सिंह मेकर, बी–24, वेस्टेण्ड, नई दिल्ली	भिवाड़ी (अलवर)	ग्वार गम डिराइवेटिक्स 4500 टी.टी.ए.	एल. आई. 510 (83), दिनांक 6-8-1983	305.00	
12.	मैसर्स ग्रोम मेटल्स एण्ड मिनरल (प्रा.) लिमिटेड, 4 एल. ए. 12, जवाहर नगर, जयपुर	भीलवाड़ा	ओक्सीजन गैस 1.0 मिलियन क्यूबिक मीटर्स	एल. आई. 518 (83), दिनांक 9-8-1983	171.00	
13.	मैसर्स ग्रोम स्ट्रक्चरलस (इण्डिया) प्रा. लिमिटेड, 4-एल.ए., 12 जवाहर नगर, जयपुर	भीलवाड़ा	डिजोल्वड ऐसीटेलिन गैस 0.2 मिलियन क्यूबिक मीटर्स	एल. आई. 519 (83), दिनांक 9-8-1983	171.00	
14.	मैसर्स सिन्ट्रान (इण्डिया) प्रा. लिमिटेड, 99, पाटलीपुत्र कोलोनी, पटना, बिहार	गुड़गांव (हरियाणा) से भिवाड़ी (अलवर)	मैगनेटिक हैड्स 1.5 मिलियन नं.	एल. आई. 435 (82), दिनांक 3-7-1982	एन. ए.	
15.	श्री आर. एन. मारदा. 3786, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली	चूरू	कलर टी. वी. रिसीवर सेट्स 50,000 नं.	एल. आई. 720 (83), दि. 3-11-1983	706.00	

1	2	3	4	5	6	7
16	मैसर्स पी. जे. वी. इलेक्ट्रोनिक्स, ए-1/155, सफदरजंग एनक्लेव, नई दिल्ली	अलवर	ब्लैक एण्ड व्हाईट टी. वी. रिसीवर सैट्स 30,000 नं. कलर टी. वी. रिसीवर सैट्स 50,000 नं.	एल. आई. 722 (83), दि. 3-11-1983	एन. ए.	
17.	मैसर्स लेम्प्स एण्ड लाईटिंग लिमिटेड, 1101, नई दिल्ली हाउस, 27, बाराखम्बा रोड, नई दिल्ली	अलवर	फ्लोरीसेन्ट ट्यूब्स 4 मिलियन नं.	एल. आई. 853 (83), दि. 16-12-1983	443.00	
18.	श्री वी. एस. बग्गा, द्वारा मैसर्स इलेक्ट्रोमेटिक्स सी-3, कम्यूनिटी सेन्टर, नारायण विहार, नई दिल्ली	अलवर	वेरीएबल केपेसिटर्स 3 मिलियन नं.	एल. आई. 862 (83), दि. 20-12-1983	62.00	
19.	मेसर्स राजस्थान ओक्सीजन (प्रा.) लिमिटेड, 18, आर. एन. मुकर्जी रोड, कलकत्ता—1	सिरोही	ओक्सीजन गैस 1.00 एम. सी. एम. डिजोल्वड ऐसीटेलिन गैस 0.20 एम. सी. एम.	एल. आई. 863 (83), दि. 20-12-1983	167.00	
20.	मैसर्स देहली क्लोथ एण्ड जनरल मिल्स कम्पनी लिमिटेड (श्रीराम रेयन) आकाश दीप, नई दिल्ली	लाडपुरा (कोटा)	कार्बन टैटरा क्लोराइड 1.000 टी. पी. ए.	एल. आई. 870 (83), दि. 20-12-1983	59.00	

21.	मैसर्स सेमटल (इण्डिया) लिमिटेड, एस पी–503, भिवाड़ी इंडस्ट्रीयल एरिया, अलवर	भिवाड़ी (अलवर)	ब्लैक एण्ड व्हाइट टी. वी. पिक्चर ट्यूब्स-10 लाख नं.	एल. आई. 873 (83), दि. 20-12-1983	397.67	औद्योगिक अनुज्ञप्ति में परिवर्तित
22.	मैसर्स अर्नेस्ट गैसेज (प्रा.) लिमिटेड ए-204/205, मेवाड़ इण्डस्ट्रीयल एरिया, उदयपुर	मेवाड इण्डस्ट्रीयल एरिया, उदयपुर	ओक्सीजन गैस 1.0 एम.सी.एम.	एल. आई. 874 (83), दि. 20-12-1983	4.00	
23.	मैसर्स पेस्टीसाईड्स इण्डिया; प्रोमेवाड आईल एण्ड जनरल मिल्स लिमिटेड उदयसागर रोड, पो. बो. नं. 20, उदयपुर	गीरवा (उदयपुर)	कार्बोफ्यूरन टेक्नीकल 400 टन	एल. आई. 875 (83), दि. 20-12-1983	235.00	
24.	मैसर्स अलाईड इलेक्ट्रोनिक्स एण्ड मैगनिटिक्स लिमिटेड, भिवाड़ी, अलवर	भिवाड़ी (अलवर)	मैगनेटिक स्टोरेज डिसेज 2 मिलियन नं.	एल. आई. 876 (83), दि. 22-12-1983	एन. ए.	
25.	मैसर्स अर्नेस्ट गैसेज प्रा. लिमिटेड, ए–204-205, मेवाड़ इण्डस्ट्रीयल एरिया, उदयपुर	उदयपुर	नाईट्रोजन गैस 0.50 एम. सी. एम. डिजोल्व्ड ऐसीटेलीन 0.40 एम. सी. एम.	एल. आई. 878 (83), दि. 22-12-1983	33.50	
26.	श्रीलाल नवानी, 4348, मदन मोहन अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली	भिवाड़ी (अलवर)	कलर टी. वी. रिसीवर सैट्स 50,000 नं.	एल. आई. 892 (83), दि. 26-12-1983	105.00	

1	2	3	4	5	6	7
27.	मैसर्स शंकर इलैक्ट्रोनिक्स लिमिटेड 103, जोली मेकर एपार्टमेन्ट्स नं. 3, जी. डी. सोमानी मार्ग, बम्बई—5	अलवर	कलर टी. वी. रिसीवर सैट्स 50,000 नं. ब्लैक एण्ड व्हाईट टी. वी. रिसीवर सैट्स 10,000 नं.	एल. आई. 896 (83); दि. 26-12-1983	एन. ए.	औद्योगिक अनुज्ञप्ति में परिवर्तित
28.	श्री एम. एस. मिश्रा, 79, जोर बाग, नई दिल्ली	अलवर	डाइमण्ड इम्प्रीगनेटेड सीगमेन्ट्स 3 लाख नं. सर्कुलर सा सीगमेन्ट्स 12,000 नं.	एल. आई. 902 (83); दि. 26-12-1983	107.00	
29.	श्री वासू नवानी सी—47; मै. पोदार गार्डन, नई दिल्ली	भिवाड़ी (अलवर)	कलर टी. वी. रिसीवर सैट्स 50,000 नं.	एल. आई. 942 (83), दि. 29-12-1983	345.00	
30.	मैसर्स भारत जिप्सम प्रा. लिमिटेड, 608, भण्डारी हाऊस, 19, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली—19	चूरू	जिप्सम बोर्डस 1.00 करोड़ स्क्वायर मीटर जिप्सम ब्लोक्स टाइल्स एवं लीक 1.00 लाख टन	एल. आई. 1024 (83), दि. 31-12-1983	एन. ए.	
31.	मैसर्स देहली क्लोथ एण्ड जनरल मिल्स कम्पनी लिमिटेड (श्रीराम रेयन) आकाश दीप, बाराखम्बा रोड, नई दिल्ली—1	लाडपुरा (कोटा)	एन हाईड्रस सोडियम सल्फेट 7700 टी. पी. ए. सोडियम सल्फाइड—280 टी. पी. ए.	एल. आई. 1026 (83) दि. 31-12-1983	1381.00	

32. श्री सुभाष चन्द्र, 26/64, पंजाबी बाग, नईदिल्ली	अलवर	हार्ड जिलेटिन कैपसूल्स 800 मिलियन नं.	एल. आई. 19 (84), दि. 16-1-1984	540.00
33. मैसर्स राठी एलोय एण्ड स्टील लिमिटेड, 3—ए, बन्धना—11, टोलसटाय मार्ग, नई दिल्ली	जालौर	एच. आर. स्टील स्ट्रीप्स 40,000 टन	एल. आई. 46 (84), दि. 23-1-1984	40.00
34. मैसर्स प्रिमियर सिन्थेटिक्स, कुम्हरार, पटना-16	जालौर	गैल्वेनाइज्ड प्लेन कोरोगेटेड शीट्स ऑफ 26 गेज एण्ड थिनर 35,000 टन	एल. आई. 65 (84), दि. 28-1-1984	655.00
35. श्री वी. एम. ग्रोवर, 4—सी, बल्कन इन्श्योरेन्स बिल्डिग वीर नारायण रोड, बम्बई-20	पिछड़ा जिला	जिप्सम फाइबर बोर्ड, 50 लाख स्क्वायर मीटर	एल. आई. 101 (84), दि. 8-2-1984	515.00
36. मैसर्स राजस्थान को-ओपरेटिव डेयरी फेडरेशन लिमिटेड, नीयर गांधी-नगर रेलवे स्टेशन, जयपुर	भीलवाड़ा	घी—360 टन बटर—640 टन	एल. आई. 111 (84), दि. 17-2-1984	377.00
37. मैसर्स वेस्ट एण्ड क्रोम्पटन इन्जीनियरिंग लिमिटेड, 29, राजाजी सलाई, मद्रास—1	अलवर	स्टार्टर मोटर्स 1.95 लाख नं. डायनोमा आलटरनेटर्स 1.07 लाख नं. वोल्टेज रेगूलेटर्स 1.07 लाख नं.	एल. आई. 127 (84), दि. 22-2-1984	385.00

1	2	3	4	5	6	7
38.	श्री सूर्य प्रकाश श्रीवास्तव, मै. शुभ-मयावती इण्डस्ट्रीज, 821, सेवा पथ, जयपुर–3	जयपुर	इलक्ट्रोनिक्स कम्पोनेंट्स कैमिकलाइज्ड मैगनेटिक कोड्स हीट सिन्कस आदि 5 मिलियन नं.	एल. आई. 161 (84), दि. 3-3-1984	28.00	
39.	मैसर्स 'जय' इंजीनियरिंग वर्क्स लिमिटेड, 23, कस्तुरबा गांधी मार्ग नई दिल्ली।	शम्भुपुरा (चित्तौड़गढ़)	पोर्ट लैण्ड सीमेन्ट 8.40 लाख टन	एल. आई. 224 (84); दि. 26-3-1984	10240.00	
वर्ष 1984-85						
1.	मैसर्स राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास एवं विनियोजन निगम, जयपुर।	भीलवाड़ा	सिरेमिक फाइबर एण्ड अलाईड प्रोडक्ट्स 1,000 टन	एल. आई. 277 (84), दि. 11-4-1984	580.00	
2.	श्री एम. एल. जैन, 9, बी. सी. हाई पीक अपार्टमेन्ट्स, 20-ए, सवाई विवेकानन्द रोड, बांदरा बम्बई-50	बी. श्रेणी पिछड़ा जिला	आडियो मैगनेटिक टेप्स 1500 एम. आर. एम.	एल. आई. 300 (84), दि. 18-4-1984	113.00	
3.	श्री आर. के. शर्मा, 12-ए. नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता-1	सिरोही	नाइलोन चिप्स मोल्डिंग पाउडर 4000 टी. पी. ए.	एल. आई. 357 (84), दि. 9-5-1984	568.00	

4. श्री जे. पी. भालोठिया, 5, क्लाइवरो, कलकत्ता-1	गोटन (नागौर)	व्हाइट सीमेन्ट 80,000 टन	एल. आई. 453 (84), दि. 29-6-1954	1530.00
5. मैसर्स स्नोकेम इण्डिया लिमिटेड, किलिक हाउस, चरनजीत राय मार्ग, बम्बई-1	गोटन (नागौर)	व्हाइट सीमेन्ट 50,000 टन	एल. आई. 482 (84), दि. 30-6-1984	798.00
6 मैसर्स वाई फोर्ड लिमिटेड 6, हैलेरोड, नई दिल्ली	गोटन (नागौर)	व्हाइट सीमेन्ट 66,000 टन	एल. आई. 483 (84), दि. 30-6-1984	915.00
7. मैसर्स दी इण्डियन रेयन कोरपोरेशन लिमिटेड, 106-107, जोली मेकर चेम्बर, नं. 11, 225, नरीमन पोइन्ट, बम्बई-21	गोटन (नागौर)	व्हाइट सीमेन्ट 80,000 टन	एल. आई. 492 (84), दि. 30-6-1984	1125.00
8. मैसर्स स्ट्रो प्रोडेक्ट्स लिमिटेड, नेहरू हाउस, तीसरी मंजिल, 4, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-2	बसंतगढ़ (सरोही)	पोर्टलैण्ड सीमेन्ट 10 लाख टन	एल. आई. 589 (84), दि. 30-7-1984	3500.00
9. मैसर्स राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास एवं विनियोजन निगम, जयपुर	पिछड़ा जिला	टेलीफोन इन्स्ट्रूमेन्ट्स 5.00 लाख नं.	एल. आई. 602 (84), दि. 31-7-1984	457.00

1	2	3	4	5	6	7
10.	मैसर्स सूर्य लोजिंग लिमिटेड, 208, आकाश दीप, 26-ए, बाराखम्बा रोड, नई दिल्ली	अलवर	ग्लास सैल्स जी. एल. एस. लैम्प्स 30 मिलियन नं.	एल. आई. 640 (84), दि. 9-8-1984	205.00	
11.	मैसर्स राजस्थान इलेक्ट्रोनिक्स एण्ड इन्स्ट्रुमेन्ट्स लिमिटेड, प्लाट नं. 2, कनकपुरा औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर	कनकपुरा जयपुर	इलेक्ट्रोनिक आटोमेटिक पोलूशन मोनिटरिंग सिस्टम 100	एल. आई. 705 (84), दि. 22-9-1984	40.00	
12.	मैसर्स आर. एस. शर्मा, 26 सेक्टर, 9, चण्डीगढ़	भिवाड़ी (अलवर)	पोलूरोथिन प्रोडक्ट्स सोलवेन्ट एण्ड वाटर बेस्ड कम्पाउन्डर्स 2500 टी. पी. ए.	एल. आई. 742 (84), दि. 29-9-1984	246.00	
13.	मैसर्स जुआरी एग्रोकेमीकल्स लिमिटेड जय किशन भवन, जुआरी नगर	सवाई-माधोपुर	अमोनिया–1350 टन यूरिया–1125 टन	एल. आई. 775 (84), दि. 16–10–1984	47900.00	
14.	डा. सोम दत्त, 56, कम्यूनिटी सेन्टर, इस्ट आफ केलाश, नई दिल्ली	भिवाड़ी, (अलवर)	ग्लेज्ड वाल एण्ड फ्लोर टाईल्स 10,000 टन	एल. आई. 779 (84), दि. 17–10–1984	550.00	
15.	मैसर्स एक्स एल ओ यूनाईटेड क्लच प्रोडेक्ट्स, 78-बी, डा. एनीबीसेन्ट रोड, वरली बम्बई–18	अलवर	क्लच एसेम्बल सैट्स 80,000 नं. क्लच फ्लेक्स 2.00 लाख नं.	एल. आई. 803 (84), दि. 27–10–1984	एन.ए.	औद्योगिक अनुज्ञप्ति में परिवर्तित

16.	श्री के. के. जाजोडिया, 1106, अशोका स्टेट, नई दिल्ली –1	इन्द्रगढ़ (बूंदी)	सिरेमिक सेनीटरीवेयर 8000 टी. पी. ए.	एल. आई. 835 (84), दि. 12–11–1984	575.00
17.	श्री अमरजीत सिंह बक्सी, बी–5/9, सफदरजंग इंक्लेव, नई दिल्ली-29	भिवाड़ी अलवर	एलमूनियम प्रोसेसर डाई कास्टिंग फोर आटोमोटिव एप्लीकेशन 1,000 टन	एल. आई 846 (84), दि. 15–11–1984	305.00
18.	श्री संजय भास्कर, 276, ईश्वर नगर, नई दिल्ली।	पिछड़ा जिला	फलोपी डिसेज 10 लाख नं0	एल. आई. 941 (84), दि. 13-12-1984	127.00
19.	मैसर्स होम विजन सिस्टम प्रा. लिमिटेड, 1/5, आफस अली रोड, नई दिल्ली।	भिवाड़ी (अलवर)	वीडीयो प्रोजेक्टर्स 10,000 नं.	एल. आई. 946 (84), दि. 13–12–1984	74.00
20.	मैसर्स प्रताप राजस्थान स्पेशल स्टील, रोड नं. 6, विश्वकर्मा इण्ड. एरिया, जयपुर	जयपुर।	ओक्सीजन गैस 1.0 एम. सी. एम.	एल. आई. 969 (84), दि. 27–12–1984	70.00
21.	श्री आर. सी. कौशल, 52, रीगल बिल्डिंग, द्वितीय फ्लोर, पार्लियामेन्ट स्ट्रीट, नई दिल्ली।	भिवाड़ी (अलवर)	एस. जी. आईरन कास्टिंग 5,000 टी. पी. ए. जी. आई कास्टिंग 5,000 टी पी. ए.	एल. आई. 996 (84), दि. 29–12–1984	560.00

1	2	3	4	5	6	7
22.	श्री राकेश शर्मा, ए 32, फ्रण्ड्स कोलोनी ईस्ट, नई दिल्ली –65	भिवाड़ी (अलवर)	लैदर आवजलरीज एण्ड फिनिशिंग केमिकल्स, 1500 टी. पी. ए.	एल. आई. 999 (84), दि. 27–12–1984	114.00	
23.	श्री विपिन कुमार अग्रवाल, 303, स्काई पार्क, होस्टन टैक्सेज, यू. एस. ए.	भिवाड़ी (अलवर)	पब्लिक टेलिफोन 30,000 नं.	एल. आई. 1051 (84), दि. 29–12–1984	182.00	

इन्दिरा गांधी नहर से लिफ्ट योजनायें

18. श्री गंगाराम चौधरी (बाड़मेर) : क्या इन्दिरा गांधी नहर मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) इन्दिरा गांधी नहर से सम्बन्धित कौन-कौन सी लिफ्ट योजनाओं की स्वीकृति दी जा चुकी है तथा कौन-कौन सी विचाराधीन हैं ?

(2) क्या बाड़मेर जिले हेतु सिंचाई अथवा पीने के पानी के उद्देश्य से किसी लिफ्ट नहर की योजना विचाराधीन है ? यदि नहीं, तो क्या सरकार ऐसी योजना बनाने का विचार रखती है ?

उत्तर

(1) इन्दिरा गांधी नहर से सम्बन्धित प्रथम चरण में लूणकरणसर-बीकानेर लिफ्ट नहर है जिसका निर्माण कार्य पूरा हो चुका है। इसके अतिरिक्त द्वितीय चरण में पांच लिफ्ट नहरों की स्वीकृति राज्य सरकार ने जून, 1983 में दी थी। इसके अतिरिक्त कोई अन्य लिफ्ट योजना फिलहाल विचाराधीन नहीं है।

(2) इन्दिरा गांधी नहर परियोजना के लिए उपलब्ध जल के उपयोग से सम्बन्धित अन्तिम बंटवारा करते समय इस पर विचार किया जाना सम्भव होगा।

सार्वजनिक टंकी तथा हौज निर्माण के लिये प्राप्त सीमेंट का दुरुपयोग

19. श्रीमती सुमित्रा सिंह (पिलानी) : क्या ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) क्या यह सही है कि जनता शासन के दौरान वर्ष 1979 में जिला झुन्झुनूं के सरपंच, मुकाना द्वारा ग्राम चिड़ासन में सार्वजनिक टंकी तथा चिड़ासन में महलों के पाने तक पाइप लाइन व पाइप लाइन के आखिर में हौज का निर्माण करवाया गया था ? क्या इस कार्य के लिए पंचायत द्वारा 329.10 मीटर पी. वी. सी. पाइप व 20 कट्टे सीमेन्ट खरीदी गई ?

(2) क्या यह सही है कि इस कार्य में 3 कट्टे सीमेंट व $2\frac{1}{2}$ मीटर पाइप लाइन ही काम में आई ? यदि हां, तो फिर इस सम्बन्ध में क्या कार्यवाही की गई ?

उत्तर

(1) जी हां।

(2) जी नहीं। इस कार्य में 211 मीटर (न कि $2\frac{1}{2}$ मीटर) पाइप लाइन काम में आई। बचे हुये पाइप (109 मीटर) ग्राम सेवक को दिनांक 15-3-82 को तथा ग्राम सेवक से वर्तमान सरपंच ग्राम पंचायत, मुकाना को दिनांक 7-5-83 को संभलाये गये। कनिष्ठ अभियन्ता के मूल्यांकन के अनुसार इस काम पर पांच कट्टे तक सीमेन्ट काम में आया है। सीमेन्ट तथा अन्य आरोपों के सम्बन्ध में जांच जारी है। यह मामला मुन्सिफ मजिस्ट्रेट न्यायालय में भी विचाराधीन है।

प्राथमिक पाठशालाओं में अध्यापक का अभाव

20. **श्री हेमाराम चौधरी** (गुड़ा-मालानी) : क्या ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे —

(1) बाड़मेर जिले में पंचायती राज के अधीन प्राथमिक पाठशालाओं में छात्रों के अनुपात में कितने अध्यापकों की आवश्यकता है एवं उसमें से कितने पद स्वीकृत हैं ?

(2) कितने स्वीकृत पद अध्यापकों के अभाव में खाली पड़े हैं और कितने स्कूल अध्यापकों के अभाव में बन्द पड़े हैं ? कृपया पंचायत समितिवार आंकड़े सदन के पटल पर रखें ।]

उत्तर

(1) बाड़मेर जिले में छात्रों के अनुपात में 31-12-84 की छात्र संख्या के अनुसार 1703 अध्यापकों की आवश्यकता है तथा 1250 पद स्वीकृत हैं ।

(2) अध्यापकों के अभाव में अध्यापकों के 310 स्वीकृत पद खाली हैं और इस वर्ष स्वीकृत 106 विद्यालय नहीं खुल पाये हैं तथा 146 प्राथमिक विद्यालय बन्द हैं । पंचायत समितिवार आंकड़े सदन के पटल पर रख दिये गये हैं ।

आंकड़े

नाम पंचायत समिति	स्वीकृत प्राथमिक विद्यालय	स्वीकृत अध्यापकों के पद	कार्यरत अध्यापकों की संख्या	अध्यापकों के रिक्त पद	बन्द प्राथमिक विद्यालय	1:49 के अनुपात में अध्यापकों के पदों की आवश्यकता	अनुपात के हिसाब से पदों की कमी
1	2	3	4	5	6	7	8
बाड़मेर	123	154	94	60	49	205	56
शिव	117	113	78	35	47	156	57
चौहटन	121	141	109	32	32	194	57
बायतू	116	158	112	46	37	188	22
सिणधरी	111	158	124	34	23	210	43
धोरीमन्ना	125	167	137	30	26	193	35
बालोतरा	121	189	149	40	30	267	83
सिवाना	90	170	137	33	8	290	100
	924	1250	940	310	252	1703	453

नोट:—इनमें 106 नये इसी वर्ष स्वीकृत विद्यालय सम्मिलित हैं ।

रोजगार योजनाओं अथवा अन्य योजनाओं के अन्तर्गत कार्य

21. श्री नाथूराम मिर्धा (मेड़ता) :

श्री नारायण राम बेड़ा (भोपालगढ़) : क्या ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) क्या यह सही है कि दिनांक 25 नवम्बर, 1984 के पश्चात् राज्य में पंचायत एवं विकास विभाग द्वारा विभिन्न रोजगार प्रदान करने वाली या अन्य योजनाओं के अन्तर्गत सड़क निर्माण, लघु सिंचाई, पीने के पानी की सुविधा इत्यादि के कार्य स्वीकृत किये गये या चालू किये गये थे ? यदि हां, तो उनके सम्बन्ध में कृपया पृथकशः निम्न विवरण सदन के पटल पर रखें:—

(क) कार्य का नाम

(ख) कार्य का स्थान एवं तहसील का नाम

(ग) सम्बन्धित ठेकेदार का नाम

(घ) कार्य की स्वीकृति का दिनांक

(ङ) कार्य की स्वीकृति लागत

(च) कार्य के चालू करने का दिनांक

(छ) वर्क ऑर्डर के अनुसार कार्य की समाप्ति का दिनांक

(ज) कार्य की वास्तविक अनुमानित लागत क्या होगी ?

(झ) कार्य की समाप्ति का दिनांक क्या होगा ?

(2) क्या उपरोक्त में कार्यों से तत्पश्चात्, कोई कार्य बन्द कर दिये गये हैं ? यदि हां, तो उन कार्यों का नाम, बन्द करने का दिनांक, बन्द करने का कारण एवं अब तक इन कार्यों पर कितनी धन-राशि खर्च हुई, ? सम्बन्धित अलग-अलग विवरण सदन के पटल पर रखें।

उत्तर

(1) पंचायत एवं विकास विभाग द्वारा 25 नवम्बर, 1984 के पश्चात् ऐसे कोई कार्य स्वीकृत नहीं किये गये।

(2) प्रश्न नहीं उठता।

जयपुर शहर के सौन्दर्यकरण हेतु पर्यटन योजनायें

22. श्री गिरधारीलाल भार्गव (किशनपोल) : क्या पर्यटन मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

पर्यटन विभाग द्वारा जयपुर शहर को सुन्दर व आकर्षक बनाये जाने की कौन-कौन सी योजनाएं हैं ? कृपया योजनाओं का विवरण सदन की मेज पर रखें।

उत्तर

जयपुर का गुलाबीकरण:—

जयपुर शहर का गुलाबीकरण एक आकर्षक पहलू है। पर्यटन विभाग इस पहलू को यथावत् रखने हेतु प्रयत्नशील हैं। विभाग द्वारा शहर की कुछ विशिष्ट इमारतों एवं प्रमुख दरवाजों पर गुलाबी रंग किया जाना प्रस्तावित है।

(पर्यटन मन्त्री)

गलता का पुनरुद्धारः—

जयपुर शहर के प्रमुख धार्मिक स्थल गलता को वर्ष 1981 की भयंकर बाढ़ ने क्षतिग्रस्त किया। बाढ़ के तुरन्त बाद राज्य सरकार ने विभिन्न विभागों के माध्यम से इसका पुनरुद्धार कार्यक्रम हाथ में लिया। पर्यटन विभाग ने इसके अन्तर्गत जनाना कुंड एवं अन्य स्थानों से मलबा उठाने आदि पर 10.34 लाख रुपयों का खर्चा किया।

गैटोर की छतरियों का विकासः—

जयपुर के महाराजाओं की पुण्य स्थली गैटोर की छतरियां वर्ष 1981 की भयंकर बाढ़ से प्रभावित हुई। यह पर्यटक स्थल लोकप्रिय है एवं अपने सुन्दर स्थापत्य-शिल्प के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा है। इस स्थल के रख-रखाव एवं संरक्षण हेतु विभाग द्वारा कार्य किया जाना प्रस्तावित है।

जल महल पर विकास कार्यः—

जल महल के विकास कार्य की योजना की नोडल एजेन्सी, जयपुर विकास प्राधिकरण है। प्रस्तावित योजना के अन्तर्गत पर्यटन विभाग द्वारा कोटेजेज, कैफेटेरिया इत्यादि का कार्य किया जाना प्रस्तावित है।

पर्यटक स्वागत केन्द्र का निर्माणः—

जयपुर शहर में पर्यटक स्वागत परिसर एवं प्रधान कार्यालय भवन के निर्माण की योजना प्रस्तावित है। इस योजना के माध्यम से विभाग द्वारा पर्यटकों को एक ही परिसर में आवश्यक एवं वांछित सभी सुविधाएं प्रदान किया जाना प्रस्तावित है।

परिशिष्ट-3

अतारांकित प्रश्न संख्या 5 की तालिकाएं

"परिशिष्ट ए"

क्रमांक	सहकारी भूमि विकास बैंक का नाम	ऋण वितरण राशि लाखों में वर्ष 1979-80	ऋण वितरण राशि लाखों में वर्ष 1980-81	वसूली का प्रतिशत वर्ष 1979-80	वसूली का प्रतिशत वर्ष 1980-81
1	2	3	4	5	6
1.	अजमेर	45.69	64.19	49.51	39.20
2.	अलवर	122.95	137.53	40.56	64.36
3.	बालोतरा	43.66	38.85	88.17	79.11
4.	बांसवाड़ा	57.97	62.10	25.16	35.92
5.	बारां	17.50	18.43	33.87	55.82
6.	ब्यावर	0.24	0.41	21.00	25.14
7.	भरतपुर	66.81	45.93	19.33	62.18
8.	भीलवाड़ा	23.73	45.09	35.13	35.42
9.	बीकानेर	14.40	23.17	92.93	78.80
10.	बिलाड़ा	25.32	29.54	89.09	85.17
11.	बून्दी	38.02	46.75	55.95	9.00
12.	चित्तौड़गढ़	57.06	76.02	42.57	54.98
13.	चूरू	52.15	53.38	81.00	79.27
14.	धौलपुर	113.93	36.56	18.00	64.22
15.	डूंगरपुर	52.57	25.18	27.58	33.04
16.	हनुमानगढ़	15.26	18.76	80.00	82.36
17.	हिण्डौन	102.76	82.85	59.46	71.13
18.	जयपुर	21.80	40.80	52.31	49.70
19.	जालोर	112.53	133.13	32.86	71.60
20.	झालावाड़	76.35	39.09	42.88	58.38
21.	झुंझुनू	67.54	71.26	65.06	92.66
22.	जोधपुर	26.56	33.26	39.41	60.15
23.	केकड़ी	36.29	33.57	61.10	60.70
24.	कोटा	36.12	66.93	45.44	46.59
25.	नागौर	71.73	85.52	52.20	68.50
26.	नोहर	4.20	3.48	22.00	78.56

1	2	3	4	5	6
27.	पाली	40.35	95.64	67.00	68.62
28.	प्रतापगढ़	4.25	8.53	36.84	36.29
29.	रायसिंह नगर	23.97	13.50	83.00	83.13
30.	सवाई माधोपुर	75.99	66.51	48.75	65.27
31.	श्रीगंगानगर	15.86	29.00	70.77	74.25
32.	सीकर	31.16	56.31	65.17	69.96
33.	सिरोही	30.10	72.38	51.00	50.05
34.	टोंक	75.95	52.99	70.00	70.52
35.	उदयपुर	48.77	68.70	41.71	41.67
	योग :	1749.54	1796.34	46.56	58.87

परिशिष्ट "ब"

क्र. सं.	नाम सहकारी भूमि विकास बैंक	ऋण वितरण (राशि लाखों में)			वसूली का प्रतिशत		
		1981–82	1982–83	1983–84	1981–82	1982–83	1983–84
1	2	3	4	5	6	7	8
1.	अजमेर	35.65	44.50	37.64	53.10	35.30	39.91
2.	अलवर	117.57	86.09	80.34	59.04	69.29	66.79
3.	बालोतरा	33.32	50.67	28.92	80.32	72.22	73.53
4.	बांसवाड़ा	58.24	40.21	9.10	40.22	25.04	20.42
5.	बारां	24.73	49.74	47.96	65.90	60.95	70.53
6.	ब्यावर	0.44	1.14	अवसायन में	24.65	8.90	अवसायन में
7.	भरतपुर	93.11	75.06	52.74	53.86	56.71	65.25
8.	भीलवाड़ा	36.34	22.88	33.67	34.65	30.39	35.87
9.	बीकानेर	50.36	50.82	34.57	80.15	75.12	67.35
10.	बिलाड़ा	36.99	33.50	21.37	80.20	67.60	66.47
11.	बून्दी	21.90	21.70	16.50	44.08	40.00	36.04
12.	चित्तौड़गढ़	79.03	76.37	81.11	53.87	57.27	46.37
13.	चूरू	30.18	51.00	78.35	77.74	77.35	94.00
14.	धौलपुर	64.55	46.85	29.42	38.74	36.15	36.93
15.	डूंगरपुर	28.27	20.35	17.55	24.47	18.77	19.59
16.	हनुमानगढ़	31.53	52.43	61.66	76.06	81.82	82.91

1	2	3	4	5	6	7	8
17.	हिण्डौन	104.15	73.20	53.51	75.42	66.10	72.23
18.	जयपुर	59.77	144.36	95.25	66.16	71.53	65.00
19.	जालौर	151.43	232.67	153.26	75.17	65.59	66.35
20.	झालावाड़	53.77	75.18	104.45	57.07	57.07	54.28
21.	झुन्झुनू	121.26	181.50	126.24	92.20	91.15	83.55
22.	जोधपुर	30.97	25.79	18.62	55.21	55.87	60.27
23.	केकड़ी	21.65	19.59	10.03	54.22	42.80	40.32
24.	कोटा	55.95	41.18	80.19	60.77	60.06	71.86
25.	नागौर	100.30	128.86	107.41	73.64	68.96	69.63
26.	नोहर	1.84	12.91	6.70	79.12	55.26	73.62
27.	पाली	112.08	80.40	82.06	60.05	60.02	62.53
28.	प्रतापगढ़	5.53	12.83	13.49	65.71	65.73	51.12
29.	रायसिंह नगर	20.56	28.35	31.68	76.70	82.39	82.46
30.	सवाईमाधोपुर	118.94	81.38	64.35	60.36	51.98	62.47
31.	श्रीगंगानगर	53.46	52.17	38.51	71.18	70.47	56.86
32.	सीकर	98.80	113.82	82.85	75.88	78.69	76.65
33.	सिरोही	60.51	63.10	61.51	55.09	48.84	57.74
34.	टौंक	56.26	53.92	45.36	68.86	65.28	66.80
35.	उदयपुर	48.07	94.57	20.25	35.84	31.29	38.60
	योग :—	2017.55	2239.39	1817.02	57.47	54.31	55.80

परिशिष्ट "स"

राजस्थान राज्य सहकारी भूमि विकास बैंक लि., जयपुर

प्राथमिक सहकारी भूमि विकास बैंकों के स्तर पर 1-7-83 से 31-5-84 तक माह जून, 84 एवं पूर्ण वर्ष 83-84 (1-7-83 से 30-6-84) तक वसूली की स्थिति निम्नानुसार है :—

क्र. सं.	नाम प्रा. बैंक	दि. 1-7-83 से 31-5-84 तक हुई वसूली का प्रतिशत	केवल माह जून, 84 में हुई वसूली का प्र. श.	30-6-84 को वर्ष समाप्ति पर वसूली का प्र.श.
1	2	3	4	5
1.	अजमेर	23.54	16.37	39.91
2.	अलवर	37.32	29.47	66.79
3.	बालोतरा	38.22	35.31	73.53
4.	बांसवाड़ा	16.66	3.76	20.42
5.	बारां	40.06	30.47	70.53
6.	ब्यावर	बैंक अवसायन में है		
7.	भरतपुर	37.42	27.83	65.25
8.	भीलवाड़ा	28.13	7.74	35.87
9.	बीकानेर	35.92	31.43	67.35
10.	बिलाड़ा	35.19	31.28	66.47
11.	बून्दी	23.36	12.68	36.04
12.	चित्तौड़गढ़	35.89	10.48	46.37
13.	चूरू	76.92	17.08	94.00
14.	धौलपुर	16.00	20.93	36.93
15.	डूंगरपुर	15.56	4.03	19.59
16.	हनुमानगढ़	58.42	24.49	82.91
17.	हिण्डौन	45.41	26.82	72.23

1	2	3	4	5
18.	जयपुर	42.38	22.62	65.00
19.	जालौर	35.05	31.30	66.35
20.	झालावाड़	40.46	13.82	54.28
21.	झुन्झुनूं	40.05	43.50	83.55
22.	जोधपुर	47.23	13.04	60.27
23.	केकड़ी	28.55	11.77	40.32
24.	कोटा	36.90	34.96	71.86
25.	नागौर	50.15	19.48	69.63
26.	नोहर	47.69	25.93	73.62
27.	पाली	36.40	26.13	62.53
28.	प्रतापगढ़	41.55	9.57	51.12
29.	रायसिहनगर	54.37	28.09	82.46
30.	सवाई माधोपुर	37.60	24.87	62.47
31.	श्रीगंगानगर	46.68	10.18	56.86
32.	सीकर	39.25	37.40	76.65
33.	सिरोही	45.06	12.68	57.74
34.	टोंक	41.19	25.61	66.80
35.	उदयपुर	32.91	5.69	38.60
	औसत प्रतिशत	35.40	20.40	55.80

परिशिष्ट "स"

राजस्थान राज्य सहकारी भूमि विकास बैंक लिमिटेड, जयपुर

प्राथमिक सहकारी भूमि विकास बैंकों द्वारा दि. 1-7-83 से 31-5-84 तक जून, 1984 में तथा वर्ष 83-84 (1-7-83 से 30-6-84 तक) में किया गया कुल ऋण वितरण निम्न प्रकार है।

क्र. सं.	नाम प्रा. स. भू. वि. बैंक	दि. 1-7-83 से 31-5-84 तक किया गया ऋण वितरण	केवल माह जून, 84 में किया गया ऋण वितरण	दि. 1-7-83 से 30-6-84 तक किया गया ऋण वितरण
1	2	3	4	5
1.	अजमेर	30.42	7.22	37.64
2.	अलवर	75.53	4.81	80.34
3.	बालोतरा	27.41	1.51	28.92
4.	बांसवाड़ा	5.42	3.68	9.10
5.	बारां	47.24	0.72	47.96
6.	ब्यावर	बैंक अवसायन में है		
7.	भरतपुर	51.72	1.02	52.74
8.	भीलवाड़ा	27.72	5.95	33.67
9.	बीकानेर	30.84	3.73	34.57
10.	बिलाड़ा	20.29	1.08	21.37
11.	बून्दी	14.23	2.27	16.50
12.	चित्तौड़गढ़	66.12	14.99	81.11
13.	चूरू	72.75	5.60	78.35
14.	धौलपुर	28.29	1.13	29.42
15.	डूंगरपुर	14.35	3.20	17.55
16.	हनुमानगढ़	50.84	10.82	61.66

1	2	3	4	5
17.	हिण्डौन	46.91	6.60	53.51
18.	जयपुर	88.38	6.87	95.25
19.	जालौर	147.83	5.43	153.26
20.	झालावाड़	88.42	16.03	104.45
21.	झुन्झुनू	118.29	7.95	126.24
22.	जोधपुर	16.29	2.33	18.62
23.	केकड़ी	9.81	0.22	10.03
24.	कोटा	68.76	11.43	80.19
25.	नागौर	101.68	5.73	107.41
26.	नोहर	5.50	1.20	6.70
27.	पाली	73.64	8.42	82.06
28.	प्रतापगढ़	11.89	1.60	13.49
29.	रायसिंहनगर	29.31	2.37	31.68
30.	स. माधोपुर	55.28	9.07	64.35
31.	श्रीगंगानगर	27.30	11.21	38.51
32.	सीकर	76.09	6.76	82.85
33.	सिरोही	55.37	6.54	61.91
34.	टौंक	32.86	2.50	35.36
35.	उदयपुर	18.25	2.00	20.25
	योग :	1635.03	181.99	1817.02

परिशिष्ट-4

अतारांकित प्रश्न संख्या 8 की सूची

S. No.	District	1983-84 PHC	1983-84 MHC	1983-84 DISP	1983-84 A. P.	1983-84 S. C.	1983-84 MCWC	1984-85 PHC	1984-85 MHC	1984-85 DISP	1984-85 A. P.	1984-85 S. C.	1984-85 MCWC
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
1.	Ajmer	—	—	—	—	13	—	2	—	—	—	19	—
2.	Alwar	—	—	—	—	24	1	4	—	—	—	21	—
3.	Banswara	1	—	—	—	28	—	4	2	—	—	10	—
4.	Barmer	2	—	1	—	19	—	5	—	—	—	21	—
5.	Bharatpur	—	—	—	—	28	—	1	—	—	—	24	—
6.	Bhilwara	2	—	2	—	29	1	4	—	—	—	74	—
7.	Bikaner	—	—	—	—	1	—	1	—	—	—	3	—
8.	Bundi	—	—	1	—	7	—	4	—	—	—	14	—
9.	Chittorgarh	1	—	—	—	16	—	3	1	—	—	21	—
10.	Churu	1	—	—	—	10	—	3	—	—	—	16	—
11.	Dholpur	—	—	1	—	18	—	4	—	—	—	9	—
12.	Dungarpur	—	—	—	—	12	—	2	3	—	—	16	—

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
13.	Sriganganagar	—	—	—	—	13	—	5	—	—	—	27	—
14.	Jaipur	1	—	2	—	40	—	6	—	—	—	35	—
15.	Jhalawar	—	—	—	—	—	—	3	—	—	—	4	—
16.	Jaisalmer	—	—	—	—	2	—	2	—	—	—	5	—
17.	Jalore	—	—	—	—	6	—	—	—	—	—	26	—
18.	Jhunjhunu	1	—	2	—	10	—	4	—	—	—	20	—
19.	Jodhpur	1	—	2	—	34	1	9	—	—	—	51	—
20.	Kota	—	—	—	—	22	—	—	—	—	—	24	—
21.	Swaimadhopur	—	—	—	—	41	—	2	—	—	—	29	—
22.	Nagaur	—	—	1	—	11	1	6	—	—	—	28	—
23.	Pali	1	—	1	—	34	1	4	—	—	—	45	—
24.	Sikar	—	—	—	—	3	—	7	—	—	—	37	—
25.	Sirohi	—	—	—	—	6	—	2	—	—	—	7	—
26.	Tonk	—	—	—	—	7	—	—	—	—	—	10	—
27.	Udaipur	1	—	—	—	66	—	10	2	—	—	26	—
	Total :	12	—	13	—	500	5	97	8	—	—	622	—

S.No. District		1980-81						1981-82						1982-83					
		PHC	MHC	DISP.	A.P.	S.C.	MCWC	PHC	MHC	DISP.	A.P.	S.C.	MCWC	PHC	MHC	DISP	A.P.	S.C.	MCWC
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
1.	Ajmer	—	—	4	—	—	1	—	—	2	1	—	—	—	—	—	—	7	—
2.	Alwar	—	—	4	—	—	1	—	—	1	—	—	—	—	—	—	—	1	—
3.	Banswara	—	—	2	—	—	—	—	1	1	—	—	—	—	—	—	—	8	—
4	Barmer	—	—	2	—	—	—	—	—	1	2	—	—	—	—	—	—	2	—
5.	Bharatpur	—	—	15	—	27	—	—	—	2	—	33	—	—	—	—	—	20	—
6.	Bhilwara	—	—	3	—	—	—	—	—	2	—	—	—	—	—	—	—	7	—
7.	Bikaner	—	—	3	—	—	—	—	—	1RCP	—	—	—	—	—	—	—	2	—
8.	Bundi	—	—	2	—	—	—	—	—	1	—	—	—	—	—	—	—	1	—
9.	Chittorgarh	—	—	1	—	—	—	1	1	3	1	—	—	—	—	—	—	11	—
10.	Churu	—	—	3	—	—	—	—	—	4	—	—	—	—	—	—	—	1	—
11.	Dholpur	—	—	6	—	13	—	—	—	—	—	7	—	—	—	—	—	20	—
12.	Dungarpur	—	—	2	—	—	—	—	1	2	—	—	—	—	—	—	—	13	—
13.	Sriganganagar	—	—	7	—	—	—	—	—	2	—	—	—	1	—	—	—	8	—
14.	Jaipur	—	—	6	—	—	—	—	—	4	1	—	—	—	—	—	—	2	—

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
15.	Jhalawar	—	—	1	—	—	—	—	—	1	—	—	—	—	—	—	—	—	—
16.	Jaisalmer	—	—	2	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	1	—
17.	Jalore	—	—	3	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	1	—
18.	Jhunjhunu	—	—	1	—	—	—	—	—	4	1	—	—	—	—	—	—	—	—
19.	Jodhpur	—	—	5	—	—	—	—	—	3	—	—	—	—	—	—	—	19	—
20.	Kota	—	—	1	—	27	—	—	—	—	—	27	—	1	—	—	—	27	—
21.	S. Madhopur	—	—	7	—	33	—	1	—	2	1	33	—	—	—	—	—	33	—
22.	Nagaur	—	—	4	—	—	—	—	—	2	3	—	—	—	—	—	—	21	—
23.	Pali	—	—	3	—	—	—	—	—	—	1	—	—	—	—	—	—	18	—
24.	Sikar	—	—	2	—	—	—	—	—	—	2	—	—	—	—	—	—	8	—
25.	Sirohi	—	—	1	—	—	—	—	1	—	2	—	—	—	—	—	—	2	—
26.	Tonk	—	—	2	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	4	...
27.	Udaipur	—	—	6	—	—	—	—	1	1	—	—	—	—	—	—	—	22	—
	Total :	—	—	98	—	100	2	2	5	39	15	100	—	2	—	—	—	250	—

अतारांकित प्रश्न संख्या 97/ के भाग दो की सूची

जिला	प्रा. स्वा. केन्द्र	डिस्पेंसरी	मिनि हैल्थ सेन्टर	एड पोस्ट	उच्चीकृत उप-केन्द्र	उप-केन्द्र
1	2	3	4	5	6	7
अजमेर	……सभी चिकित्सा संस्थानों में स्टाफ कार्यरत है……					
अलवर	……यथा……					
चूरू	……यथा……					
धौलपुर	1. गोपालपुर				1. सोने का गूजा 2. गोलारी 3. मालोनो खुर्द 4. तिहारी 5. राजोरा खुर्द	1. धोधपुरा 2. धारी 3. नगर 4. सेमेरा 5. उमरारा 6. डंडोली 7. भेसेना 8. विन्टोपुरा 9. हंगोरा 10. माई 11. खारोली

1	2	3	4	5	6	7
						12. मधासी
						13. झरगा
						14. धारीलज्जा
						15. कोलूश्रा
						16. सुन्दरपुर
						17. नुनहेरा
						18. लेवर
						19. कुरगांवा
						20. दोदवर
						21. झिरी
						22. पासूश्रा का पुरा
टौंक						1. पारीले
						2. वोकरावास
						3. चान्दली
						4. रूडवा
						5. श्रालियाबाद
						6. थोगाई
						7. सीतारामपुरा
						8. सांझ
सवाईमाधोपुर	1. चैनपुर बरिया					

जैसलमेर	**1. लाठी** **2. देवीकोठ**			1. हीरा 2. नावा
झालावाड़				1. जागा 2. सेमली हाट 3. वोरवन्द
जयपुर	1. भाभक 2. पाल्डुडाल 3. चावण्डिया 4. दांतिल 5. बडवा 6. करिरि		1. कालवाडा 2. कलवाडा 3. लदाना 4. भाभरू 5. वीलवाडी 6. चान्दलिया 7. धवली 8. खोरामीना 9. रांजनोता 10. भोनावास 11. झरे 12. सुर मलिकपुर 13. गुढ़ा कटला 14. आलूदा 15. टोरडी	
सीकर	1. छोद	1, बलारा	1. पिपराली	1. बीडोली

1	2	3	4	5	6	7
	2. बाडली				2. रोलवडी	2. पलथाना
	3. गनेडी				3. सांवतपुरा तंवरान	3. बाकरा
					4. गनेश्वर	4. हरीपुरा भाडली
					5. आशापुरा	5. खांगापेडा
					6. जोरावर नगर	6 बाचीवास
					7. गनेडा	7. रोसावा
					8. भूरडों का बास	8. बैगास
					9. हाथी देव	9. कोटडी दहावडान
						10. डुकिया
						11. कोका
						12. ढाकास
						13. शेरू पुरा
						14. कुडली
						15. कल्याणपुरा
						16. भादवाडी
						17. रूपपुर उडलवास
						18. तिवाड़ी की ढाणी
						19. वला
						20. घासीपुरा
						21. अनोख
						22. पुरा छोटा

		24. कोलवाडी
		25. जाजोद
		26. वीदीसर
		27. तंगवर
		28. सिहोडी
		29. मुरानो
		30. नालोट
		31. मावण्डा कलां
		32. दलतपुरा
		33. देवगढ़
		34. सूत
उदयपुर	1. बंदरिया	1. राछेदीखड़ा
		2. करनाली
		3. भानपुर
		4. कनबई
		5. कालागढ़
		6. चौवली
		7. इसामेड़
		8. टोकारा
		9. विरोली

253

1	2	3	4	5	6	7
						10. गरना
						11. कुकावास
						12. जोजीवाड़
						13. क्यारला
						14. महाड़
						15. वडलो
						16. मेरपुर
						17. थेप
						18. मोडी
						19. मेवरों का मठ
						20. पाथरपुरी
						21. ग्रम्बावास
						22. सामीजा
						23. ग्रन्जानी
						24. जनावड़
						25. कानूवारा
						26. छाली
						27. बनेड़ा
श्रीगंगानगर	1. लालगढ़				1. थालड़का	1. रामपुरा सटोरिया
	2. रामगढ़				2. मिगेवाला	2. खादाश्री
					3. वीजवायला	3. साहरणी

		4. विशनपुरा	4. ललानिया
		5. खरला	5. मथान
		6. मुवलाचा	6. मोटोर
		7. भोमपुरा	7. दुलवानी
			8. ऐटा
			9. खारथा
			10. भोजासर
			11. जिगातरी छोटी
			12. दुरतपुरा
			13. हिरणावाली
			14. नवां
			15. समेजा कोठी
			16. 67 एल. एन. पी.
			17. पक्की
			18. रेणुका
			19. 15 पी. टी.
बूंदी	1. दवलाना	1. सुमेरगंज मण्डी	1. माण्डी
	2. तवलावास	2. रावधल	2. सांवलगढ़
	3. लाम्याखो	3. बड़ोदिया	3. धानूगांव

1	2	3	4	5	6	7
					4. देहित	4. समिधि
					5. अन्धेडा	5. खिण्या
					6. गुड़ा नाथावड़	6. वलवन
					7. भैरूपुरा ओझा	7. चूंतरा का खेड़ा
					8. लक्ष्मीपुरा	
बांसवाड़ा			1. गांगड तलाई		1. टीमेडा बड़ा	1. झीवली
					2. नवराली	2. डूम्मट
					3. करणी	3. पारन
					4. कुपड़ा	4. उकाला
					5, इटाली	5. जगपुरा
					6. वाड़िया	6. झांझखा कलां
						7. खूंटा गलिया
बीकानेर	1. आकासर				1. हिदायतरा	1. विशनासर
					2. सरेश (शेरेरा)	2. टोंकला
					3. सारूंडा	3. उदासर
						4. महादेवाली
						5. अजीतवना
						6. कालासर
पाली	गोगुन्दा			1. सियाट	1. सिदली	1. पांचलवाड़ा
					2. पावा	2. डीगरना

3. बोम्बेडा	3. सेवरिया
4. बरकाना	4. फूलाद
5. खामली	5. मैलावास
6. खारड़ा	6. जैतपुरा-
	7. पेचापदरिया
	8. माण्डा
	9. गादाना
	10. वसन्ता
	11. गरनिया
	12. आसरलाई
	13. आकोलिया
	14. कलोलिया
	15. जसूजा
	16. शिवपुरा
	17. मामूण्डा
	18. बोयल
	19. मण्डला-
	20. भीटवाड़ा
	21. वानेवा
	22. बीम्बड़ा

257

1	2	3	4	5	6	7
						23. मादा
						24. पनोता
						25. गोरिया
						26. अरमलिया
						27. शीवतला
						28. मुडानास
						29. बीगासनी
						30. पटवा
						31. टोकरही
						32. रामवासकला
						33. वीरोल
						34. जनोवा
						35. घनेरिया
						36. बेडकला

चालू नहीं होने वाले उप-केन्द्रों की सूचना

1	2	3	4	5	6	7
कुंकुरं	1. कुहाड़वास	1. राणीसती			1. राणासर	1. राणासर
	2. साहोली				2. सोहली	2. भीमसर
	3. हेतमसर				3. बलावता	3. जवावा खुर्द
	4. लाडूसर				4. वडाउ	4. थली

5. घमारा
6. महिपालवास
7. नरहड़
8. डूण्डलोद
9. बुड़ाना
10. कुहाड़वास
11. गागियासर

5. घसेड़ा
6. जोधपुरा
7. टीटानवाड़
8. बुद्धा का वास
9. भसोड़ा
10. खाड़वा
11. बानीसर
12. देवीपुरा
13. पदमपुरा
14. कयामसर
15. बारी
16. मोजसर
17. दीघवा
18. घुमरिया
19. लोरीपुरा
20. ढाका मण्डी
21. पचेरी खुर्द
22. मारोत
23. समसापुर की ढाणी
24. रेमजाव
25. रामपुरा

1	2	3	4	5	6	7
नागौर	1. निम्बी जोधा					1. चांड
	2. तातवास					2. कुड़छी
						3. लाडपुरा
						4. बाकरी
						5. पीड़वा
						6. नीमड़ी कलां
						7. दिग्दारपुरा
						8. गोगोर
						9. खाकड़की
						10. बुगरड़ा
						11. सोनण
						12. सोनेनी
						13. निम्बीहकिसन
						14. बुद्धवाड़
						15. बासनी-लूनकरण
जोधपुर	1. बावरा				1. सावरीत	1. मंगाकाली
	2. माथूड़ाड़				2. सांई	2. खतियासनी
					3. गरासनी	3. कनोडिया महासंघ
					4. पाड़ालना	4. सुखमण्डला
					5. गड्डा	5. दईपड़ा
						6. खिचिया

7. दूधाखेड़ा
8. डूंगर
9. धई जोधा
10. खावड़ा
11. डीवड़ी
12. खेतासर
13. जेसला
14. कानासर
15. उदट
16. बडिहाल
17. पाडलीसिद्धा
18. पटेलनगर
19. लवेराकला
20. अनवाणा
21. मंगोरिया
22. पीपड़ली
23. खावास
24. लोड़ता हरीदाससोद
25. चांवलवा
26. निम्बोका

1	2	3	4	5	6	7
						27. मूण्डीया
						28. खवासपुरा
						29. चावंडा
						30. पुरी
						31. नेतारा
						32. हिंगोली
						33. ममुराखुर्द
						34. सोयला
						35. खेडी-सालवा
						36. बापीनी
						37. पंडितजी की ढाणी
						38. नन्दियाकलां
						39. कुई
						40. गुडिया
						41. गड्डा
						42. चारनी झाड़
						43. कनोड़िया पुरोहितान
						44. सगरा
						45. भगरा
						46. भियासर
						47. मोखेरी
						48. खारा

			49. चापासवा
			50. सिहारदा
			51. सेखासर
			52. भून्डाना
डूंगरपुर	1. नन्दराय	1. पांसल	1. इराम
	2. पीठ	2. बड़ा महुआ	2. पान्डरू
	3. ओवरी	3. चितम्बा	3. रतनपुर
		4. सगरेज	4. शम्भूगढ़
		5. टूम्बरवाड़	5. पलामाता
		6. आमा	6. निमेड़ी
		7. वैरा	7. वडला
		8. इंटुन्हा	8. नान्दसा सकावता
		9. ढीकोला	9. कांगनी
		10. मिन्डोलिया	10. उदलियास
		11. कालियास	11. रीड
		12. शम्भूगढ़	12. सियाना
		13. मूनपुरा	13. सरसिया चानांन
		14. घरोदा	14. सराना
			15. कल्याणपुरा

1	2	3	4	5	6	7
						16. सुरात
						17. रेसून्दा
						18. जावदा
						19. जालमको झौंपड़ी
						20. श्रीपुरा
						21. जिताखेड़ा
						22. गेगाखेड़ा
						23. चांवड़िया
						24. छरड़ी
						25. लाम्बिया खुर्द
						26. सरदारनगर
						27. सरतला
						28. लालपुर
						29. देवली

परिशिष्ट–5

अतारांकित प्रश्न संख्या 15 की सूची

राजस्थान राज्य में दिनांक 20-3-85 तक स्थापित पावर लूमों की सूची

जिले का नाम	स्थापित पावर लूमों की संख्या
1. अजमेर	5136
2. उदयपुर	227
3. भीलवाड़ा	873
4. जयपुर	455
5. सवाई माधोपुर	180
6. बांसवाड़ा	282
7. पाली	172
8. जोधपुर	143
9. अलवर	375
10. भरतपुर	20
11. नागौर	100
12. बाड़मेर	4
13. बीकानेर	35
14. झुंझुनूं	38
15. जालौर	24
16. कोटा	28
17. सिरोही	34
18. टोंक	13
19. सीकर	20
20. चूरू	10
21. बून्दी	10
	योग : 8179

शुद्धि-पत्र

क्र. सं.	स्कम्भ सं.	पंक्ति सं.	अशुद्ध	शुद्ध
1.	4	13	रिक्त	1
2.	16	27	श्री	श्री
3.	18	5	श्री श्योपतसिंह	श्री शोपतसिंह
4.	27	1	श्री छोगाराम बाकोलिया	राज्य मंत्री, समाज कल्याण
5.	35	1	श्री नरेन्द्र सिंह भाटी	वन तथा पर्यावरण मंत्री
6.	62	25	श्रो	श्री
7.	87	1	श्री कालोचरण सर्राफ	श्री कालीचरण सराफ
8.	101	1	श्री नत्थीसिंह	श्री नत्थीसिंह
9.	109	28	श्री सी. पा. जोशी	श्री सी. पी. जोशी
10.	131	13	श्री श्योपतसिंह	श्री शोपतसिंह
11.	165	32	श्री सभापति	श्री सभापति जी
12.	177	21	श्रो सभापति	श्री सभापति
13.	213	25	क्षी घनश्याम तिवाड़ी	श्री घनश्याम तिवाड़ी
14.	317	7	श्र प्रणवीर व्यास	श्री प्रणवीर व्यास